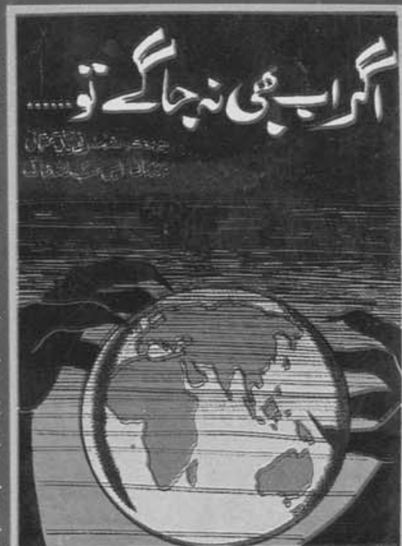

जिस पुस्तक ने उर्दू जगत में तहलका मचा दिया और लाखों भारतीय मुसलमानों को अपने हिन्दू भाईयों एवं सनातन धर्म के प्रति अपने दृष्टिकोण को बदलने पर मजबूर कर दिया था उसका यह हिन्दी रुपान्तर है । महान सन्त एवं विद्वान मौलाना आचार्य शम्स नवेद उस्मानी के धार्मिक तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित पुस्तक के लेखक हैं, धार्मिक तुलनात्मक अध्ययन के जाने माने लेखक और स्वर्गीय सन्त के प्रिय शिष्य एस. अब्दुल्लाह तारिक़ । स्वर्गीय मौलाना ही के एक योग्य शिष्य जावेद अन्जुम (प्रवक्ता अर्थ शास्त्र) के हाथों पुस्तक के अनुवाद द्वारा यह संभव हो सका है कि अनुवाद में मूल पुस्तक के असल भाव का प्रतिबिम्ब उतर आए । इस्लाम की ज्योति में मूल सनातन धर्म के भीतर झांकने का सार्थक प्रयास हिन्दी प्रेमियों के लिए प्रस्तुत है ।

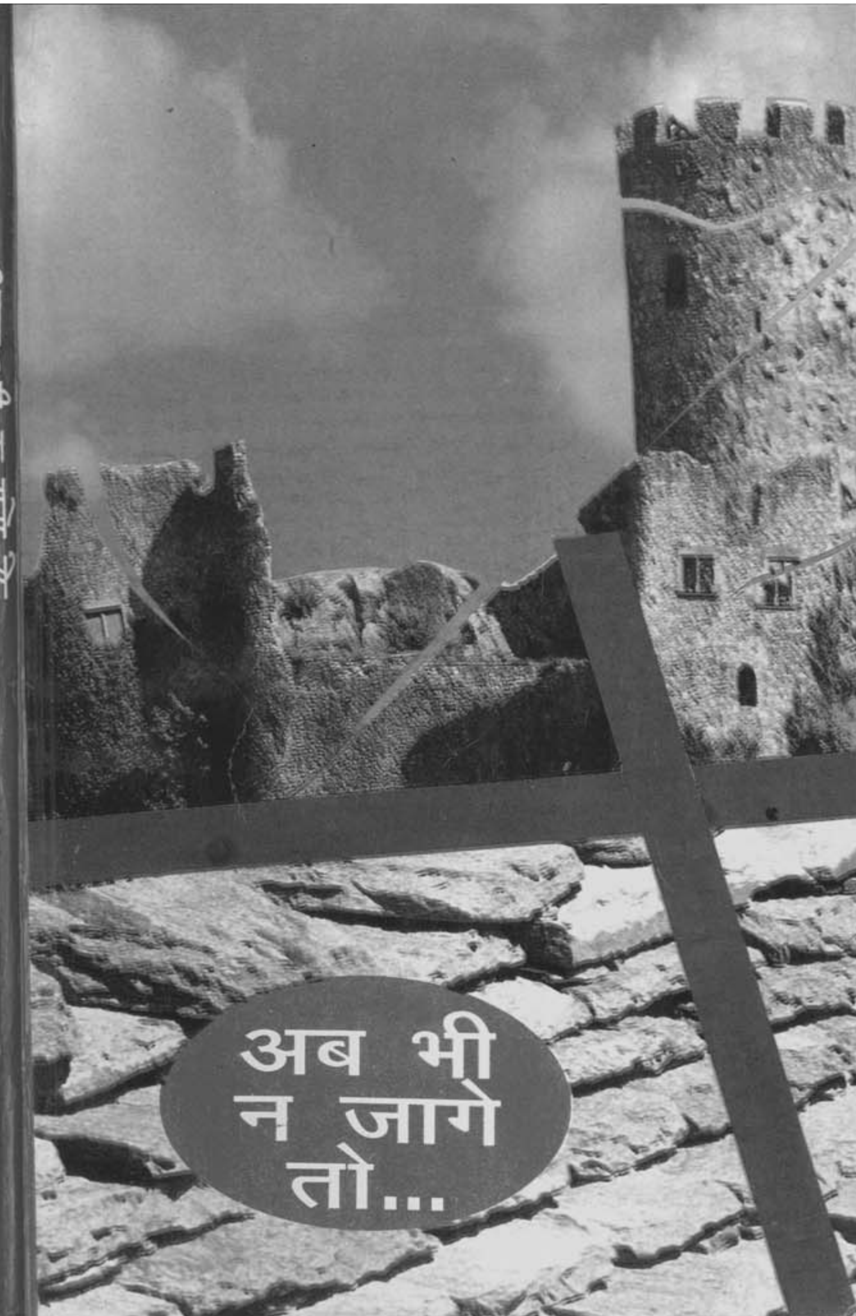

famous hindi book: 'ab bhi na jage to'
E-book by: umarkairanvi@gmail.com
antimawtar.blogspot.com --- islaminhindi.blogspot.com –

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

उस परमेश्वर के नाम से जो अत्यन्त दयावान व कृपावान है।

अगर अब भी न जागे तो.....!

विचारक
मौ० शम्स नवेद उस्मानी रह०

लेखक
एस० अब्दुल्लाह तारिक़ 'इन्जीनियर'

अनुवादक
जावेद अन्जुम

प्रकाशक
रौशनी पब्लिशिग हाउस
बाजार नसरुल्लाह खाँ, रामपुर - 244 901 (यू०पी०)

©इस पुस्तक के सर्वाधिकार लेखक द्वारा सुरक्षित हैं। इसलिए कोई भी सज्जन इस पुस्तक के प्रस्तुत अनुवाद की सामग्री आंशिक या पूर्ण रुप से तोड़–मरोड़ कर या किसी अन्य भाषा में छापने व प्रकाशित करने का बिना आज्ञा कष्ट न करें।

कम्पोज़िंग: **प्रगति कम्प्यूटर ग्राफ़िक्स**, मुरादाबाद

Produced by : Ahle Qalam, New Delhi-25 Tel. : 6946997

मूल्य:
Rs 50.

मूल उर्दू पुस्तक के बहुत से विषयों पर पाठकों के प्रश्नों व शंकाओं के समाधान हेतु स्व० मौ० शम्स नवेद उस्मानी रह० ने कुछ संक्षिप्त नोट प्रकाशित कराने का इरादा किया था किन्तु अपने निधन से कुछ समय पूर्व अन्तिम बार मुझे यह निर्देश दिया कि पुस्तक में निम्न संशोधन कर दिए जाएं:–

1 कुछ भाग अपूर्ण होने के कारण निकाल दिए जाएं और बाद में जब सम्भव हो विस्तारपूर्वक उन्हे अलग पुस्तक के रुप में प्रकाशित किया जाए।

❑ *अतः प्रस्तुत अनुवाद में उन्हें सम्मिलित नहीं किया गया है।*

2. अन्य अध्यायों से संबन्धित पाठकों के शंका समाधान हेतु, मैं एक अतिरिक्त अध्याय लिखकर पुस्तक के अन्त में शामिल कर दूं।

❑ *अपनी व्यस्तता के कारण मैं अभी तक मौलाना की यह इच्छा पूरी करने में असमर्थ रहा हूँ। भविष्य में इन्शाअल्लाह मूल उर्दू पुस्तक व उसके अनुवादों में उक्त अध्याय सम्मिलित कर दिया जाएगा।*

—एस० अब्दुल्लाह तारिक

समर्पण

✡ उस दिवंगत महिला के नाम–

जिसने मरते दम तक लाभ का व्यापार किया,ऐसा व्यापार जिस का लाभ अनन्त काल तक फ़रिश्ते (देवतागण) उस के सम्मुख प्रस्तुत करते रहेंगे।

✡ उस अपंग बहन के नाम–

जो पिछले कई वर्षों से शय्या पर है।

जिस की आँख से निकलने वाला हर आंसू टपकने से पहले ही स्वीकार कर लिया जाता है क्योंकि यह अमूल्य मोती वह अपने आप पर नहीं वरन् सिसकती हुई मानवता पर न्यौछावर करती है।

✡ उन नौजवान दीवानों के नाम–

जो नफ़रत के असीम अन्धयारों में प्रेम के दीपक हाथ में लेकर निकल खड़े हुये हैं।

आतंकवाद की आँधियां उन पर हंसती हैं।
लेकिन वह दिये से दिया जलाते चले जा रहे हैं।

इन सभी पर सलाम !!!

अनुक्रम

पृष्ठ

समर्पण 3

अपनी धुन में मगन एक मुसाफ़िर 9

धर्मपरायणता का सन्देश 12

प्रस्तुति से पूर्व 15

दो शब्द 16

अ०: 1 इन्क़िलाब की भविष्यवाणी: 17

✠ काबे का अपमान ✠ निरन्तर अज़ाब (दिव्य प्रकोप)
✠ क्या व्यापक स्तरीय यातना अभी शेष है? ✠ क़ौम के परिवर्तन की चेतावनी
✠ क्या हम अल्लाह की सूची में मोमिन (आस्तिक) हैं?
✠ वह कौन सी क़ौम हो सकती है?

अ०: 2 हिन्दू क़ौम का नबी (ईशदूत): 29

✠ कृष्णा मेनन, आश्चर्य की मुद्रा में!
✠ ह० नूह अलै० की उम्मत (पन्थ) का नबी भी खोया हुआ है।
✠ 'हिन्दू' ह० नूह अलै० की क़ौम हैं। ✠ क़ुरआन की गवाही

अ०: 3 क़ुरआन में हिन्दू क़ौम का ज़िक्र (उल्लेख): 36

✠ क़ुरआन पर आरोप
✠ क़ुरआन में सब क़ौमों के नामों पर शोध कार्य नहीं हुआ।
✠ ह० नूह अलै० की क़ौम ही साबिईन हैं!

अ०: 4 समता और आदिकालीन सम्बन्ध: 42

✠ धार्मिक प्रवृत्तियों एवं सम्बन्धों का निरीक्षण आवश्यक है।

✠ आश्चर्यजनक समानता
✠ हिन्दुओं और मुसलमानों के समान जीवन–मूल्य
✠ सम्बन्ध अनादिकाल से होते हैं।
✠ ह० आदम अलै० हिन्दुस्तान में
✠ ह० नूह अलै० हिन्दुस्तान में
✠ कुछ अन्य ईशदूत, हिन्दुस्तान में
✠ अरब व हिन्द भौगोलिक दृष्टि से कभी एक थे।
✠ धूल की पर्तों पर नई पालिश नहीं चढ़ेगी।

अ०: 5 सर्वप्रथम दिव्य ग्रन्थ–वेद 65

✠ वेद का परिचय ✠ पवित्र कैसे मानें?
✠ एक कलाम (वाणी), दूसरे कलाम की ज्योति में
✠ अभी और परखिये। ✠ अन्तिम गवाही शेष है।
✠ अव्वलीन सहाइफ़ के नाम से ढूंढिये।
✠ आदि–ग्रन्थ मौजूद हैं। ✠ वेद ही आदि–ग्रन्थ हैं।

अ०: 6 सृष्टि रचना का आरम्भ–हज़रत अहमद सल्ल० 87

✠ हक़ीक़ते अहमदी (अहमदी तत्व) ✠ अहमदी तत्व प्रत्येक पवित्र ग्रन्थ में है।
✠ तर्क संगत प्रमाण ✠ विज्ञान मार्गदर्शन पर आश्रित है।
✠ सरवरे कायनात (जगतगुरु) सल्ल० ही सृष्टि का आरम्भ हैं।
✠ क़ुरआन से भी प्रमाणित है।

अ०: 7 वेदों में अग्नि–रहस्य 102

अ०: 8 इस्लाम और हिन्दू धर्म–नामों की समानता 104

✠ हिन्दू मत का इस्लामी नाम
✠ अल्लाह नाम सब धर्मों में है। ✠ रहमान और रहीम भी

अ०: 9 वैदिक धर्म में तौहीद (एक–ईश्वर–वाद) 109

✠ हिन्दू धर्म में एक–ईश्वर–वाद की धारणा

अ०: 10 वैदिक धर्म और रिसालत (ईशदूत–पद) 114

✠ ईशदूतों के वृत्ताँत

✠ वेदों में ह० नूह अलै० का वृत्तांत

✠ वेदों में ह० मोहम्मद सल्ल० का वृत्तांत

अ०: 11 वैदिक धर्म और आख़िरत (पारलौकिक जीवन) 123

✠ पारलौकिक जीवन का धर्म विश्वास (अक़ीदा) तथा पुनर्जन्म

✠ हिन्दू शोधकर्ताओं की स्वीकृति

✠ वेदों में जन्नत (स्वर्ग) का वृत्तांत

✠ दोज़ख़ (नरक) का वर्णन ✠ आवागमन की यथार्थता

✠ आवागमन की पृष्ठभूमि में एक और तथ्य

अ०: 12 वेदों की कुछ अन्य शिक्षाएं 135

✠ जुए का निषेध ✠ मद्य निषेध

✠ ब्याज का निषिद्ध होना

✠ विवाह सस्कारों में सरलता का आदेश

✠ पुरुषों को स्त्रियों के वस्त्र पहनने पर रोक

✠ नारी के घरेलू जीवन का आदेश ✠ नारी की लज्जा के आदेश

अ०: 13 हदीसें और पुराण: भविष्यवाणियों की समानता 137

✠ हदीस ✠ हरिवंश पुराण और विष्णु पुराण

अ०: 14 वैदिक धर्म में काबे की हक़ीक़त 139

अ०: 15 वेदों मे ह० मोहम्मद सल्ल० का मक़ामे महमूद (परमपद) 144

अ०: 16 वैदिक धर्म में काना दज्जाल (अन्धक आसुर) 146

अ०: 17 यह रहस्य, रहस्य क्यों रहे? 149

✠ हिन्दुओं में चली आ रही कुछ निगूढ़ बातें

✠ मुसलमानों की लापरवाही

अ०: 18 पूर्व ग्रन्थों में आस्था 153

✠ यह ग़लतफ़हमी दूर कीजिए।

✠ दीन केवल इस्लाम है लेकिन!

✠ कोई भी पूर्व ग्रन्थ निरस्त नहीं किया गया है।

✠ क़ुरआन से पूर्व के ग्रन्थों पर ईमान लाने का तात्पर्य

✠ यह प्रतिकूलता क्यों प्रतीत हो रही है?

✠ क्या हदीसों में भी परस्पर विरोध है?

✠ यथार्थ पुष्ठ भूमि में देखिये।

अ०: 19 दावत (अह्वान) की कार्यशैली 161

✠ क्या हिन्दू अहले किताब (पूर्व ग्रन्थ वाले) हैं?

✠ अहले किताब नहीं उम्मिय्यीन हैं।

✠ आह्वान की कार्यशैली–हदीसों की रौशनी में

✠ क़ुरआन की ज्योति में

✠ हिन्दू धर्म को उस की खोई हुई मौलिकता दीजिये।

✠ ऐतिहासिक विडम्बनाएं

✠ काश मुसलमान यह समझ लें कि!

✠ कम से कम इतना तो कीजिये।

✠ अमरीकियों का उदाहरण

✠ सारांश ✠ हिन्दू धर्म–पंडित जानते हैं!

✠ युग परिवर्तित होने ही वाला है।

✠ दलीले ख़ुदावन्दी (ईश्वरीय प्रमाण) ✠ मुसलमानों का कर्तव्य

अ०: 20 उन्हे स्वयं भी तलाश है! 181

अ०: 21 कसौटी केवल क़ुरआन 183

प्रस्तुति के बाद 185

संकेत चिह्न 190

-----❖❖❖-----

अपनी धुन में मगन एक मुसाफ़िर

भारत के एक नगर 'रामपुर' के अंगूरीबाग़ मुहल्ले में विगत पन्द्रह वर्षों से एक व्यक्ति दो कमरों पर आधारित एक छोटे से किराए के मकान में रह रहा है। उसके समय का अधिकांश हिस्सा इबादत, रात को जागने, इन्सानों पर रोने और किताबों में निमग्न रहने में गुज़रता था। बाक़ी बचे समय में वह सोचता था।

ह० मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० तो 'इब्तदाए तख़लीक़े कायनात' (रचनाओं में आदि–सृष्टि) भी थे, फिर उन को दूसरे धर्मों के अनुयायी अपना नबी (ईशदूत) क्यों स्वीकार नहीं करते?

पहले जो लोग मुसलमान के चरित्र से प्रभावित नहीं भी होते थे, कलामे इलाही (ईशवाणी) के शब्द सुनकर ही उन के दिल की दुनिया बदल जाती थी। वे क़ुरआन की भाषा जानते थे और महसूस कर लेते थे कि यह मानव वाणी नहीं है। अनुवाद होने के बाद केवल सन्देश बाक़ी रह जाता है, लेकिन शब्द ईश्वर के बजाय इन्सानों के हो जाते हैं। अनुवादों से वांछित प्रभाव नहीं पड़ता। दुखद बात यह भी है कि अधिकांश मुसलमानों ने स्वयं क़ुरआन को छोड़ दिया ।

बहुत से लोग आज भी सत्य को स्वीकार कर रहे हैं। हज़ारों की संख्या में, लेकिन विश्व की जनसंख्या में उन का अनुपात एक लाख में एक का भी तो नहीं! विश्वस्तरीय क्रान्ति तो केवल क़ौमों (जातियों) के सद्धर्म पर लौटने से ही आ सकती है। क़ौमें क्यों नहीं आतीं?

पिछली रद्दोबदल की हुई किताबों पर मुसलमान कैसे ईमान लाएं? जो स्वयं मूलधर्म पर क़ायम न रहे, वे क़ुरआन में अपनी आस्था कैसे व्यक्त करें?

वे क्या कारण थे जो लोगों को दीने फ़ितरत (स्वभाव नियत कर्म के धर्म) से

दूर ले गए और अन्य मातों को लोगों ने अपनाना शुरू कर दिया? वर्तमान में प्रचलित विभिन्न मत मतान्तरों की अस्ल बुनियाद क्या है? जब तक कारणों का पता नहीं चलेगा, सही पहचान कैसे होगी, उपचार कैसे होगा? क्या मानवता पर मानव के हाथों अत्याचार यूँ ही जारी रहेगा?

क्या अल्लाह के बन्दे (दास) धर्म के नाम पर इसी तरह ख़ून बहाते रहेंगे?

क़ुरआन और हदीस ने जिस की भविष्यवाणी की थी, वह विश्वस्तरीय क्रान्ति कैसे आएगी? क्या वर्तमान काल की पहचान तथा समस्याओं का समाधान क़ुरआन में है?

तलाश ने उस को समाधान प्रस्तुत किया । क़ुरआन ने जवाब दिया–

''निस्सन्देह आदि ग्रन्थों में क़ुरआन का विषय है।'' (क़ु: 26–196)

हदीसों ने उसे बताया :

''अन्तिम युग (कलियुग) में सत्धर्म को पाने वाली क़ौम अपने ही ग्रन्थों में सत्य को पाने के बाद ईमान लाएगी।'' – (अहमद, दारमी, रज़ीन, बेहक़ी)

और फिर वह नहीं रुका । रिसर्च को उसने अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया। अल्लाह का नाज़िल किया हुआ (अवतरित) कलाम जो सदियों के अन्तराल में खो गया था, उसको अल्लाह के अन्तिम और शुद्ध कलाम 'क़ुरआन' की ज्योति में पढ़ा तो दूरियां सिमटती चली गयीं। धूल साफ़ होती गई । हक़ (सत्य) और बातिल (असत्य) स्पष्ट होता चला गया, उसने अपने प्रश्न का उत्तर पा लिया था। फिर चौदहवीं सदी हिज्री के अन्त में 1979 ई० में उसे एक और तीव्र मानसिक आघात लगा । इस बार उपद्रव 'काबे' में हुआ था। 'मेहदी' होने के एक दावेदार ने चौदह दिन तक काबे को पद्दलित किया और चौदह सौ वर्ष में पहली बार काबा, अज़ानों, नमाज़ों और तवाफ़ (परिक्रमा) से वंचित रहा। 'काबा' जिसे उस व्यक्ति के अध्ययन के अनुसार क़ुरआन ही नहीं, बल्कि समस्त ईश्वरीय ग्रन्थ पृथ्वी का पहला घर और ज़मीन की जड़ मानते हैं, उस काबे के लुटने के पश्चात उस की नज़र में मानो क़यामते सुग़रा (नैमित्तिक प्रलय) का आरम्भ हो गया। जब ज़मीन की जड़ हिल गई तो पूरे विश्व में भूकम्प ज़रुर आएगा। उस समय तक वह व्यक्ति एक स्कूल में अध्यापक था लेकिन इस दुर्घटना से उस के पूरे अस्तित्व में एक ज़लज़ला सा आ गया। उस ने फिर सोचा 'उपद्रव, अल्लाह के घर में घुस आया और तुम्हें अपनी रोटी रोज़ी की चिन्ता है!'

नौकरी से उसने निर्धारित समय से पूर्व ही रिटायरमेंट ले लिया और अपना

कुल समय अपने 'स्वामी' को समर्पित करने का फ़ैसला कर लिया। अब समय आ गया था कि पिछले छः वर्षों की अथक मेहनत में ईश्वर ने जो ज्ञान उसे दिया था, उसे दूसरों तक भी पहुंचाए। आमदनी कठिनाई से जीवन यापन के क़ाबिल, लेखन की योग्यता सीमित, उसके दिल का दर्द शब्दों के रूप में प्रकट होता था। वह सड़कों पर निकल खड़ा हुआ। हर परिचित को रोकता था, रो–रो कर मानवता के दर्द की फ़रयाद करता था और घर जाकर अध्ययन एवं शोधकार्य से जो समय बचता था उस में अल्लाह के दरबार में गिड़गिड़ाता था।

आकाश की आँख ने इस बार एक अद्भुत दृश्य देखा। जो लोग उसे अत्यन्त बुद्धिमान व्यक्ति समझते थे, वह दीवाना बताने लगे। जो उस की पारसाई की क़समें खाते थे, वे उसे अवसरवादी और सरकार का पिट्ठू कहने लगे और जिन को कल तक उसके मुत्तक़ी (संयमी) होने का अटल विश्वास था, वे उसे गुमराह (पथभ्रष्ट) कह कर पुकारने लगे। बहुत से लोग सहमत भी हुए, उस की बातें सुनने के लिये उस के पास आना शुरू किया लेकिन उसके 'मिशन' का साथ देना? यह मार्ग तो आशंकाओं, परीक्षा और आज़माइश से परिपूर्ण दिखाई देता था। प्रशंसा और सहानुभूति की हद तक तो ठीक, लेकिन आह्वानकर्ता बनने के लिए सरफ़रोशी की भावना भी आवश्यक थी। इसके लिये वे अभी तैयार नहीं थे।

आज केवल कुछ धुनी लोग ही उस के साथ हैं जिन्होंने उसके मार्गदर्शन में सत्धर्म के लिये अपने आप को समर्पित कर दिया है।

उस व्यक्ति को रामपुरवासी **'शम्स नवेद उस्मानी'** के नाम से याद करते हैं।

–एस० अब्दुल्लाह तारिक़

----❖❖❖----

यह शहादत गहे उलफ़त में क़दम रखना है।
लोग आसान समझते हैं मुसलमाँ होना॥

–मौ० मोहम्मद अली जौहर

धर्मपरायणता का सन्देश

(मौ० शम्स नवेद उस्मानी की एक तक़रीर (प्रवचन) के संपादित अंश)

ह० मोहम्मद सल्ल० की एक हदीस* का अभिप्राय जो मैं ने समझा है उसे अपने शब्दों में बयान करता हूं। हिसाब के दिन एक व्यक्ति को 'समस्त शासकों के शासक' के सामने पेश किया जाएगा। उम्र भर सजदे (साष्टांग) किये थे, माथे पर बड़ा सा निशान पड़ गया था, माला जपते जीवन व्यतीत हुआ था मगर 'मालिक' के स्वभाव को नहीं पहचाना, मानव से प्रेम नहीं किया जो मालिक की सबसे प्रिय रचना है। तो जानते हो क्या होगा?

ईश्वर पूछेगा–''तुम कौन हो? तुम मेरे कैसे दोस्त हो? मैं भूखा था, मैंने रोटी मांगी थी, तुमने रोटी न दी।''

वह कहेगा–''हे प्रभु! यह क्या सुन रहा हूं? मैं ने तो पढ़ा था कि तू खिलाने वाला है, खाता नहीं!''

लीजिये! ज्ञान का खोखलापन सामने आ गया।

जवाब मिलेगा–''हां, लेकिन वह मेरा एक बन्दा जो भूखा था, तुम ने उसे रोटी क्यों नहीं भेजी? अगर उसे देते तो आज मेरे पास पाते।''

मैं इस हदीस का अर्थ यह भी समझता हूं कि–परमेश्वर हम लोगों से पूछेगा ''मैं भटक रहा था, तुमने मुझे रास्ता नहीं बताया?''

लोग कहेंगे–''स्वामी! आप कब भटकते हैं?'' फ़रमाएगा ''मेरे बन्दे भटक रहे थे और पवित्र क़ुरआन की आध्यात्मिक रोज़ी तुम्हारे पास थी। ह० मोहम्मद सल्ल० के पावन

★ महामदी कथन अर्थात ह० मोहम्मद सल्ल० के कथन

चरित्र की जीवन्त तस्वीर तुम्हारे पास थी। कितने इन्सान थे जो सतपुरुष को ढूंढ रहे थे, ज्ञान की वास्तविकता को तलाश कर रहे थे। वह जो भटक रही थी एक 'क़ौम' और ज्ञान को ढूँढती फिर रही थी, अगर तुम उसे देते तो आज मेरे हाथ में पाते।''

विद्या बिना गुरू के व्यर्थ है। तुम्हारे पास क़ुरआन की विद्या है, इसे अल्लाह के रसूल सल्ल० से सीखो, उन की सुन्नत (पद्धति) से समझो।

हमारे साथ रहने वाली क़ौम, हमारे पड़ोसी धर्म को मानने वाली क़ौम के पास भी ज्ञान की एक किताब है। लेकिन बिना गुरू के ज्ञान कुछ नहीं कर सकता।

इस क़ौम के मज़हब में लिखा है–गुरू साक्षात लक्षण होता है, धर्म का व्यावहारिक चित्र होता है, सतपुरुष होता है। इन के धर्म में यह विकार उत्पन्न हो गया कि इन का नबी (ईशदूत) खो गया। हिन्दुओं को यह नहीं मालूम कि इन का पहला धर्म प्रवर्तक कौन था? अत्यधिक धार्मिक क़ौम है, उच्च कोटि का बलिदान करने वाली। तुम तो 'वुज़ू' करते हो सुबह को, वह भी कभी–कभी, वे रात को स्नान करते हैं। जो हिन्दू हैं वे 'मूर्ति' के लिये रात को उठते हैं, तीन बजे और तुम 'ख़ुदा' के लिये सुबह को नहीं उठते! हमारे पास और तो कुछ है नहीं, एक सन्देश है ईश्वर का, और तो सब हम खो चुके। कम से कम यह उन इन्सानों तक पहुंचा दें जो इसे ढूँढ रहे हैं। इस की सहायता से उन का 'सन्देष्टा' ढूँढ कर उन्हें दे दें। प्रातः तीन बजे उठने वाली क़ौम को यदि इस के रसूल (सन्देष्टा) की वास्तविकता मालूम हो जाए, अपने कलिमे (ब्रह्मसूत्र) की असलियत का ज्ञान हो जाए और यह पता चल जाए कि इन का 'असली ख़ुदा कौन है, तो जो 'कृत्रिम ख़ुदा' के सच्चे दास बन सकते हैं वे 'असली ख़ुदा के कैसे उच्चकोटि के भक्त होंगे।

जिस की दावत करना हो, उस के स्वभाव के अनुरूप ही भोजन परोसना पड़ेगा। बकरी को खिलाना हो तो क्या मांस दोगे? हर एक का भोजन अलग है, प्रत्येक क़ौम का धार्मिक भोजन और स्वभाव अलग–अलग है।

इस क़ौम की एक प्रकृति है। यदि इन को विश्वास हो जाए कि कोई इन के ज्ञान से परिचित है और इतना जानता है कि उस को वास्तविक ज्ञान है, तो ज्ञान के आगे शीश झुका देंगे, झुटलाएंगे नहीं। किन्तु यह अवश्य देखेंगे कि ज्ञान पहुंचाने वाला प्रेम भाव से सेवा कर रहा है या व्यापार कर रहा है। निष्कपटता के बिना न ख़ुदा स्वीकार करता है और न ही बन्दा (सेवक), निष्काम योग चाहिये। सकाम योग पर धिक्कार. ..बन्दे की ओर से भी और ख़ुदा की तरफ़ से भी–सच्ची मित्रता का आश्वासन दिलाना होगा लेकिन सच्चे मन के साथ।

क़ुरआन पिछले धर्मों को धोने वाला है। हर धोने वाले का एहसान माना जाता है। लेकिन इस धोने वाले का नहीं मानते! क्योंकि हम ने यह सिद्ध ही कब किया है कि दूसरों के ज्ञान को क़ुरआन ने धोया है। किसी के ज्ञान को धोकर तो दिखाओ कि ***'एकं एवं अद्वितीयं'' (एक है और दूसरे की साझेदारी के बिना है)***, यह 'ब्रह्म सूत्र' कहलाता है–'कलिमा' कहलाता है। हम मुसलमान कलिमे के बग़ैर मुसलमान नहीं हो सकते–आप हिन्दू कैसे हो गए? अगर मैं ***'ला इला–ह इल्लल्लाह'*** का इनकार कर दूं, नास्तिक हो जाऊंगा। तुम अपने ब्रह्म सूत्र को माने बिना हिन्दू कैसे हो?

मैं ने एक हिन्दू भाई से कहा ***''एकं ब्रह्म द्वितीय नास्ति नेह ना नास्ति किंचन''*** (एक ही ख़ुदा है दूसरा नहीं है, नहीं है–अंशभर भी नहीं है) पहले इस में आस्था रखो तब ही तो 'हिन्दू होगे। यह तो वेदान्त का ब्रह्म सूत्र है और हम इसे पढ़ रहे हैं।

मैंने उनसे कहा मैं इसे पढ़ता हूं–***'एकं ब्रह्म द्वितीय नास्ते'*** ' अब मैं इसे दूसरी भाषा में पढ़ता हूं– "***There is no god but God. One without second***" फिर इसे एक और भाषा में पढ़ता हूं–''***लाइला–ह–इल्लल्लाह***''। मैंने तीन भाषाओं में ईश्वर की गवाही दी, तीन बार पुरस्कार मिलेगा। मुफ़्ती इलयास साहब बैठे थे, उन्होंने भी पढ़ा। मौलाना इस्माईल बैठे थे, उन्होंने भी पढ़ा। अब मैंने उस हिन्दू भाई से कहा, ''क्या इस में कोई अन्तर है?'' कहा–''कुछ नहीं''! मैंने कहा, ''क्या आप अरबी में पढ़ सकते है? जैसा कि हम सबने संस्कृत में डट कर पढ़ा।'' उसने कहा ''क्यों नहीं''? उसने कलिमा पढ़ा।

आज का युवा खुले ज़हन का है। लेकिन ज्ञान के प्रकाश में ही ज्ञान की बात करो– क़ुरआन से धो कर सिद्ध करो।

मैं एक हिन्दू ज्ञानी के पास गया। मैंने कहा ''आप के पास लोग मूर्तियां देखने आते है, यात्रा पर। बताइये हमारे बारे में क्या विचार है आप का? हम किस लिये आए हैं? हम भी एक मूर्ति की वजह से आए हैं।''

कहने लगे–''आप के यहां तो मूर्ति नहीं मानी जाती।'' मैंने कहा–''आप स्वयं मिट्टी से बने है। यह ईश्वर ने आप की मूर्ति बनाई है। मैं अपने ईश्वर की बनाई हुई मूर्ति के दर्शन करने आया हूं। आप के धर्म में यह आदेश है कि नासिका (नाक) के अगले भाग पर दृष्टि जमाओ और किसी ओर न देखो। हर उस जगह देखा जा रहा है जहां देखने से रोका गया था और उस जगह देखने को तैयार नहीं जहां कहा गया था।''

मैंने कहा–''हम सजदे (साष्टांग) मे इसी नाक की ओर दृष्टि जमाते हैं। अपनी मूर्ति को देख कर वह 'मूर्तिकार' याद आ जाता है। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ईश्वर का एक मन्दिर है, मस्जिद है, जो चाहें कह लें। इस में ईश्वर की बनाई हुई मूर्तियां हैं। इन को देख कर ईश्वर याद आ जाता है। हम जो बनाएंगे, उसे देख कर हम याद आएंगे, हर वस्तु अपने निर्माता की याद दिलाती है। उस खुदा की बनाई हुई अपने शरीर की मूर्ति की नाक के अगले भाग पर दृष्टि जमा कर हम यह सोचते हैं कि इस जीवित मूर्ति को बनाने वाले हे मूर्तिकार! हमारा पूज्य तो तू है और इस को पवन से पालने वाले! हमारा प्रभु तो तू है और इस वायु को रोक कर मारने वाले! तू ही हमारे प्राणों का स्वामी है। तू ही हमारा '**ब्रह्मा**' है– हमें जन्म देने वाला है, हमारा '**विष्णु**' भी तू ही है– हमें पालता है; और तू ही हमारा '**शिव**' है– हमें मृत्यु देता है। तू ही हमारा कर्ता है, तू ही हमारा भर्ता है और तू ही हमारा संहर्ता है। तेरे ही हाथ में जन्म, तेरे ही हाथ में जीवन और तेरे ही हाथ में मृत्यु है।

यह जो कहा तो वह अत्यन्त भावुक और सजलनयन हो गए।

जिसने पड़ोसी का हक़ अदा नहीं किया, हुज़ूर (सल्ल०) ने सौगन्ध खा कर कहा था कि वह मुसलमान नहीं। पालने का कर्तव्य हमारा नहीं, लेकिन जो हम कर सकते हैं वह करें। एक रोटी है तो आधी वाजिब हो गई। यदि केवल एक 'कलिमे' की बात बताने का सामर्थ्य है तो इतना ही कर दें। अगर इतना कर सकते हैं कि दो चार वेदान्त की गुत्थियां खोल दें तो यह करें। लेकिन अगर आप अपने लिये ठीक कर रहे हैं और पड़ोसी को नहीं दे रहे हैं तो आप की आधी रोटी हराम (वर्जित) हो गई। पड़ोसी में मज़हब का प्रतिबन्ध नहीं।

क़ौमें, क़ौमों की पड़ोसी होती हैं। धर्म, धर्म का हमसाया होता है। पूरी दुनिया तुम्हारी ओर देख रही है–कर्तव्य का पालन करो!

----❖❖❖----

यह दौर अपने बराहीम की तलाश में है।
सनमकदा है जहाँ लाइला-ह-इल्लल्लाह।।
–इक़बाल

प्रस्तुति से पूर्व

अलहम्दो लिल्लाह (सारी प्रशंसाएं बस अल्लाह के लिये हैं), मौलाना शम्स नवेद उस्मानी के पन्द्रह वर्षीय चिंतन–मनन एवं अध्ययन के एक खंड का सारांश आप की सेवा में प्रस्तुत है। इन लेखों का क्रम उर्दू साप्ताहिक 'अखबारे नौ–नई दिल्ली' में धारावाहिक आरम्भ हुआ था। इन की लोकप्रियता और उपादेयता को देखते हुए आवश्यक संशोधनों और विस्तारण के बाद हमारी यह कोशिश हाज़िर है।

मैं न साहित्यकार हूं और न लेखक–अपनी अल्पज्ञता के साथ यह खयाल भी आता है कि सम्बोधित लोगों की बड़ी संख्या विभिन्न मस्लकों (मतों) से सम्बन्धित उन व्यक्तियों पर आधारित है जिन से एक मज़हब में रहते हुए परस्पर सहयोग की आशा तो दूर की बात है, उन में से हर एक ने अपने–अपने तरीक़े को ही धर्म का स्थान दे रखा है। यदि अर्न्तयामी ईश्वर की अनन्त कृपा हमारे साथ न होती और अपने बहुत से साथियों का निरन्तर सहयोग प्राप्त न होता तो मैं कदापि इस क़ाबिल न था कि मौलाना की सेवाओं को लिखित रूप में क्रमबद्ध कर सकता जिन को मैंने पिछले एक वर्ष के दौरान उन की विभिन्न वार्ताओं के टेप्स, उन के लिखाए हुए नोट्स, दृष्टान्तों और मौखिक व्याख्याओं की सामग्री में से एकत्रित किया है।

इस पेशकश में अगर कुछ हिस्से अस्पष्ट रह गए हों तो यह त्रुटि मौलाना के अध्ययन और शोध कार्य की नहीं बल्कि लिखने वाले की सीमित योग्यताओं पर इस का संपूर्ण दायित्व है।

यह स्पष्टीकरण भी ज़रूरी है कि इन लेखों का उद्देश्य न तो साधारण मुसलमानों को वेद पढ़ने के लिये प्रेरित करना है और न ही दिलचस्प जानकारी एकत्रित करना; बल्कि आह्वान के उस पहलू की ओर ध्यान आकर्षित करना मूल उद्देश्य है जिस की तरफ़ अभी तक समुचित ध्यान नहीं दिया जा सका है। यदि कुछ हृदयों में हम 'वास्तविक काम' करने की हल्की सी लगन भी पैदा कर सके, तो यह हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य होगा।

ईश्वर हमारी मेहनत को स्वीकार करे और हमारे उन सभी सहयोगियों एवं

शुभचिन्तकों को अज्र (प्रतिकार का दान) दे जिन के अमूल्य सहयोग का साक्षी इस किताब का प्रत्येक शब्द है–'आमीन' !

–एस० अब्दुल्लाह तारिक़

दो शब्द

"अगर अब भी न जागे तो ..." का हिन्दी अनुवाद कई वर्ष पहले लगभग पूरा हो चुका था और स्व० शम्स साहब (चचा मियां) की यह तीव्र अभिलाषा थी कि हिन्दी व अंग्रेज़ी संस्करण जल्द से जल्द प्रकाशित हो; लेकिन कुछ विपरीत परिस्थितियां इस पुनीत कार्य में बाधक बनी रहीं। ईश्वर की कृपा से कुछ समय पूर्व किताब छापने का पक्का इरादा कर लिया गया और मैंने एक बार फिर अनुवाद का अवलोकन किया तथा कुछ हिस्से संशोधन के बाद टाइप के लिए तैयार हो गए। पच्चीस अगस्त 1993 को अचानक ही प्रातःकाल ईश्वर की ओर से उन की वापसी का निमन्त्रण आ गया और मुझे ग़मगीन दिल से उनके नाम के साथ 'स्वर्गीय' शब्द को बढ़ाना पड़ा। बेशक हमेशा जीवित रहने वाला अस्तित्व केवल 'अल्लाह' का है। हम सभी उस के फ़ैसले पर पूरी तरह राज़ी (सहमत) हैं।

सब कहाँ, कुछ ला-लओ गुल में नुमायाँ हो गईं।
ख़ाक में, क्या सूरतें होंगी कि पिनहाँ हो गईं।।

इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस का मूल कारण यह है कि शम्स साहब के लिए इससे बड़ी श्रद्धांजलि कोई नहीं हो सकती कि उनके काम को आगे बढ़ाया जाए और मुझे यह यक़ीन है कि उन्होंने मानवता की भलाई के लिये जो स्वप्न देखे थे, उन को साकार करने में यह संस्करण एक महत्वपूर्ण कड़ी सिद्ध होगा।

– जावेद अन्जुम

-----❖❖❖-----

अध्याय : 1

इन्क़िलाब की भविष्यवाणी

काबे का अपमान :

बैतुल मक़्दस पर यहूदियों के अतिक्रमण की खेदपूर्ण घटना पर प्रतिष्ठित विद्वान मौलाना सय्यद अली मियां ने निम्नलिखित शब्दों में अपनी संवेदना प्रकट की थी:

(उर्दू से अनुवाद) **"यह शर्मनाक पराजय और सारी दुनिया के सामने बदनामी आख़िर क्यों हुई? जबकि कल तक नुसरते इलाही (ईश्वर की सहायता) उन के साथ में थी, चमत्कार प्रकट होते थे, दिव्य सेनाएं उन के लिये उतरती थीं।"** [1]

उस दिन से आज तक विश्व के समस्त मुसलमान हाथ उठा कर फ़रयाद कर रहे हैं कि हे परमेश्वर! क़िब–ल–ए अव्वल* हमें वापस दिला दे, लेकिन प्रार्थनाएं ख़ाली वापस आ रही है। शायद सहायता आना सचमुच बन्द हो गई! हालात विपरीत होते चले गए यहां तक कि बैतुल हराम (काबा) का अपमान भी आरम्भ हो गया। पहली मुहर्रम 1400हिज्री (20नवम्बर 1979) का अशुभ दिन मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह क़हतानी के मेहदी# होने के दावे से आरम्भ हुआ और आने वाले पन्द्रह दिन 1400 वर्षीय इस्लामी इतिहास का 'अन्धकारमय युग' बन गए जिन में बैतुल हराम, मानव के रक्त से नहलाया जाता रहा। काबे की दीवारें गोलियों से छलनी होती रहीं और निरन्तर पन्द्रह दिन तक काबा नमाज़, अज़ान और तवाफ़ (परिक्रमा) से वंचित रहा। इन पन्द्रह दिनो मे विश्व के मुसलमानो की निगाहे अदृश्य सेनाओ की प्रतीक्षा मे आकाश को निहारती रही। पहले भी तो ईश्वर के दरबार की ओर से अपने घर की सुरक्षा के लिये अबरहा☆ के लश्कर को नष्ट करने के लिये सहायता आई थी; इस बार अबाबील

* मुसलमानो का पहला क़िबला जो यरोशलम मे है, जिसे बैतुल मक़्दस कहते हैं।
\# एक युगान्तरकारी रहस्यमय व्यक्तित्व जो ह० मोहम्मद सल० का सहनामी होगा और जिसके आने की भविष्यवाणी स्वयं हुज़ूर (सल्ल०) ने सांकेतिक भाषा मे की है।
☆ एक राजा जिसने काबे पर आक्रमण किया था।

(काली चिड़िया) की सेना न आई। ईश्वर का दूत (सल्ल०) 1400 वर्ष पहले ही बता चुका था कि इस घर के पासबान(द्वारपाल) ही जब मर्यादा भंग करने पर उतर आएं तो रस्सी में ढील दे दी जाएगी और उन्हें अपने आमालनामे (कर्म लेखा) पर अतिरिक्त कालिमा पोतने का अवसर दिया जाएगा। निस्सन्देह, विश्व नेतृत्व के पद के योग्य वे न रह जाएंगे।

''ह० अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि वह व्यक्ति रुक्न (ह–जरे–अस्वद)* और मक़ाम (मक़ामे इब्राहीम) के बीच बैअत (शपथ) लेगा और इस घर का अपमान इस के घरवालों के अतिरिक्त कोई नहीं कर सकेगा। फिर जब इस की मर्यादा भंग हो जाए तो यह मत पूछना अब अरबों का विनाश कब होगा।''2

यह रिवायत 'अरज़की' ने भी 'तारीखे मक्का' में दर्ज की है और 'हाकिम' ने इसे शुद्ध हदीस ठहराया है।

काबे की दुर्घटना का पन्द्रह दिवसीय इतिहास साक्षी है कि नक़ली मेहदी ने हजरेअस्वद और मक़ामे इब्राहीम के बीच अपनी शपथ ली थी। एक और हदीस देखिये:

''ह० अबू हुरैरा रज़ि० का कथन है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से जो सत्यवादियों के अखंड सत्यवादी थे, सुना कि आप ने फ़रमाया–मेरी उम्मत (पंथ) क़ुरैश के सर फिरे नौजवानों के हाथों विनष्ट होगी।''

–(बुखारी–किताबुल फ़ितन)

घटनाएं साक्षी हैं कि काबे कि दुर्घटना के ज़िम्मेदार व्यक्तियों की टोली में शामिल सभी नौजवान थे जो बीस से बाईस बर्ष की आयु वर्ग के थे। इतना ही नहीं, इस क़यामते सुग़रा (भौमिक प्रलय) के प्रारम्भ का माध्यम कौन व्यक्ति बनेगा, यह भविष्यवाणी भी की जा चुकी थी।

''ह० अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया–क़यामत (प्रलय) उस समय तक नहीं आएगी जब तक 'क़हतान' से एक व्यक्ति प्रकट न हो लेगा जो लोगों को अपने सोंटे से हांकेगा।'' 3

मौ० अहमद अली सहारनपुरी ने बुख़ारी शरीफ़ की इस हदीस के फ़ुटनोट में लिखा है :

''इन्सानों को जानवरों के झुंड की तरह हंकाने का अभिप्राय उन्हें वश में करना है जिस का संकेत सरकार एवं सत्ता की ओर हो सकता है।''4

* एक पवित्र काला पत्थर जो काबे की दीवार में लगा हुआ है और जिसे तीर्थ यात्री चूमते हैं।

निरन्तर अज़ाब (दिव्य प्रकोप) :

मौ० अली मियां का यह विश्लेषण कि अल्लाह की मदद का आना बन्द हो गया, क्या विश्व के समस्त मुसलमानों के लिये ज़बरदस्त झटका नहीं है और रसूले अकरम सल्ल० की इस भविष्यवाणी पर कि 'अपनों के हाथों 'बैतुल हराम' की बेइज्ज़ती के बाद अरबों का विनाश आरम्भ होगा', यदि हम आस्था रखें तो क्या यह खबर विश्व स्तर पर बहुत बड़े परिवर्तनों की चेतावनी देने वाली नहीं है? पूरे विश्व के मुसलमानों की दुर्दशा की कहानी पर एक नज़र डालिये।

मुसलमान न केवल आज उन देशों में जहां वे अल्पसख्यक हैं, बल्कि मुस्लिम बहुसंख्यक देशों में भी इबादतगाहों की असुरक्षा, जान–माल, मान–मर्यादा, राजनैतिक और आर्थिक हर प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है। भोपाल की गैस त्रासदी जबलपुर, जमशेदपुर से आरम्भ होने वाले साम्प्रदायिक दंगों का अन्तहीन क्रम, बाबरी मस्जिद के विध्वंस की कष्टसूचक घटना, फ़िलपाइन, चीन, रूस, मंगोलिया के मुसलमानों पर घोर अत्याचार, पाकिस्तान के जातीय दंगे, इस्राईल के हाथों दस गुनी अधिक सख्या वाले अरबों का रौंदा जाना, अरबों के फ़िलिस्तीनियों पर अत्याचार और फिर फ़िलिस्तीनियों का आपस में एक दूसरे को हलाक करना, तुर्की, मिस्र, सीरिया, लीबिया, अलजीरिया, इडोनेशिया और मलेशिया में बहुत बड़े पैमाने पर इस्लामी सगठनों से संबद्ध व्यक्तियों पर अत्याचार, अफ़गानिस्तान के मुसलमानों का शोक व प्रलाप, ईरान व इराक के दस वर्ष चलने वाले युद्ध में काम आने वाले अनगिनत लोग, इथोपिया व सूडान का भयानक अकाल, यूरोप, अफ़्रीका व एशिया की समस्याओं से ग्रस्त मुसलमान! दुर्दशा की यह तस्वीर क्या दर्शा रही है?

''ह० सौबान मौला रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि क़रीब है कि और उम्मतें (पंथ) तुम्हारे ऊपर निरन्तर आएंगी जैसे खाने वाले, कटोरे पर आते हैं। एक व्यक्ति ने कहा कि हम लोग शायद उस ज़माने में कम होगे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया–''नहीं, तुम उस ज़माने में बहुत बड़ी संख्या में होगे, लेकिन तुम ऐसे होगे जैसे दरिया के पानी पर झाग। अल्लाह तआला तुम्हारे भय को दुश्मनों के दिलों से निकाल देगा और तुम्हारे दिलों में सुस्ती डाल देगा। एक व्यक्ति बोला कि हे रसूलुल्लाह (सल्ल०)! सुस्ती क्यों होगी? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया संसार से मोह तथा मृत्यु के भय से।''5

क्या व्यापक स्तरीय यातना अभी शेष हैं?

व्यापक रूप से होने वाले अपमान के इस युग को आज हम 'अज़ाब' का नाम देते है। लेकिन यह परिस्थितिया अगर विपत्ति का केवल प्रारम्भ मात्र हुई तो? यदि ईश्वर द्वारा भेजी गई यातनाएं इस से भी भयकर हुई तो? पिछली अवज्ञाकारी कौमो

पर जब प्रकोप आया तो वे जीवन पटल से मिटा दी गईं। क्या उम्मते मोहम्मदी (मोहम्मद सल्ल० का पंथ, मुसलमान) को इस अंजाम से डरने की ज़रूरत नहीं है? दिव्य क़ुरआन से मालूम कीजिये :

''वह आकाश से धरती तक हर कार्य की व्यवस्था करता है (फिर यह (कार्य की व्यवस्था) उस के पास एक दिन में लौटेगी जिस की मिक़दार (अवधि) तुम्हारी गणना से एक हज़ार वर्ष की होगी'' — (क़ु: 32–5)

बहुत से मुफ़स्सिरीन (भाष्यकार) इस आयत से क़यामत (महाप्रलय) के दिन का तात्पर्य लेते हैं; यद्यपि सूरए मआरिज में क़यामत के दिन की अवधि ***''यौमिन का–न मिक़दारुहू ख़म्सी–न अल्–फ़ स–नतिन''*** के शब्दों में वर्णित हुई है यानी वह एक दिन तुम्हारे पचास हज़ार वर्ष के बराबर होगा। ईश्वर का आदेश लागू होने वाला एक दिन दिव्य क़ुरआन ने एक हज़ार वर्ष के बराबर बताया है।

इस 'एक दिन' की व्याख्या सूरए हज्ज की आयात 46, 47 व 48 में देखिये:

''सो क्या यह लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि इन के दिल ऐसे हो जाते जिन से यह समझने लगते या कान ऐसे हो जाते जिन से यह सुनने लगते। वास्तविकता यह है कि आंखें अन्धी नहीं हो जातीं बल्कि दिल जो सीनों में हैं वे अन्धे हो जाया करते हैं और (हे मोहम्मद) आप से यह लोग अज़ाब (यातना) की जल्दी मचा रहे हैं (अर्थात अज़ाब की ख़बर पर विश्वास नहीं कर रहे हैं) यद्यपि अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करेगा और आप के परमेश्वर के पास एक दिन एक हज़ार वर्ष के बराबर है, तुम लोगों की गिनती के अनुरूप। और कितनी ही बस्तियां थीं जिन्हें मैंने मुहलत प्रदान की थी और वे नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) थीं। फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया और मेरी तरफ़ (सबकी) वापसी है।''

'सूरए सबा' की 29 व 30 वीं आयतें भी देख लीजिये :

''और कहते हैं कि वादा कब पूरा होगा। कह दीजिये कि तुम्हारे लिये एक दिन का वादा है। उससे न एक घड़ी पीछे हट सकते हो और न (एक घड़ी) आगे बढ़ सकते हो।''

तीनों जगह की आयतों को सामने रख कर चिन्तन करने की आवश्यकता है। क्या इन से यह स्पष्ट नहीं होता कि अल्लाह, पृथ्वी पर जो तदबीर (व्यवस्था) लागू करता है, वह उस को अपने एक दिन या हमारे एक हज़ार वर्ष के बाद उठा लेता है और फिर नई व्यवस्था भेजता है। जो लोग यह समझ रहे हैं कि अज़ाब केवल पिछली

उम्मतों के लिये थे और अब क़यामत तक के लिये मुहलत है, वे यह जान लें कि एक हज़ार वर्ष की अवधि का अल्लाह का वादा है।

अभी जल्दी न कीजिये–यह न पूछिये कि एक हज़ार वर्ष तो बीत चुके, मुहलत इस के बाद भी क्यों मिली हुई है? 'अबूदाऊद' की निम्नलिखित हदीस पर दृष्टिपात कर लें :

''ह० सअद बिन वक़ास रज़ि०, नबी करीम (सल्ल०) से रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया: निश्चित रूप से मैं उम्मीद रखता हूं कि मेरी उम्मत अपने पालनकर्ता की नज़र में इतनी असहाय और तुच्छ नहीं हो जाएगी कि उस का 'पालनकर्ता' उस को आधे दिन की भी मुहलत प्रदान न करे।

ह० सअद बिन वक़ास रज़ि० से पूछा गया कि आधा दिन कितना होता है? उन्होंने जवाब दिया कि पांच सौ वर्ष।''

शेख़ जलालुद्दीन स्योती रह० की रिसर्च के अनुसार संसार में यह उम्मत आँहज़रत (सल्ल०) के विसाल (देवलोक गमन) के बाद पन्द्रह सौ वर्ष तक रहेगी।*

निश्चित अवधि के पश्चात अतिरिक्त मुहलत का उल्लेख 'सूरए अश्शुअरा'–आयात 204 से 209 में किया गया है।

क़ौम के परिवर्तन की चेतावनी :

अब यहां एक गम्भीर चिन्तन का विषय यह है कि हर नबी के आने के बाद उस की उम्मत का यह कर्तव्य होता है कि ईश्वर के भेजे हुए नवीनतम ज्ञान के मार्गदर्शन में पिछली समस्त क़ौमों के उद्धार के लिये खड़ी हो। यही **'विश्व नेतृत्व'** का पद कहलाता है। ह० मोहम्मद सल्ल० के अवतरण के साथ ही बनी इस्राईल (यहूदी क़ौम) को अपदस्थ करके 'उम्मते मोहम्मदी' को क़यामत तक विश्व की जातियों की अगुआई प्रदान की गई थी। अब रहती दुनिया तक कोई नया रसूल (सन्देष्टा) नहीं आना था और मोहम्मद सल्ल० की उम्मत को ही दुनिया के बिगाड़ को दूर करने का काम पूरा करना था। क्या उम्मत अपनी वर्तमान शोचनीय दशा में इस मन्सब के योग्य है?

लेकिन नेतृत्व का पद तो इसी उम्मत का रहना चाहिये क्यों कि रसूले अकरम (सल्ल०) 'ख़ा–त–मुन्नबिय्यीन' (अन्तिम सन्देष्टा) हैं!

तमाम कड़ियां फिर एकत्रित कीजिये!

* यह स्पष्टीकरण अल्लामा नवाब क़ुतबुद्दीन ख़ाँ रह० देहलवी ने 'मिशकात शरीफ़' के अध्याय क़ुरबस्साअत: में दर्ज इस हदीस के उर्दू भाष्य में की है।

उम्मते मोहम्मदी पर पन्द्रह सौ वर्ष बाद अज़ाब की चेतावनी, काबे की अप्रतिष्ठा के बाद अरबों के (आध्यात्मिक) विनाश की खबर, अपदस्थता के पूरे संकेत–लेकिन विश्व का नेतृत्व फिर भी ज्यों का त्यों!

लिखते हुए कलम काँपता है। लेकिन क्या यह तमाम सूचनाएं एक ही बात की ओर संकेत नहीं कर रही हैं?

'क़ौम का परिवर्तन'–जिस की कई जगह पवित्र कुरआन ने भविष्यवाणी की है–अर्थात मोहम्मद सल्ल० की उम्मत, विश्व के नेतृत्व की पुन: योग्य बनेगी। एक दूसरी क़ौम के सत्धर्म स्वीकार करने के रूप में।

क़ौम के परिवर्तन से सबन्धित कुछ आयतों का अनुवाद देखिये :

''यदि वह चाहे तो है लोगों तुम (सब) को ले जाए और दूसरों को ले आए, और अल्लाह इस का सामर्थ्य रखता है।'' – (क़ु० : 4–133)

''यह इस वजह से है कि अल्लाह किसी वरदान को जो उस ने किसी क़ौम को प्रदान किया हो, नहीं बदलता जब तक कि वही लोग उस को न बदल दें। जो कुछ उन के पास है, निस्सन्देह अल्लाह ख़ूब सुन्ने और जानने वाला है।'' –(क़ु०: 8–53)

''सो तुम में से कुछ वे हैं जो कंजूसी करते हैं (अर्थात धन सम्पत्ति के मोह में गिरफ्तार हो गए हैं) यद्यपि तुम को ईश्वर की राह में खर्च करने के लिये बुलाया जाता है। और जो कोई कंजूसी करता है स्वयं अपने ही साथ कंजूसी करता है। और अल्लाह तो किसी का मुहताज नहीं है, बल्कि तुम सब उस के मुहताज हो। और यदि तुम विमुख हो जाओगे तो ईश्वर तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम ले आएगा, फिर वह तुम जैसे न होंगे।'' –(क़ु० : 47–38)

''और उन (उम्मियों) में से आख़रीन* (के लिये भी आप सल्ल० को भेजा) जो अभी उन (पहलों) में शामिल नहीं हुए हैं और वह (अल्लाह) प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।'' – (क़ु० : 62–3)

''हे ईमान वालो! तुम में से जो कोई अपने दीन से फिर जाए तो अल्लाह शीघ्र ही एक ऐसी क़ौम को ले आएगा जो अल्लाह से प्रेम करते होंगे और अल्लाह उन से प्रेम करता होगा। वह आस्तिकों पर दयालु होंगे और नास्तिकों के मुक़ाबले पर कठोर होंगे, और वे अल्लाह की राह में जिहाद (धर्म–संघर्ष)

* बाद के युग में आने वाले

करेंगे और किसी आलोचक की आलोचना से नहीं डरेंगे। यह अल्लाह का अनुग्रह है वह जिसे चाहे प्रदान करे, और अल्लाह बड़े विस्तार वाला और बड़े ज्ञान वाला है।'' – (क़ु०: 5–54)

''यदि तुम न निकलोगे तो अल्लाह तुम्हें एक दुख देने वाली यातना देगा और तुम्हारे बदले एक दूसरी क़ौम ले आएगा और तुम उसे कुछ हानि न पहुंचा सकोगे और अल्लाह हर चीज़ का सामर्थ्य रखता है'' – (क़ु० : 9–39)

क्या नऊज़ो बिल्लाह (हम ईश्वर की शरण चाहते हैं) यह बार–बार दूसरी क़ौम को लाने की चेतावनी 'भेड़िया आ गया' वाली पुकार है? बेशक! ईश्वर का वादा अटल सत्य है। हम और आप कितना ही चाहें ईश्वरेच्छा में परिवर्तन नहीं कर सकते। हां, यह प्रयास करना हमारा कर्तव्य है कि यातना में पकड़े जाने वाले लोगों में हम शामिल न हों और जिस क़ौम को अल्लाह, मोहम्मद सल्ल० की उम्मत के दूसरे हिस्से के रूप में क़ौमों के नेतृत्व की पदवी से अलंकृत करेगा, उस क़ौम के ईमान लाने में हमारे प्रयास भी शामिल हों।

शर्त यह है कि हम यह जान लें कि ऐसी सौभाग्यशाली कौन सी क़ौम हो सकती है। रसूल (सल्ल०) की सुन्नत से तो हमें यही मार्गदर्शन मिलता है, अवलोकन कीजिये

''...जब ह० अबूज़र गिफ़ारी रज़ि० को मक्के में आँहज़रत (सल्ल०) के हाथ पर इस्लाम लाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया मुझे एक ऐसी सरज़मीन की पहचान कराई गई है जहां नखलिस्तान (मरुजल) हैं और मैं समझता हूं कि वह जगह यसरिब (मदीना) के अतिरिक्त कोई और नहीं है। क्या तुम मेरा सन्देश अपनी क़ौम में पहुंचाओगे? शायद कि वह उन को लाभ पहुंचाए और तुम्हें भी इस का अज्र (प्रत्युप्कार) मिले।''[6]

पता यह चला कि अगर पहले से यह ज्ञात हो जाए कि अमुक जाति सत्धर्म को स्वीकार करने वाली है, तो उनमें काम करने में पहल करने वालों के लिये विशिष्ट ईश्वरीय वरदान है।

क्या हम अल्लाह की सूची में मोमिन (आस्तिक) हैं?

आगे बढ़ने से पहले अपने मन से इस भ्रम को निकाल दें कि *'लाइलाह इल्लल्लाह'* केवल ज़बान से कह देने भर से हम स्वर्ग के अधिकारी हो गए। यही तो यहूदी कहा करते थे कि हम यदि नरक में गए भी तो थोड़ी सी अवधि के लिये और अपने पापों की सज़ा के बाद सदा के लिये स्वर्ग में आ जाएंगे।

एक सर्वसम्मत हदीस है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया : **''तुम लोग हू-ब-हू पिछली उम्मतों की तरह हो जाओगे।''** सहाबियों ने पूछा **''पिछली उम्मतों से तात्पर्य क्या यहूदी और नसरानी (ईसाई) हैं?''** आप (सल्ल०) ने **फ़रमाया-और कौन?''**

कोई नहीं जानता कि ईश्वर की दृष्टि में हम में से कितने 'मोमिन' हैं और कितने 'मुनाफ़िक़' (कपटाचारी या पाखण्डी) और कितने अपने व्यवहार से कुफ़्र करने वाले? मुनाफ़िक़ की परिभाषा समझने के लिये ह० उमर रज़ि० की मिसाल लीजिये।

अपने शासन काल में आप एक दिन **'साहिबे सिर्रे रसूल सल्ल०'** * ह० हुज़ैफ़ा रज़ि० का द्वार खटखटाते हैं चेहरा धुआं धुआं है। ह० हुज़ैफ़ा से फ़रमाते हैं : ''ईश्वर की सौगन्ध खा कर कहो जो मैं पूछूगा सच बताओगे।'' ह० हुज़ैफ़ा ने विनम्रता से कहा: ''पूछें अमीरुल मोमिनीन!'' कहा-''नहीं, ईश्वर की सौगध खाओ कि सच सच जवाब दोगे।'' फिर अत्यन्त व्याकुल होकर प्रश्न किया कि ''तुम्हें अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मदीने के सभी मुनाफ़िक़ों के नाम बताए थे। सच कहना इन में मेरा नाम तो नहीं है?''

अल्लाहो अकबर! सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० जिन को दुनिया में ही स्वर्ग प्राप्ति की शुभसूचना दी जा चुकी है, उनको अपने मुनाफ़िक़ होने का भय है। फ़रमाते थे:

''ईमान, भय और आशा के बीच की मनःस्थिति का नाम है। अगर मुझे मालूम हो जाए कि संसार के तमाम लोग स्वर्ग में प्रवेश करने वाले हैं, एक व्यक्ति के अतिरिक्त, तो मुझे भय रहेगा कि 'वह व्यक्ति' मैं ही हूं और यदि एक व्यक्ति के अतिरिक्त तमाम लोग नरक में डाले जा रहे हों तो मैं अल्लाह की करुणा से यह आशा रखूंगा कि 'वह व्यक्ति' मैं ही हूं।''

ज़रा सोचिये तो सही! ईमान और निफ़ाक़ (पाखण्ड) की कसौटी यदि इस का दसवां भाग भी ठहरायी जाए तो मुस्लिम उम्मत में कितने मोमिन निकलेंगे? और मुनाफ़िक़ों को क़ुरआन ने नरक के सब से निचले दर्जे की सूचना दी है (सूरए निसा: 145)

वह कौन सी क़ौम हो सकती है?

अब आइये उस क़ौम की तलाश करें जिसे परवरदिगार क़ौमों के नेतृत्व के

★ ह० मोहम्मद सल्ल० के हमराज़

पद पर आसीन करना चाहता है। यदि अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) ने इस घटनाक्रम की समय सीमा निर्धारित करने की दिशा में मार्गदर्शन किया है तो निश्चित रूप से उस क़ौम के लक्षण भी बताए होंगे। इस सन्दर्भ में जिन आयतों के अनुवाद ऊपर दिये जा चुके हैं, उन की विभिन्न तफ़सीरों (भाष्य) का अवलोकन करें :

'सूरए मोहम्मद' की आयत:38 के सन्दर्भ में अब्दुर्रज़्ज़ाक़, अब्द बिन हमीद, तिर्मिज़ी, इब्ने जरीर, इब्ने अबी हातिम, तिबरानी और बेहक़ी ने ह० अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत की है कि उन्होंने कहा : हुज़ूर (सल्ल०) ने यह आयत तिलावत (पाठ) फ़रमाई-''और अगर तुम पीठ फेरोगे ...'' तो सहाबियों ने पूछा-''या रसूलुल्लाह (सल्ल०) आख़िर यह कौन लोग हैं जो उस समय हमारी जगह बदल कर आएंगे जब कि हमने पीठ फेर दी हो (और यह भी कि वह हम जैसे न होंगे।'' तब हुज़ूर (सल्ल०) ने ह० सलमान फ़ारसी (ईरानी) रज़ि० के कन्धे पर थपकी दी और फ़रमाया-''यह है वह और इस की क़ौम है वह! और सौगन्ध है उस ख़ुदा की जिस के क़ब्ज़े में मेरे प्राण हैं, यदि ईमान सुरय्या* पर चला जाएगा तो ईरान के यह लोग वहां तक उसे ढूंढते हुए पहुंच जाएंगे।''[7]

सूरए जुमा की आयत (3) के अन्तर्गत भी इसी विषय की रिवायत 'बुख़ारी' में आई है।

'सूरए माइदा' की आयत (54) के सन्दर्भ में क़ुरआनी भाष्य-**'फ़तहुल क़दीर'** में हमें जो रिवायतें मिली हैं, उन को हम यहां नक़ल कर रहे हैं :

''इब्ने जरीर ने शुरैह बिन उबैद से रिवायत की है कि उन्होंने कहा कि जब अल्लाह ने यह आयत नाज़िल (अवतरित) की तो ह० उमर रज़ि० ने प्रश्न किया-या रसूलुल्लाह सल्ल०! क्या मैं और मेरी क़ौम से अभिप्राय है? फ़रमाया- नहीं बल्कि यह व्यक्ति और इस की क़ौम अर्थात अबू मूसा अशअरी रज़ि०''#

अयाज़-अल-अशअरी ने रिवायत की है कि हुज़ूर (सल्ल०) ने ह० अबू मूसा अशअरी रज़ि० की ओर संकेत करके फ़रमाया : **''यह व्यक्ति और इस की क़ौम।''**

ह० अबू मूसा अशअरी रज़ि० से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर (सल्ल०) के सामने

★ तीसरा नक्षत्र-कृत्तिका

इस हदीस को इब्ने सअद अबी शेबा ने अपनी 'मसनद' में अब्द बिन हमीद, तिरमिज़ी और बेहक़ी ने 'दलाइल' में रिवायत किया है तथा हाकिम ने इसे 'सही हदीस' ठहराया है।

यह आयत तिलावत की, हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया –**''ऐ अबू मूसा अशअरी यह तेरी क़ौम है, यमन की क़ौम''***

''ह० इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि इस आयत पर फ़रमाया–वे यमन वासियों की क़ौम में से हैं।''#

'सूरए तौबा' की आयत (39) के सन्दर्भ में तफ़सीर फ़तहुलक़दीर, भाग–2, पृ०–345 पर 'अल्लामा शौकानी' लिखते हैं:

''और इस पर विचारों में मतभेद है कि यह कौन लोग हैं? अतः यह भी कहा गया है कि वह 'यमन' वाले हैं और यह भी कहा गया है कि वह 'ईरान' वाले हैं और दलील के बिना इस जगह के निर्धारण का कोई उपाय नहीं है।''

अब आप गौर कीजिये कि क्या 'नऊज़ो बिल्लाह' सत्यवादी रसूल सल्ल० विभिन्न अवसरों पर विभिन्न सहाबियों से अलग–अलग प्रकार की परस्पर विरोधी बातें कह सकते थे, कि ह० सलमान फ़ारसी रज़ि० से उन के मुख पर फ़ारसवासी (ईरानी) को बता दिया और ह० अबूमूसा अशअरी रज़ि० जो यमनवासी थे, उन के सामने यमनवासी कह दिया, यदि ऐसा नहीं है और निश्चित रूप से नहीं है (और नबी सल्ल० की पवित्र ज़बान पर सदैव सत्य बोलता था) तो फिर हमें इन दो परस्पर विरोधी नज़र आने वाली रिवायतों में सामंजस्य बैठाना पड़ेगा। विश्व में केवल भारत ही ऐसा देश है जहां यह दोनों क़ौमें एकत्रित हो गई हैं। ईरानी, आर्यवंश के लोग थे और उत्तरी भारत में आर्य वंश के लोग आकर आबाद हुए थे। दक्षिणी भारत के द्रविण नस्ल के निवासियों की एक बड़ी संख्या 'यमन' में आबाद थी। बौद्ध मत की अनुयायी सिन्धी जातियां–मेद, सिबाबजा, सियाबजा और अहामरा नामक जातियां भी यमन में आबाद थीं।[8] वहां आज भी भारतीय सभ्यता की अमिट छाप है, 'हिन्दू', 'हिन्दा', 'श्याम' या 'शाम' व 'रियाम' नामक वैभवशाली क़िले वहां मौजूद हैं।[9]

इन दोनों नस्लों का एक ही देश भारत में एकत्रित होना भी 'सृष्टा' के कुशल प्रबन्ध का एक बेहतरीन नमूना है ताकि उस के रसूल सल्ल० की भविष्यवाणियां जो उस समय दीखने में परस्पर विरोधी लग रही थी, आगे चल कर यहां सत्य सिद्ध हो सकें।

* इस हदीस को अबुल शेख़, इब्ने मरदोया, शेबा, बेहक़ी, इब्ने असाकर और हाकिम ने अपनी जमा में नक़ल (उद्धरित) किया है ।

\# इस रिवायत को इब्ने अबी हातिम, अबुल शेख़ और बुख़ारी ने अपनी 'तारीख़' में नक़ल किया है । (सं०:फ़तहुल क़दीर, भाग : 2, पृ० : 49–50)

यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि ईरानवासी और उन के समर्थक केवल ह० सलमान फ़ारसी (ईरानी) रज़ि० से सम्बन्धित कथनों को लेकर वर्तमान **'ईरानी क्रान्ति'** का उल्लेख करते हैं। हम उन के विषय में सद्‌भावना रखते हुए केवल इतना कह सकते हैं कि ह० अबू मूसा अशअरी रज़ि से सम्बन्धित कथनों पर वे दृष्टिपात न कर सके होंगे जो 'जाटों' के सर्वप्रथम 'क़ुबूले इस्लाम' में भी ऐतिहासिक भूमिका निभा चुके हैं![10]

मौ० उबैदुल्लाह सिन्धी रह० जो ह० शाह वली उल्लाह रह० के फ़लसफ़े (दर्शन) के सब से बड़े समर्थक थे, अपनी किताब 'शाह वली उल्लाह और उन का फ़लसफ़ा' पृ० : 166 पर 'सूरए जुमा' आयत (3) के सन्दर्भ में लिखते हैं :

(उर्दू से हिन्दी) **''...हमारे विचार से 'व आख़री–न : मिन्हुम' का तात्पर्य उन से है जो ईरानवासी, भारतवासी और इसके अन्तर्गत जो उन के साथ सम्मिलित हों ...''**[11]

यहां ह० शाह वली उल्लाह रह० की एक भविष्यवाणी भी सुनते चलें :

(उर्दू से हिन्दी) **''और जिस बात का मुझे विश्वास है वह यह कि यदि मिसाल के तौर पर हिन्दुओं का भारत देश पर शासन मज़बूत और हर दृष्टि से सुदृढ़ हो तब भी ईश्वर की तत्वदर्शिता के अनुरूप यह अवश्यंभावी है कि हिन्दुओं के सरदारों और नेताओं के हृदय में यह इलहाम (ईश्वरीय प्रेरणा) करे कि वे इस्लाम धर्म को अपना धर्म बना लें।''**[12]

शाह साहब की मुग़ल काल में की गई भविष्यवाणी का पहला भाग पूरा हो चुका है अर्थात भारत पर व्यावहारिक रूप से हिन्दुओं का शासन स्थायी हो चुका है। ईश्वरेच्छा हुई तो इस भविष्यवाणी का अगला भाग भी पूरा होगा।

हमारा विचार है कि हमने आप के सम्मुख वह कम से कम तर्क प्रस्तुत कर दिये हैं जो इस बात को सिद्ध करने के लिये पर्याप्त हैं कि 'उम्मते मोहम्मदी' (मोहम्मद सल्ल० का पन्थ) के दो भाग हैं–पहले भाग अर्थात 'वर्तमान उम्मत' की आयु पन्द्रह सौ वर्ष है। भारत की 'हिन्दू क़ौम' इस उम्मत का दूसरा भाग अर्थात ***'आख़रीन'*** है। यह क़ौम पूरी की पूरी इस्लाम स्वीकार कर लेगी और इस के बाद विश्व नेतृत्व के पद पर आसीन होगी।

दिल और दिमाग को झंझोड़ देने वाली इस सूचना को पा कर एक प्रतिक्रिया तो यह हो सकती है कि आप इसे कृत्रिम तानों बानों से बुनी हुई एक कल्पित कहानी ठहराकर सन्तुष्ट हो जाएं या फिर आपातकालीन परिस्थितियों में अपने आप को घिरा

हुआ पाकर स्वयं ही फ़ैसला करें–अपने आप को सुधारें, अपने उद्देश्य पर विचार करें, और उस क़ौम को सत्धर्म का निमंत्रण देने की प्रक्रिया सोचें जो विश्व की नेता बनने जा रही है। यदि उस के ईमान लाने में कुछ योगदान हमारा भी शामिल हो जाए तो यह हमारे लिये कितने सौभाग्य की बात है; वरन ईश्वर का वचन तो अटल सत्य है और वह हमारी सहायता पर कदापि आश्रित नहीं है।

'सूरए तौबा' की जिस आयत (39) में क़ौम के परिवर्तन की सूचना दी गई थी, उस की अगली आयत (40) में यह बात भी स्पष्ट कर दी गई कि:

''यदि तुम इस की (रसूल सल्ल० की) सहायता न भी करो तो (क्या हो जाएगा), अल्लाह उस की सहायता उस समय कर चुका है जब कि कुफ़्र करने वालों ने उसे (मक्का) से निकाल दिया था, वह दो में का दूसरा था (जब वे दोनों गुफ़ा में थे, जब वह अपने साथी से कह रहा था, ग़म न करो अल्लाह हमारे साथ है।'' तो अल्लाह ने उस पर अपनी ओर से शान्ति उतारी और उस की सहायता ऐसी सेनाओं से की जिन्हें तुम ने नहीं देखा, और 'कुफ़्र' करने वालों का बोल नीचा कर दिया, और अल्लाह ही का बोल ऊंचा रहने वाला है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।'' –(क़ु० : 9–40)

सन्दर्भ सूची अध्याय: 1

1. 'आलमे अरबी का अलमिया; पृ० : 23
2. 'लवामे उल अनवार', ले० : अल्लामा अस सफ़ारीनी भाग : 2, पृ० : 122
3. 'बुख़ारी' किताब मनाकिबे क़ुरैश, अ० : ज़िक्रे क़हतानी
4. शरहुल बुख़ारी–अल खैरुल जारी, ले० : शेख याक़ूब अलबम्बानी, फ़ुटनोट : 14
5. अबूदाऊद, बेहक़ी–सं० : मिश्कात, अ० : तग़य्युरुन्नास
6. 'मरानदे अहमद', मुस्लिम, तबरानी–सं०: 'सीरते सरवरे अलम', ले० : सय्यद अबुल अला मौदूदी, पृ० : 539, प्र० : इशाअते इस्लाम ट्रस्ट दिल्ली, वर्ष 1979
7. तफ़सीर–फ़तहुल क़दीर, खं०: 5, पृ० : 41
8. पत्रिका 'मआरिफ़'–आज़मगढ़, न०:5, खं० : 89
9. सीरतुन्नबी' ले० : मौ० शिब्ली, भाग प्रथम, पृ० : 115, 116
10. 'जाटों की इस्लामी तारीख़' ले० : मेहरबान अली बड़ौतवी, पृ० : 89
11. 'शाह वली उल्लाह और उन का फ़लसफ़ा' पृ० : 166, प्र० : हिन्द सागर अकादमी, लाहौर
12. 'अलफ़ुरक़ान' बरेली–शाह वली उल्लाह नम्बर (द्वितीय संस्करण), पृ० : 158, वर्ष 1941

------❖❖❖------

अध्याय : 2

हिन्दू क़ौम का नबी (ईशदूत)

कृष्णा मेनन, आश्चर्य की मुद्रा में!

कहा जाता है कि श्री कृष्णा मेनन अपने लन्दन प्रवास के दिनों में एक दिन अपनी मित्र मंडली में बैठे हुए थे कि अचानक एक दोस्त ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा :

''यह सामने बैठा हुआ तुम्हारा मित्र 'यहूदी' है। इस का कहना है कि इस के पास ईश्वर का एक ग्रन्थ है जिस का नाम 'तौरेत' है और यह ईश्वरीय ज्ञान का ग्रन्थ ह० मूसा अलै० के माध्यम से दिया गया था।''

''मैं यह बात जानता हूं।'' कृष्णा मेनन ने जवाब दिया। अब उसी मित्र ने एक दूसरे ईसाई मित्र की ओर संकेत करते हुए कहा–''यह व्यक्ति 'ईसाई' है और इस का कहना है कि इस के पास भी ईश्वर की एक किताब है जिसका नाम 'इन्जील' है और यह दिव्य ज्ञान की भेंट ईश्वर ने महात्मा ईसा मसीह के द्वारा प्रदान की थी।''

''मैं यह भी जानता हूं!'' कृष्णा मेनन ने हल्की सी मुस्कुराहट के साथ कहा–मानो इन विश्वव्यापी तथ्यों को दोहराने पर उन्हें आश्चर्य हो रहा हो। लेकिन बोलने वाला पूरी गम्भीरता से बोल रहा था। उसने तीसरा विषय छेड़ते हुए, और एक मुसलमान दोस्त की ओर इशारा करते हुए कहा :

''यह हमारा मुसलमान दोस्त है और इस का कहना है कि इस के पास भी ईश्वर का एक ग्रन्थ है– 'क़ुरआन', और ईश्वर ने यह ज्ञान जिस सत्पुरुष के माध्यम से दिया, उस का नाम ह० मोहम्मद सल्ल० है।''

''अरे भाई, मैं यह भी जानता हूं'' कृष्णा मेनन ने आश्चर्य चकित होकर जवाब दिया।

''निस्सन्देह!'' वही मित्र बोला–''हम और तुम यह सब बातें ख़ूब जानते हैं, लेकिन मित्र! हम में से कोई यह नहीं जानता कि 'वेद' जिस को तुम ठीक उसी तरह ईश्वर का सबसे पहला, सबसे प्राचीन, सबसे श्रेष्ठ ज्ञान और वाणी मानते हो, उसे आदि–ग्रन्थ कहते हो उसको ईश्वर से ग्रहण करने तथा जनसाधारण तक पहुंचाने वाला सर्वप्रथम मानव–माध्यम आख़िर कौन था?''

कहा जाता है कि पूरी सभा की ओर से इस बार प्रश्नवाचक मुस्कुराहट और आश्चर्य के सामने पहली बार कृष्णा मेनन सिर से पांव तक प्रश्न चिह्न बन गए। एक ऐसे चिन्तन के सन्नाटे में गुम हो गए जैसे पहली बार उन्हें यह एक ठोस सवाल महसूस हुआ हो। मानो पहली बार उन्हें अपने वैदिक विद्वानों के वर्तमान शास्त्रीय दृष्टिकोण में एक वास्तविक अन्तराल की अनुभूति हुई हो। तौरेत, इन्जील और क़ुरआन के ईश्वर से मानव तक पहुंचने के माध्यम तो मालूम हैं; लेकिन यदि वेद **देववाणी** है तो इसे लाने वाला ईशदूत कौन था? यह घटना चाहे सच्ची हो या मात्र एक कहानी, इसमें शक नहीं है कि यह स्वाभाविक प्रश्न वैदिक धर्म के प्रत्येक अनुयायी के सीने में हज़ारों वर्षों से अन्दर ही अन्दर निरन्तर खटक रहा होगा।

ह० नूह अलै० की उम्मत (पन्थ) का नबी भी खोया हुआ है :

हिन्दू क़ौम, रामायण और महाभारत को मानवकृत रचनाएं स्वीकार करती है, लेकिन वेदों के विषय में उन के विद्वानों का बहुसंख्यक मत है कि यह ख़ुदा का कलाम (देववाणी) हैं। इसके बावजूद यह बताने में वे असमर्थ है कि वेद किस देवदूत के माध्यम से संसार में आए? अपने देवदूत को उन्होंने **'दन्तकथाओं'** में खो दिया। विश्व की प्रत्येक धार्मिक जाति किसी न किसी व्यक्तित्व को अपने धार्मिक ग्रन्थ से सम्बन्धित मानती है; लेकिन हिन्दू जाति वह एक मात्र धार्मिक जाति है जिस का **'वास्तविक ईशदूत'** खोया हुआ है। इस वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए 'बुख़ारी शरीफ़' की निम्नलिखित हदीस पर विचार करें :

''ह० अबू सईद रज़ि० कहते है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया -क़यामत के दिन ह० नूह अलै० को लाया जाएगा और उनसे पूछा जाएगा (कि उन्हों ने अपनी उम्मत को अल्लाह के आदेश) पहुंचाए थे? वह अर्ज़ करेंगे : ''बेशक हे मेरे प्रभु!'' फिर ह० नूह अलै० की उम्मत से पूछा जाएगा कि क्या (नूह अलै० ने) तुम तक हमारे आदेश पहुंचाए थे? वे लोग इन्कार करेंगे और कहेंगे– ''हमारे पास तो कोई भी डराने वाला नहीं आया था।'' और फिर (ह० नूह अलै० से) पूछा जाएगा –''तुम्हारे गवाह कौन हैं?'' और वह कहेंगे–''मेरे गवाह ह० मोहम्मद सल्ल० और उन की उम्मत के लोग हैं।'' और इस के बाद नबी सल्ल०

ने फ़रमाया–''तब तुम्हें पेश किया जाएगा और तुम यह गवाही दोगे कि (ह० नूह अलै० ने आदेश) पहुंचाए थे। ...फिर रसूलल्लाह सल्ल० ने यह आयत पढ़ी–व कज़ालि–क जअलनाकुम उम–मतन व सतन लि–तकूनू शुहदा–अ अलन नासि व यकूनर्रसूलु अलैकुम शहीदा....''[1]

अब ज़रा विचार कीजिये! एक ओर तो हदीस से यह ज्ञात होता है कि ह० नूह अलै० की उम्मत अपने नबी को पहचानने से इनकार कर देगी, और दूसरी ओर हम यह जानते हैं कि समस्त धार्मिक क़ौमों में केवल हिन्दू क़ौम का नबी खोया हुआ है।

फिर सोचें–एक तरफ़ तो हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि हिन्दू क़ौम ह० मोहम्मद सल्ल० की उम्मत बनेगी और वर्तमान 'उम्मते मोहम्मदी' के लोग इस परिवर्तन का माध्यम बनेंगे, तथा दूसरी ओर हदीस से यह ज्ञात होता है कि ह० नूह अलै० की क़ौम के अपने नबी को पहचानने से इनकार के बाद मोहम्मद सल्ल० की उम्मत यह गवाही देगी कि नूह अलै० ने अपनी क़ौम को ईश्वर के आदेश पहुंचाए थे–अर्थात गवाही देने वाले लोग ह० नूह अलै० की उम्मत को और उन से ह० नूह अलै० के सम्बन्ध को पहचानते होंगे। क्या यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण प्रतीत नहीं होता है कि वर्तमान हिन्दू क़ौम ह० नूह अलै० की उम्मत है?

'हिन्दू' ह० नूह अलै० की क़ौम हैं :

वैसे भी 'वैदिक धर्म' विश्व के समस्त धर्मों में सर्वमान्य रूप से सब से प्राचीन धर्म है और ह० नूह अलै० दुनिया के सर्वप्रथम साहिबे शरीअत (धर्म–नियमावली लागू करने वाले) रसूल थे।

लेकिन अभी विश्वास करने से पहले स्वयं वैदिक धर्म से मालूम करना भी आवश्यक है। अभी हम चाहे हिन्दू क़ौम के इस दावे को स्वीकार न करें कि वेद, 'ईश्वर की वाणी' है लेकिन यह तो देखें कि यह ग्रन्थ अपना 'सन्देष्टा' किसे बताते हैं? फ्रांसीसी लेखक डयूबाइस (A.J.A. Dubois) जिसने चालीस वर्ष तक 'हिन्दू धर्म' और भारतीय सभ्यता का अध्ययन किया और हिन्दू धार्मिक रीति–रिवाजों पर आज तक की सब से प्रमाणित एवं विस्तीर्ण पुस्तक लिखी, उस ने अपनी पुस्तक (Hindu Manners, customs and ceremonies) जो मूल रूप से फ़्रांसीसी भाषा में लिखी गई है, में जिन तथ्यों का वर्णन किया है, वे शायद पाठकों के आकर्षण का केन्द्र बनेंगे:

(अंग्रेज़ी से हिन्दी) ''संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि एक महाविशिष्ट व्यक्तित्व जिससे हिन्दुओं को बड़ी श्रद्धा है और जिसे वे 'महानूव' के नाम से जानते हैं, (बाढ़ की) विभीषिका से एक नौका द्वारा बच निकले जिस में 'सात मशहूर

ऋषि' सवार थे ...''2

'' ... महानूवू दो शब्दों से मिलकर बना है 'महा' और 'नूवू' जो कि निस्सन्देह (ह०) नूह (अलै०) हैं। ...''3

''व्यावहारिक रूप से यह माना जाता है कि हिन्दुस्तान इस जल प्रलय के तुरन्त पश्चात आबाद हुआ था जिसने समस्त संसार को उजाड़ दिया था। ...''4

''मारकण्डेय पुराण और भागवत में इस का बहुत स्पष्ट वर्णन है कि इस दुर्घटना में सात प्रसिद्ध तपस्वी ऋषियों के अतिरिक्त जिन की मैंने और भी अनेक स्थानों पर चर्चा की है, समस्त मानव जाति का संहार हो गया था। यह सात ऋषि एक नौका पर बैठकर विश्वस्तरीय विनाश से बच सके थे। इस नौका को स्वयं विष्णु (खुदा) चला रहा था। और एक महान व्यक्तित्व जो बच जाने वालों में था, वह 'मनु' का था, जिसको मैंने दूसरी जगहों पर सिद्ध किया है कि वह 'नूह' (अलै०) के अतिरिक्त कोई नहीं था। जहां तक मुझे मालूम है इन तमाम बहुदेववादी जातियों में किसी ने सैलाब को इतने विस्तार से वर्णित नहीं किया है और इस घटना का सविस्तार वर्णन (ह०) मूसा (अलै०) के (तौरेत में) उल्लिखित विवरणों से किसी कौ़म के लेखपत्रों में इतनी समानता नहीं रखता जितना कि इन हिन्दू पुस्तकों में है जिनका मैंने जिक्र किया है। यह उल्लेखनीय है कि यह गवाही हमें उस कौ़म में मिली है जिसके प्राचीन होने पर सब सहमत हैं। ...''5

ह० नूह अलै० और उन के 'जलप्रलय' की घटनाएं बहुत विस्तार के साथ भविष्य पुराण और मत्स्य पुराण में आई है जिनके दृष्टांत हम अगले अध्यायों में प्रस्तुत करेंगे।

'मनु' शब्द बहुत से हिन्दू धार्मिक विशाल व्यक्तित्वों के लिये इस्तेमाल हुआ है* लेकिन वेदों, पुराणों तथा अन्य धर्मग्रन्थो में सब से ज्यादा विस्तार से जिस मनु का वर्णन है, वह ह० नूह अलै० ही हैं। वेदों में ह० नूह अलै० का प्रसंग 'मनु' के नाम से 75 बार आया है।

वेदों का अंग्रेज़ भाष्यकार गिरिफिथ वेद के एक मंत्र में आने वाले शब्द 'मनु'

* जैसे ह० आदम के लिये–बताया गया है कि मनु के बाएं भाग से शतरुपा अर्थात ह० हव्वा पैदा हुई (रामचरित मानस, भाष्य हनुमान प्रसाद पोतदार, प्र०: गीता प्रेस गोरखपुर, एडी०: 15, पृ०: 154 – ''हिन्दू मज़हब की मालूमात-ख्वाजा हसन निज़ामी देहलवी, प्र०: हल्क़ए मशाइख़–देहली, एडी०: 20, दिसम्बर 1927 पृ० 6)

की व्याख्या करते हुए लिखता है :

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) **''मनु (नूह) लाजवाब व्यक्तित्व और मानव जाति के प्रतिनिधि थे। समस्त मानव जाति के पिता (सैलाब के बाद दूसरे आदम की हैसियत से और पहली धर्म नियमावली के आरम्भ करने वाले थे।''***

पुराणों और वेदों में ह० नूह अलै० के विषय में सविस्तार वर्णन के अतिरिक्त इस कौ़म के ह० नूह अलै० से सबद्ध होने का एक अन्य महत्वपूर्ण प्रमाण हम प्रस्तुत कर रहे हैं।

अधिकाश कौ़मों के अपने नबी से सम्बन्ध का एक प्रमाण यह भी होता है कि वे उन के युग से अपना वर्ष या सन् गिनते हैं जैसे मुसलमान अपना 'सने हिज्री' ह० मोहम्मद सल्ल० की हिजरत से गिनते हैं और ईसाई अपना वर्ष ह० ईसा अलै० के स्वर्गवास से गिनते हैं। इसी प्रकार हिन्दू जाति अपनी महत्वपूर्ण घटनाओं के समय अवधि की गणना ह० नूह अलै० के युग से करती है। इस के लिये वे ह० नूह अलै० के सैलाब से हर साठ वर्ष के मध्यान्तर को एक इकाई या एक वर्ष मानते हैं और इन वर्षों से अपनी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं की समय अवधि मापते है। 'ड्यूबाइस' अपनी 'उपरोक्त उल्लिखित' किताब में लिखता है :

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) **''हिन्दुओं का वर्तमान युग–'कलियुग' लगभग उसी काल से आरम्भ होता है जो मनु के सैलाब (महा जल प्लावन) का युग है। यह एक ऐसी घटना है जिस को वे यादगार समझते हैं और उन के लेखक इसे 'जल प्लावन' या पानी की बाढ़ का नाम देते हुए इस की स्पष्ट रूप से चर्चा करते हैं। इस वर्तमान युग की तिथि निश्चित रूप से जल प्लावन की घटना से आरम्भ होती है। ....और आश्चर्यजनक बात यह है कि हिन्दू अपने जीवन की सभी महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध घटनाओं व नित्य कर्मों और अपने समस्त जन स्मारकों की तिथि या सन को एक सैलाब के अन्त से गिनते हैं ... सैलाब के बाद हर साठ वर्ष का एक वर्ष मान कर इन वर्षों से अपनी समस्त निजी और सार्वजनिक घटनाओं की समय अवधि को मापते हैं।''6**

हिन्दू कौ़म का ह० नूह अलै० से विशेष सम्बन्ध होने का एक प्रमाण यह भी है कि उसके धार्मिक ग्रन्थों में **'मनु–स्मृति'** का एक विशिष्ट स्थान है।

हिन्दुओं के धार्मिक इतिहास और धार्मिक ग्रन्थो का ह० नूह अलै० से विलक्षण

* गिफिथ की यह टिप्पड़ी ऋग्वेद के मन्त्र (1-13-4) के सन्दर्भ मे है। कोष्ठक के शब्द लेखक के अपने हैं।

सम्बन्ध होने की कुछ मिसालें यहां प्रस्तुत की गईं। इस अध्याय के आरम्भ में ह० नूह अलै० की कौम से सम्बन्धित 'बुख़ारी शरीफ़' की जो हदीस आ चुकी है, उसमें हम ने देखा कि नूह अलै० की उम्मत (पंथ) उनको अपने नबी के रूप में नहीं पहचानती होगी और हम यह भी जान चुके हैं कि नूह अलै० से घनिष्ठ सम्बन्ध होने के बावजूद वर्तमान हिन्दू क़ौम कुल मिलाकर उनको नहीं जानती है। इसी हदीस से हमें यह भी ज्ञात होता है कि क़यामत के दिन ह० मोहम्मद सल्ल० की उम्मत, ह० नूह अलै० के लिये उनकी अपनी क़ौम में संदेश पहुंचाने की गवाह बनेगी,और हमें यह भी मालूम है कि दूसरी हदीसों में भी इस क़ौम को ह० मोहम्मद सल्ल० की उम्मत बनने का संकेत दिया गया है। यह स्पष्ट है कि इन तमाम वास्तविकताओं के उजागर होने के बाद और ह० मोहम्मद सल्ल० की उम्मत में शामिल होने के बाद वही इस बात की गवाही देंगे।

लेकिन इतने प्रमाणों के बाद भी अभी अन्तिम और प्रमाणित गवाही शेष है। आइये, पवित्र क़ुरआन में देखें:

क़ुरआन की गवाही :

विश्व की समस्त जातियों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है– सामी जातियां (Semetic Races) और ग़ैर सामी जातियां (Non Semetic Races)। ग़ैर सामी जातियों में 'आर्य' आते हैं तथा सामी जातियों में 'यहूदी', 'ईसाई' एवं अरब प्रायद्वीप के 'बनी इस्माईल'।* दुनिया के दो जातियों में विभाजित होने और उन में से एक का सम्बन्ध ह० नूह अलै० से होने की पुष्टि क़ुरआन भी करता है।

''यह वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने कृपा की है ये सब ईशदूत थे और आदम की सन्तान से थे, और कुछ उन की सन्तान से थे जिन्हें हम ने नूह के साथ (नौका में) सवार किया और कुछ इब्राहीम व याक़ूब की सन्तान में से हैं, और यह सब उन लोगों में से थे जिन को हमने मार्ग दिखाया और हम ने उन को मक़बूल (चयनित) बनाया। – (क़ु० : 19–58)

दिव्य क़ुरआन की इस आयत से पता चला कि ह० आदम अलै० के वंश में से ह० नूह अलै० के साथियों का वंश अलग है और ह० इब्राहीम अलै० व याक़ूब अलै० का वंश अर्थात 'बनी इस्माईल' और 'बनी इस्राईल' दोनों अलग–अलग नस्लें हैं। हम जानते है कि 'बनी इस्माईल' व 'बनी इस्राईल' सामी वश हैं। स्पष्ट है कि नूह अलै० के साथियों का वंश ग़ैर सामी या 'आर्य' होना चाहिये। आर्य जाति संसार के बहुत से देशों के अतिरिक्त भारत के अधिकांश हिस्से मे आबाद है।

* ईशदूत ह० इस्माईल अलै० का वंश

यहां एक प्रश्न यह उठ सकता है कि हम ह० नूह अलै० के साथियों के वंश को उन की 'उम्मत' कैसे कह रहे है? इस का उत्तर यह है कि किसी रसूल की उम्मत कहलाने के लिये उस के वंश से होना या न होना ज़रूरी नहीं है। 'मुसलमान' ह० मोहम्मद सल्ल० की उम्मत है यद्यपि उन में से अधिकाश 'उन' की नस्ल से नहीं हैं। मुसलमान उन की उम्मत है क्यो कि वे उन को अपना रसूल स्वीकार करते हैं। ह० मूसा अलै० की उम्मत में से जिन्होंने ह० ईसा अलै० के ईशदूत होने को स्वीकार किया, वे फिर ह० ईसा अलै० की उम्मत कहलाए। ह० नूह अलै० के साथ उन के वही साथी तूफ़ान से बचा लिये गए थे जो उन पर ईमान लाए थे। वे उन के उम्मती (अनुयायी) थे। उनके साथियों के वंश या आर्यवंश में से वर्तमान हिन्दू धार्मिक क़ौम चूंकि ह० नूह अलै० के बाद आने वाले दूसरे ईशदूतों को अपना ईशदूत स्वीकार नहीं करती है, इसलिये हम ने अपने लेखों में उन को ह० नूह अलै० की उम्मत या क़ौम कहा है। यह एक अलग बात है कि ह० नूह अलै० को भी उन की यथार्थ पृष्ठभूमि में हिन्दू नहीं जानते है जिस की अभिव्यक्ति हम इन शब्दो मे करते है कि **'उन्होंने अपने ईशदूत को दन्त कथाओं में गुम कर दिया है।'**

सन्दर्भ सूची **अध्याय : 2**

1. बुख़ारी , सं० मिश्कात, अ० हिसाब वलक़िसास वल मीज़ान
2. Hindu Manners, customs & ceremonies by Dubois, P.86
3. - - do - P.48
4. - - do - P.100
5. - - do - P.416–417
6. - - do - P.416–417

------❖❖❖------

''ह० अनस रज़ि० से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा: मेरे समुदाय का हाल वर्षा के सदृश है जिसके बारे में नहीं कहा जा सकता कि उसका प्रथम अच्छा है या अन्तिम अच्छा है।''

–(तिरमिज़ी)

अध्याय : 3

क़ुरआन में हिन्दू क़ौम का उल्लेख

क़ुरआन पर आरोप :

बहुत से हिन्दू सज्जन जो इस्लाम की शिक्षाओं से प्रभावित हैं और क़ुरआन की महिमा को स्वीकार भी करते हैं, उनको यह शिकायत करते हुए हम ने सुना है कि क़ुरआन में अन्य जातियों का प्रसंग तो है लेकिन हमारा ज़िक्र क़ुरआन में कहीं नहीं है। उन की इस शिकायत का उत्तर हम तरह–तरह की बचाव की दलीलों के रूप में देने का प्रयास करते हैं मानो हम स्वयं भी अनजाने में क़ुरआन पर लगे इस आरोप का समर्थन कर रहे हों।

श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय की पुस्तक–'इस्लाम के दीपक' से एक दृष्टांत हम यहां उद्धृत कर रहे हैं :

''क़ुरआन शरीफ़ में कई जगहों पर तो यह कहा है कि ईश्वर विभिन्न जातियों के मार्गदर्शन के लिये विभिन्न ईशदूतों को भेजता है लेकिन विशेष रूप से किसी का प्रसंग नहीं है। तमाशे की बात यह है कि जो आदिम जातियां हैं, और जिन की सभ्यता का इतिहास हज़ारों वर्ष पुराना है; जैसे हिन्दुस्तान, चीन आदि इन का कुछ भी संकेत तक नहीं ! मानो इस इलहाम (ईश्वरीय प्रेरणा) से जिस को क़ुरआन या पवित्र वाणी के नाम से पुकारा जाता है, सामान्य मानव समूहों का कोई सम्बन्ध है ही नहीं ...।'' [1]

बेशक! पवित्र क़ुरआन के पहले संबोधित अरब के निवासी थे; लेकिन यदि क़ुरआन केवल चौदह सौ वर्ष पुरानी किताब नहीं है बल्कि सृष्टि के अन्तिम क्षण तक घटित होने वाले समस्त घटना चक्रों की इस में चर्चा है, तो यह कैसे सम्भव है कि उस क़ौम की चर्चा न हो जो विश्व की प्राचीनतम धार्मिक क़ौम है और क़ुरआन के अवतरण से हज़ारों वर्ष पूर्व से आज तक बहुत बड़ी संख्या में दुनिया में मौजूद है। यह क़ुरआन पर एक आरोप है। क्या हम ने कभी क़ुरआन में हिन्दू जाति का नाम या परिचय तलाश करने की कोशिश की है? ठीक है, क़ुरआन में 'हिन्दू' शब्द कहीं नहीं मिलता; लेकिन क्या 'ईसाई' या 'क्रिश्चियन' शब्द मिलता है? क्या हम यह समझ लें कि ईसाइयों का भी क़ुरआन में ज़िक्र नहीं है! क़ुरआन में ईसाइयों के लिये **नसारा** शब्द का प्रयोग किया है। दुनिया का कोई ईसाई अपने आप को नसारा नहीं कहता लेकिन हम जानते हैं कि नसारा, क़ुरआन में उन लोगों को कहा गया है जो आज अपने आप को ईसाई कहते हैं। हो सकता है कि जो क़ौम अपने आप को वर्तमान में 'हिन्दू' कहती है, उसे किसी और नाम से दिव्य क़ुरआन ने संबोधित किया हो।

क़ुरआन में सब क़ौमों के नामों पर शोध कार्य ही नहीं हुआ :

पवित्र क़ुरआन में ऐसी बहुत सी क़ौमों का वृतांत मिलता है, जिन्हें शास्त्रवक्ता (मुफ़स्सिरीन) आज तक निश्चित नहीं कर सके हैं जैसे ***अस्हाबुर्रस*** और ***क़ौमे तुब्बा*** विशेषतया ***साबिईन*** की चर्चा तो जगह–जगह पवित्र क़ुरआन में मोमिनीन(मुस्लिमों), यहूदियों और नसारा (ईसाइयों) के साथ इस रूप में की गई है मानो वे एक बहुत बड़ी क़ौम हों या विश्व के एकाकी समुदायों में से एक हों। उदाहरण के लिये:

''निस्सन्देह जो लोग 'मोमिन' हैं और जो 'यहूदी' हैं और 'नसारा' हैं और 'साबिईन' हैं, उन में से जो अल्लाह पर और अन्तिम दिन (महाप्रलय) पर ईमान लाएं और अनुकूल कर्म करें तो उन के रब के पास अज्र (प्रतिदान) है। न उन पर कोई भय आएगा और न वे दुखी होंगे।'' – (क़ु० : 2–62)

इस आयत में साबिईन का प्रसंग, मुसलमानों, यहूदियों और ईसाइयों के साथ आया है। यही नहीं बल्कि पवित्र क़ुरआन में जहां जहां साबिईन का वृत्तांत है, इन्हीं बड़ी बड़ी जातियों के साथ है। इतनी महत्वपूर्ण जाति जिस को क़ुरआन ने दुनिया की बड़ी बड़ी क़ौमों के समकक्ष रखा हो, उस की हम आज तक खोज न कर सके; यद्यपि उन्हें मुसलमानों, ईसाइयों तथा यहूदियों के समान वर्तमान और भविष्य दोनों में विश्व की प्रमुख धार्मिक जातियों में से एक होना चाहिये। यदि हम विचार करें तो तलाश का घेरा बहुत सीमित हो जाएगा। मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियों के अतिरिक्त दुनिया में कितनी बड़ी–बड़ी धार्मिक क़ौमें और हैं? उन्हीं में से किसी एक को 'साबिईन' होना चाहिये। अब ज़रा एक दूसरे कोण से तलाश करें।

पवित्र क़ुरआन में जिन उच्चोत्साही पैगम्बरों का प्रसंग विशेष महत्व के साथ बार–बार आया है, वे ह० नूह, ह० इब्राहीम*, ह० मूसा, ह० ईसा (इन सब पर शान्ति हो) और अन्तिम सन्देष्टा ह० मोहम्मद सल्ल० हैं। उदाहरण के लिये:

* ह० इब्राहीम अलै० जिन्हें भविष्य पुराण में 'अबिराम' कहा गया है।

''और जब हम ने नबियों से संकल्प लिया और (हे मोहम्मद) तुम से और नूह, इबराहीम और मरयम के पुत्र ईसा से और हमने उन से कड़ा वचन लिया।''
— (क़ु० : 33–7)

''अल्लाह ने तुम लोगों के लिये वही दीन (धर्म) निर्धारित किया जिस का उस ने नूह को हुक्म दिया था और जिस की हम ने आप के पास वह्य की है और जिस का हम ने इबराहीम और मूसा और ईसा को भी हुक्म दिया था...''
— (क़ु० : 42–13)

हम देखते हैं कि पवित्र वाणी में जिन बड़ी–बड़ी क़ौमों का प्रसंग एक साथ आया है वे मुसलमान, ईसाई, यहूदी और साबिईन हैं और जिन उलूउलअज़्म (उच्चोत्साही) ईशदूतों की चर्चा जगह–जगह एक साथ की गई है, वे ह० मोहम्मद सल्ल०, ह० ईसा अलै०, ह० मूसा अलै० और ह० नूह अलै० हैं। इन में से मुसलमान ह० मोहम्मद सल्ल० को अपना अन्तिम ईशदूत स्वीकार करते हैं, ईसाई ह० ईसा अलै० से और यहूदी ह० मूसा अलै० से सम्बन्धित क़ौम है। लेकिन 'साबिईन'? हम नहीं जानते।

फिर सोचिये! ह० मोहम्मद सल्ल० के उम्मती मुसलमान हैं, ह० ईसा अलै० के मानने वाले ईसाई हैं, ह० मूसा अलै० की क़ौम यहूदी है और ह० नूह अलै० की क़ौम? किसी को मालूम नहीं। कहीं ऐसा तो नहीं कि उन्हीं की क़ौम को साबिईन कहा गया हो?*

ह० नूह अलै० की क़ौम ही 'साबिईन' हैं!

इब्ने कसीर की तफ़सीर (भाष्य) में अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद का यह कथन अंकित है कि 'साबिईन अपने आप को ह० नूह अलै० के धर्म पर बताते थे।'

साबिईन के बारे में ह० उमर रज़ि०, इमाम अबू हनीफ़ा रह०, इमाम इस्हाक़, अबू ज़नाद, क़रतबी, अल्लामा इब्ने तीमिया, इमाम ग़ज़ाली रह०, इमाम राग़िब, मआलिम, इब्ने जरीर, इब्ने कसीर, इमाम सुहैली, अल्लामा शौकानी, क़ाज़ी बैज़ावी, अब्दुल माजिद दर्याबादी और सय्यद सुलेमान नदवी के विभिन्न कथनों को अपनी टीका-टिप्पणी के साथ हम निम्नलिखित पंक्तियों में इकट्ठा कर रहे हैं:

- ❑ इराक़ के उस स्थान के रहने वाले लोग थे जहां इब्राहीम अलै० का जन्म हुआ था। (ह० इबराहीम अलै० के जन्म स्थान 'उर' और भारतीय सभ्यताओं–'हड़प्पा'

* ह० इबराहीम अलै० की क़ौम में यहूदी, ईसाई और मुसलमान सब शामिल हैं क्योंकि सब उन पर ईमान लाते हैं और संसार में कोई ऐसी जाति नहीं है जो ह० इब्राहीम अलै० पर तो ईमान लाए और उनके बाद आने वाले किसी और नबी पर ईमान न लाती हो।

एवं 'मोहन जोदाड़ो' के खंडहरों की खुदाई से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि दोनों सभ्यताओं के बीच अत्यन्त घनिष्ट सम्बन्ध थे)

- ❑ 'पूर्व ग्रन्थ वाले' थे (यह तो क़ुरआन में साबिईन के वृतांत से भी अन्दाज़ा होता है कि उन का ज़िक्र जगह–जगह 'ईश्वरीय ग्रन्थ' रखने वाली क़ौमों के साथ आया है। साबिईन के पास ह० नूह अलै० कौन से ग्रन्थ लाए, इस पर हम आगे बहस करेंगे।)
- ❑ 'ला इला–ह इल्लल्लाह' कहते थे लेकिन मुशरिक (बहुदेववादी) थे–(इस की चर्चा हम आगे करेंगे कि हिन्दू धर्म का कालिमा (ब्रह्मसूत्र) भी लाइला–ह इल्लल्लाह है।)
- ❑ यमन की दिशा में मुंह करके नमाज़ पढ़ते थे (यह बात भी सभ्यताओं के अध्ययन से सिद्ध हो चुकी है कि भारतीय मूल के लोग बहुत बड़ी संख्या में यमन में आबाद थे, वहां आज भी 'श्याम' और 'हिन्द' नामक क़िले मौजूद हैं।)
- ❑ 'साबिईन'–अजमी (ग़ैर अरबी) नाम है, अरबी नहीं।
- ❑ फ़रिश्तों (देवताओं) को पूजने वाली क़ौम थी। (हिन्दू धर्म में बहुत से देवी-देवताओं की कल्पना वास्तव में फ़रिश्तों की कल्पना है जिन की वे पूजा करते हैं।)
- ❑ नक्षत्रों तथा ज्योतिष विद्या में अत्यधिक विश्वास रखते थे। (संसार में शायद किसी क़ौम को ज्योतिष विद्या में इतनी दिलचस्पी नहीं रही है और ना है जितनी भारतीय हिन्दू जाति को है।)
- ❑ सितारों की पूजा करने वाले (अनेक नक्षत्रों एवं ग्रहों की पूजा का प्रावधान वर्तमान हिन्दू मत का एक अंग है।)
- ❑ आग की पूजा करने वाले (अग्नि की पूजा–हवन, विवाह आदि में हिन्दू क़ौम में प्रचलित है।)
- ❑ ज़रतुश्त (पारसी), ईरानी वंश के (यह लोग भी आग के पुजारी थे और हिन्दू भी हैं। यह भी आर्य थे और उधर से ही आर्य हिन्दुस्तान में आए।)
- ❑ धार्मिक रूप से कई बार स्नान करने वाले। (स्नान का धार्मिक महत्व सब से अधिक हिन्दू मत ही में है। उन की कोई पूजा स्नान के बिना सम्पूर्ण नहीं होती। इस के अतिरिक्त विभिन्न अवसरों पर सामूहिक स्नान भी होते हैं।)

- एक धर्म से निकल कर दूसरे धर्म में प्रविष्ट होने वाले (यही हिन्दू क़ौम मूल सनातन धर्म (इस्लाम) को स्वीकार करेगी, यह हम पिछले अध्याय में सिद्ध कर चुके हैं।)
- आकर्षित होने और झुकने वाले (क़ौम के परिवर्तन के लिये हदीसों में इसी क़ौम की ओर संकेत है, यह पिछले अध्याय में आ चुका है।)

'साबिईन' के विषय में हमारे टीकाकारों और विद्वानों की इतनी विभिन्न मान्यताएं होते हुए भी यह आश्चर्य की बात है कि यह सब की सब वर्तमान हिन्दू जाति पर लागू होती हैं। विभिन्न व्याख्याकारों ने समय-समय पर अलग-अलग जातियों को 'साबिईन' कहा है, लेकिन इस युग में यह सब विशिष्टताएं हिन्दू क़ौम में एक ही जगह पाई जाती हैं। हो सकता है कि उपरोक्त उल्लिखित विशिष्टताएं या धर्म विश्वास रखने वाले समस्त समूह अतीत में प्रवास करके भारत में एकत्रित हो चुके हों। हमारी समझ से अब इस बात में किसी सन्देह की गुंजाइश नहीं है कि साबिईन कौन हैं! यह हो सकता है कि अतीत में साबिईन की परिभाषा विभिन्न गिरोहों पर लागू होती हो लेकिन कम से कम वर्तमान युग में साबिईन से अभिप्राय कौन सी क़ौम है, यह सर्वविदित ही है।

बात अधूरी रह जाएगी यदि हम यहां यह उल्लेख न करें कि ह० शाह वली-उल्लाह रह० भी साबिईन को आर्य वंश ही मानते थे। प्रमाण के रूप में निम्नलिखित मिसालें देखिये :

(उर्दू से अनुवाद) **"... मसीह अलै० अवश्य ऐसे बुज़ुर्ग थे जिन्होंने इस शिक्षा को ग़ैर इस्राइली लोगों में अन्य शब्दों में साबिईन में या आर्य जातियों में भी पहुंचाने की कोशिश की।"**[2]

(उर्दू से अनुवाद) **" ... ईरान उस युग में आर्य अर्थात साबी जातियों का केन्द्र बन चुका था। इस से पहले हिन्दुस्तान इन का केन्द्रस्थल था"**[3]

मौ० सय्यद सुलेमान नदवी की गवाही भी देख लीजिये कि वह साबिईन को 'प्राचीन भारतवासी' मानते थे।

(उर्दू से अनुवाद) **" ... मग़ज़ूब (कोप के पात्र) और ज़ाल (पथभ्रष्ट) जिस तरह 'अहले किताब' (पूर्व ग्रन्थ वाले) हैं, अपनी प्रकृति के आधार पर वही स्थिति 'शुब्हे अहले किताब' (जिन पर अहले किताब होने का सन्देह हो) की भी हैं जिन के दो समूहों से क़ुरआन ने हम को परिचित कराया है और वह मजूस (अग्निपूजक) तथा साबिईन हैं जिन में प्राचीन ईरान तथा प्राचीन भारत के निवासी भी सम्मिलित हैं। ..."**[4]

अन्त में यह भी जान लें कि एक बहुत ही अल्पसंख्या का सम्प्रदाय इराक़ और सीरिया में पाया जाता है जो अपने आप को 'सुबी' कहता है। यह लोग ह० यहया अलै० (बाइबिल के अनुसार यूहन्ना नबी) के बाद किसी नबी को नहीं मानते। ह० ईसा अलै० को भी नहीं मानते। ह० यहया अलै० से पूर्व आने वाले ईशदूतों को मानते हैं। इस बात की सम्भावना है कि क़ुरआन ने इन को भी 'साबिईन' कहा हो। लेकिन सैय्यद सुलेमान नदवी रह० जैसे शोधकर्ता और मौ० उबैदुल्लाह सिन्धी जैसे विश्व भ्रमण करने वाले दृष्टा ने 'साबिईन' भारतीय वंश के लोगों को ही माना है। यद्यपि इन दोनों महानुभावों को 'सुबी' सम्प्रदाय के विषय में अवश्य जानकारी रही होगी। इस के अतिरिक्त 'सुबी' सम्प्रदाय में 'अहले किताब' होने के अतिरिक्त अन्य ऐसी कोई विशिष्टता नहीं पाई जाती जिस को मुफ़स्सिरीन ने साबिईन से सम्बन्धित किया हो तथा जिन विशिष्टताओं का इसी अध्याय में उल्लेख किया गया है।

हमारे विचार में क़ुरआन के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग चूंकि कभी-कभी एक ही समय में भिन्न-भिन्न गिरोहों के लिये और कभी-कभी विभिन्न युगों में अलग-अलग गिरोहों के लिये हुआ है, इसलिये यह मुमकिन है कि इस 'सुबी' सम्प्रदाय पर भी क़ुरआनी पारिभाषिक शब्न 'साबिईन' लागू होता हो, लेकिन हिन्दुस्तानी धार्मिक जाति का साबिईन की परिभाषा में आना सन्देह से परे है।

सन्दर्भ सूची अध्याय : 3

1. 'इस्लाम के दीपक'- ले०: श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय, प्र०: ट्रैक्ट विभाग-आर्यसमाज चौक-प्रयाग, वर्ष : 1981
2. पत्रिका-'अलफ़ुरकान'-बरेली-शाह वली उल्लाह नमबर, पृ०: 304
3. पत्रिका-'अलफ़ुरकान'-बरेली-शाह वली उल्लाह नम्बर, ले०: मौ० उबैदुल्लाह सिन्धी, पृ० : 310
4. अध्यक्षीय भाषण-मौ० सय्यद सुलेमान नदवी रह०, वार्षिक सम्मेलनन-जमीयते उ-लमा-बम्बई फ़रवरी 1949, सं०:'हुकूमते इलाहिया और उ-लमाए मुफ़क्किरीन', संकलन : अबू मोहम्मद रामनगरी, पृ०:214, प्र०: मकतबा-निशाते-सानिया, हैदराबाद-1946

-----❖❖❖-----

"और जिसने मेरी याद से मुह मोड़ा उसका जीवन संकीर्ण हो गया और महाप्रलय के दिन हम उसे अन्धा उठाएंगे।"
-(क़ु०: 20-124)

अध्याय : 4

समता और आदिकालीन सम्बन्ध

धार्मिक प्रवृत्तियों एवं सम्बन्धों का निरीक्षण आवश्यक है :

अरबों के आध्यात्मिक विनाश के बाद आज हम किस युग में जी रहे हैं, इस का विश्लेषण हमारे लिये नितांत आवश्यक है। एक कौम चौदह सौ वर्ष पूर्व अरब देश में परिवर्तित हुई थी, और अब दूसरी भारत में सत्धर्म पर लौटेगी। दोनों की धार्मिक प्रवृत्तियों और बौद्धिक विकास की तुलना करना अत्यन्त आवश्यक है। फिर हम यह भी देखेंगे कि वर्तमान हिन्दू मत–मतान्तर तथा इस्लाम में कौन–कौन से मूल्य समान हैं? और यह भी कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं कि हम अतीत के अरब व हिन्द के सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक एवं आध्यात्मिक सम्बन्धों का अवलोकन करें क्योंकि जिस कौम को हमें सत्धर्म का निमन्त्रण देना है, उसे पहले हर पहलू से समझना ज़रूरी है। तो आइये पहले मक्के के मुशरिकीन (बहुदेववादियों) और वर्तमान हिन्दू क़ौम की तुलना करें।

आश्चर्यजनक समानता :

रसूले पाक सल्ल० (पवित्र देवदूत) की एक हदीस है–"**इस्लाम का प्रारम्भ अजनबी होने की दशा में हुआ और फिर वह इसी प्रकार अजनबी होने की ओर लौट जाएगा जैसा कि आरम्भ में था। बस शुभ–सूचना है अजनबियों के लिये।...**"[1]

क्या आज हम इस्लाम के अजनबी होने के उसी दौर से नहीं गुज़र रहे हैं जिस से कि रसूले ख़ुदा सल्ल० और उन पर प्राण न्यौछावर करने वाले सहाबी (सत्संगी) मक्की दौर में गुज़रे थे।

- वे सैकड़ों बुतों की पूजा करते थे, यह क़ौम हज़ारों मूर्तियों की पुजारी है। उस समय से आज तक कोई अन्य जाति इतिहास में ऐसी नहीं मिलती जो सैकड़ों हज़ारों बुतों की पूजा करती हो।

- वे अपनी बेटियों को जीवित दफ्न कर दिया करते थे, यह अपनी नवविवाहित महिलाओं को जिन्दा जला रहे हैं तथा राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में आज भी बेटियों की पैदा होते ही हत्या कर दी जाती है।
- वे रसूले ख़ुदा सल्ल० के पास परस्पर समझौतों के सूत्र लाते थे कि तुम हमारे बुतों को बुरा न कहो, हम तुम्हारे ख़ुदा को स्वीकार कर लेते हैं–इस क़ौम के लोग भी समय–समय पर ऐसे फ़ारमूले हमारे सामने पेश करते हैं कि हर एक धर्म की अच्छी बातें लेकर मानवता के धर्म को मानो। विश्व के किसी अन्य धर्म के अनुयायी, अनीश्वरवादी या साम्यवादी ऐसा नहीं कहते। वे केवल अपने पद्धति को अच्छा कहते हैं।
- उन का भी एक समुदाय 'काबे' का नग्नावस्था में तवाफ़ (परिक्रमा) करता था, इन के भी कुछ समुदाय नंगे होकर अपनी पूजा करते हैं।
- उन के ग्रन्थ खोए हुए थे (इब्राहीम अलै० के सहीफ़ों का कहीं पता न था), इन का भी ईशदूत खोया हुआ है। (वेदों को यह ईश्वर की वाणी कहते हैं, लेकिन यह किस पर अवतरित हुए इन्हें नहीं मालूम)

कैसी आश्चर्यजनक समानता है इन दोनों क़ौमों की धार्मिक प्रवृत्तियों एवं रीति–प्रणालियों में, जिन के बीच आज हम हैं और वे जिन के बीच ह० मोहम्मद सल्ल० को मक्की दौर में भेजा गया था।

जिस प्रकार मक्के के मुशरिक (मिश्रक) रसूलुल्लाह सल्ल० के शुभागमन के समय धर्म विश्वासों के बिगाड़ की चरम सीमा पर पहुंच गए थे, ठीक उसी तरह वर्तमान हिन्दू क़ौम स्वीकृत मतों के विकार की आख़िरी हद तक पहुंच चुकी है। इतिहास के स्वयं को दोहराने और इस क़ौम को तब्दीली के लिये चुने जाने पर हैरत नहीं होना चाहिये। मक्कावासियों के इस्लाम में प्रविष्ट होने से कुछ वर्ष पहले तक कोई इस की कल्पना भी नहीं कर सकता था कि इतना बड़ा चमत्कार हो जाएगा। केवल सर्वशक्तिमान अल्लाह के वादों पर रसूल सल्ल० के वफ़ादारों को अटल विश्वास था और इतिहास ने देखा कि वह चमत्कार होकर रहा।

यद्यपि वर्तमान परिवेश में यह बात असम्भव सी प्रतीत होती है लेकिन हम अल्लाह और उस के रसूल सल्ल० की भविष्यवाणियों में पूरी आस्था रखते हैं।

हिन्दुओं और मुसलमानों के समान जीवन–मूल्य :

हिन्दू विश्व की सब से 'पहली शरीअत' (धर्म–नियमावली) वाली क़ौम हैं और

मुसलमान 'आख़री शरीअत' वाली क़ौम हैं। इन दोनों क़ौमों को ईश्वर की तत्वदर्शिता ने एक ही देश भारत में इकट्ठा कर दिया है।

भारत के सभी बड़े मन्दिर, मस्जिदों के समान पूर्व–पश्चिम दिशा में अर्थात क़िबलारू (काबे की ओर मुंह करके) निर्मित हुए हैं। 'ड्यूबाइस' अपनी पुस्तक में लिखता है :

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) **''बड़े–बड़े मन्दिरों की निर्माण शैली और ढांचा चाहे वे नए हों या पुराने, हर जगह बिलकुल एक और समान है ... प्रवेश का मुख्यद्वार पूर्व की ओर खुलता है और यह एक ऐसी विशेषता है जिस का पूरा ध्यान उन के तमाम मन्दिरों और पूजा स्थलों में रखा गया है, चाहें वे बड़े हों या छोटे...''**[2]

मुसलमानों को तो मस्जिदों के पूर्व–पश्चिम दिशा में बनाने की वजह मालूम है लेकिन हिन्दू नहीं जानते कि उन्होंने अपने मन्दिर काबे की दिशा में क्यों निर्मित किये हैं? इस विषय में कई तरह के स्पष्टीकरण देने की कोशिश की जाती है, लेकिन सही ज्ञान किसी को भी नहीं हैं। कहीं ऐसा हिन्दुओं के काबे से आदिकालीन सम्बन्ध की वजह से तो नहीं है जिसे आज वे भूल गए हैं और अब मात्र परम्परा ही बाक़ी रह गई है जब कि वास्तविकता कहीं खोई हुई है।

❑ हिन्दुओं की चिता अग्निदाह के समय उत्तर–दक्षिण की दिशा में रखी जाती है और यही मुसलमानों की क़ब्रों का रुख़ है।

❑ मुसलमान हज्ज के अवसर पर जो लिबास (अहराम) पहनते हैं, वह दो अदद बिना सिली हुई चादरों पर आधारित होता है। एक चादर तहबन्द के रूप में बांधी और दूसरी ऊपर से ओढ़ ली जाती है। हिन्दू भी तीर्थ के अवसर पर हज़ारों साल पहले से यही पहनावा इस्तेमाल करते चले आ रहे हैं, बल्कि यह वस्त्र उन के यहाँ इतने पवित्र माने गये हैं कि इस का बदला हुआ रूप सामान्य जीवन में पुरुषों की धोती और महिलाओं की साड़ी में नज़र आता है।

❑ हज्ज व उमरे के अवसर पर मुसलमानों के लिये बाल कतरवाना आवश्यक और मुंडवाना श्रेष्ठ माना गया है। हिन्दुओं में हज़ारों वर्ष से तीर्थ के अवसर पर सिर मुंडवाने की परम्परा चली आ रही है।

❑ मुसलमान हज्ज या उमरे के अवसर पर जब अहराम की हालत में होते हैं तो उन के मर्दों को जूते या ऐसे चप्पल पहनने की अनुमति नहीं होती जिससे पांव का ऊपरी भाग ढक जाए। वर्तमान में हवाई चप्पल इस उद्देश्य के लिये

इस्तेमाल किये जाते हैं ताकि चलने में कठिनाई भी न हो और पांव के ऊपरी भाग पर केवल दो पतली पट्टियाँ रहें। हिन्दू हमेशा से तीर्थ के अवसर पर लकड़ी की ऐसी खड़ाँव पहनते आ रहे हैं जिस के ऊपर कोई पट्टी नहीं होती बल्कि सिर्फ लकड़ी का खूंटी नुमा अंगूठा होता है।

❑ मुसलमान अक़ीक़े के अवसर पर बच्चे का नाम रखते हैं और उस के सर के बाल मुडवाते है। हिन्दुओं में पहले से ही बच्चों के 'नामकरण संस्कार' के अवसर पर शीशमुंडन की प्रथा चली आ रही है।

क्या आप यह कल्पना भी कर सकते है कि रसूले ख़ुदा सल्ल० ने चौदह सौ वर्ष पहले यह परम्पराएं हिन्दू मत से उधार ली थीं, नऊ ज़ो बिल्लाह! (हम अल्लाह से पनाह मांगते हैं)। हक़ीक़त यह है कि इस क़ौम का काबे से पुराना सम्बन्ध है और यह दुनिया की एक मात्र धार्मिक क़ौम है जिसने आज तक अपनी परमपराओं को सांकेतिक रूप में भी बाक़ी रखा है। अगर ह० नूह अलै० ने अपनी क़ौम को काबे से सम्बधित यह परम्पराए दी थीं तो ह० मूसा अलै० तथा ह० ईसा अलै० ने भी अवश्य अपनी क़ौमों को दी होंगी। समय की लम्बी यात्रा में काबे का मूल तत्व गुम हो गया जिस के बाद दूसरी क़ौमो ने तो इन सांकेतिक परम्पराओं को भी खो दिया, लेकिन हिन्दू क़ौम ने इन को किसी न किसी रुप में जीवित रखा। इस प्रकार की सैकड़ो मिसालें हैं जिन्हें हम संक्षिप्त न होने की वजह से यहाँ पेश नहीं कर पा रहे हैं। हिन्दुओं में एक बहुत क़ीमती गुण है और वह यह कि अगर उन की खोई हुई वास्तविकताए किसी तरह उन्हें वापस की जा सकें तो दूसरी तमाम क़ौमों की तुलना में हिन्दू क़ौम का इस्लाम को समझ लेना सब से आसान है।

वास्तविकता को भूल कर केवल परम्पराओं पर चलने की ख़राबी मुसलमानों में भी पैदा हो गई है जिसे अल्लामा इक़बाल ने यूं महसूस किया था:

यह उम्मत ख़ुराफ़ात* में खो गई।
हक़ीक़त रिवायात में खो गई।।

लेकिन इस उम्मत की किताब और इस का रसूल (सल्ल०) क़ियामत तक के लिये सुरक्षित हैं। मुसलमानों की खोई हुई हक़ीक़तें किताब व सुन्नत द्वारा मत–संशोधन कर के वापस दी जा सकती हैं। यदि वेद केवल ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान है (जैसा कि वेदों के ज्ञानी कहते हैं) किसी व्यक्ति विशेष की रचना नहीं, तो फिर यह कहना चाहिये कि हिन्दू क़ौम की किताब और रसूल (सन्देष्टा) दोनों खोए हुए है। उन

* व्यर्थ के काम

की खोई हुई किताब और रसूल को ढूंढ कर हम उन्हें सत्‌धर्म पर वापस ला सकते हैं।

सम्बन्ध अनादि काल से होते हैं :

सम्बन्ध पैदा नहीं किये जाते, अनादि काल से स्थापित होते हैं–केवल शारीरिक नहीं, आत्मिक भी हाते हैं। यह प्रकट चाहे जब भी हो। यह नियम केवल व्यक्तिगत सम्बन्धों तक ही सीमित नहीं बल्कि क़ौमों और गिरोहों पर भी लागू होता है। आरम्भ से विद्यमान सम्बन्धों का नियम केवल मानव मात्र पर ही नहीं वरन् अन्य जीव–जन्तुओं, पेड़–पौधों और निर्जीव पदार्थों पर भी लागू होता है जिस को विज्ञान सिद्ध कर चुका है। इस पृष्ठभूमि में आइए देखें कि तबदील होने वाली क़ौम और उस के निवास स्थान भारत के ह० मोहम्मद सल्ल० के जन्म स्थान अरब और अरबी क़ौम के क्या सम्बन्ध है? इस सन्दर्भ में हम विभिन्न विख्यात शोधकर्ताओं के लेखों के कुछ सम्पादित अंश प्रस्तुत कर रहे हैं :

''ईसामसीह से 1000 वर्ष पूर्व यमन की क़ौम 'सबा' ने भी भारत से व्यापारिक सम्बन्धों को मजबूत किया था। इतिहासकार जोसेफ़स ने लिखा है कि बम्बई के निकट सिपारा नामक स्थान से हज़रत सुलेमान अलै० के युग में ईसा अलै० से 950 वर्ष पूर्व फ़िलिस्तीन से व्यापार हुआ। इसी तरह हिन्दुस्तानी मलमल, छींट और रुमाल आदि अरब में पसन्द किये जाते थे जिन का प्रसंग अरबी शायरी में मिलता है.... मौर्य वंश के आन्ध्र में समस्त शिलालेख आरामी यानी अरबी शैली में लिखे हुए मिले हैं। अशोक के शिलालेख भी दाहिनी ओर से लिखे हुए मिले हैं।''[3]

''अब प्रश्न यह उठता है कि आज से पांच हज़ार वर्ष पूर्व भारत में अरबी भाषा युधिष्टर के दरबार में कैसे प्रचलित हो गई? इस का जवाब यह हो सकता है कि आज से पांच हज़ार वर्ष पूर्व देश में दीने हनीफ़ (शाश्वत धर्म) का प्रचलन था।''[4]

हिन्दुस्तान का एक और सम्प्रदाय भी प्राचीन युग से अरब में पाया जाता था इस को अरबवासी मेद कहते थे।

'' ....इस्तखरी ने लिखा है कि सिन्ध के समस्त सीमावर्ती शहरों में नास्तिकों का धर्म 'बौद्ध' है और उन के साथ ही एक क़ौम है जिसे 'मेद' कहा जाता है.. जाट और मेद के बाद हिन्दुस्तान की एक और क़ौम अरब में प्राचीन युग से पाई जाती है, वह 'सियाबजा' या 'सबाबजा' है..... बिलाज़री ने 'फ़तूहुलबल्दान' में और इब्ने ख़ल्दून ने अपनी तारीख़ में बार–बार 'सियाब्जा' शब्द का प्रयोग किया है। ... अरब में हिन्दुस्तान का एक और समुदाय प्राचीन युग से आबाद था जिसे अरबबासी 'हमरा' 'हमर', 'अहामिर' और 'अहामरा' की उपाधि से याद करते थे।[5]

''यह अद्‌भुत एवं आश्चर्यजनक बात है कि 'हिन्द' शब्द अरबों को इतना प्यारा लगा कि उन्होंने इस देश के नाम पर अपनी औरतों के नाम भी रखे। अतः अरबी शायरी में इस नाम का वही महत्व है जो फ़ारसी में 'लैला' व 'शीरीं' का है।''[6]

विस्तृत वर्णन शोधकर्ताओं की पुस्तकों में भरे पड़े हैं। उर्दू में विशेषतया 'मौ० सय्यद सुलेमान नदवी' और 'मौ० क़ाज़ी अतहर मुबारकपुरी' ने अरब–हिन्द संपर्कों पर बहुत ग्राह्य किताबों की रचना की है। यहां हमने नमूने के तौर पर कुछ हिस्से पेश किये हैं जिन से अरब व हिन्द के प्राचीन सम्बन्धों का अन्दाज़ा हो सकता है। यह सम्बन्ध केवल सांस्कृतिक व सामाजिक ही न थे बलिक आध्यात्मिक भी थे। उदाहरण के लिये :

''शोधकर्ताओं को इस में कोई सन्देह नहीं कि अरबवासी बुद्ध को ही 'बोज़ासिफ़' कहते थे।''[7]

धार्मिक सम्बन्धों और विशेषतया ईशदूतों के अवतरण या आमद के विषय में हमें अनेक उक्तियां मिलती हैं।

आज एक सामान्य कल्पना मुसलमानों के ज़हनों में यह है कि जिन नबियों की चर्चा क़ुरआन शरीफ़ में है, उन का सम्बन्ध केवल अरब प्रायद्वीप से था, लेकिन यह दावा करने वाले लोग यह नहीं बताते कि ह० आदम अलै० और ह० नूह अलै० अरब, मिस्र, इराक़ या सीरिया के किन हिस्सों में धार्मिक प्रचार के लिये भेजे गए थे? इस विषय में शोधकर्ताओं को जो कुछ मिला है वह हम संक्षेप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

ह० आदम अलै० हिन्दुस्तान में :

एक दिलचस्प बात यह है कि श्रीलंका में सरान्दीप पर्वत पर एक बहुत बड़े पाँव का निशान मौजूद है जिसे बहुत से धर्मावलम्बी पवित्र मानते हैं। मुसलमान और ईसाई इसे ह० आदम अलै० के पाँव का निशान बताते हैं, बौद्ध धर्म के मानने वाले इसे गौतम बुद्ध के पाँव का निशान कहते हैं और हिन्दू इसे शिवजी के पैर का निशान मानते हैं। यह विचित्र कथन बिल्कुल निराधार भी नहीं है। इन की कड़ियां हमें अरबों के इतिहास

में भी मिलती हैं।

''अरब वासियों का दावा यह है कि हिन्दुस्तान से उन का सम्बन्ध केवल कुछ हज़ार वर्ष का नहीं बल्कि मानव उत्पत्ति के आरम्भ से यह देश उन की 'पैत्रिक–भूमि' है। हदीसों व तफ़सीरों (भाष्यों) में जहां ह० आदम अलै० का वृत्तांत है, अनेक रिवायतों में यह बयान किया गया है कि ह० आदम अलै० जब आसमान की जन्नत से निकाले गए तो वह इसी ज़मीन की जन्नत में जिस का नाम 'हिन्दुस्तान जन्नत निशान' है, उतारे गए। सरान्दीप (लंका) में उन्हों ने पहला क़दम रखा जिस का निशान उस के एक पहाड़ पर मौजूद है। इब्ने जरीर, इब्ने अबी हातिम और हाकिम में है कि हिन्दुस्तान की इस सरज़मीन का नाम जिस में ह० आदम अलै० उतरे, दजना है। क्या यह कहा जा सकता है कि यह दजना, 'दखना' या 'दखन' है जो हिन्दुस्तान के दक्षिणी भाग का मशहूर नाम है?''8

अब एक सुबूत तफ़सीर की किताबों से भी देख लीजिये:

''इबने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि आदम अलै० का 'तनूर' हिन्द में था।''9

यह उल्लेखनीय है कि क़ुरआन, इन्जील और तौरेत से यह रहस्य, भाष्यकारो को अभी तक नहीं मिल सका है कि ह० आदम अलै० दुनिया के किस भूभाग मे उतारे गए? ऊपर लिखित रिवायतों और श्रीलंका में पाँव के निशान से यह संकेत मिले है कि ह० आदम अलै० का अवतरण इस सरज़मीन पर हो सकता है। यद्यपि यह रिवायते कमज़ोर ठहराई जाती है लेकिन यह बात ज़रुर विचारणीय है कि दुनिया के किसी और हिस्से के बारे में ऐसा दावा होने की रिवायतें भी हमें नहीं मिलतीं।

ह० नूह अलै० हिन्दुस्तान में :

क़ुरआन से हमे यह मालूम होता है कि तूफ़ाने नूह (महा–जल–प्लावन जो ह० नूह अलै० के युग में आया था) के बाद ह० नूह अलै० की किश्ती जूदी पहाड़ी पर रुकी थी जो कि इराक़ के क्षेत्र कुर्दिस्तान मे है। बाइबिल से पता चलता है कि 'अरारात पर्वत' पर उन की किश्ती ठहरी थी (जूदी पहाड़, अरारात पर्वत श्रंखला की ही एक चोटी है)। लेकिन आज तक भाष्यकारों ने यह नही बताया कि किश्ती के रुकने के बाद ह० नूह अलै० के धार्मिक प्रचार के क्षेत्र दुनिया के कौन कौन से इलाक़े रहे और यह भी पता नहीं चल सका कि 'तूफ़ाने नूह' से पहले नूह अलै० छः सौ वर्ष तक कहाँ रहे? तौरेत से केवल इतना मालूम होता है ह० नूह अलै० और उन के साथी तूफ़ान

के बाद बाबुल में इकट्ठा हुए और वहाँ से पूरे पृथ्वी–पटल पर फैल गए।

''इस लिये इस का नाम 'बाबुल' है क्यों कि ख़ुदावंद ने वहां पर समस्त जगत वासियों की भाषाओं को गडमड कर दिया था और वहां से उन (ह० नूह अलै० और उन के साथियों) को ख़ुदा ने समस्त पृथ्वी पटल पर फैलाया।''

— (तौरेत : उत्पत्ति–9,11)

क़ुरआन यह बताता है कि तन्नूर से पानी उबलना आरम्भ हुआ था और यहा से तूफ़ान का आरम्भ हुआ था।

''यहां तक कि जब हमारा आदेश आ गया था और तन्नूर से पानी उबलना आरम्भ हुआ (तो) हम ने कहा कि इस (नौका) में हर प्रकार के जोड़ों में से दो को चढ़ालो... ।''

— (क़ु० : 11–40)

'तन्नूर' शब्द अरबी भाषा का नहीं है। फ़ारसी में इस का अर्थ रोटी पकाए जाने वाला तनूर है। अधिकतर भाष्यकारो ने इस शब्द को इन्हीं अर्थो में इस्तेमाल किया है और कुछ ने तन्नूर से अभिप्राय ज़मीन की सतह लिया है अर्थात पृथ्वी की सतह से पानी उबलना शुरु हुआ लेकिन 'तन्नूर' शब्द से पहले क़ुरआन में 'अलिफ़ लाम' इस्तेमाल हुआ है जिस का अर्थ है, कोई ख़ास 'तन्नूर' इस विषय मे विद्वानो की व्याख्या देखिये:

''और अगर यह कहा जाए कि अलिफ़–लाम 'अत्तन्नूर' में है... इस का जवाब यह है कि यह असम्भव नहीं कि ह० नूह अलै० को वह तन्नूर मालूम हो।

हसन बसरी का बयान है कि वह तन्नूर पत्थर का था और ह० हव्वा उस में रोटियां पकाती थीं, फिर वह ह० नूह अलै० के पास आ गया था और उन से कह दिया गया था कि जब तुम देखो कि तन्नूर से पानी उबल रहा है तो अपने साथियों को लेकर किश्ती में सवार हो जाना।''10

यह तन्नूर ह० आदम अलै० का था, यह बात मोहम्मद नईम मुरादाबादी ने भी अपनी तफ़सीर मे लिखी है। हम पूर्व मे भी 'तफ़सीर फ़तहुल क़दीर' से ह० इब्ने अब्बास रज़ि० का यह कथन नक़ल कर ही चुके है कि ह० आदम अलै० का तन्नूर हिन्द मे था। आइये अब एक और पहलू से देखें। 'तन्नूर' शब्द पर बहुत से कथन इकट्ठा करते हुए अल्लमा शौकानी ने लिखा है

''.... आठवां कथन यह है कि वह एक स्थान है जो हिन्द में है ...''11

यहां यह बात दिलचस्पी से खाली न होगी कि जब हम ने भारतीय रेलवे टाइम–टेबिल में तलाश किया तो हमें तनूर नामक एक स्थान केरल में मिला और मानचित्र मे देखा तो मालूम हुआ कि केरल के 'मलाप्पुरम' जिले मे समुद्री तट पर तनूर स्थित है। यह भारत के पश्चिमी तट पर है जो अरब सागर के द्वारा अरब से अलग होता है। रिवायात की रौशनी मे क्या यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह वही स्थान है जहां से 'सैलाबे नूह' के आरम्भ होने की चर्चा क़ुरआन ने की है? इससे दूसरे तमाम कथनों में सामन्जस्य भी स्थापित हो जाता है। अर्थात समुद्री तट पर जो स्थान 'तनूर' है वहां पृथ्वी की सतह से पानी उबलना शरू हुआ था और यही जगह ह० आदम अलै० का 'तन्नूर' कहलाती थी।

यह ध्यान रहे कि भारतीय जाति से ह० नूह अलै० का गहरा सम्बन्ध 'मनु' की हैसियत से हम पिछले पुष्ठों में पूरे प्रमाण के साथ सिद्ध कर चुके हैं। पूर्वोल्लिखित हसन बसरी रह० के कथन से ''कि जब तुम देखो कि तन्नूर से पानी उबल रहा है तो अपने साथियों को लेकर किश्ती में सवार हो जाना'' और दूसरी सभी रिवायातों से जिन में कहा गया है कि यह तन्नूर ह० नूह अलै० का था और हिन्द में था, यह साबित होता है कि ह० नूह अलै० तूफ़ान से पहले भारत मे थे। अब तूफ़ान के बाद की स्थिति पर विचार करें।

नरसिह अग्रवाल ने अपनी किताब ''The Hindu Muslim Question' में लिखा है कि आर्य जाति भारत में मनु (ह० नूह अलै०) के साथ आई:

(अंग्रेजी से हिन्दी) **''आर्य जिन को हिन्दुस्तान में फ़ादर मनु लेकर आए, 'मूर्ति–पूजा' नहीं करते थे।''** [12]

(उर्दू से हिन्दी) **''गुजरात के एक कानून विशेषज्ञ और शोधकर्ता एम० जमां खोखरा ने वर्षों की रिसर्च के बाद रहस्योदघाटन किया है कि आदमे सानी (नूह अलै०) गुजरात की मिट्टी में विश्राम कर रहें हैं। उन के दावे की बुनियाद दो सौ चालीस फ़िट चौड़ा एक प्राचीनतम मज़ार है जो गुजरात के इसी ऐतिहासिक नगर से पच्चीस मील दूर मोज़ा बड़ेला शरीफ़ के समीपवर्ती क्षेत्रों में सदियों से सब के लिये आकर्षण का केन्द्र है। गाँव से लगभग एक फ़रलांग दक्षिण में घनी झाड़ियों और छायादार वृक्षों से ढकी हुई इस नौगज़ी क़ब्र के बारे में सामान्य विचार है कि यहां ह० नूह अलै० के बेटे या पोते ह० क़बीत का मदफ़न (क़ब्र) है। लेकिन एम जमां खोखरा ने इलमे कशफ़ुलक़ुबूर (क़ब्र से मुर्दे के हालात मालूम करने की विद्या) के दो विद्वानों की रिवायतों से सिद्ध किया है कि क़बीत नही बल्कि स्वय ह० नूह अलै० हैं....।''** [13]

बहुत से अन्य विद्वानों (कश्फ़ुल क़ुबूर) एवं बुज़ुर्गों के कथन इस तथ्य की पुष्टि में देने के बाद आगे लिखा है:

(उर्दू से हिन्दी) **''बड़ेला शरीफ़ एक सीमावर्ती गाँव है और गुजरात से पांच मील दूर उत्तर पूर्व में क़स्बा टांडा के निकट स्थित है। यहां से छम्ब वादी का क्षेत्र आरम्भ होता है और चनाब व तोमी दरया इस के निकट ही बहते हैं। विभाजन से पूर्व हिन्दू, मज़ार को 'मनु–महर्सत' कि नाम से पुकारते थे। मनु–महर्सत संस्कृत का शब्द है और इस का अर्थ किश्ती वाला है। इबरानी शब्द 'नूह' से भी यही अर्थ लिया जाता है। संस्कृत की प्राचीन किताबों में अंकित है कि आदम अलै० के तूफ़ान का प्रसंग आर्यों के प्रचीन धार्मिक ग्रन्थों में आया है और इस हवाले से साबित होता है कि आरम्भ काल ही में नूह अलै० की सन्तान भारतीय उपमहाद्वीप तक फैली हुई थी। 'आईनए गुजरात' में अंकित है कि गुजरात के निवासी ह०नूह अलै० के बेटे 'हाम' की औलाद हैं और हामियों ने कश्मीर के समीपवर्ती क्षेत्रों में बड़ी बड़ी इमारतें और खलाफ़ निर्मित कराए थे। समय की भूल–भुलइयों में हाम की क़ब्र के निशान भी मिट चुके हैं लेकिन शहरों और मज़ारों के रूप में उन के आगमन के चिह्न यहां के विशाल क्षेत्र में फैले हुए हैं। बड़ेला शरीफ़ के इर्द गिर्द मिट्टी के बड़े–बड़े तूदे और टीले इस बात के गवाह हैं कि यहां कभी आदम अलै० की सन्तान की वैभवशाली बस्तियां होंगी।''** [14]

इस शोध लेख के उपरिलिखित अंशों के बाद अब ज़रा यह भी देखे :

(उर्दू से हिन्दी) ''... **याक़ूत हमवी ने लिखा है 'बोक़ीर बिन यक़अतन बिन हाम बिन नूह' की औलाद में सिन्ध और हिन्द दो भाई थे जिन के नाम पर यह दोनों देश मशहूर हुए।** [15] –(काज़ी अतहर मुबारकपुरी)

इन सभी उक्तियों और शोध लेखो से क्या इस अनुमान को बल नही मिलता कि 'नूह अलै० के तूफ़ान' से पहले और बाद मे भी हज़रत नूह अलै० का सम्बन्ध भारत से रहा था?

ह० आदम अलै० और ह० नूह अलै० से सम्बन्धित ऊपर लिखी हुई शोध सामग्री को अगर आप अलग अलग देखे तो इन मे से कुछ या हर एक को कमज़ोर कह ले लेकिन इकट्ठा होने के बाद इन की हैसियत मज़बूत और प्रमाणित स्तर की बन जाती है। फिर यह भी विचारणीय है कि किसी और देश मे इन नबियो के शुभआगमन या देहान्त होने के दावे हमे नही मिलते। यदि अपनी–अपनी जगह अफ़साने गढ़ लिए

गए तो यह बड़ी अजीब बात है कि अरबों ने भी ह० आदम अलै० और ह० नूह अलै० के भारत ही से सम्बन्धित होने की कहानियां गढ़ी और चीन, रूस, जापान, यूरोप, अमरीका या आस्ट्रेलिया से सम्बन्धित नहीं बनाईं।

वैसे भी इस में आश्चर्य की क्या बात है? उस युग में इन्सानों के कद साठ–साठ मीटर लम्बे और आयु एक–एक हज़ार वर्ष की होती थी। ऐसे मानव अपने जीवन काल में यदि संसार के प्रत्येक भूभाग से गुज़रे हों तो यह कोई हैरत की बात नहीं है। लम्बी उम्रों की उक्तिया तो बहुत आम हैं। लम्बे कद के लिये 'सही बुखारी' (हदीसों का संग्रह) के अध्याय 'किताबुल अंबिया' में ह० अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत की हुई हदीस देखी जा सकती है जिसमें उल्लेख है कि हज़रत आदम अलै० का कद साठ ज़राअ (मीटर) था। उस समय से अब तक मनुष्य का कद निरन्तर घटता आ रहा है।

कुछ अन्य ईशदूत, हिन्दुस्तान में:

जी हां! ह० आदम अलै० व नूह अलै० ही नहीं, अन्य बहुत से नबियों का भारत में आगमन या उपस्थिति की अनेक उक्तियां पाई जाती हैं जिन में से कुछ का उल्लेख हम यहां कर रहे हैं :

(उर्दू से हिन्दी) **''शोधकर्ताओं को इस में कोई सन्देह नहीं कि अरबवासी 'बुद्ध को ही 'बोज़ासफ़' कहते थे।''**[16]

''आज के मशहूर विद्वान मौ० मनाज़िर अहसन गीलानी को माहत्मा बुद्ध में 'नुबूवत' की झलक नज़र आती थी और वह पवित्र कुरआन के 'ज़ुलकफ़िल' और 'कपिलवस्तु' को एक ही व्यक्तित्व मानते थे।''[17]

ए०एन० कनिंघम की पुरातन अवशेष की 1862–63 की रिपोर्ट में यह दर्ज है :

(उर्दू से हिन्दी) **''.....कनिंघम ने अयोध्या में इन तोदों की विस्तृत जानकारी देते हुए लिखा है कि मुनी और कबीर पर्वतों के बीच मुसलमानो का एक धार्मिक स्थल है जो पूर्व से पश्चिम तक 64 फ़ीट है और 47 फ़ीट चौड़ा है और इस में दो मज़ार हैं जो ह० शीस और 'ह० अय्यूब अलै०' के माने जाते हैं।''**[18]

(उर्दू से हिन्दी) **''हिन्दुस्तान की सरज़मीन भी खुदा के पैगम्बरों से खाली नहीं रही है। ह० मुजद्दिद अलिफ़ सानी रह० सरीखे महात्मा भी जो अक़ीदे में बड़े सख़्त हैं, हिन्दुस्तान में पैगम्बरों के आगमन को स्वीकार करते हैं और उन**

को यहां के कुछ नगरों में नूरे नुबूवत (ईशदूतत्व की ज्योति) नज़र आया था।''[19]

एम० ज़मा खोखरा (जिन की चर्चा हम दैनिक 'क़ौमी जंग' रामपुर के हवाले से कर चुके हैं) के बारे में समाचारपत्र आगे लिखता है:

(उर्दू से हिन्दी) **''एम ज़मा खोखरा ने ह० नूह अलै० के मज़ार या नूह अलै० के बेटे की क़ब्र के अलावा लम्बी चौड़ी क़बरों की निशानदेही की है। उन के अनुसार ग्राम चौगानी में ह० तानूग़ कन्आनी थे और वह ह० यूसुफ़ अलै० के बेटे थे। 'आईनए गुजरात' में दर्ज है कि क़ाज़ी सुलतान महमूद ने इलमे क–शफ़ुलक़ुबूर की सहायता से गुजरात के आस पास कई मज़ारों की निशानदेही की है। उन का दावा है कि यह तमाम क़ब्रें उन बनी इस्राईल के नबियों की हैं जो ह० मूसा अलै० और इमरान की सन्तान में से थे।**

प्राचीन ऐतिहासिक हवालों से अन्दाज़ा होता है कि गुजरात, ज्ञान व विद्वत्ता की दृष्टि से यूनानी भूभाग ही नहीं बल्कि आध्यात्मिकता के रिश्ते से ईशदूतों का मदफ़न (समाधि भवन) भी है। रवाल शरीफ़ के स्थान पर एक मज़ार मौजूद है जिस की लम्बाई सामान्य क़ब्र से कई फ़िट ज़्यादा है। इस के बारे में यह कहा जाता है कि यहां आदम अलै० के बेटे शीस अलै० की औलाद में से एक बुज़ुर्ग दफ़्न हैं। पसीर नगर में हमसियालान की एक तुर्बत (क़ब्र) है जो बख़्त नसर के हमले के दौरान अपने बेटे सहित कैद हो गए थे। उन के पूर्वज ह० हारुन अलै० हैं। क़स्बा टांडा में एक इस्राईली सरदार नक़ीब ख़ुशी की क़ब्र है। तोमी नदी के किनारे सुलतान फ़ीनूस और फ़नानूस की क़ब्रें हैं। यह दोनों बुज़ुर्ग ह० इब्राहीम अलै० के बेटे अफ़्रासीम की सन्तान में से बताए जाते हैं। राजा सीनादोश के बारे में मशहूर है कि वह ह० दाऊद अलै० के बेटे हैं ...एक नौ गज़ की क़ब्र ग्राम 'रंगड़ा' में भी है। इन शताब्दियों और युगों पुरानी क़ब्रों ने अगर अपनी पवित्रता और सम्मान को बनाए रखा हुआ है तो इस बारे में यही कहा जा सकता है कि यह ईशदूतों के चमत्कार हैं।''

यद्यपि ह० आदम अलै० व नूह अलै० के विषय में बयान की हुई रिवायतों की तुलना में ऊपर लिखित रिवायतें ज़्यादा विश्वसनीय नहीं हैं, लेकिन फिर भी चूकि यह रिवायतें मौजूद हैं, इस लिये हम ने संक्षेप में इनका वर्णन किया है। अब ह० ईसा अलै० का वृत्तांत देखिए।

ह० ईसा अलै० हिन्दुस्तान में:

ईसा अलै० के भारत में आगमन के विषय में कश्मीर और लद्दाख में बहुत सी कहावतें प्रसिद्ध हैं। रूसी और अन्ग्रेज़ शोधकर्ताओ ने भी इस का उल्लेख किया है। अब हम हिन्दी पत्रिका 'कादम्बिनी' मार्च 1973 अंक में प्रकाशित 'आचार्य रजनीश' के एक लेख **'जीसस का अज्ञात जीवन'** से कुछ अंश उद्‌धृत कर रहे हैं :

''भारत के पास इस आशय के कई तथ्य हैं कि जीसस (ईसा) कश्मीर में एक बौद्ध मठ में ठहरे। कश्मीर में कहानियां प्रचलित हैं कि जीसस वहां थे ... ध्यान साधना में लीन फिर वह येरोशलम में प्रगट हुए। उस समय वह तीस वर्ष के थे।''

एक फ्रांसीसी लेखक अपनी किताब 'स्वर्ग का सांप' (The Serpent of Paradise) में कहता है– **''कोई नहीं जानता कि तीस वर्ष के होने तक उन्होंने क्या किया और कहां रहे। एक कथा के अनुसार वह कश्मीर में रहे थे।''**

...रूसी यात्री निकोलस नेरोविच ने, जो कि करीब 1887 के आस पास भारत आया था, लद्दाख गया। वहां वह बीमार पड़ गया और प्रसिद्ध हेमिस गुफ़ा में रहा। गुफ़ा में अपने निवास काल में वह अनेक बौद्ध ग्रन्थ पढ़ गया। उस ने इन बौद्ध ग्रन्थों में जीसस का, उन की शिक्षाओं व उन की लद्दाख यात्राओं आदि के बारे में अधिक वर्णन पाया। बाद में उसने एक पुस्तक प्रकाशित की–'लाइफ़ ऑव सेंट जीसस' इस में उस ने जीसस के लद्दाख एवं पूर्व के दूसरे देशों की यात्रा सम्बन्धी विवरणों का उल्लेख किया।

यह उल्लेख किया गया है कि लद्दाख से जीसस, ऊँचे पर्वतों के दर्रों में से गुजर कर बरफ़ीले रास्तों व पिंडों को पार करते हुए कशमीर में पहलगाम पहुंच गए। वे पहलगाम (गड़रियों का गाँव) में काफ़ी लम्बे समय तक अपनी भेड़–बकरियों की देखभाल करते हुए रहे। यहां जीसस को इज़राइल की कुछ खोई हुई जातियों के चिह्न मिले।

ऐसा उल्लेख मिलता कि जीसस के निवास के बाद से ही यह गाँव पहलगाम के नाम से पुकारा गया। 'पहल' का कश्मीरी भाषा में अर्थ होता है, गड़रिया और गाम का मतलब होता है–गाँव। बाद में श्रीनगर जाते हुए रास्ते में जीसस विश्राम के लिये रूके और इसमुक्कम स्थान पर उन्होंने उपदेश दिये। यह गांव भी 'इसमुक्कम'* (जीसस के विश्राम की जगह) नाम से उन के पीछे

* इस्मुक्कम शब्द संभवतः ईसा + मुक़ाम से बना है।

ही पुकारा जाने लगा।''

'कादम्बिनी' पत्रिका में प्रकाशित शांतिकुंज हरिद्वार का एक लेख **'तिब्बती लामा के सान्निध्य में ईसा'** के नाम से प्रकाशित हुआ है। इस के अंश भी हम उद्‌धृत कर रहे हैं :

''यह तीस वर्ष ईसा ने कहां और किस प्रकार व्यतीत किये – यह जानने के लिये कई विद्वानों ने काफ़ी शोध की है। शोधकर्ताओं में अग्रणी हैं रूसी विद्वान निकोलस नोरोविच, जिन्होंने लगातार चालीस वर्षों तक विभिन्न देशों की यात्रा करके शोध सामग्री संकलित की और उन निष्कर्षों को सन् 1868में 'अननोन लाइफ़ ऑफ़ जीसस' नामक किताब के रूप में प्रकाशित कराया।

निकोलस नोरोविच अपनी शोध यात्रा के दौरान तिब्बत भी गए और उन्होंनें तिब्बत के हिमोस बौद्ध विहार में ताड़पत्रों पर लिखा हुआ एक प्राचीन ग्रंथ देखा। नोरोविच ने इस बौद्ध बिहार में बिताए क्षणों का विवरण इस प्रकार लिखा है ''जब मैं एक गुफ़ा में गया तब वहां के एक लामा ने मुझे एक ऐसे देवदूत के बारे में बताया जिसे वह बुद्ध का ही एक रूप मानता था। लामा ने उस देवदूत का नाम ईसा बताया और कहा कि हम लोग ईसा का नाम बड़े सम्मान के साथ लेते हैं। उन के बारे में हमें अधिक जानकारी नहीं है, परन्तु मुख्य लामा के पास एक प्राचीन ग्रंथ है जिस में ईसा के बारे में बहुत कुछ लिखा हैं।''

''किसी प्रकार नोरोविच ने यह प्राचीन ग्रंथ देखने और उसके चित्र उतारने में सफलता प्राप्त कर ली। इस ग्रंथ में 14 प्रकरण तथा 244 श्लोक हैं। ग्रंथ में ईसा के बारे में जो विवरण मिलता है वह इस प्रकार है–''ईसा ज्ञान प्राप्ति की इच्छा से भारत आये। उन दिनों येरूशलम के व्यापारियों के दल व्यापार के लिये यहां आया करते थे। ईसा भी एक व्यापारी दल के साथ सिंध होते हुए भारत आए थे।''

'' ....ईसा सभी व्यक्तियों पर स्नेह रखते थे और उन्हें भी वैश्य, शूद्र सभी प्यार करते थे, उन दिनों वे जगन्नाथपुरी में ठहरे हुए थे। जगन्नाथ मंदिर के पुजारियों को जब यह पता चला कि ईसा शूद्रों से भी मिलते हैं तब वे उनसे अप्रसन्न रहने लगे। ईसा को जब पुजारियों की अप्रसन्नता का पता चला तब वे जगन्नाथ मंदिर छोड़ कर राजगृह चले गए .... छः बर्ष तक वहां रहे। इस के बाद वे नेपाल होते हुए तिब्बत पहुंचें। सोलह बर्ष तक इस प्रकार भ्रमण

करते हुए ईरान के रास्ते अपने देश लौट गये। तिब्बत की यात्रा के दौरान उन्होंने कुछ बर्ष हिमोस बौद्ध बिहार की परंपरा में लामा के साथ भी बिताए थे....''

''इन्जील में भी ऐसा उल्लेख मिलता है कि बैथलेहम में जब ईसा का जन्म हुआ, तब पूर्व के कोई ज्ञानी पुरूष उनका दर्शन करने के लिये बैथलेहम आए। आर्थर मिल ने इस ज्ञानी पुरूष को बौद्ध यति बताया है।'

''क्राइस्ट इन कश्मीर' के लेखक अज़ीज़ क़ुरैशी ने लिखा है कि उन दिनों यहूदियों की एक बड़ी जनसंख्या भारत में आकर बस गई थी, जिन के वंशज अभी भी यहां पाए जाते हैं। कश्मीर के गुज्जर लोग अपने को स्त्रायिन गोत्र का बताते हैं। उनके नाम अब भी यहूदी ढग के होते हैं। वे हिब्रू से मिलती-जुलती भाषा बोलते हैं, स्मरणीय है कि यहूदियों में भी हिब्रू भाषा ही प्रचलित है। उन के निवास स्थानों के नाम भी यहूदियों जैसे ही हैं। ईसा स्वयं भी यहूदी परिवार में जन्मे थे और उन दिनों भारत में आने वाले यहूदी व्यापारियों के साथ यहाँ आ गए थे।'

'' दुराई स्वामी आयंगर द्वारा लिखित 'लांग मिसिंग लिंक्स और मारवेलस डिस्कवरीज़ अबाउट आर्यन्स' व 'जीसस क्राइस्ट एण्ड अल्लाह' का उल्लेख किये बिना बात अधूरी रहेगी। आयंगर ने यह पुस्तक काफ़ी खोजबीन के बाद लिखी है। इस पुस्तक में आयंगर ने जेम्सन द्वारा लिखी गई एक पुस्तक से प्रमाण स्वरूप कई चित्र उद्धृत किये हैं। ....कितने ही चित्र हैं जिन में भारतीय संस्कृति की छाप है।'

'' भविष्य पुराण के प्रसंग 3 अध्याय 22 के 21 से 26 श्लोक तक हिमालय पर ईसा से शकाधीश की भेंट का वर्णन इस तरह मिलता है-

एक बार शकाधीष, हिमालय से आगे हूण देश गए, वहां उन्होंने एक सफ़ेद पोश गोरे रंग के सन्त को पहाड़ी में घूमते हुए देखा। शकाधीश ने उन से परिचय मांगा तो सन्त ने कहा कि ईसा मेरा नाम है। मैने कुमारी मां के गर्भ से जन्म लिया है और मैं विदेश से आया हूँ। मुझे 'मसीह' कहा जाता है।'[20]

उपर्युक्त लेख में इस के अतिरिक्त रमेश चन्द्र दत्त की किताब ''प्राचीन भारत में सभ्यता का इतिहास'' और डाक्टर स्पेन्सर की 'ईसा का अज्ञात जीवन' के हवाले से भी ह० ईसा अलै० का भारत में आना सिद्ध किया गया है। आइये अब अन्तिम ईशदूत (सल्ल०) के हिन्दुस्तान से सम्बन्ध की रिवायतों पर दृष्टिपात करें।

ह० मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० और हिन्दुस्तान:

(उर्दू से हिन्दी) ''रसूलुल्लाह सल्ल० के एक सहाबी ह० तमीम दारी रज़ि० जो 9वीं हिज्री में मुसलमान हुए, उन के बारे में एक चलती हुई रिवायत है कि कि वह दक्षिणी भारत में इस्लाम के प्रचार के लिये आए थे और यहीं देहान्त हुआ और मद्रास के समीपवर्ती क्षेत्रों में उन की क़ब्र मौजूद है।''[21]

''तबक़ात इब्ने सअद, सीरत इब्ने हशाम और तारीखे तबरी इत्यादि में है कि 19वीं सदी हिज्री में ह० ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० नजरान से बनू हारिस का एक शिष्ट मण्डल लेकर रसूलुल्लाह सल्ल० की सेवा में हाजिर हुए ... रसूलुल्लाह सल्ल० ने शिष्टमण्डल के सदस्यों को देख कर फ़रमाया-यह कौन लोग हैं जो मानो हिन्दुस्तान के आदमी हैं।''[22]

ऊपर लिखित रिवायतों से यह सिद्ध होता है कि आप (सल्ल०) हिन्दुस्तानियों को इतनी अच्छी तरह जानते थे कि अपरिचित लोगों की वेश-भूषा बयान करने के लिये आप (सल्ल०) ने हिन्दुस्तानियों की मिसाल दी। नीचे हम दो रिवायतें और उद्धृत कर रहे हैं जिन से आप (सल्ल०) का हिन्दुस्तानियों से परिचित होना साबित होता है।

(उर्दू से हिन्दी) '' यूं तो अहदे रिसालत (नबी सल्ल० के ईशदूतत्व काल) में भारत की विभिन्न जातियां अरब में मौजूद थीं मगर इन में से 'ज़त' (जाट) और 'सियाब्जा' बड़ी संख्या में अरब के पूर्वी तटों और उन से लगी हुई आबादियों में रहते थे और पूरे अरब के लोग उन से भली भांति परिचित थे। स्वयं रसूलुल्लाह सल्ल० और सहाबा रज़ि० इन को जानते और पहचानते थे। अतः तिरमिज़ी के अबवाबुल मिसाल में -ह० अब्दुल्लाह इब्ने मसूद रज़ि० के शब्द यह हैं-''कुछ लोग मेरे क़रीब आए। वह अपने जिस्म और बालों में जाटों के सदृश थे।''[23]

उक्त हदीस के बारे में इमाम तिरमिज़ी ने लिखा है कि यह हदीस इस तरीक़े से 'हसन-सही-ग़रीब' है।[24]

सही बुखारी में मेराज के अध्याय में यह रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने ह० मूसा अलै० को रंग और काठी में जाट से उपमा दी है।

ह० इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया मैंने ह० ईसा अलै०, ह० मूसा अलै० और ह० इब्राहीम अलै० को देखा-ईसा अलै० तो सुर्ख़ रंग घुंघराले बालों और चौड़े सीने वाले हैं। रहे मूसा अलै०

तो वह गन्दुमी रंग और सीधे बालों वाले थे गोया (मानो) वह जृत (जाटों) में से हैं।''25

यहां तक तो हम ने वह रिवायतें पेश की है जिन में हिन्दुस्तानियों से आप सल्ल० की पहचान का ज़िक्र है लेकिन बात सिर्फ परिचित होने तक ही की नहीं है बल्कि आप (सल्ल०) का इस देश से विशिष्ट सम्बन्ध, प्रेम और लगाव था–अवलोकन करें :

(उर्दू से हिन्दी) **''अरबों को हिन्दुस्तान से हमेशा बड़ा लगाव रहा है...अरबों का विचार है कि ह० आदम अलै० दुनिया में दजना के स्थान पर उतारे गए जो हिन्दुस्तान में स्थित है। नूरे मोहम्मदी, ह० आदम अलै० की पेशानी में अमानत था। इस से साबित होता है कि मोहम्मद सल्ल० का प्राथमिक जहूर (प्राकट्य) इस सरज़मीन में हुआ।''26**

(उर्दू से हिन्दी) **''एक रिवायत यह है कि स्वर्ग से चार दरया निकले हैं–नील, फ़रात, जैहून और सैहून। 'सैहून' के विषय में यह है कि हिन्दुस्तान के दरया का नाम है। क्या स्वर्ग के इस चौथे दरया को गंगा कहेंगे? कुछ लोगों ने इसे सिन्ध नदी बताया है।''27**

(उर्दू से हिन्दी) **''...इसी सम्बन्ध में अरबों में यह रिवायत प्रचलित है कि रसूले अकरम सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि मुझे हिन्दुस्तान की तरफ़ से रब्बानी (ईश्वरीय) खुशबू आती है और ह० अली रज़ि० ने भी फ़रमाया कि सब से पवित्र और सुगंधित स्थान हिन्दुस्तान है।''28**

केवल इतना ही नहीं बल्कि रसूले अकरम सल्ल० ने हिन्दुस्तान में गज़वे* की भी खुशख़बरी सुनाई है। ऐसा गज़वा जिस में शरीक हो जाने पर ही नरक की आग से सुरक्षा की शुभ सूचना दी गई है। इमाम निसाई ने 'सुनन' में बाबे गज़वतुल –हिन्द' के अन्तर्गत और इमाम तबरानी ने 'मुअजम' में सनदे जय्यद (मज़बूत सनद) के साथ ह० सोबान मौला रज़ि० की रसूलुल्लाह सल्ल० से रिवायत नक़ल की है।

''रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के दो ग्रोहों को अल्लाह तआला ने नरक की आग से सुरक्षित रखा–एक वह ग्रोह जो हिन्दुस्तान में जिहाद (धर्म संघर्ष) करेगा और दूसरा ग्रोह जो ईसा अलै० के साथ रहेगा।''29

''ह० अबू हुरैरा रज़ि० ने कहा कि हमें रसूलुल्लाह सल्ल० ने हिन्दुस्तान में गज़वे का वचन दिया है। यदि मैं इस में सम्मिलित हुआ तो इस में अपनी

* हक्को बातिल की जंग (देवासुर संग्राम)

जान व माल खर्च कर दूंगा, अगर मारा गया तो बेहतरीन शहीद हूंगा और अगर जीवित हुआ तो नरक से मुक्त अबू हुरैरा हूंगा। *30

ईश्वर हमें भी 'गज़वए हिन्द' के लिये स्वीकार करे! आमीन (तथास्तु)

अरब व हिन्द भौगोलिक दृष्टि से कभी एक थेः

अरब व हिन्दुस्तान के बीच हज़ारों पृष्ठों पर फैली हुई व्यापारिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सम्बन्धों पर आधारित एक लम्बी कहानी के बीच के कुछ अंश आप ने देखे। कहीं कहीं तो ऐसा प्रतीत होता है कि एक ही कम्प्यूटर मशीन के दो भाग हैं जिन का एक दूसरे से निरन्तर सम्पर्क अवश्यम्भावी है या जैसे कभी कभी दो जुड़वां भाइयो के बीच टेलीपेथी की मानसिक लहरों का सम्बन्ध बना रहता है चाहे वह एक दूसरे से सैकड़ों हज़ारों मील दूर हों। अतः यह जानकर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि दोनों देश भोगोलिक दृष्टि से भी कभी एक दूसरे से जुड़े हुए बल्कि सटे हुए थे। समय के लम्बे अन्तराल में जो भौगोलिक परिवर्तन हुए उन के फलस्वरूप यह दोनों देश भी एक दूसरे से अलग हो गए।

भूगर्भशास्त्रियों (Geologists) की आधुनिक खोज के अनुसार विश्व के सभी महाद्वीप अचल नहीं है बल्कि निरन्तर गतिमान हैं। बीस करोड़ वर्ष पहले पृथ्वी के सभी द्वीप–महाद्वीप एक दूसरे से जुड़े हुए थे और संपूर्ण भूभाग के चारों ओर समुद्र था। विभिन्न महाद्वीप इस महान भूभाग से टूट–टूट कर तैरते हुए आज वर्तमान रूप में आ पहुचे हैं और अब भी गतिशील हैं। इस विषय पर रोनाल्ड शिलर के लेख 'पृथ्वी के महाद्वीप खिसक रहे हैं' (Earth Continents Are Adrift) से कुछ अंश हम प्रस्तुत कर रहे हैं। यह लेख रीडर्स डाइजेस्ट जुलाई 1971 के अंग्रेज़ी अंक में प्रकाशित हुआ था–अगले पृष्ठ पर जो चित्र दिये जा रहे हैं वह भी रीडर्स डाइजेस्ट के इसी लेख से लिये गए हैं।

(अंग्रेज़ी से हिन्दी) **'विश्व के चार अरब साठ करोड़ वर्ष की भूगर्भविद्या के इतिहास में समुद्र एक अकार्डियन बाजे की तरह फैलते और सिकुड़ते रहे हैं और महाद्वीप तूफ़ानी समुद्र में एक पुराने जहाज़ के समान डोलते रहे हैं... निश्चत रूप से इस भ्रमजाल के कुछ भाग अभी गुम हैं और सम्पूर्ण ब्यौरे पर**

* सुनन–निसाई और इमाम अहमद, इमाम इब्ने असाकर व इमाम इब्ने कसीर ने भी 'गजवए हिन्द' की हदीस की रिवायत की है । अतः अलबदाय व अन्नहाया भाग:9 पृ०:95 में है । गजवए हिन्द के विषय में हदीस आई है जिसे हाफ़िज़ इब्ने असाकर इत्यादी ने रिवायत किया है । गुलाम अली आजाद ने उपरोक्त दोनों रिवायतों को विस्तार के साथ सुब्हतुल मरजान पृ० : 21 में अंकित किया है ।

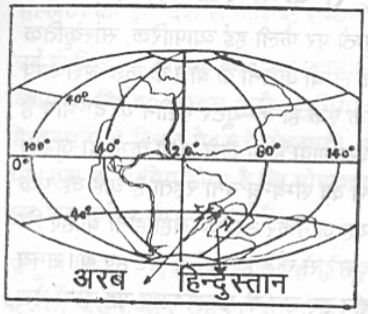

1– महाद्वीप–बीस करोड़ वर्ष पूर्व

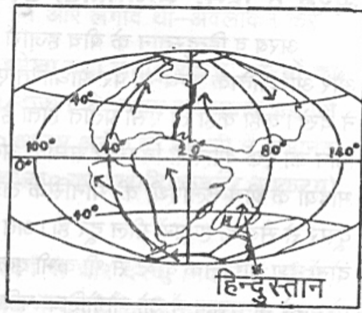

2– दो करोड़ वर्ष तक बहने के बाद

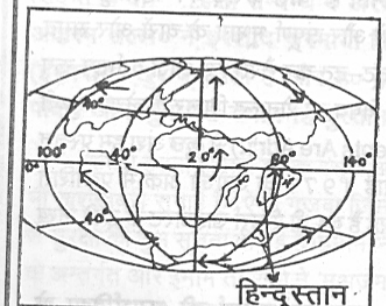

3– ग्यारह करोड़ वर्ष से अधिक बहने के बाद

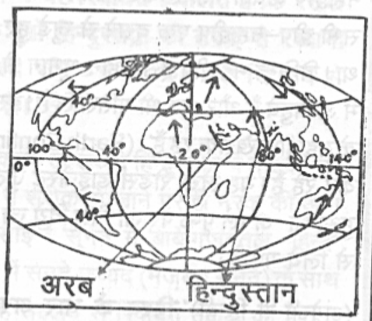

4– आज और अब भी गतिशील

वैज्ञानिक एकमत नहीं हो पाए हैं लेकिन एक सामान्य रूपरेखा पर वैज्ञानिकों का बहुमत इस दृष्टि से सहमत हो चुका है कि यह अब केवल एक दृष्टिकोण नहीं रहा बल्कि इसे वैज्ञानिक सत्य स्वीकार कर लिया गया है...समुद्र विज्ञान के विशेषज्ञ वैज्ञानिक 'मौरिस ईविंग' के शब्दों में यह शोधकार्य, विज्ञान और मानव जाति के लिये इतना महत्वपूर्ण है जितना कि वैज्ञानिक 'आइस्टाइन' के गति और ऊर्जा के नियम...

पृथ्वी के सभी महाद्वीप आपस में जुड़े हुए थे। बीस करोड़ वर्ष पहले यह महान महाद्वीप टूटना आरम्भ हुआ। यहां तक कि आज के वर्तमान रूप में सात महाद्वीप और विभिन्न द्वीप अस्तित्व में आए...यह सभी महाद्वीप एक ज़बरदस्त शक्ति के द्वारा जिस का केन्द्र अज्ञात है, विभिन्न दिशाओं में बह रहे हैं और उन की रफ़्तार एक सैन्टीमीटर से पन्द्रह सैन्टीमीटर वार्षिक है जो कि भूगर्भ शास्त्र (Geology) के हिसाब से एक ज़बरदस्त गति है...मिसाल के तौर पर वैज्ञानिकों को यह मालूम हुआ कि अटलांटिक महासागर की चौड़ाई बढ़ रही है। यूरोप और उत्तरी अमरीका एक दूसरे से ढाई सैंटीमीटर वार्षिक की गति से दूर होते जा रहे हैं ...। समुद्र के फ़र्श की चाल की गति का हिसाब लगाने के बाद वैज्ञानिक यह पता कर सके हैं कि पृथ्वी के समस्त महाद्वीप पहले किसी रूप में एक दूसरे से जुड़े हुए थे। सब से पहले एक ज़बरदस्त पूर्व–पश्चिम दराड़ पैदा हुई जिस की वजह से अफ़्रीका और दक्षिणी अमरीका अलग हुए। अन्टार्कटिका और आस्ट्रेलिया पृथक हुए और हिन्दुस्तान स्वतन्त्र होकर उत्तर की दिशा से बहना आरम्भ हुआ। बीस करोड़ वर्ष में पृथ्वी ने वर्तमान रूप धारण किया... सब से आश्चर्यजनक मामला हिन्दुस्तान का है जिस ने अफ़्रीका और अन्टार्कटिका से टूटने के बाद उत्तर की ओर आठ हज़ार आठ सौ किलोमीटर की दूरी अट्ठारह करोड़ साल में तय की और एशिया के पेट में इतने वेग से प्रविष्ट हुआ कि उस के आगे की ज़मीन हिमालय के रूप में ऊंची उठ आई... वर्तमान दिशाओं में वर्तमान गति से पृथ्वी के टुकड़ों का बहना जारी रहा तो हिमालय अभी और ऊंचा होगा और फिर हिन्दुस्तान एशिया में घुसते रहने से थक कर पूर्व के ओर बहना आरम्भ कर देगा...।'[31]

पिछले पृष्ठ पर दिये गए मानचित्र से यह स्पष्ट है कि हिन्दुस्तान पहले वर्तमान अफ़्रीका महाद्वीप से जुड़ा हुआ था। हिन्दुस्तान के अलग होने के बाद करोड़ों वर्ष के परिवर्तनों के फलस्वरूप इस जगह ने वर्तमान अरब का रूप धारण किया।

सृष्टियों में ही विद्यमान है, शेष समस्त पदार्थ निर्जीव हैं। फिर विज्ञान ने पेड़–पौधों में जीवन का होना सिद्ध किया और आज विज्ञान यह बताता है कि प्रत्येक वस्तु में जीवन है यहां तक कि इन में चेतना शक्ति और भावनाएं भी होती है (यही बात कुरआन से भी सिद्ध होती है लेकिन इस समय यह हमारा विषय नहीं है।) संसार की प्रत्येक वस्तु में जीवन होने की वैज्ञानिक पुष्टि के बावजूद शुद्ध भौतिकवादी विचारधारा के लोग शायद हमारी यह बात समझने में असमर्थ हों कि संसर की सभी वस्तुओं में पारस्परिक सम्बन्ध भी हैं, दूरियां भी हैं। और अदृश्य शक्ति के नेतृत्व में विभिन्न नियमों और सिद्धान्त समूहों में बंधी हुई विभिन्न वस्तुओं में आपस में प्रेम और घृणा के सम्बन्ध भी हैं। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि अरब की सरज़मीन से भारत के भौगोलिक रूप से अलग होने के बाद भी इन के बीच ऐसे सम्बन्धों की चुम्बकीय और रेडियाई लहरें स्थापित हों जिन की वजह से इन देशों में अतीत में भी गहरे आध्यात्मिक सम्पर्क रहे हैं और भविष्य में भी प्रकट होते रहेंगे।

धूल की पर्तों पर नई पालिश नहीं चढ़ेगी:

प्रबन्धकुशल ईश्वर के प्रबन्ध की तत्वदर्शिता पर जिस पहलू से भी नज़र डालें, कार्यशैली के सौन्दर्य पर अक्ल हैरान रह जाती है।

करोड़ों साल पहले पृथ्वी के दो टुकड़े, जो एक दूसरे से जुड़े हुए थे, अलग होते हैं। फिर एक टुकड़े पर संसार का पहला पुरूष क़दम रखता है और दूसरे पर स्वर्ग से उस की पत्नी को उतारा जाता है। (रिवायतों के अनुसार ह० हव्वा को जद्दे में उतारा गया) इस तरह संसार में बसने वाली मानव जाति के आरम्भ ही से इन दोनो हिस्सों के बीच सम्पर्कों का शुभारम्भ होता है। एक भूभाग का नाम हिन्दुस्तान और दूसरे का नाम सरज़मीने अरब है। ह० नूह अलै० का तूफ़ान एक हिस्से से शुरू होता है और यहां से ह० नूह अलै० फिर इसी तरफ़ वापस लौटते हैं।

हिन्दुस्तान की विभिन्न जातियों के लोग प्रत्येक युग मे अरब के विभिन्न भागो मे पाए जाते रहे है। पृथ्वी के एक भाग मे आने वाले पैग़म्बर भी दूसरे भाग से अपना सम्बन्ध बनाए रखते है। फिर अरब मे नबी आखिरूज़्ज़मा सल्ल० (अन्तिम ईशदूत) प्रकट होते है, एक ऐसी कौम मे जो तब्दील होने से पहले विश्वास की गुमराही की दृष्टि से विश्व की अद्वितीय क़ौम थी। वह स्वय बदली और दुनिया के एक बड़े हिस्से को बदल कर मोहम्मद सल्ल० की उम्मत मे शामिल किया और अब चौदह सौ साल बाद अन्तिम शरीअत का झंडा उठाने वाली कौम को ह० नूह अलै० की कौम यानी पहली शरीअत वाली कौम के साथ हिन्दुस्तान मे इकट्ठा किया जाता है। पहले वैदिकवाद फिर जैनवाद और बौद्धवाद और बाद मे मुसलमान सूफ़ियो ने ह० नूह अलै०

के दौर से अब तक इस देश को आध्यात्मवाद के केन्द्र के रूप में बनाए रखा है। हज़ारों साल पुरानी धूल की पर्तें हटाने की ज़रूरत है। अन्दर से उजली 'ट्राफ़ी' निकलेगी, उस पर पालिश चढ़ाने में कोई कठिनाई नहीं होगी। धूल की पर्तों को हटाए बिना पालिश होना सम्भव नहीं हैं।

सन्दर्भ–सूची अध्याय : 4

1. 'मुस्लिम' –किताबुल ईमान, अ०बदाउल इस्ला–म–गरीबा, सं०: मारूफ़ो मुनकिर, ले०:सय्यद जलालुद्दीन उमरी, पृ०: 218
2. 'Hindu Manners, Customs & Ceremonies' by A.J.A. Dubois P. –579
3. 'इस्लामे कामिल'–ले०: डाक्टर मोहम्मद अहमद सिद्दीक़ी–प्रोफ़ेसर अरबी फ़ारसी विभाग–इलाहाबाद यूनिवर्सिटी' सं०: 'फ़ारान'–कराची, जनवरी 1959, पृ०:11
4. 'कुफ़ तोड़'–ले०: धर्मपाल बी.ए., सं०: त्रैमासिक–औक़ाफ़ पृ०:29
5. 'नारजील से नख़ील तक'–ले०: क़ाज़ी अतहर मुबारकपुरी सं०: मआरिफ़ नं०5, खं:89
6. 'अरब–हिन्द ताल्लुक़ात' ले०: सय्यद सुलेमान नदवी, पृ०: 12–13
7. 'किताबुल फ़हरिस्त' ले०: इब्ने नदीम, पृ०: 345, सं०: 'अरब हिन्द ताल्लुक़ात', पृ०:115
8. 'अरब हिन्द ताल्लुक़ात' ले०: सय्यद सुलेमान नदवी, पृ०: 1–2
9. तफ़सीरफ़तहुल क़दीर'–अल्लामा शौकानी,खं०द्वितीय, पृ०:474
10. 'लबाबुत्तावील',खं०:3, पृ०: 189, प्रकाशित मिस्र 1331 हिजी, सं०:'लुग़ातुल क़ुरआन', संकलनकर्ताः मौ० अब्दुर्रशीद नोमानी, प्र०: 'नदवतुल मुसन्निफ़ीन'–दिल्ली–1400 हिज्री
11. तफ़सीर–'फ़तहुल क़दीर',खं०:2, पृ०: 474
12. ले०: नरसिंह अग्रवाल पृ०: 12
13. 'दैनिक क़ौमी जंग'–रामपुर, 13 मार्च 1988 व 'दैनिक मुनसिफ़'–हैदराबाद
14. 'खिलाफ़ते राशिदा और हिन्दुस्तान' ले०: क़ाज़ी अतहर मुबारकपुरी, पृ०: 25, प्र०: नदवतुल मुसन्निफ़ीन–दिल्ली, 1972
15. 'अरब हिन्द ताल्लुक़ात', ले०: सय्यद सुलेमान नदवी, पृ०: 115
16. पत्रिका 'मआरिफ़' लेख: शाह मुईनुद्दीन अहमद, न०: 3, खं०: 95, पृ०: 171
17. 'मुस्लिम इंडिया' उर्दू, अप्रैल 1988, पृ०: 15
18. 'मक्तूबात' खं०: 1, मक्तूब नं०: 295, सं०: इस्लाम में दूसरे मज़ाहिब और अहले मज़ाहिब की हैसियत'–लेख शाह मुईनुद्दीन अहमद नदवी, प्र०: पत्रिका मआरिफ़ नं०: 3, खं०: 95, पृ०: 171
19. दैनिक क़ौमी जंग'–रामपुर, 13 मार्च 1988
20. 'कादम्बिनी' दिसम्बर 1978, पृ०: 135 से 139
21. 'खिलाफ़ते राशिदा और हिन्दुस्तान' ले०: क़ाज़ी अतहर मुबारकपुरी, 1972, पृ०: 47
22. खिलाफ़ते राशिदा और हिन्दुस्तान' ले०: क़ाज़ी अतहर मुबारकपुरी, 1972, पृ०: 29–30
23. – – –उपरोक्त– – –
24. तिरमिज़ी शरीफ़ (उर्दू), खं०: 2, पृ०: 135, प्र०: रब्बानी बुक डिपो–दिल्ली, वर्ष: 1973

25. 'बुखारी'–किताबुल अंबिया, अ०: वज़कुरफ़िल किताबे करीम
26. भाष्य–दुर्रेमन्शूर, ले०: अल्लामा स्योती, खं०: 1, पृ०: 55, सं०: सय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, पत्रिका मआरिफ़, फ़रवरी 1975, पृ०: 87–88
27. 'अरब–हिन्द ताल्लुक़ात' ले०: मौ० सय्यद सुलेमान नदवी, पृ०: 2–3
28. 'सुबहतुल मरजान फ़ी तारीखे हिन्दुस्तान' अ०: 1, सं०: सय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, पत्रिका मआरिफ़, फ़रवरी 1975, पृ०: 88
29. 'सुनन निसाई', खं०: 2, पृ०: 63, प्र०: मुजतबाई–दिल्ली
30. 'ख़िलाफ़ते राशिदा और हिन्दुस्तान'–ले० क़ाज़ी अतहर मुबारकपुरी, प्र०: नदवतुल मुसन्निफ़ीन देहली, 1922, पृ०: 36
31. 'रीडर्स डाइजेस्ट'–जुलाई 1971, पृ०: 127–134

-----❖❖❖-----

रौशन वाक्य

"बहुत बड़ी शुभकारिता है कि ख़ुदा के दोस्त किसी को दोस्त रखें।"

(मकतूबाते रब्बानी, मक्तूब : 87)

"समय काटने वाली तलवार है । नहीं मालूम, कल तक जीवित रहें या नहीं। आवश्यक काम आज करें और अनावश्यक को कल के लिये छोड़ दें।"

(मकतूबाते रब्बानी, मक्तूब : 135)

अध्याय : 5

सर्वप्रथम दिव्य ग्रन्थ वेद

वेद का परिचय:

"हम सबसे आगे के ईश्वर (अग्रणी) की ही उपासना करते हैं।" –
— (ऋ०:1 – 1 — 1)

" हे साक्षात ज्ञान, सब को प्रकाशित करने वाले परमेश्वर! हम को मार्गदर्शन और क्षमा के लिये सद्मार्ग से ले चल। हे सुख दाता प्रभु! दिव्यस्वरूप स्वामी ! तू सब की विद्याओं, कर्मों, चिन्तन तथा परस्पर व्यवहारों से परिचित है। हम से विकार, पथभ्रष्टता और पाप को दूर कर हम तेरी ही बन्दगी व स्तुति करते हैं।' – (यजु० 40–16)

"संसार का स्वामी एक ही है।" – (ऋ० 3–121–10)

"लोगो सुनो! नराशंस (मोहम्मद सल्ल०) की लोगों के बीच अत्यंत प्रशंसा की जाएगी।' – (अथर्व० 20–127–1)

"वे अन्तिम दिन (महाप्रलय) को भुला कर और ज्ञान व बुद्धि को घृणा से ठुकराकर हमारी निश्चित की हुई सीमाओं को फलांग रहे हैं।'
– (ऋ० 1 – 4 – 3)

यह कुछ वेद मन्त्रो के अनुवाद है। गम्भीरता से विचार कीजिये कि क्या हिन्दू धर्म का वर्तमान प्रचलित रूप वेदो के उक्त उपदेशो के बिल्कुल विपरीत नही है? क्या इन उपदेशो और सूचनाओ मे क़ुअरानी शिक्षाओ और ख़बरा से ज़रा सी भी असमानता आप को महसूस होती है? वेदो मे ऐसी केवल कुछ मिसाले ही नही है बल्कि सम्पूर्ण

वेद इन शिक्षाओं से भरे पड़े हैं। वेदों के कुछ और वचन हम इस अध्याय के अन्त में प्रस्तुत करेंगे। इस से पहले आइए देखें कि साधारण हिन्दुओं की नजर में वेदों का स्थान क्या है? जिन ईसाई और मुस्लिम शोधकर्ताओं ने किसी हद तक वेदों पर रिसर्च की है, वे क्या कहते हैं? आम हिन्दू मत के अनुसार:

❑ वेद श्रुति ज्ञान (सुना हुआ ज्ञान या सुना जाने वाला ज्ञान) है। अज्ञात काल से वेद कहीं लिखित रूप में मौजूद नहीं थे। यह ज्ञान पंडितों की स्मरणशक्ति में था और गोपनीय मार्ग से चला आ रहा था। सब से पहले मैक्समुलर ने कठोर परिश्रम से वेदों के कंठस्थ अनेक पंडितों से सुन कर उसे लिखित रूप में संकलित किया। लिखित रूप में उपलब्ध न होने की वजह से जनमानस के लिये उन्हें पढ़ना तो मुमकिन ही न था यहां तक कि वेद सुनने की भी अनुमति हर एक हो नहीं थी।

❑ सभी हिन्दू मानते हैं कि मूल रूप से वेद एक ही था लेकिन आज चार वेद मौजूद हैं। इस विषय में तरह–तरह के विचार व्यक्त किये जाते हैं। कुछ लोगों का विश्वास है कि अस्ल वेद गुम हो गया है। कुछ का मानना है कि इन चारों में ही से एक अस्ल वेद है और कुछ लोग एक वेद को इन चार भागों में विभाजित मानते हैं।

❑ वेद ईश्वर–प्रेषित, यानी कलामे–इलाही हैं। हिन्दू लोग महाभारत और रामायण को तो ऋषियों द्वारा रचित ग्रन्थ बताते हैं लेकिन वेद को ख़ुदा का कलाम (वाणी) कहते हैं।

❑ वेद, ब्रह्म का निज ज्ञान है।

❑ वेद दो तरह की विद्याओं पर आधारित है–वेद मन्त्र श्रुति अर्थात सुना हुआ 'मोहकमात' का इल्म और वेद तन्त्र श्रुति अर्थात सुना हुआ 'मुतशाबिहात' का इल्म।

❑ वेद आदि ग्रन्थ हैं।

''आधुनिक युग में वेदों का सर्वप्रथम अन्वेषण करने वाले विद्वान मैक्समुलर को बीस वर्ष तक अथक परिश्रम तथा अपार धनराशि व्यय करने पर भी केवल सायणाचार्य का भाष्य ही सर्वांगपूर्ण स्थिति में प्राप्त हो सका था। उसी के आधार पर उन्होंने सैकड़ों भारतीय पण्डितों की सहायता से लुप्य प्रायः वेदों को संसार के सम्मुख मुद्रित ग्रन्थ के रूप में प्रकट किया था।'' [1]

– (पंडित श्रीराम शर्मा)

(अंग्रेज़ी से हिन्दी) **''आर्य जाति से सम्बन्धित यह सर्वप्रथम बोले जाने वाले शब्द हैं...इन का सम्बन्ध विश्व और भारत के इतिहास से है... यह पिछली पीढ़ियों की यादगार हैं... मानव जाति की आर्य शाखा से सम्बन्धित दीर्घकालीन ग्रन्थों के क्रम की पहली किताब हैं''** [2] – (मैक्समुलर)

(अंग्रेज़ी से हिन्दी) **''इन चारों वेदों का आरम्भ दिव्य समझा जाता है और यह माना जाता है कि यह सदैव से चले आ रहे...महानतम सृष्टिकर्ता से यह प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त हुए हैं''** [3] – (मैक्समुलर)

(अंग्रेज़ी से हिन्दी) **''इन का आरम्भ कहां से हुआ, इस के कथनों में विरोधाभास है लेकिन इस पर सहमति है कि मनुष्य को ईश्वर का प्रत्यक्ष उपहार है।''** [4]

– (मैक्समुलर)

(अंग्रेज़ी से हिन्दी) **''वर्तमान रूप तक पहुंचते–पहुंचते वेद के विषयों के बारे में काफ़ी मतभेद रहे हैं।''** [5] –(विल्किन्स)

''वेदों की रचना किस ने की? यह टेढ़ा प्रश्न है। निष्ठावान हिन्दू ऐसा मानता है कि वेद अपौरूषेय है, ईश्वर का निःश्वास है। इस का तात्पर्य यह है कि वह ईश्वरीय ज्ञान है।'' [6] – (डा० सम्पूर्णानन्द)

ईसाई स्कालर 'ड्यूबाइस' अपनी किताब के पृष्ठ 174 पर लिखता है

(अंग्रेज़ी से हिन्दी) **''और नक़ल करने वालों से लापरवाही या अज्ञान के कारण बड़ी तादाद में गलतियां हुई हैं।''**

ह० शाह वली उल्लाह देहलवी रह० के समकालीन मिर्ज़ा मज़हर जाने जाना रह० के शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० के नाम लिखे गए एक मकतूब (पत्र) पर टिप्पणी करते हुए प्रोफ़ेसर ख़लीक़ निज़ामी लिखते हैं:

(उर्दू से हिन्दी) **''उन्होंने हिन्दुओं को अरब के मुशरिकों (मिश्रक अथवा बहुदेववादी) के समान स्वीकार करने से न केवल इनकार किया है बल्कि वेद को इल्हामी (ईश्वरीय) किताब मानते हुए हिन्दुओं को 'अहले किताब' का दर्जा दिया है।''** [7]

(उर्दू से हिन्दी) **''मज़ाहिरूल उलूम सहारनपुर के मुफ़्ती मौ० मोहम्मद यहया साहब ने एक प्रश्न के उत्तर में लिखा –ह० मिर्ज़ा मज़हर जाने जानां रह० के पत्रों में वेद के सम्बन्ध में लेख्य मौजूद हैं कि उन्हीं ने इस को 'आसमानी और 'इल्हामी' किताब ठहराया है... और मौ० शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० और मौ० अब्दुल हई साहब लखनवी के फ़तवों (धर्मादेशों) में इन के मुक़तदाओं (अग्रदूतों) की चर्चा है जिन को यह अवतार कहते हैं। निष्कर्ष यह है कि जो लोग मसलन आर्य अपने धर्म को आसमानी धर्म और अपनी किताब को इलहामी किताब कहते हैं, उन से उन के दावे पर दलील मांगी जा सकती है।**

लेकिन बिना कारण अन्तिम रूप से इस का इनकार न किया जाए। चुनांचे हमारे उस्ताद मौ० असदुल्लाह साहब, अनुचित शब्दों का उन के लिये प्रयोग नहीं करते थे।' 8

दारूल उलूम देवबन्द के संस्थापक मौ० मोहम्मद क़ासिम साहब नानौतवी का मत तो इस सिलसिले में इतना सावधान था कि रामचन्द्र जी और कृष्ण जी की शान में भी गुस्ताख़ी को मना फ़रमाते थे क्यों कि उन के विचार में इन के 'ईशदूत' होने की सम्भावना है।

पवित्र कैसे मानें?

अब तक के अध्ययन का निचोड़ यह है कि वेदों में आस्मानी कलाम होने की सम्भावना है। कम से कम वह भाग निश्चित रूप से देववाणी है जिनमें अज्ञात काल पहले दी हुई रसूलुल्लाह सल्ल० के शुभआगमन की सूचनाऐं विद्यमान है। लेकिन कुल मिलाकर केवल तौहीद और आख़िरत के धर्म विश्वासों की उपस्थिति इस की दलील नहीं हो सकती कि उन्हें अल्लाह की किताब के उस रद्दोबदल किये हुये रूप का भी दर्जा दिया जा सके जो तौरेत, ज़बूर और इन्जील का है। इस के तीन कारण हैं:

(1) वर्तमान तौरेत, ज़बूर और इंजील ही को पवित्र ग्रन्थों के दर्जे पर रखने में अभी संदेह है।

(2) कलाम के प्रमाणित होने की दलील स्वयं कलाम होता है। तौहीद और आख़िरत के केवल कुछ उदाहरण मिलने से वेदों को अभी तौरेत, ज़बूर और इन्जील की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

(3) तौरेत, ज़बूर और इन्जील की चर्चा क़ुरआन ने की है और वेदों का क़ुरआन में कहीं वर्णन नहीं है।

हम एक–एक करके उक्त शंकाओं का विश्लेषण कर रहे हैं :

वर्तमान तौरेत, ज़बूर और इन्जील को पवित्र ग्रन्थों की श्रेणी में रखने की समस्या को मौ० उबैदुल्लाह सिन्धी रह० ने बड़ी ख़ूबी के साथ हल किया है। वह लिखते हैं:

(उर्दू से हिन्दी) ''...**हमारे विद्वान आम तौर पर यह समझते हैं कि असली तौरेत और इन्जील ग़ायब हो चुकी है..इस लिये वे इन किताबों को पवित्र मानने के लिये किसी तरह तैयार नहीं है। इस दृष्टिकोण से यह बुरा परिणाम निकला कि क़ुरआन हकीम ने जहां पूर्व ग्रन्थ वालों को अपनी किताबों पर आचरण करने का निमन्त्रण दिया और आचरण न करने का आरोप लगाया, उनकी**

सही व्याख्या करने में हमारे विद्वान असमर्थ रहे...।' 9

(उर्दू से हिन्दी) ''...**क़ुरआन अज़ीम की तरह ऐसी वह्य (आकाशवाणी) जिस के अर्थ व शब्द निर्धारित होकर नाज़िल (अवतरित) हों और निश्चित रूप से सुरक्षित रहें, कुछ हिस्सों के अलावा किसी धर्म के ईश्वरीय ग्रन्थ में यह तरीक़ा नहीं बरता गया। आम तौर से (उन के) धर्माचार्य किताबें अपने इजतिहाद से जमा करते हैं जो उस नबी की सीरत (जीवन चरित) और उस के कथनों को संकलित कर देती हैं। यानी इन की किताबों में वह चीज़ भी आ जाती है जो प्रत्यक्ष शब्दों में और निश्चित होकर नाज़िल हुई। जैसे तौरेत के अहकामे अशर: (दस आदेश) और इंजील के कुछ उपदेश। इस के अतिरिक्त वह चीज़ भी आ जाती है जो नबी अपने इजतिहाद से तालीम देता है। यह निर्णीत आदेश है कि नबी के इजतिहाद पर ईश्वर की ओर से संशोधन न हो तो वह वह्य के समान आदेश समझा जाता है।'** 10

(उर्दू से हिन्दी)''...**क़ुरआन स्वयं रसूलल्लाह सल्ल० के सामने ही एक लिखित ग्रन्थ के रूप में सुरक्षित कर दिया गया और इस की परम्परा क्रमशः बनी रही लेकिन हदीस में जो वह्य आई, उन (विद्वानों) के मत में भी न तो हुज़ूर (सल्ल०) के युग में इस की किताबत हुई और न इस के लिये निस्तरताआवश्यक है। उन लोगों की परिभाषा पर यदि पिछले पवित्र ग्रन्थों को हदीस की किताबों का दर्जा दिया जाए तो इस से भी आगे की श्रेणी में इस को कल्पनातीत नहीं समझना चाहिए। अगर यह लोग इस बात को स्वीकार कर लें तो समस्त कठिनाइयां दूर हो जाएंगी।**

- ❑ **हमारी हदीस की किताबों में ग़लत रिवायतें भी मौजूद हैं, यह सर्वसम्मति से कहा जा सकता है।**
- ❑ **इन हदीस की किताबों में एक घटना को विभिन्न तरीक़ों से भी रिवायत किया गया है।**
- ❑ **हमारी बहुत सी हदीस की किताबों में भी कातिबों से ग़लतियां होती रही हैं जिन को विद्वान शोधकर्ता दुरूस्त करते रहते हैं।**

इस के बाद अगर चार प्राचीन इंजीलों को हमारी चार हदीस की किताबों (बुख़ारी, मुस्लिम, अबूदाऊद, तिरमिज़ी) के दर्जे पर रख दिया जाए तो ज़रा सा भी अन्तर दिखाई नहीं देगा...'' 11

(उर्दू से हिन्दी)''...**हमारी उम्मत में पवित्र ग्रन्थों की इस प्रकार की मिसाल में**

शाह साहब (वली उल्लाह रह० देहलवी) सही बुख़ारी व सही मुस्लिम को पेश करते हैं...

...मैं ने इंजील की व्याख्या मिस्टर हेनरी इस्काट की उर्दू में पढ़ी,.इस में चारों इन्जीलों के मतभेदों को इस तरह संकलित करने और प्राथमिकता देने की कोशिश की गई है जैसे हम हदीस की किताबों में करते हैं।" 12

यह सच है कि जब हम गौर करते है तो हमें महसूस होता है कि आज तक पूर्व ग्रन्थों को पवित्र किताबों का दर्जा देने में यही शंकाएं रुकावट बनी हैं। इन किताबों में सर्वसम्मति से कहा जा सकता है कि रद्दोबदल भी दर्ज है। प्रायः एक घटना का विभिन्न तरीक़ों से वर्णन किया गया है और उन की लिखाई में परिवर्तन भी होते रहे है जिनमें उनके स्कॉलर संशोधन करते रहे हैं।

मौलाना के स्पष्टीकरण के बाद यह समझ में आता है कि पिछले ग्रन्थों को पवित्र मानने में दरअसल हिचकिचाहट ही इसलिये महसूस होती थी कि सहीफ़े (ग्रन्थ) का नाम आते ही हम मानसिक रूप से क़ुरआन से उस की तुलना आरम्भ कर देते थे लेकिन अगर हदीसों के संग्रहों को भी हम पवित्रता का दर्जा दे सकते हैं जब कि इन में वही तकनीकी त्रुटियां मौजूद हैं जो पिछले ग्रन्थों में हैं तो इन ग्रन्थों को पवित्र मानने में आपत्ति नहीं होगी। विशेषतया इस बात को मद्देनज़र रखते हुए कि क़ुरआन में जगह जगह इस बात का आग्रह है। और यह भी नज़र में रखें कि हदीसों के संकलनों को यदि यह वरीयता प्राप्त है कि उन पर बेमिसाल रिसर्च हुई है (इस के बावजूद बड़ी संख्या में संदिग्ध हदीसें मौजूद हैं) तो हम तौरेत और इन्जील को इस दृष्टि से प्राथमिकता दे सकते हैं कि इस में कलामे इलाही (ईशवाणी) भी दर्ज होने पर सब सहमत हैं।

इस बिन्दु के स्पष्ट हो जाने के बाद अब अगर हमें वेदों के बारे में यह प्रमाण मिल सकें कि उन में दर्ज कलाम स्वयं कलामुल्लाह (ईश्वर की वाणी) होने की गवाही देता है और क़ुरआन से भी वेदों की पुष्टि हो जाए तो मौ० सिन्धी की बताई हुई शैली पर वेदों को भी कुतब मुक़द्दसा (पवित्र ग्रन्थ) स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

एक कलाम (वाणी), दूसरे कलाम की ज्योति में :

कलामे इलाही स्वयं अल्लाह का कलाम होने का प्रमाण होता है। क़ुरआन के विषय स्वयं क़ुरआन की सच्चाई की सब से बड़ी दलील है। आइए वेदों के कुछ वचनों पर क़ुरआन की ज्योति में नज़र डालें। इस सन्दर्भ में समस्त वेद मन्त्रों के अनुवाद हम ने श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय की किताब 'इस्लाम के दीपक' से लिये हैं :

क़ुरआन

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ–लमीन।
सब स्तुति अल्लाह के लिये है जो जगतों का स्वामी है। (क़ु:1–1)

अर्रह मानिर्रहीम
अत्यन्त कृपाशील और दयावान है। (क़ु०:1–5)

इहदि नस्सिरातल् मुस्तक़ीम।
हमारा सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन कर। (क़ु०:1–5)

अलम तअ्लम अन्नल्ला–ह लहू मुलकुस्समावाति वल् अर्ज़,
क्या तुम नहीं जानते कि आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही के लिये है,.

व मा–लकुम मिन दूनिल्लाहि मिवँ वलिय्यिँव वला नसीर...
और तुम्हारा अल्लाह के सिवा कोई संरक्षक है और न सहायक। (क़ु०:2–107)

व ख़–ल–क़ कुल्–ल शैइन ......
और उसने हर (विद्यमान) वस्तु को पैदा किया। (क़ु०:25–2)

व अन्फ़िक़ू ख़ैरल्लि अन्फ़ुसिकुम,
और अपने हित में भलाई के लिये खर्च करते रहो। (क़ु०:64–16)

इन तुक़रिज़ुल्ला–ह क़रजन ह–सनँय्युजाइफ़्हु लकुम ....
यदि तुम अल्लाह को क़र्ज़ दो, अच्छा क़र्ज़ तो वह उस को तुम्हारे लिये बढ़ाता चला जाएगा। (क़ु०:64–17)

वेद

मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः
उस जगत के स्वामी के लिये बड़ी स्तुति है। (ऋ०:5–81–1)

वसुर्दयमानः
जो धारक और दयावान है। (ऋ०: 3–34)

नय सुपथा राये अस्मान
हमको हमारे हित के लिये सीधे मार्ग पर लगा। (यजु०:40–16)

महोदिवः प्रथिव्यश्च सम्राट
वह महान, धरती एवं आकाश का सम्राट है। (ऋ०:1–100–1)

नो भवत्विन्द्र ऊती
वह ईश्वर हमारी सहायता करे। (ऋ०:1–100–1)

प्रजापति जर्नयति प्रजा इमाः
ईश्वर सब प्रजा को रचता है। (अर्थव०: 7–19–1)

य एक इद् विदयतेवसु मर्ताय दाशुषे
ईश्वर एक है। वह दयालु, दानशील पुरुष को जीविका प्रदान करता है।(1–84–7)

..व हु–व युत्इमु व ला युत्अमु,...... वह सब को खिलाता है। उस को खिलाया नहीं जाता। (कु०:6–14)	***अनश्नन्नन्यो अभिचाक शीति*** वह खाता नहीं, जीवों को खिलाने की व्यवस्था करता है। (ऋ०:1–164–20)
...... लै–स कमिस्लिही शैउन,........ उस की किसी वस्तु से एकरूपता नहीं है। (कु०:42–11)	***न तस्य प्रतिमा अस्ति*** उस प्रभु की कोई मूर्ति नहीं बन सकती। (यजु०:32–3)
व लिल्लाहिल्मशरिकु वल्मग़रिबु..... और अल्लाह ही का है पूर्व भी और पश्चिम भी। (कु०:2–115)	***यंस्येमाः प्रदिशः*** सब दिशाएं उसी की हैं। (ऋ०:10–121–4)
...फ़ऐनमा तुवल्लू फ़सम्–म वज्हुल्लाह, इन्नल्ला–ह वासिउन अलीम। सो तुम जिधर भी मुह फेरो अल्लाह ही का अस्तित्व है। अल्लाह समाई वाला और जानने वाला है। (कु०:2–115)	***सविता पश्चातात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरतात् सविताधरात्तात*** ससार का सृष्टा, पूर्व, पश्चिम, ऊपर और नीचे सब जगह है। (ऋ०:10–36–14) ***विश्वत श्चक्षुरुत विश्वतो मुखो*** ईश्वर की आंखें हर तरफ़ हैं, ईश्वर का मुख हर तरफ़ है। (ऋ०:10–81–3)
.... व नह्नु अक़्–रबु इलैहि मिन हब्लिल्वरीद। और हम तो उस की शहरग (सांस की नाली) से भी ज़्यादा उस के निकट हैं। (कु०:50–16)	***त्वंनो अन्तम उत त्राता*** तू हम से निकटतम और रक्षक है। (ऋ०: 5–24–1)
व ला युहीतूना बिशैइम मिन इल्मिही इल्ला बिमाशाअ वसि–अ कुरसिय्यु हुस्–समावाति वल् अर्ज़,..... और वे उस के ज्ञान में से किसी चीज़ पर हावी नहीं हो सकते सिवाय उस के कि जितना वह चाहें। उसी का प्रभुत्व (कुर्सी) आकाशों और धरती पर छाया हुआ है। (कु०:2–255) ***व युनज़्ज़िलुल गै–स .....*** और वही मेहँ बरसाता है (कु०:31–34)	***न यस्य द्यावा प्रथिवी अनव्यचो न सिंधवो रजसो अन्तमानशुः। नोत स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यत एको अन्यच् चकृषे विश्वमानुष्क्।*** न पृथ्वी न आकाश उस ईश्वर की व्यापाकता की सीमा को पा सकते हैं। न आकाश के लोक, न आकाश से बरसने वाला मेंह, सिवाय उस ईश्वर के और कोई दूसरा इस विश्व पर अधिकार नहीं रखता। (ऋ०:1–52–14)

अलम त–र अन्नल फ़ुल–क तजरी फ़िल बहरि बिनिअ्मतिल्लाह ..... क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ही के अनुग्रह (कृपा) से नौका समुद्र में चलती है। (कु०:31–31)	***वेद नावः समुद्रियः*** वह समुद्र की नौकाओं को जानता है। (ऋ०:1–25–7)
अलम त–र अन्नल्ला–ह यूलिजुल्लै–ल फ़िन–नहारि व यूलिजुन–नहा–र फ़िल लैलि व सख़–ख़रश–शम–स वल क़–म–र कुल्लुँय यजरी इला अ–जलिम्मुसम्मँव–व अन्नल्ला–ह बिमा तअ्मलू–न ख़बीर क्या तुम नहीं देखते अल्लाह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और सूर्य और चन्द्रमा को काम में लगा रखा है, हर एक नियत समय तक चलता रहेगा; और यह कि अल्लाह तुम्हारे सब कर्मों की पूरी ख़बर रखता है। (कु०:31–29)	***अहोरात्राणि विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी*** समस्त प्राणियों को वश में रखने वाले ईश्वर ने दिन और रात का क्रम स्थापित किया। (ऋ०:10–190–2)
निअ्मतम्मिन इन्दिना, कज़ालि–क नजज़ी मन शकर। यह हमारे पास से एक वरदान है कि जो धन्यवाद करता है हम उसे ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (कु०:54–35)	***यदङ्ग. दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेत् तत् सत्यमङ्गिरः।*** हे प्रकाशस्वरुप ईश्वर! आप धर्मात्मा पुरुष का कल्याण करते हैं। यह आप का सच्चा स्वभाव है। (ऋ०:1–1–6)
..... इन्नल्ला–ह ला युहिब्बु मन का–न मुख़्तालन फ़ख़ूरा। निस्सन्देह अल्लाह ऐसों को दोस्त नहीं रखता जो इतराने वाले और डींग मारने वाले हैं। (कु०:4–36)	***ऋतस्य पथा नमसा दिवासेत्*** मनुष्य को चाहिये कि सत्य के मार्ग में विनम्रता से चले। (ऋ०:10–31–2)
वल्लाहु यअ्लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल् अर्ज़, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन अलीम।	***यो विश्वाभि वि पश्यति भुवना संच पश्यति***

और अल्लाह आकाशों और धरती में जो कुछ है उसे जानता है और अल्लाह सब चीज़ों को जानता है। (क़ु०:49–16)	वह ईश्वर सारे संसार को भलीभांति जानता है। (ऋ०: 10–187–4)
..... यअ्लमु सिर–रकुम व जह्–रकुम व यअ्लमु मा तकसिबून। वह तुम्हारी छिपी और तुम्हारी खुली सब बातों को जानता है, और जो कुछ तुम करते हो उसे जानता है। (क़ु०:6–3) ***...व हु–व म–अकुम ऐ–न–मा कुन्तुम, वल्लाहु बिमा तअ्–मलू–न बसीर ।*** और जहां भी तुम हो वह तुम्हारे साथ है। और जो कुछ भी तुम करते हो उसे अल्लाह देख रहा है। (क़ु०:57–4)	***यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति, यो निलायं चरति या प्रतङ्कम् द्वौ संनिषद्य यन् मंत्र येते राजातद् वेद वरुणस्तृतीयः।*** जो खड़ा होता, चलता, धोखा देता है, छिपता फिरता है, दूसरे की हिंसा करता है। दो चुपके–चुपके कुछ बात करते हैं। तीसरा ईश्वर उन सब को जानता है। (अथर्व: 4–16–2)
व हुवल् क़ाहिरु फ़ौ–क़ इबादिही, ... उसे (अल्लाह को) अपने बन्दों पर पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त है। (क़ु०:6–18)	***विश्वस्य मिषतो वशी*** वह सब प्राणियों को वश में रखता है। (ऋ०:10–190–2)
यअ्लमु मा यलिजु फ़िल् अर्ज़ि वमा यख़्रुजु मिन्हा वमा यन्ज़िलु मिनस्समाइ वमा यअ्रुजु फ़ीहा,..... वह उसे भी जानता है जो चीज़ धरती के अन्दर प्रविष्ट होती है और जो उस में से निकलती है और जो आकाश से उतरती है और जो उस में वापस चढ़ती है। (क़ु०: 57–4)	***सर्वतद् राजा वरुणो विचृष्टे यदन्तरा रोदसी यत् परस्तात्*** जो कुछ पृथ्वी में या आकाश में या उसके ऊपर है उसका ईश्वर देखता है। (अथर्व:4–16–5)
व हुवल–लज़ी अरसलरिया–ह बुश्रम बै–न य–दइ रहमतिही ..... और वही है जो अपनी दयालुता के आगे शुभसूचना के रूप में हवाओं को भेज देता है। (क़ु०:25–48)	***वेद वातस्य वर्तनिमुरो ऋष्वस्य वृहतः। वेदा ये अध्यासते*** वह ईश्वर वायु के सुखद मार्गों को जानता है और उन सब पदार्थो को जो उसके सहारे हैं। (ऋ०:1–25–9)
वहुवल–लज़ी ज–अ–लल्लै–ल वन् नहा–र ख़िल्फ़तन......	***अहोरात्राणि विदधः***

और वही है जिसने रात और दिन को एक दूसरे के पीछे आने जाने वाला बनाया। (क़ु०:25–62)	दिन और रात बनाए। (ऋ०: 10–190–2)
व ज–अलल्लै–ल स–कनँव्वशम्–स वल् क़–म–र हुस्बाना, ... और उसने रात को आराम के लिये बनाया और सूरज और चाँद को हिसाब (गणना) के लिये। (क़ु०:6–69)	***सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्*** सूर्य और चांद को विधाता ने पूर्व कल्पों के समान रचा। (ऋ०: 10–190–3)
..... अला लहुल्ख़ल्क़ु वल् अम्र, तबा रकल्लाहु रब्बुल् आलमीन । उद्ऊ रब–बकुम तज़र्रुअव्–व ख़ुफ़्य:, इन्नहू ला युहिब्बुल् मुअ्तदीन । जान लो ! उसी की सृष्टि है और हुक्म भी। अल्लाह सारे संसार का रब बड़ी बरकत वाला है। तुम लोग अपने रब से विनम्रता से और चुपके–चुपके प्रार्थना किया करो। निस्सन्देह वह हद से आगे बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता है। (क़ु०:7–54,55)	***होतारं सत्ययजं रोदस्योरुत्तानहस्तो नमसा विवासेत*** पृथ्वी और आकाश को ठीक मार्ग पर चलाने वाले पूजनीय प्रभु से नम्रता से ऊपर हाथ उठा कर प्रार्थना करो। (ऋ०:6–16–46)
..... अल्कबीरूल् मु–तआल। (अल्लाह) महान और महामान्य है। (क़ु०:13–9)	***अद्धा देव महाँ असि।*** ईश्वर बहुत बड़ा है। (अथर्व:20–58–3)
..... ला तब्दी–ल लि–कलिमातिल्लाह, ... अल्लाह की बातों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ करता। (क़ु०:10–64)	***अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि।*** ईश्वर के नियम नहीं बदलते (ऋ०:1–24–10)
व लन तजि–द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला। और तुम ईश्वर के नियमों में कोई परिवर्तन नहीं पाओगे।(क़ु०:48–23)	***न किरस्य प्रमिनन्ति व्रतानि*** ईश्वर के नियमों को कोई नहीं बदल सकता। (अथर्व:18–1–5)

व लिल्लाहि माफ़िस्–समावाति व माफ़िल अर्ज़ि लि यज्–जियल्–लज़ी–न असाउ बिमा अमिलू व यजज़ियल्–लज़ी–न अहसनू बिल् हुस्ना। और आकाशों और धरती में जो कुछ भी है अल्लाह ही की सम्पत्ति है ताकि जिन्होंने बुरे कर्म किये उन को बुरा बदला दे और सुकर्म करने वालों को अच्छा बदला दे। (क़ु०:53–31)	*इमे चित् तव मन्यवे वेपेते भियसा मही यदिन्द्र वज्रिन्नोजसा वृत्रं मरुत्वाँ अवधीरचन्ननु स्वराज्यम्।* हे परमेश्वर! पृथ्वी और आकाश तेरे भय से कांपते हैं। हे ईश्वर, तू अपने कोप से दुष्टों को मारता है और श्रेष्ठ पुरुषों को आत्मिक प्रकाश प्रदान करता है। (ऋ०:1–80–11)
हुवल् अव–वलु वल्–आख़िरु वज़्–ज़ाहिरु वल् बातिनु, व हु–व–बिकुल्लि शैइन अलीम। वही आदि है, वही अन्त है; और वही भीतर है और वही बाहर है; और वह हर चीज़ का ज्ञान रखता है। (क़ु०: 57–3)	*त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरस्तमः* हे परमेश्वर! तू सब से पहला है और सब से अधिक जानने वाला है। (ऋ०:1–31–2)
क़द तबय्यनर्रुश्दु मिनल ग़य्यि, फ़मय्यँकफ़ुर बित्ताग़ूति व युअ्मिम्–बिल्लाहि फ़–क़दिस् तम–स–क बिल् उर्वतिल् वुस्क़ा.... सही बात नासमझी की बात से अलग होकर बिल्कुल सामने आ गई है, अब जो ताग़ूत (दानव) को ठुकरा दे और अल्लाह पर ईमान ले आए उस ने एक बड़ा मजबूत सहारा थाम लिया। (क़ु०:2–256)	*दृष्ट्वारुपेव्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः अश्रद्धांमनृते दधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः* ख़ुदा ने सत्य और असत्य के तथ्य को समझकर सत्य को अस्तय से अलग कर दिया। उसकी आज्ञा है कि (हे लोगों) सत्य में श्रद्धा करो। असत्य में अश्रद्धा करो। (यजु०:19–77)
... व अन्तुम तत्लूनल् किताब, अ–फ़ला तअ्क़िलून। यद्यपि तुम 'किताब' (ईश्वरीय) पढ़ते हो, तो क्या तुम समझ से काम ही नहीं लेते ? (क़ु०:2–44)	*उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचम् उत त्वः श्रृणवन्न श्रृणोत्येनाम* मूर्ख लोग वाणी देखते हुए नहीं देखते और सुनते हुए नहीं सुनते। (ऋ०:10–71–4)

... व ला तशतरू बिआयाती स–मनन क़लीलँव व इय्या–य फ़त–तक़ून। और थोड़ी सी क़ीमत के बदले मेरी आयतों को बेच मत डालो और सिर्फ़ मुझ ही से डरो। (क़ु०:2–41)	*महेचन त्वामद्रिवः पराशुल्काय देयाम्। न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ* हे एक रस प्रभु, तू इतना बहुमूल्य है कि मैं तुझ को किसी मूल्य के लिये न त्यागू न हज़ार के लिये, न अरब के लिये न सैकड़ों लोगों के लिये। (ऋ०:8–1–5)
अल्ला तज़िरु वाज़ि–रतुँव विज़–र उख़रा। और यह कि कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। (क़ु०:53–38)	*स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व* तू ही कर्म कर तू ही उस का फल भोग। (यजु०:23–15)
इन्नल्ला–ह ला यज़्लिमुन्ना–स शैअँव वलाकिन्नन्ना–स अन्फ़ु–सहुम यज़्लिमून। बेशक अल्लाह इन्सानों पर बिल्कुल अत्याचार नहीं करता, बल्कि लोग स्वयं अपने आप पर अत्याचार करते है। (क़ु:10–44)	*क्रत्वः समह दीनता प्रतीप जगमा शुचे। मृला सुक्षत्र मृलय* हे महान और पवित्र प्रभो! हम अपनी मूर्खता से कुमार्ग पर चलते हैं। हे रक्षक! हम पर दया करो। – (ऋ०:7–89–3)
लन तनालुल् बिर्–र हत्ता तुन्फ़िक़ू मिम्मा तुहिब्बून, ... तुम नेकी को नहीं पहुंच सकते जब तक उन चीज़ों को (ख़ुदा की राह में) खर्च न करो जो तुम्हें प्रिय है। (क़ु०:3–92)	*केवलाघो भवति केवलादी* जो अपनी कमाई को अकेला ही खाता है वह पाप खाता है। (ऋ०:10–117–6)
अल्लज़ी–न युन्फ़िक़ू–न फ़िस्सर्राइ वज़्ज़र्राइ वल् काज़िमीनल् ग़ै–ज़ वल् आफ़ी–न अनिन्नास, वल्लाहु युहिब्बुल् मुहसिनीन। यह वह लोग हैं जो समृद्धि और तंगी दोनों में खर्च करते हैं और ग़ुस्से को सहन करते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं; और अल्लाह उत्तमकारों को दोस्त रखता है। (क़ु०:3–134)	*स इद् भोजो यो गृहवे ददात्यन्नकामाय चरते कृशाय अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम्* जो भूखों और असहायों को दान देता है वही पुण्यशील है। उसी का भला होता है। शत्रु भी उस का मित्र बन जाता है। (ऋ०:10–117–3)

फ़ज़ालिकल्लज़ी यदुअ् उल् यतीम। व ला यहुज़्ज़ु अला तआमिल् मिस्कीन। फ़वैलुल्लिल् मुसल्लीन।

सो वह व्यक्ति जो अनाथ को धक्के देता है ओर मोहताजों के लिये खाना देने की प्रेरणा नहीं देता। तो ऐसे नमाज़ियों के लिये बड़ी ख़राबी है।

(क़ु०:1०7–2,3,4)

य आध्राय चकमानाय पित्वो ऽन्वान्त्सन् रफितायोपजग्मुषे? स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरोतोचित् स मंर्डितारं न विन्दते

जो रक्षा के पात्र अनाथ अन्न चाहने वाले भूखे को अन्न होते हुए भी अन्न नहीं देता या उपेक्षा करता है। स्वयं कठोर हृदय हो कर खाता रहता है, उस को विपत्ति आने पर कोई सुख नहीं मिलता।

(ऋ०:1०–117–2)

अभी और परखिये

यदि आप का वर्षो से खोया हुआ भाई अचानक कहीं बाज़ार में मिल जाए तो क्या आप चेहरे मोहरे के कुछ परिवर्तन की वजह से उसे पहचानने या गले लगाने से इनकार कर देंगे? जब कि उस के चेहरे पर बचपन के जाने पहचाने स्पष्ट लक्षण भी हों? हां यह सम्भव है कि आकार–प्रकार की सदृशता के कारण पहले आप ठिठकें, फिर उस के अतीत के बारे में प्रश्न करें और उन लक्षणों को ध्यानपूर्वक देखें। इस के बाद निःसन्देह आप उसे लिपटा लेंगे और पहले से कहीं ज़्यादा प्रेम, उस के लिये आप के दिल में उमड़ पड़ेगा। अगर वह आप को न पहचान सकेगा तो आप बड़ी उत्सुकता से अपनी पहचान कराने की कोशिश करेंगे। अब आइये आकार-प्रकार में एकरुपता देखने के बाद उपने अतीत में खोए हुए भाई की कुछ निशानियों को ग़ौर से देखें और उस से कुछ प्रश्न करें :

प्रतित्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्रहूयसे। मरुद्भिरग्न आ गहि
नहि देवो न मर्त्यो महस्तव क्रंतु परः। मरुद्भिरग्न आ गहि
ये महो रजसो विदुर्विवे देवासो अद्रुहः। मरुद्भिरग्न आ गहि
ये उग्रा अर्कमानृ चुरना धृष्टास ओजसा। मरुद्भिरग्न आ गहि
ये शुभ्राघोरवर्पसः सुक्षत्रासो रिशादसः। मरुद्भिरग्न आ गहि
ये नाकस्याधि रोचने दिवि देवास आसते। मरुद्भिरग्न आ गहि
ये ईङ्खयन्ति पर्वतान् तिरः समुद्रमवर्णवम्। मरुद्भिरग्न आ गहि
आ पे तन्वन्ति रश्मिभिस्तिरः सभुद्रमोजसा। मरुद्भिरग्न आ गहि
अभि त्वा पूर्वपीतये सृजामि सोम्यं मधु। मरुद्भिरग्न आ गहि

(ऋ० 1–19–1 से 9)

* नोट : श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय के वेद के अनुवादों से हमें कुछ स्थानों पर असहमति है, लेकिन यहां हम ने उन ही के अनुवाद उद्धृत किए है।

ऊपर दिये गए प्रत्येक मन्त्र के अन्त में एक ही वाक्य है– **'मरुद्भिरग्न आ गहि'** अर्थात अग्नि का रहस्य मरुस्थलीय या रेगिस्तानी उम्मत (मुसलमान) के माध्यम से प्राप्त होता है। इस वाक्य को बार–बार दोहराया गया है। क्या यह क़ुरआन की सूरए रहमान की सी वर्णन शैली नहीं है जिस में पूरी सूरः में एक जुमला ***'फ़बि अय्यि आलाइ रब्बि कुमा तुकज़्ज़िबान'*** (फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन–कौन से वरदानों को झुटलाओगे?) की 31 बार तकरार (पुनरावृत्ति) है। यह केवल इत्तिफ़ाक़ नहीं है। यह पुनरावृत्ति ऋग्वेद के पहले मण्डल के अट्ठारहवें सूक्त में भी मिलती है जहां ***'द्युम्नैरभि प्रणोनुमः'*** (बड़े प्रयोजन और शान के साथ हम हर दिशा से स्तुति करते हैं) को पांच बार इसी तरह दोहराया गया है। विस्तीर्ण होने के कारण हम यह सूक्त और इस जैसे दूसरे उदाहरण जिन को हम प्रस्तुत कर रहे हैं, उनके पूरे मन्त्र हम नक़ल नहीं कर रहे हैं। इसी तरह सामवेद में निरन्तर तीन श्लोकों के अन्त में निम्नलिखित वाक्य को दोहराया गया है :

'न भन्तामन्यकेषा ज्याका अधिध्नन्वस' (दुश्मन की खिंची हुई कमानें टूट जाएं) सामवेद (प्रपाठकः 9, भागः 14)

ऋग्वेद (1०–1०5) में निरन्तर 13 बार यह दोहराया गया है : ***'विचं मे अस्य रोदसी'*** (हे स्वर्ग की सरज़मीन मेरे दुख पर ध्यान दो)

ऋग्वेद (1०–121) में ***'कस्मै देवाय हविषा विधेम'*** (हम किस ख़ुदा को क़ुरबानी पेश करें?) लगातार 9 बार आया है।

यजुर्वेद के 21वें अध्याय के एक भाग में मन्त्र 48 से 55 तक लगातार हर मन्त्र के अन्त में यह पुनरावृत्ति है : ***'दधुरिन्द्रियं वसुधेयस्य व्यन्तु यज'***

क़ुरआन शरीफ़ में भी इस क़िस्म की तकरार सिर्फ सूरए रहमान ही में नहीं है बल्कि निम्नलिखित सूरतों में भी यह मिसालें हमें मिलती हैं।

सूरए मुर्सलात में ***'वैलुंय्यौ-म इजिललिल मुकज़्ज़िबीन'*** (बड़ी ख़राबी है उस दिन झुटालने वालों के लिये) 1० बार, सूरए क़मर में ***'व–ल–क़द यस्सरनल क़ुरआनः लिज़्ज़िक्रि फ़हल मिम-मुद्–दकिर'*** (और नसीहत हासिल करने वालों के लिये क़ुरआन को हम ने आसान कर दिया है, सो है कोई नसीहत हासिल करने वाला?) चार बार दोहराया गया है।

इस प्रकार के और भी उदाहरण क़ुरआन शरीफ़ और वेदो में है। रिसालत (ईशदूतत्व) और आख़िरत (परलोकवाद) के विषयों को अलग–अलग अध्यायों में प्रस्तुत किये जाने की आवश्यकता है जिनकी चर्चा हम आगे करेंगे।

जहां तक पिछले पवित्र ग्रन्थों से वेदों की तुलना का प्रश्न है, इब्रानी व यूनानी भाषा की जानकारी न होने की वजह से हम पूर्व ग्रन्थों (तौरेत, ज़बूर, इंजील आदि)

के अंग्रेज़ी अनुवाद ही पढ़ सके है। स्पष्ट है, इन अनुवादों में अनुवादकों के अपने विचार और धर्म–विश्वासों का प्रतिबिम्ब शामिल होगा लेकिन वेदों का अध्ययन करते समय हमने उनके अधिकतर भाग को उन की मूल भाषा संस्कृत में भी देखने और समझने की कोशिश की है। इस तुलनात्मक अध्ययन में तौरेत और इंजील पर रिसर्च करने वाले मुसलमान स्कालरों की वह कृतियां भी हम ने सामने रखीं जो हमें उपलब्ध हो सकीं।

हम ने इन तमाम किताबों को क़ुरआन की कसौटी पर परखने की कोशिश की है और हम ईश्वर को साक्षी मान कर पूरी ईमानदारी के साथ कह सकते है कि मुमकिन है यह किताबें अपनी मूल भाषाओं में वेदों के समकक्ष साबित हो सकें लेकिन वर्तमान रूप में वेदों को हमने अंग्रेज़ी में अनुदित बाइबिल (तौरेत, ज़बूर, इजील और दूसरे नबियों की किताबें) से इतना आगे पाया कि दोनों में कोई मुक़ाबला ही नहीं।

यह तो क़ुरआन की कसौटी पर इन किताबों (वेद और बाइबिल) के विषयों की शुद्धता को परखने का परिणाम था लेकिन वास्तविक और अन्तिम कसौटी अभी शेष है। स्वयं क़ुरआन, वेदों के बारे में क्या कहता है?

क़ुरआने अज़ीम हमें बताता है कि हर उम्मत में अल्लाह ने अपने पैगम्बर भेजे: ***'वलिकुल्लि उम–मतिर रसूल'*** (और हर उम्मत के लिये एक रसूल था)

(क़ु० 10–48)

अन्तिम गवाही शेष है:

जिन पवित्र ग्रन्थों की क़ुरआन ने चर्चा की है वह केवल तौरेत, ज़बूर, और इंजील समझी जाती है। श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय अपनी पुस्तक में इस पर आपत्ति करते हुए लिखते है :

"क़ुरआन शरीफ़ में ह० आदम (अलै०) के पश्चात चार और मुलहिमों का उल्लेख है। ह० मूसा (अलै०), ह० दाऊद (अलै०), ह० ईसा (अलै०) और ह० मोहम्मद (सल्ल०)। इन में से हर एक का संबंध एक किताब (शास्त्र) से है। ह० मूसा (अलै०) पर तौरेत शास्त्र उतरा, ह० दाऊद (अलै०) पर ज़बूर, ह० ईसा (अलै०) पर इंजील और ह० मोहम्मद (सल्ल०) पर क़ुरआन। ह० आदम (अलै०) का नाम न मुलहिमों में परिगणित है और न उन पर कोई शास्त्र उतरा हुआ बताया जाता है। ह० आदम (अलै०) से लेकर ह० मूसा (अलै०) तक एक दीर्घकाल व्यतीत हो जाता है। इसमें मानवीय इतिहास के बहुत से उतार चढ़ाव आते हैं। बहुत से राज्य उत्पन्न हुए और मिट गए। कोई 'अहले किताब' उत्पन्न नहीं हुआ।"[13]

आप उत्तर में कह सकते है कि क़ुरआन शरीफ़ बुनयादी तौर पर मार्गदर्शन

करने वाली किताब है। यह पैगम्बरों के नामों या उन की किताबों के नामों का **विश्वकोश** नहीं है। लेकिन श्री गंगा प्रसाद की आपत्ति से अलग, यह प्रश्न तो निश्चित रूप से पैदा होता है कि जिन **उलुल अज़्म** (उच्चोत्साही) रसूलों का ज़िक्र क़ुरआन ने **विशेष** महत्व के साथ बार–बार किया है यानी ह० नूह अलै०, ह० इब्राहीम अलै०, ह० मूसा अलै०, ह० ईसा अलै०, और ह० मोहम्मद सल्ल०–इन सब की किताबों के नाम बताए। सिवाय ह० नूह अलै० की किताब के–यहां तक कि ह० दाऊद अलै० की किताब का नाम भी बताया लेकिन ह० नूह अलै० के लाए हुए सहीफ़ों (ग्रन्थों) के नाम क़ुरआन क्यों नहीं बताता?

या यही प्रश्न दूसरे शब्दों में यूं दोहराया जा सकता है कि जिन बड़ी–बड़ी जातियों का क़ुरआन एक साथ ज़िक्र करता है, वे मुसलमान, ईसाई, यहूदी और 'साबिईन' है। इन में से क़ुरआन ने पूर्व की तीन जातियों के पास आए ग्रन्थों का नाम तो बताया लेकिन साबिईन के पास ह० नूह अलै० कौंन से ग्रन्थ लाए, यह क्यों न मालूम हो सका? इस प्रश्न का महत्व उस स्थिति में और भी बढ़ जाता है जब हमें यह मालूम होता है कि साबिईन, क़ुरआन अज़ीम में वैदिक जाति को कहा गया है और इस वैदिक जाति के परिवर्तित होकर इस्लाम में प्रविष्ट होने की भविष्यवाणियां भी मौजूद है। इतना ही नहीं, हदीसों से हमें यह भी मालूम होता है कि तब्दील होकर आने वाली क़ौम या **'आजबुल क़ौम'** (अजीब तरीन क़ौम) प्रत्यक्ष रूप से क़ुरआन पर ईमान नहीं लाएगी बल्कि अपने ग्रन्थो में ही विद्यमान क़ुरआन की शिक्षाओ की पुष्टि कर लेने के बाद ईमान लाएगी।[14]

अव्वलीन सहाइफ़ (आदि–ग्रन्थ) के नाम से ढूंढिए:

यह तथ्य इस बात की मांग करते है कि क़ुरआन मे वैदिक धर्म–ग्रन्थो को हम तलाश करे। क़ुरआन मे जब हम पिछली किताबो का उल्लेख ढूढते है तो हमें तौरेत, ज़बूर, इजील और सोहफ़े इब्राहीम के अलावा पिछली किताबो के लिये 'सोहफ़े ऊला' और 'ज़ुबुरुल अव्वलीन' के शब्द मिलते है, जिन के शाब्दिक अर्थ है, सब से पहले सहीफ़े और सब से पहले बिखरे हुए औराक़। इन दोनो शब्दो के संस्कृत समानार्थवाची 'आदि ग्रन्थ' और 'आदि–ज्ञान' है। वेदो के विषय मे हिन्दुओ का दावा है कि यह आदि ग्रन्थ और आदि–ज्ञान है। क्या कभी आप ने यह सोचा है, कि क़ुरआन जिन्हे 'ज़ुबुरूल अव्वलीन' और 'सुहफ़े ऊला' कहता है। वह कही यही किताबे तो नही है जिन्हे हिन्दू 'आदि–ग्रन्थ' कहते है। यहा इस बात का ध्यान रहे कि अगर वेद नाम की किसी किताब को हम ने क़ुरआन मे ढूढने की कोशिश की तो यह प्रयास निरर्थक सिद्ध होगा। वर्तमान मे ह० दाऊद अलै० से सम्बन्धित ग्रन्थ का नाम **साम** है। अब अगर साम के नाम से आप क़ुरआन मे ह० दाऊद अलै० के ग्रन्थ को तलाश करे तो स्पष्ट है कि नही

मिलेगा। क़ुरआन ने इस किताब का नाम ज़बूर रखा है। यह ऐसा ही है जैसे हम पिछले अध्याय (3) में यह मिसाल दे चुके हैं कि आज कोई ईसाई अपने आप को 'नसारा' नहीं कहता लेकिन हम जानते हैं कि क़ुरआन ने नसारा उस क़ौम को कहा है जो अपने आप को ईसाई कहती है।

हम से कैसी लापरवाही हो गई ! जो लोग अपने आप को नसारा नहीं कहते, उन्हें तो हम नसारा के नाम से जानते हैं, जो अपनी किताब को ज़बूर नहीं कहते उन की किताब को हम ज़बूर के नाम से जानते हैं और यहां एक बहुत बड़ी क़ौम हज़ारों साल से क़ुरआन उतरने से भी पहले से यह दावा करती चली आ रही है कि उस के पास 'सोहफ़े ऊला' और 'ज़ुबुरुल अव्वलीन' है। अपनी भाषा में वह यही शब्द अपनी किताबों के लिए प्रयुक्त करती चली आ रही है और हम एक हज़ार साल से इसी देश मे इसी क़ौम के बीच रहते हुए भी खोज किए बिना और उनके आदि ग्रन्थों के अध्ययन के बग़ैर यही कहते चले आ रहे हैं कि सुहफ़े ऊला और ज़ुबुरुल–अव्वलीन का संसार में अब कोई अस्तित्व ही नहीं है। और फिर ऐसा भी तो नहीं है कि बहुत सी क़ौमें इस नाम की किताब रखने का दावा करती हो जिस से सब की बात संदिग्ध प्रतीत हो रही हो। बल्कि विश्व में केवल यही एक धार्मिक क़ौम है जो इस बात की दावेदार है। अल्लाह हमें माफ़ करे ! शायद उस की यही मसलिहत थी कि यह राज़ उस समय ही खुले जो क़ौम के परिवर्तन के लिये निर्धारित किया जा चुका हो, नहीं तो हमें क़ुरआन में यह स्पष्ट बता दिया गया होता कि 'सुहफ़े ऊला' या 'ज़ुबुरुल अव्वलीन' किस रसूल के माध्यम से आए लेकिन इस बात से हमारी लापरवाही के अपराध में कभी नहीं होती। क़ुरआन में स्पष्ट शब्दों में पहचान सिर्फ़ उन क़ौमों की है जिन को क़ुरआन के अवतरण के समय अरब जानते थे। संसार के अन्तिम दिन तक की शेष समस्त घटनाएं इस में तलाश करने से ही मिलेंगी जो ऐसे शब्दों में होंगी जिन को 1400 वर्ष पुराने अरब अपनी परिचित शब्दावली के लिए प्रयोग करते थे। हम हिन्दुस्तानी मुसलमानों का यह कर्तव्य था कि हिन्दू क़ौम का वृताँत, क़ुरआन में तलाश करते जिस के बीच हम एक हज़ार वर्ष से पड़ोसी मज़हब वालों की हैसियत से रह रहे हैं।

आदि–ग्रन्थ मौजूद हैं!

आदि–ग्रन्थो का विश्व में आज भी अस्तित्व है, इस पर क़ुरआन की निम्नलिखित आयत प्रमाण के रूप में प्रस्तुत है :

"और वे (न मानने वाले) कहते हैं कि यह व्यक्ति (मोहम्मद सल्ल०) अपने रब की ओर से (अपने ईशदूत होने का) हमारे पास कोई असामन्य प्रमाण क्यों नहीं लाता! और क्या उन के पास सुहफ़े ऊला (आदि ग्रन्थों) में जो कुछ भी

है (उस के रूप में) खुली दलील नहीं आ गई?" –(क़ु० 20–133)

यह आयत इस बात का प्रमाण है कि अव्वलीन–सहीफ़े या आदि–ग्रन्थ लुप्त–प्राय नहीं हैं बल्कि दुनिया में आज भी मौजूद हैं। इस बात को तो क़ुरआन, दलील और चमत्कार के रूप में पेश कर रहा है कि हज़ारों वर्ष बीत जाने के बाद भी आदि ग्रन्थों में वह शिक्षाएं विद्यमान हैं जिन के संग्रह के रूप में क़ुरआन अज़ीम सब से अन्त में अवतरित हुआ। आदि ग्रन्थों के दुनिया में विद्यमान होने के पक्ष में जो लोग सुबूत मांगते हैं, उनके लिये उक्त आयतों में अल्लाह ने एक ख़ामोश चैलेन्ज प्रस्तुत किया है।

क़ुरआन की दलील चाहते हो? अल्लाह के शब्दों में प्रमाण माग रहे हो? सुहफ़े ऊला (आदि ग्रन्थ) को उठा कर तो देखो–हमारा सुबूत, हमारा चमत्कार, हमारी दलील तुम्हारे सामने आ जाएगी।

इस आयत से जो अभिप्रेत आज तक समझा जाता रहा है, व यह है कि पिछली किताबों में जो भी उपदेश थे, जितने भी विषय थे, उन के सार के रूप में समस्त ग्रन्थों का संग्रह 'क़ुरआन' हमारे पास आ गया है और यह नबी उम्मी सल्ल० का अल्लाह की तरफ़ से मोजज़ा (आश्चर्य–कर्म) है। बेशक यह अभिप्राय भी इस आयत का है, लेकिन क्या इस में भी स्पष्ट रूप से वही चुनौती आप को महसूस नही हो रही है? जब तक आपको यह पता नही चल जाता कि क़ुरआन से पूर्व के ग्रन्थो में क्या था, मोजज़े का यह पहलू कैसे उजागर होगा? यह कैसे मालूम होगा कि क़ुरआन इन सभी विषयों का सार–संकलन है ?

यह है क़ुरआन में पूर्व ग्रन्थों के उपदेश खोजने का आग्रह और इस आग्रह का तात्पर्य यह है कि आदि–ग्रन्थ दुनिया से लुप्त नही हुए हैं।

वेद ही आदि–ग्रन्थ हैं :

क़ुरआन मे प्रयुक्त शब्द 'सुहफ़े ऊला' बहुत ही ग्राह्य शब्द है। इस में सामान्यता भी है और विशिष्टता भी। समस्त पूर्व–ग्रन्थ भी इसके भावार्थ मे शामिल है तथा सर्वप्रथम ग्रन्थ भी। क़ुरआन विशेषतया जिन पूर्व ग्रन्थो की चर्चा करता है, वह– सुहफ़े–इब्राहीम*, तौरेत, ज़बूर और इंजील हैं। यह सभी वे ग्रन्थ हैं जिनसे अरबवासी परिचित थे।

ह० नूह अलै० के व्यक्तित्व, तूफ़ाने नूह का घटना क्रम, उन की क़ौम के हालात तथा उन पर अवतरित ग्रन्थो के विषय मे क़ुरआन के सर्वप्रथम सम्बोधित 'अरब' नही जानते थे, इस के प्रमाण के रूप मे स्वयं क़ुरआन मजीद की सूरए हूद मे ह० नूह अलै० और तूफ़ाने नूह की घटना का वर्णन करने के बाद अल्लाह का यह फ़रमान है

* 'सुहफ़े इब्राहीम' के नाम से चन्द लोगो के पास कुछ विविध पृष्ठ पाये जाते थे।

''यह परोक्ष की सूचनाएं हैं जो हम तुम्हारी तरफ़ वह्य कर रहे हैं। इस से पहले न तुम उन को जानते थे और न तुम्हारी कौम..'' (कु०: 11–49)

कुरआन ने अपनी विशिष्ट शैली में, जिन नबियों की किताबों से उस समय के कुरआन के सम्बोधित परिचित थे, उन का नाम ऐसे शब्दों में लिया कि लोग आसानी से पहचान लें। लेकिन उन से पहले की किताबों का भी उल्लेख किया और इसके लिये ऐसे ग्राह्य व दो अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग किया जो सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ही अनोखी शान है। सुहफ़े ऊला और ज़ुबुरुल अव्वलीन के परिभाषिक शब्दों से 'उस युग' के लोगों को भी समझने में कठिनाई नहीं हुई क्योंकि इन शब्दों का अभिप्राय वे लोग उन ग्रन्थों से लेते थे जिनसे वे पूर्व परिचित थे और इन्हीं शब्दों ने 'इस्लाम के दीपक' के लेखक श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय को भी बता दिया कि कुरआन में तुम्हारे शास्त्रों की भी चर्चा की गई है। उस में अव्वलीन सहाइफ़ यानी आदि–ग्रन्थों का भी प्रसंग है। हमारी तत्वदर्शिता से तुम क्यों उम्मीद रखते हो कि संसार की बड़ी–बड़ी जातियों के जिन पेशवाओं (ह०नूह अलै०, ह० इब्राहीम अलै०, ह० मूसा अलै०, ह० ईसा अलै० और ह० मोहम्मद सल्ल०) का हम ने एक साथ नाम लिया है (सूरए अहज़ाबः 7, सूरए शुअराः 13), इन में से सब की किताबों के नाम तो बताएं लेकिन तुम्हारे अग्रदूत ह० नूह अलै० के ग्रन्थ का ज़िक्र कुरआन में न करें।

अब आइए– 'ज़ुबुरुल अव्वलीन' के शब्दों पर चिन्तन करें। कुरआन बतलाता है : **''निस्सन्देह ज़ुबुरुल अव्वलीन में यह (कुरआन) है।''** (कु०: 26–196)

ज़ुबुर का शाब्दिक अर्थ है – 'बिखरे हुए औराक़ (पृष्ठ) सब से पहले साहिबे शरीअत (धर्म–नियमावली लागू करने वाले) रसूल ह० नूह अलै० थे। हिन्दू जाति, ह० नूह अलै० की उम्मत है। वे अपने पवित्र ग्रन्थों अर्थात वेदों के 'आदि–ज्ञान' होने का दावा करते हैं औरा वेदों के इतिहास (जो संक्षेप में आप की नज़र से गुज़रा) पर नज़र डालने से 'सब से प्राचीन बिखरे हुए पृष्ठों' की परिभाषा उन पर चरितार्थ होती है।

आइए अब एक और पहलू से देखें। दिव्य कुरआन में अल्लाह का सत्य वचन है :

''और आप से पहले भी हम ने पुरुष (ही) भेजे थे जिन पर हम वह्य करते थे। यदि तुम को नहीं मालूम तो ज़िक्र वालों (अर्थात किताब वालों से) से पूछ लो! उन को हम ने 'बय्यनात' और 'ज़बूरों' के साथ भेजा था''
(कु०:16–43,44)

यहां दूसरे अर्थों की गुन्जाइश के साथ एक सूक्ष्म संकेत यह भी छिपा हुआ है कि पैग़म्बरों पर जो किताबें नाज़िल हुई, उनमें से कुछ **'बय्यनात'** थी और कुछ

'ज़ुबुर'–अर्थात ज़ुबुर और बय्यनात एक दूसरे से भिन्न हैं। बय्यनात के माने हैं ऐसे ग्रन्थ जिन में स्पष्ट रूप से समझ में आने वाली भाषा में वर्णन हो जब कि ज़ुबुर की प्रकृति इससे भिन्न है। ज़ुबुर ऐसे ग्रन्थ हैं जिन में घटनाओं व तथ्यों का वर्णन तमसीली भाषा (अलंकृत शैली) में हो। ऋग्वेद में कहा गया है कि **''मैं घटनाओं का प्रशंसा की शैली में अलंकृत भाषा में वर्णन करता हूं।''** (ऋ०: 8–6–11)

वेदों का आस्मानी कलाम 'ज़ुबुर' की परिभाषा पर खरा उतरता है और वेद के 'सर्वप्रथम' होने के विचार पर तो किसी को भी आपत्ति नहीं है।

वेदों के 'सुहफ़े ऊला' या 'ज़ुबुरूल अव्वलीन' होने तथा ह० नूह अलै० से सम्बन्धित होने का एक अन्तिम तर्कसंगत प्रमाण यह है पुराणों व अन्य धार्मिक पुस्तकों में तो बहुत से ईशदूतों की उन के नामों के साथ भविष्यवाणियां मिलती हैं लेकिन वेद में केवल आदम अलै० व नूह अलै० के प्रसंग मिलते हैं। आत्मालोक के पहले सन्देष्टा होने की हैसियत से ह० अहमद सल्ल० का विस्तार से वर्णन मिलता है या फिर ह० मोहम्मद सल्ल० के शुभागमन की पेशिनगोइयां मिलती हैं। अन्तिम सन्देष्टा की ख़बरें तो हर एक पवित्र ग्रन्थ में हैं। इस के अतिरिक्त नबियों में से ह० नूह अलै० से आगे किसी नबी का वृत्तांत न पाया जाना इस बात का प्रमाण है कि वेद न तो नूह अलै० से पूर्व के ग्रन्थ हैं और न उन के युग के बाद के। वेदों को कलामे रब्बानी या पवित्र ग्रन्थ मानें या न मानें, इस विषय में जो भ्रम पैदा हो सकता था, वह हमारे ख़याल से अब दूर हो गया होगा। वेदों के स्वयं के विषयों के साथ वेद के कुछ मुस्लिम विद्वानों के विचार और सब से बढ़ कर पवित्र कुरआन की गवाही के बाद इसमें कोई शक नहीं रह जाता कि वेद कलामे रब्बानी के हिस्से हैं।

वेद एवं अन्य हिन्दू धार्मिक ग्रन्थः

हिन्दू मत के अनुसार वेदों को प्रभुवाक्य माना जाता है। वेद के किसी एक शब्द में परिवर्तन भी उन की दृष्टि में अवैध है। अन्य धार्मिक ग्रन्थ जैसे पुराण, ब्राह्मण, उपनिषद, आरण्यक व स्मृतियों इत्यादि को वेदों का भाष्य माना जाता है। वेदों को छोड़ कर शेष सभी धर्म ग्रन्थों के वचन प्रत्यक्ष रूप से ईश्वर से सम्बन्धित नहीं हैं बल्कि इन का केवल अभिप्राय ईश्वर की ओर से माना जाता है। इन के रचयिता विभिन्न ऋषि–मुनि थे और इन के शब्दों में यदि इस प्रकार हेरफेर हो कि भावार्थ बदलने न पाए तो कोई आपत्ति नहीं होती है। यह बिल्कुल ऐसा ही है जैसे कुरआन और हदीस की परस्पर तुलना करने से पता चलता है।

'कल्याण' के पदम पुराण अंक में यह बात इस तरह कही गई है :

''प्रभु वाक्य के शब्दों को कोई वक्ता वैसे ही अर्थवाले अन्य शब्दों से बदल नहीं सकता। यदि बदले तो उसे प्रभुवाक्य नहीं कहा जाएगा। इस नियम

के अनुसार वेद–वाक्य प्रभुवाक्य ही हैं ...यही नहीं, इन शब्दों का क्रम भी नहीं बदला जा सकता...पुराण–वाक्य, सुदृढ़वाक्य (नेक लोगों के वाक्य) के समान है। इन सुदृढ़वाक्यों में शब्द बदलने में कोई क्षति नहीं मानी जाती है। हां, उन के वाच्यार्थ में कोई अन्तर नहीं आना चाहिये ...''15

हिन्दू विद्वानों का दावा है कि वेदों को याद करने में इतनी तकनीकी सावधानी बरती गई हैं कि वे आरम्भ से परिवर्तित हुए बिना वैसे ही चले आ रहे हैं। लेकिन हम जानते हैं कि हज़ारों साल से कंठस्त चले आ रहे वेदों को अट्ठारहवीं शताब्दी के अन्त में पहली बार मैक्स मुलर ने पुस्तक के रूप में प्रकाशित कराया। यदि हम समस्त सावधानियों को स्वीकार भी कर लें तब भी स्मरण शक्ति में वेदों के साथ पुराणों और दूसरी किताबों के विषयों का गडमड हो जाना अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होता है। वेदों के अंग्रेज़ टीकाकार इस बात की पुष्टि करते हैं। (इसके दृष्टांत दिये जा चुके हैं) हमारे अपने चिन्तन एवं शोध के अनुरूप वेदों व अन्य धार्मिक ग्रन्थों में जितने हिस्से की कुरआन से पुष्टि हो जाती है, वही अस्ल वेद है।

सन्दर्भ–सूची अध्याय : 5

1. 'भूमिका सामवेद' – ले०: पंडित श्रीराम शर्मा जी, पृ०: 3–4
2. Quoted by Griffith in the preface of the first edition of the "Hymns of Rigveda" Volume:1
3. -- do --
4. Hindu Mythology' —W.J.Wilkins Page: 3
5. Hindu Mythology' —W.J.Wilkins Page: 5
6. 'वैदिक साहित्य' – ले०: पं० राम गोविन्द त्रिवेदी, पृ०: 23–24 प्र०: भारतीय ज्ञान पीठ–काशी
7. 'तारीखे मशाइखे चिश्त' खं०: 5, पृ०: 58, सं०: मौ० अख़लाक़ हुसैन क़ासमी, पत्रिका 'रूबी'–दिल्ली फ़रवरी 1988, पृ०: 13
8. – – उपरोक्त – –
9. 'अलफ़ुरक़ान'–बरेली– शाह वली उल्लाह नम्बर' 1941, पृ०: 282
10. – – उपरोक्त – –
11. – – उपरोक्त – –
12. – – उपरोक्त – –
13. इस्लाम के दीपक–ले०: गंगा प्रसाद उपाध्याय, पृ०: 40
14. 'मिश्कात', अ०: सवाब हाज़हिल उम्मता, कथन–अम्र बिन शुएब रज़ि०
15. 'कल्याण'–पदम पुराण अंक, अक्तूबर 1944, पृ०: 3

-----❖❖❖-----

अध्याय : 6

सृष्टि रचना का आरम्भ हज़रत अहमद सल्ल०

हक़ीक़ते अहमदी (अहमदी तत्व):

हमने जगह–जगह पर इस बात का उल्लेख किया है कि हिन्दू क़ौम ने अपनी मूल धार्मिक विरासत को दन्तकथाओं में गुम कर दिया है। इस में से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्य जिस से यह क़ौम परिचित थी और जिस पर इनकी अधिकाश दन्त कथाओं की बुनियाद है, वह 'हक़ीक़ते अहमदी' है। इस बात की पुष्टि करने के लिये सर्वप्रथम हक़ीक़ते अहमदी को समझना नितांत आवश्यक है; जिस का ज़िक्र हमारे उन तमाम आलिमों ने किया है जिन का सम्बन्ध तसव्वुफ़ (इस्लामी रहस्यवाद) से भी रहा है। यह उन वास्तविकताओं में से एक है जिन को वर्तमान शताब्दी में समझना और उन पर चिन्तन करना बेहद ज़रूरी है। इस के बग़ैर न तो हम हिन्दू जाति की दन्तकथाओं की हक़ीक़त को समझ सकेंगे और न ही उस का उपचार कर सकेंगे।

दिव्य क़ुरआन में 'सूरए सफ़्फ़' की निम्नलिखित आयत के अनुवाद पर नज़र डालें:

''और (वह समय भी याद करो) जब मरयम के पुत्र ईसा ने कहा कि हे इसाईल की सन्तान! मैं तुम्हारे पास अल्लाह का रसूल आया हूं, पुष्टि करने वाला तौरेत की जो मुझ से पहले से है और एक रसूल की शुभसूचना देने वाला जो मेरे बाद आने वाले हैं, जिन का नाम अहमद है। फिर जब वह उन के पास स्पष्ट प्रमाण लेकर आए तो वे लोग बोले कि यह तो खुल्लम खुल्ला जादू है।'' – (क़ु०: 61–6)

इस आयत में बताया गया है कि ह० ईसा अलै० ने आने वाले रसूल की शुभसूचना दी थी और उन का नाम अहमद (सल्ल०) बताया था।

इस आयत की व्याख्या में भाष्यकारों ने बहुत विस्तार से यह समझाया है कि इंजील में 'अहमद' (सल्ल०) के नाम से आने वाले नबी की ख़ुशखबरी मौजूद थी लेकिन ईसाई इस के अनुवादों में रद्दोबदल कर रहे हैं। अधिकांश विद्वानों ने यहां इस बात को स्पष्ट नही किया है कि रसूलुल्लाह सल्ल० का नाम अहमद सल्ल० कैसे था? यहा केवल वह हदीसें उद्धृत की गई हैं जिन में रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रामाया कि मेरा नाम 'अहमद' (सल्ल०) है। बेशक यह हमारा ईमान है कि ह० मोहम्मद सल्ल० का एक नाम 'अहमद' भी था। लेकिन कैसे था? कहां था? कब था?

रसूलुल्लाह सल्ल० की हदीसों पर हमारा ईमान है लेकिन अगर इन हदीसों से हमें यह मालूम न हो कि अहमद सल्ल० नाम की क्या हक़ीक़त है तो हम ग़ैर ऐशयाई विद्वानों के आरोपों का क्या उत्तर देंगे? ईसाई यह कहते हैं कि हमारी किताबों से मोहम्मद सल्ल० को यह मालूम हुआ कि आने वाले नबी का नाम 'अहमद' होगा और यह सुन कर उन्होंने (नऊज़ोबिल्लाह) क़ुरआन की आयत गढ़ ली और ज़बानी भी यही कहना शुरू कर दिया कि मेरा नाम 'अहमद' है हालांकि उन का नाम तो मोहम्मद सल्ल० था।

देखिये एक ईसाई लेखक सर विलियम म्योर के शब्द :

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) **''...बच्चे का नाम मोहम्मद (सल्ल०) रखा गया। यह नाम अरबों में बहुत कम मिलता था, लेकिन था। इस शब्द का मूल तत्व 'हम्द' है जिस से 'मोहम्मद' का अर्थ 'प्रशंसा के क़ाबिल' निकलता है। हम्द से ही 'अहमद' बनता है। इंजील के कुछ अरबी अनुवादों में सुरयानी शब्द पैराक्लीट का ग़लत अनुवाद अहमद किया गया है और यह अर्थ मुसलमानों की ईसाइयों और यहूदियों से वार्तालाप में बहुत ज़्यादा प्रचलित हो गया। क्योंकि उन के कहने के अनुसार इसी नाम से उनकी किताबों में ईशदूत की भविष्यवाणी थी...।''**[1]

(अंग्रज़ी से अनुवाद) **''...मोन्टानस के कथन से हमें पता चलता है कि पैराक्लीट के आगमन का वादा' के बहुत से भाव बिगाड़ कर निर्धारित किये जा सकते हैं और यह मुमकिन है कि उन्हीं में एक छांटा हुआ भाव मोहम्मद सल्ल० के सामने बयान किया गया हो जिस से आयत बना ली गई हो जो 'सूरए सफ़्फ़ में है...।''**[2]

इतिहास में हमें ह० मोहम्मद सल्ल० का नाम अहमद सल्ल० कहीं नहीं मिलता। आप (सल्ल०) के यह बताने के बाद कि **'मैं ही अहमद सल्ल० हूं'**, 'अहमद' सल्ल०

नाम प्रचलित हुआ।

आप के दादा अब्दुल मुत्तलिब ने आप का नाम मोहम्मद (सल्ल०) रखा था। बचपन ही से तमाम मक्कावासी आप को केवल 'मोहम्मद' सल्ल० के नाम से ही पुकारते थे। सादिक़ (सत्यवादी) और अमीन (न्यासधारी) की उपाधि भी आप को प्रदान की गई। लेकिन 'अहमद' (सल्ल०) नाम का कहीं ज़िक्र नहीं था। आप के तमाम सहाबी (सत्संगी) आप को मोहम्मद सल्ल० के नाम से ही जानते थे। पहली बार आप (सल्ल०) ही के द्वारा यह रहस्योद्घाटन हुआ कि आप (सल्ल०) ही अहमद सल्ल० थे। क्या अहमद सल्ल० नाम की यथार्थता समझने की हमें कोई आवश्यता नहीं है? यह मालूम होते हुए भी कि दुनिया में आप का नाम मोहम्मद सल्ल० होगा, ह० ईसा अलै० ने बनी इस्राईल (यहूदी) को यह क्यों बताया कि 'उस का नाम अहमद सल्ल० है'। हालांकि यह ईश्वर को ज्ञात था कि इससे आपत्तियों का द्वार खुलेगा। क्या रसूलुल्लाह सल्ल० के अहमद सल्ल० नाम की वास्तविकता मोहम्मद सल्ल० से अलग कुछ और है जिसकी तरफ़ पिछली उम्मतों का ध्यान आकर्षित कराना उद्देश्य था!

अहमद सल्ल० दरअस्ल आप का नाम रूहों (आत्माओं) की दुनिया में था। इस शारीरिक संसार में भेजे जाने से पहले, समस्त मानव–जाति की उत्पत्ति से पहले और ह० आदम अलै० के ाी इस ससार में आने से पूर्व हम सब का अस्तित्व था। आत्माओं के संसार में हम सब की आत्माएं पहले पैदा की गई थीं। तत्पश्चात शरीर देकर हमें इस संसार में भेजा गया। क़यामत (महाप्रलय) तक जन्म लेने वाले तमाम इन्सानों की आत्माएं अब भी मौजूद हैं। इसी आत्मा–लोक में हम सब से अल्लाह ने अपने रब (प्रभु) होने की शपथ ली थी। क़ुरआन शरीफ़ इस का ज़िक्र करते हुए कहता है:

''और (हे नबी! लोगों को याद दिलाओ वह समय) जब कि तुम्हारे 'रब' ने आदम के बेटे की पीठों से इन की सन्तान को निकाला था और (स्वयं उन को) उन के ऊपर गवाह बनाते हुए पूछा था: क्या मैं तुम्हारा 'रब' नहीं हूं? उन्होंने कहा : क्यों नहीं? (आप ही हमारे रब हैं) हम इस पर गवाही देते हैं। (यह हम ने इस लिये किया कि) कहीं तुम 'क़यामत' के दिन यह न कह दो कि हम तो इस बात से बेख़बर थे, या यह न कहने लगो कि शिर्क (बहुदेववाद) का आरम्भ तो हमारे पूर्वजों ने हम से पहले किया था और हम बाद में उन की नस्ल से पैदा हुए। फिर क्या आप हमें उस अपराध में पकड़ते हैं जो मिथ्यावादियों ने किया था।'' (क़ु०: 7–172,173)

इस आयत के भाष्य पर शिया–सुन्नी सभी भाष्यकार एक मत हैं–कि यह सकल्प शरीरों के अस्तित्व में आने से पूर्व समस्त आदम (अलै०) की सन्तान की आत्माओं

से लिया गया था। मिसाल के तौर पर अल्लामा हाफ़िज़ इब्ने कय्यिम रह० 'किताबुर्रूह' में लिखते हैं:

(उर्दू से अनुवाद) **''...ज़ाहिर है कि यह संकल्प आत्माओं से लिया गया था क्योंकि कि उस समय शरीर कहां थे।''** 3

(उर्दू से अनुवाद) **''कअब क़रज़ी, आयत के भाष्य में फ़रमाते हैं–सब आत्माओं ने शरीर पैदा किये जाने से पूर्व अल्लाह पर ईमान लाने का और उसकी मारिफ़त (आत्मज्ञान) का वचन दिया था।''** 4

इसी किताब से एक और दृष्टांत देखिए:

(उर्दू से अनुवाद) **''हक़ तआला (ईश्वर महान) ने फ़रमाया : *व लक़द ख़लक़नाकुम सुम्मः सव्वरनाकुम...अलख़* (सूरए आराफ़: 11)–(सो और हम ने तुमको पैदा किया–फिर तुम्हारी सूरतें बनाई...) कहते हैं, सुम्मः (फिर)–क्रम तथा विलम्ब के लिये प्रयुक्त किया जाता है... पता यह चला कि 'ख़लक़' (सृष्टि करने) से अभिप्राय आत्माओं की सृष्टि से है।''** 5

उस 'आत्मा–लोक' में जहां हम सब ने अल्लाह तआला को वचन दिया था कि आप हमारे रब है,वहां भी रिसालत का मनसब (पद) था। लेकिन उस लोक में केवल एक रसूल थे; और वह थे जनाब अहमद मुजतबा सल्ल०। अल्लाह के नज़दीक रसूलुल्लाह सल्ल० का नाम अहमद सल्ल० था और मलाइका (देवतागण) भी इसी नाम से जानते थे। अहमद सल्ल० और मोहम्मद सल्ल० एक ही व्यक्तित्व की दो अलग–अलग हक़ीक़तें हैं। सूफ़िया (सूफ़ी सम्प्रदाय) की भी उक्त अक़ीदे पर सहमति है।

(उर्दू से अनुवाद) – **''और अहमद सल्ल०, रसूलुल्लाह सल्ल० का दूसरा नाम है। कि आसमान वालों में वह इसी नाम से परिचित हैं...और इस पवित्र नाम को जाते अहद जल्ले शा–नहू (ईश्वर जो महान प्रतापी है) के साथ बहुत समीपता है और दूसरे नाम (मोहम्मद सल्ल०) से एक मंज़िल अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा क़रीब है।''** 6

(उर्दू से अनुवाद) **''उनका नाम आस्मान में मलाइका के नज़दीक अहमद सल्ल० मशहूर है और ज़मीन वालों के नज़दीक मोहम्मद सल्ल० है।''** 7

इस दुनिया में ह० मोहम्मद सल्ल० का नाम 'अहमद' कहीं साबित नहीं होता, इस के बावजूद क़ुरआन बताता है कि ह० ईसा अलै० ने अहमद सल्ल० के आने की

भविष्यवाणी की थी। आप ही अन्तिम रसूल थे, यह बात तो पूर्व ग्रन्थों मे बताई गई अन्य कई निशानियों से साबित होती ही है। लेकिन यहां वास्तव में इस ओर ध्यान आकर्षित कराना था कि तमाम उम्मतों को यह भी बताया गया था कि आख़री रसूल वही होगा जो दिव्य–लोक का पहला रसूल 'अहमद सल्ल०' था और इस हैसियत से समस्त मानव जाति की आत्माओं का रसूल रह चुका था। यही ह० ईसा अलै० ने बनी इस्राईल (यहूदी) को बताया था कि वह रसूल जो तुम्हारा और मेरा सब का रसूल आकाश में अहमद सल्ल० के नाम से था, वह दुनिया में मेरे बाद शारीरिक रूप में अन्तिम रसूल बन कर आने वाला है।

अहमदी तत्व प्रत्येक पवित्र ग्रन्थ में है:

तौरेत और इंजील में अहमद नाम की वास्तविकता पर हमारे व्याख्याकार विस्तार से दृष्टांत प्रस्तुत कर चुके हैं, इसलिये उन्हें उद्धृत न करते हुए हम हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थों और बौद्ध–मत में अहमदी तत्व के कुछ नमूने पेश कर रहे हैं। आइये पहले वेद में देखें:

''वेदाहमेत पुरुष महान्तमादित्यवर्ण तमसः प्रस्तात ...यनाय''

''वह समस्त विद्याओं का स्रोत 'अहमद' महानतम व्यक्तित्व है। यह सूर्य के समान अन्धकारों को दूर भगाने वाला है। इस चमकते सूर्य (सिराजम मुनीरा) को जान लेने के पश्चात ही मृत्यु पर विजय प्राप्त की जा सकती है। मुक्ति का अन्य कोई मार्ग नहीं है।'' – (यजु०:31–18)

''अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ। अहं सूर्य इवाजनि''

''अहमद ने सबसे पहला बलिदान किया और सूर्य के समान हो गया।'' – (ऋ०: 8–6,9,10)

(ज्ञातव्य है कि क़ुरआन में रसूलुल्लाह सल्ल० को 'सिराजम मुनीरा' यानी चमकता हुआ सूरज कहा गया है।)

अयमिद् वै प्रतीवर्त ओजस्वान् संजयो मणिः।
प्रजां धनं च रक्षतु परिपाणः सुमङ्गलः।।

''अहमद वह हैं जो लौटते हैं तो तेजवान शक्तिशाली हीरा सिद्ध होते हैं, प्रजा एवं धन की रक्षा हर पहलू से करते हैं तथा अति उत्तम मोक्षदाता सिद्ध होते हैं।'' – (अथर्व०: 8–5–16)

इसी तरह अथर्ववेद (20–126–14) में ***उताहमर्दाम*** शब्द इस्तेमाल हुआ है।

उपरोक्त चारों मन्त्रों के अनुवादों में ग़लतियां की जा रही हैं। मिसाल के तौर पर पहले मन्त्र में 'अहमत' शब्द का प्रयोग हुआ है। संस्कृत में 'द' की जगह प्रायः 'त' इस्तेमाल होता है। इस शब्द को अहम +अत, दो शब्दों में विभाजित करके अनुवाद किया जा रहा है। अहम का अर्थ है 'मैं' और अत का अर्थ है 'उस' –इस तरह अनुवाद कुछ का कुछ हो जाता है। इसी तरह की गड़बड़ दूसरे दोनों मन्त्रों में भी है।

बौद्ध–मत में भी अहमद नाम की यथार्थता देखते चलें। बौद्ध मत में 'बुद्धा' पैगम्बर को कहते हैं। गौतम बुद्ध ने अपने शिष्य नन्दा को संबोधित करके बताया था, **"आनन्द! मैं न तो पहला बुद्ध हूं और न अन्तिम बुद्ध हूं"** [8]

पहले बुद्ध के सम्बन्ध में डा० राधा कृष्णन अपनी किताब में लिखते हैं: **"जापान में पहले बुद्ध का नाम 'अमिताभ' मिलता है"** [9]

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) **"और जापान में इस शब्द का उच्चारण एमिड (Amid) है, "यानी अहमद"।** [10]
– डा० राधा कृष्णन

अमिताभ शब्द 'अमित और 'आभा' से मिल कर बना है। अमित, अहमद का बिगड़ा हुआ उच्चारण है और आभा का का अर्थ, नूर (प्रकाश) है। इस तरह अमिताभ के माने हुए 'नूरे अहमद' या अहमद का नूर।

इस तरह बौद्ध–मत में भी यह सत्य खोया हुआ है कि पहले पैगम्बर 'नूरे अहमद सल्ल०' थे।

यह तो थे पूर्व ग्रन्थ, आइए देखें हदीसें क्या कहती हैं?

"ह० अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि एक दिन सहाबा रज़ि०ने पूछा कि या रसूलुल्लाह सल्ल०! नुबूवत (ईशदौत्य) आप पर किस समय वाजिब हुई? तो आप सल्ल० ने फ़रमाया: उस समय जब कि आदम अलै० आत्मा और शरीर के बीच थे।" [11]

तिरमिज़ी ने कहा है कि यह हदीस हसन (उत्तम) है।

"अरबाज़ बिन सारिया से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रामया कि मैं अल्लाह की दृष्टि में ज़रूर उस समय नबी था कि आदम अलै० अपनी मिट्टी के बदन में पड़े थे। (यानी अभी आत्मा नहीं डाली गई थी)" [12]

"ह० अंसबी से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि मैंने पूछा या रसूलुल्लाह सल्ल०! आप कब नबी थे? आप ने फ़रमाया: मैं उस समय ज़रूर नबी था कि

आदम अलै० आत्मा और शरीर के दरमियान थे।" [13]

इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में और अबू नईम ने अपने 'हुलये' में रिवायत किया है और हाकिम ने इसे सही कहा है। [14]

तर्कसंगत प्रमाण:

आप सल्ल० के आत्मा लोक में पैगम्बर होने का एक तर्क के अनुकूल प्रमाण देखिए। समस्त भाष्यकार इस बात पर सहमत हैं कि ह० आदम अलै० की नुबूवत स्वर्ग में नहीं थी बल्कि दुनिया में भेजे जाने से उन की नुबूवत का आरम्भ हुआ था जैसा कि पवित्र कुरआन में अल्लाह ने फ़रिश्तों से फ़रमाया:

"मैं धरती में एक ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि) नियुक्त करने वाला हूं।"
– (क़ु०:2–30)

यह भी हमें क़ुरआन से मालूम होता है कि समस्त नामों का ज्ञान (अल अस्माअ कुल्लहा) ह० आदम अलै० को पैदा करने के बाद दिया गया था।

"और उसने आदम को नाम सिखाए कुल के कुल फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने पेश किया।"
– (क़ु०:2–31)

अब यहां सोच विचार किया जाए तो यह सवाल पैदा होता है कि अल्लाह ने ह० आदम अलै० को यह नामों का ज्ञान प्रत्यक्ष रूप से स्वयं दिया था या ह० जिबरईल अलै० या किसी और फ़रिश्ते के माध्यम से दिया था? दोनों परिस्थितियों में यह वह्य (आकाशवाणी) हुई और अगर आदम अलै० पर वह्य उतरना सिद्ध होता है तो वह आत्मा लोक में भी ईशदूत साबित हुए हालांकि ऐसा नहीं था।

रिवायतों से यह भी पता चलता है कि ह० मोहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया कि **"कुल नामों का ज्ञान या तो मुझे दिया गया था या आदम अलै० को।"**

वैलमी ने अबू राफ़े से नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया: **"मुझे मेरी उम्मत मिट्टी और पानी में दिखाई गई और मुझे कुल नामों का ज्ञान दिया गया जो आदम अलै० को दिया गया था।"** [15]

इसका अर्थ यह है कि केवल दो व्यक्तित्व ऐसे थे जिनको यह ज्ञान दिया गया था। इन में से ह० आदम अलै० उस समय नबी नही थे। स्पष्ट है कि अहमद सल्ल० के ज़रिये यह ज्ञान ह० आदम अलै० को दिया गया होगा। यह दिव्य लोक में अहमद सल्ल० के सन्देष्टा होने का तर्कसंगत प्रमाण है।

विज्ञान, मार्गदर्शन पर आश्रित है :

पृथ्वी पर मानव जीवन को आरम्भ हुए हजारों बर्ष बीत गए। असंख्य गौरवगाथाओं, हीनताओं, प्रकाश स्तम्भो और इब्रत (सीख) की दास्तानों को अपने दामन में समेटता हुआ कालचक्र निरन्तर आगे बढ़ता जा रहा है, उस अन्तिम क्षण की ओर जब एक धमाके से इन विचित्रताओं का क्रम समाप्त हो जाएगा और एक नए अनन्त जीवन का आरम्भ होगा। समय बीतने के साथ-साथ ही मानव बुद्धि भी विकास की नई मन्ज़िलें तय कर रही हैं और अपनी तरक्की की चरम सीमा पर पहुच कर यह भौतिक बुद्धि भी नष्ट हो जाने वाली है। आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व जब मानव-मस्तिष्क बचपन से निकल कर वयस्कता के युग में प्रविष्ट हुआ तो ईश्वर ने अन्तिम ईशदूत (सल्ल०) को संसार में अन्तिम पवित्र-ग्रन्थ के साथ भेजा जिस में समय के अन्तिम छोर तक जन्म लेने वाली एक-एक समस्या का समाधान मौजूद हैं। कुरआन, ह० मोहम्मद सल्ल० का सबसे बड़ा चमत्कार है औरे इस के आश्चर्य रहती दुनिया तक सामने आते रहेंगे। अल्लाह का फ़रमान है :

'' हम शीघ्र ही इन को अपनी निशानियां (इसी) संसार में दिखाएंगे और स्वयं इन की आत्माओं में भी, यहां तक कि उन पर खुल कर रहेगा कि यह (क़ुरआन) सत्य है।' -- (क़ु०: 41-53)

मानव बुद्धि ईश्वर द्वारा प्रदान किए गए ज्ञान के भण्डार को पूर्ण रूप से ग्रहण करने में असमर्थ है। जिन्होंने इस नितांत ज्ञान से लाभ उठाने की कोशिश की, उन की एक मिसाल नोबिल पुरस्कार से सम्मानित वैज्ञानिक डा० अब्दुस्सलाम है जिन्होने क़ुरआन से लाभान्वित होने के बाद विज्ञान को यह सिद्धान्त दिया कि सृष्टि में विविध प्रकार की शक्तियां नहीं बल्कि एक ही केन्द्रीय शक्ति कार्यशील है जो विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होती रहती है। दूसरी ओर वे वैज्ञानिक हैं जो आज तक इस गुत्थी को सुलझाने में लगे हुए है कि पृथ्वी पर मानव की उत्पत्ति कैसे हुई? डारविन की यह थ्योरी कि इन्सान बन्दर का विकसित रूप है, आज तक उसे विज्ञान एक असिद्ध दृष्टिकोण ही मानता है। मानव-बुद्धि ने अपनी समस्त शक्तियां खर्च कर दी लेकिन वह न तो आज तक डारविन के सिद्धान्त को सिद्ध कर सकी है और न भविष्य में ऐसा कर पाएगी । इन्सान की अक्ल जिस जगह पहुच कर बेबस हो जाती है, वहां पर उसे महाज्ञानी एवं सर्वसूचित ईश्वर की आवाज़ सुनने की कोशिश करना चाहिए जो क़ुरआन में कह रहा है:

''तो क्या यह लोग क़ुरआन में गौर नहीं करते या दिलों पर ताले लग रहे हैं।' - (क़ु० 47-24)

जब भौतिक सृष्टि विज्ञान, इस बात की खोज ही नहीं कर सका कि मानव की उत्पत्ति कैसे हुई तो सृष्टि रचना की प्रक्रिया का ज्ञान उसे क्यों कर हो सकता है? इस मैदान में भी वैज्ञानिक अंधेरे में ही हाथ-पैर मार रहे हैं।

अंग्रेज़ी पत्रिका 'The Reader's Digest' के अगस्त 1977 के एक लेख का अंश देखिये:

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) **'' हाल के वर्षों में हमारे वैज्ञानिकों के सामने रोंगटे खड़े कर देने वाले अचरजों का एक क्रम चला आ रहा है जिस ने ब्रह्मांड के बारे में हमारे कुछ सम्पूर्ण और केन्द्रीय दृष्टिकोणों को चैलेंज कर दिया है और सृष्टि रचना का एक हैरतअंगेज दृष्टिकोण सामने आ रहा है।''** 16

दृष्टिकोण बनते और बिगड़ते रहेंगे, क्योंकि खोज ही दिशाहीन है। जब तक सही दिशा में प्रयास नहीं होगा, सच्चाई किस तरह सामने आएगी? हदीस और क़ुरआन में सृष्टि रचना से सम्बन्धित ज्ञान की दिशा में मार्ग दर्शन मौजूद हैं और पिछले ग्रन्थों में भी यह ज्ञान विद्यमान है। फ़िलहाल हम सृष्टि रचना के आरम्भ की चर्चा कर रहे हैं क्योंकि इस का सम्बन्ध हमारी पुस्तक के पिछले पृष्ठों और 'हक़ीक़ते अहमदी' से है।

सरवरे कायनात (जगत गुरू) सल्ल० ही सृष्टि का आरम्भ हैं :

सबसे पहले मशीयत के अनवार से नक़्शे रूए मोहम्मद बनाया गया।
फिर उसी नक़्श से मांग कर रौशनी बज़्मे कौनो मकाँ को सजाया गया।।

हदीसों से केवल इतना ही मालूम नहीं होता कि रसूलुल्लाह सल्ल० की नुबूवत ह० आदम अलै० के शरीर में आत्मा डाले जाने से पहले थी, बल्कि यह भी साबित होता है कि ह० अहमद सल्ल० की रचना सम्पूर्ण सृष्टि, मलाइका (फ़रिश्ते-देवतागण), धरती-आकाश व अन्य सजीव रचनाओं और अर्श इलाही (ईश्वर का सिंहासन) से भी पहले हुई थी और फिर 'नूरे अहमद' ही को अल्लाह ने अन्य सभी जीवधारियों की उत्पत्ति का माध्यम बनाया।

नीचे हम ह० मुजद्दिद अल्फ़सानी अहमद सरहन्दी रह० के मकतूबाते रब्बानी से कुछ हदीसे नक़ल कर रहे हैं:

''मशहूर 'हदीसे क़ुदसी' में आया है, मैं एक गुप्त खज़ाना था, मैने पसंद

किया कि मैं पहचाना जाऊँ। फिर मैंने मख़लूक़ (सृष्टि) को पैदा किया ताकि मैं पहचाना जाऊँ।''

''सब से पहले जो चीज़ इस गुप्त ख़ज़ाने से प्रकट हुई वह मुहब्बत थी जो कि जीवधारियों की उत्पत्ति का कारण बनी।'' [17]

इस हदीस को इमाम गि़ज़ाली रह० और ह० मुहीउद्दीन इब्ने अरबी ने भी बयान किया है। [18]

''हदीसे क़ुदसी में हबीबुल्लाह (अल्लाह के प्रिय) सल्ल० की शान में आया है– अगर तू न होता तो मैं आकाश–समूह को पैदा न करता और न अपनी रबूबियत (ईशवरत्व) को प्रकट करता।'' *

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया:

''सब से पहले अल्लाह ने मेरा नूर (ज्योति) पैदा किया।'' #

उपरोक्त तमाम हदीसों से मालूम हुआ कि समस्त सजीव रचनाओं में सब से पहली कृति 'नूरे अहमद सल्ल०' ही थी। यही बौद्ध–मत और हिन्दू–मत से भी सिद्ध हो चुका है, जिस की चर्चा पहले हो चुकी है। हिन्दू धर्म में **आदि सृष्टि** का विषय कितना महत्वपूर्ण है, यह निम्नलिखित उद्धरांशों से स्पष्ट है:

''आदि–सृष्टि विषयक इन बातों को जो मनुष्य जान लेता है, वह आयुष्मान, कीर्तिमान, धनवान, पुत्रवान और विद्वान हो जाता है तथा उसे मानोभिलाषित गति की प्राप्ति होती है।'' [19]

आदि सृष्टि का हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में कितना महत्व है यह जान कर प्रसिद्ध स्कालर डा० चमन लाल गौतम आश्चर्य प्रकट करते हुए कहते है:

---

* मकतूबाते रब्बानी के उक्त खण्ड के प्रस्तुत मकतूब 93 के फ़ुटनोट में दर्ज है कि वेलमी ने मसनदे फ़िरदौस में इब्ने अब्बास रज़ि० से इसी विषय से मिलती-जुलती एक हदीस रिवायत की है। इसी तरह 'मवाहिब' में है और हाकिम ने भी अपनी 'मुस्तदरक' में इस विषय की हदीस का उल्लेख किया है। अल्लामा सुबकी ने शिफ़ाउलसक़ाम मे इसे बनाये रखा। अल्लामा बिलक़ीनी ने अपने फ़तावा में उल्लेख किया। अत: इस हदीस के उत्तम होने मे कोई सन्देह नहीं हैं।

\# मकतूब 93 के फ़ुटनोट मे अंकित है– ' इस हदीस का अल्लामा ज़रकानी ने 'शरहुल मवाहिब में ज़िक्र किया है और 'महाज़रतुल अवाइल' मे है कि यह हदीस उत्तम है और शेख़ मुहय्युद्दीन इब्ने अरबी ने फ़ुतूहात में भी इसे ज़िक्र किया और मुहद्दिस अब्दुर्रज्जाक ने ह० जाबिर रज़ि० के हवाले इस विषय की एक हदीस रिवायत की है।

''...परन्तु उन का न कोई पुराण बनाया गया न मन्दिर बनाए, न उन की उपासना प्रचलित हुई, यही आश्चर्य है। अदिति को तो सर्वोच्च देवी के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहिये था।'' [20]

यहां हमने कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये है। आकाश का पहला ईशदूत या 'नूरे अहमदी' या पहली रचना पर हिन्दू क़ौम ने कितनी दन्तकथाऐं खड़ी की हैं और उन दन्तकथाओं की मूल वास्तविकता क्या है, यह बेहद दिलचस्प और कारामद लेकिन अत्यन्त विस्तृत विषय है जिस की संक्षिप्त चर्चा हम बाद में करेंगे।

क़ुरआन से भी प्रमाणित है :

हदीस व अन्य ग्रन्थों में विस्तार से चर्चा हो, और इतनी महत्वपूर्ण हक़ीक़त, क़ुरआन में मौजूद न हो, भला यह कैसे मुमकिन है? आइए देखें :

'क़ुल इन का–न लिर्रहमानि व–लदुन फ़–अना अव–वलुल आबिदीन
(क़ु० 43–81)

''आप कह दीजिये कि यदि रहमान (कृपाशील अल्लाह) के सन्तान हो तो सर्वप्रथम इबादत करने वाला तो मैं हूं।''

(उर्दू से अनुवाद) **'' इस आयत का अक्सर भाष्यकारों ने यह भावार्थ बताया है कि कल्पना मात्र भी यदि रहमान की सन्तान होती तो सब से पहले मैं (रसूलुल्लाह सल्ल०) उस की इबादत करता। लेकिन चूंकि 'उस' के लिये सन्तान का होना निरर्थक है, इसलिये मेरा उस की (सन्तान की) इबादत करना भी निरर्थक है''।** [21]

आयत की यह व्याख्या सही है–लेकिन इसमें एक कठिनाई यह है कि अल्लाह की सन्तान का होना निरर्थक क्या, है ही नही। रसूल की तरफ़ से यह मान लेना भी कि ''अगर सन्तान होती तो वह उस की इबादत करते'' ज़हन इस से बेहतर कोई व्याख्या ढूँढता है। ऊपर लिखित आयत मे अरबी शब्द 'इन' के माने 'अगर' और 'नही' दोनो होते हैं। शायद इसी लिये इमाम बुख़ारी रह० ने किताबुत्तफ़सीर मे इस आयत का निम्नलिखित अर्थ नक़ल किया है

''कह दीजिये कि रहमान के सन्तान नहीं–सो मैं तो सन्तान मानने से पहला नाराज़ होने वाला हूँ।''

इमाम बुख़ारी रह० ने 'आबिदीन' का अनुवाद 'इबादत करने वाले' के बजाय

'नाराज़ होने वाले' किया है। अरबी शायरी में यह शब्द इन अर्थों में भी इस्तेमाल हुआ है, लेकिन इतने अप्रत्यक्ष स्पष्टीकरण पर भाष्यकारों ने उन की कड़ी आलोचना की है। अतः अल्लामा शौकानी रह० ने तफ़सीर फ़तहुलक़दीर में इस पर आपत्ति की है।

ग़ौर कीजिये कि अगर यह नियम सही है कि हदीसें क़ुरआन की व्याख्या करती हैं तो ऊपर वर्णन की हुई हदीसों की रौशनी में इस आयत का अर्थ कितना स्पष्ट हो जाता है जिससे उपरोक्त दोनों प्रकार की आपत्तियों का निदान हो जाता है और हदीसों की पुष्टि भी होती है। यानी **''आप कह दीजिये कि रहमान के औलाद नहीं है और मैं अव–वलुल आबिदीन यानी सब से पहला आबिद (इबादत करने वाला) हूं।''**

इस सृष्टि की प्रत्येक वस्तु–फ़रिश्ते, ज़मीन, आस्मान, समुद्र, पर्वत, पेड़ पौधे सब अल्लाह की इबादत कर रहे हैं और उस के आबिद (उपासक) हैं। सब से पहली इबादत करने वाली हस्ती वही हो सकती है जो इन सब इबादत करने वालों से पहले पैदा हुई। अल्लाह तआला ने आप (सल्ल०) को आदेश दिया कि आप यह ऐलान कर दें कि रहमान की कोई औलाद नहीं है ; और इस का सबसे बड़ा प्रमाण मैं (रसूल सल्ल०) स्वयं हूँ, क्योंकि मैं 'आदि सृष्टि' हूँ। औलाद होने का दावा करता तो मै करता। जब मै स्वय यह कह रहा हूँ कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ और दूत हूँ तो फिर रहमान के कोई औलाद किस तरह हो सकती है?

इसके अतिरिक्त (क़ुरआन: 4–1) का आप्त–वचन है :

'' हे लोगों! अपने 'रब' से डरो जिसने तुम सबको एक ही नफ़्स (जीव) से पैदा किया और उसी से उस का जोड़ा पैदा किया।''

यहां समस्त मानवों की उत्पत्ति का माध्यम एक नफ़्स को बताया गया है। नफ़्स का अर्थ है –जीव या जान और इससे तात्पर्य शरीर और आत्मा दोनों हैं। जब जीव का तात्पर्य हम शरीर से लेंगे तो इस आयत में ह० आदम अलै० व हव्वा से समस्त मानव जाति की उत्पत्ति का अर्थ समझ में आता है और जब जीव का अभिप्राय आत्मा हो तो पहली आत्मा अर्थात 'नूरे अहमद सल्ल०' से सभी आत्माओं का उत्पन्न होना सिद्ध होगा। (स्पष्ट रहे कि आत्मा का जोड़ा शरीर है । पहले समस्त आत्माओं को एक आत्मा से पैदा किया फिर उन के जोड़े अर्थात शरीर बनाए।)

क़ुरआन शरीफ़ से जब हम मालूम करते हैं कि मानव शरीर किस वस्तु से बनाया गया तो इस विषय पर विभिन्न शब्द जो हमें मिलते हैं, वे यह हैं:–**अत्तीन** (कीचड़), **तुराब** (खाक) **अलक़** (खून की फुटकी), **माएदाफ़िक़** (उछलने वाला पानी), **सल्साल** (खनखनाती हुई और सड़ी हुई मिट्टी), **हमइम् मस्नून** (सना हुआ गारा)

और **नुतफ़ा** (वीर्य)।

अर्थात कुल मिलाकर जब हम देखें तो मानव शरीर अपवित्रताओं का संग्रह है। यह अपवित्रताएं और दोष मनुष्य के खमीर में विद्यमान हैं। मनुष्य शरीर के ढांचे में आने के बाद स्वर्ग में भी शैतान (दानव) से धोखा खा गया। अब देखिये, अल्लाह का उपदेश है कि उसने इन्सान को अपने स्वभाव पर पैदा किया:

"...अल्लाह के उस स्वभाव का अनुसरण करो जिस पर उसने मनुष्य की सृष्टि की है।" – (क़ु० 30–30)

यह पहली आत्मा है जिसे अल्लाह ने अपने गुणों से सुशोभित किया और क़ुरआन में इसे 'रऊफ़ुर्रहीम' (करुणामय और दयाशील) कहा। – (क़ु० 9–128)

इस पवित्रतम आत्मा से सभी मनुष्यों की आत्माएं पैदा हुई। जब शरीर में आत्मा डाली गई तो मानव, सर्वश्रेष्ठ गुणो और हीनतम अपवित्रताओं का मिश्रण बन गया।

क़ुरआन करीम की आयतों में इस ओर इशारा किया गया है:

"निश्चय ही हमने मनुष्य को अच्छी से अच्छी प्रकृति का बनाया। फिर उसे नीचे से नीचे गिराते चले गए।" – (क़ु० 95–45)

अर्थात आत्मा का जन्म पहले हुआ जो ईश्वर की प्रकृति पर है और फिर उस आत्मा का सम्बन्ध शरीर से हुआ जो अपवित्र था। अब इन्सान दोनों प्रकार के लक्षणों का संगम है।

यह स्पष्ट है कि श्रेष्ठतम आकृति पर वही आत्मा पैदा की गई जिसे **'रऊफ़ुर्रहीम'** कहा गया। ऊपर लिखी आयतें भी ह० अहमद सल्ल० की सब से पहली आत्मा होने का सुबूत है। और यह तो 'रब्बुल आलमीन' ने सरवरे कौनैन (सल्ल०) को रहमतुल–लिल–आलमीन (तमाम जहानों के लिये रहमत) के शब्दों का प्रयोग करके ही बता दिया था। ज़ाहिर है आखरी रसूल सल्ल० का मानवजाति सम्बन्ध अगर केवल इस सासारिक जीवन तक ही सीमित होता तो आप सल्ल० सारी सृष्टि के लिये वजहे रहमत (करुणा का माध्यम) कैसे होते?

ईश्वर के कलाम में जगह–जगह ह० मोहम्मद सल्ल० को **'रसूलुम मिन अन्फ़ुसिकुम'** बताया गया है– अगर नफ़्स से अभिप्राय रूह या आत्मा लिया जाए तो इसका अर्थ होगा– 'तुम सब की आत्माओ का रसूल' न कि सिर्फ़ अरबो का रसूल। इस से आप (सल्ल०) की विश्वव्यापकता सिद्ध होती है।

इसके अतिरिक्त क़ुरआन (33–7) का भी अवलोकन करें :

'' और (वह समय भी ज्ञातव्य है) जब हमने तमाम पैग़म्बरों से संकल्प लिया और आप से भी और नूह और इब्राहीम और मूसा और मर्यम के बेटे ईसा से भी और हमने उनसे कड़ा वचन लिया।''

इस आयत पर अगर आप ग़ौर करें तो संकल्प लेने के क्रम में आप (सल्ल०) का नाम पहले लिया गया है।

यह है रसूले अकरम सल्ल० के आदि–सृष्टि होने का स्पष्ट क़ुरआनी वृत्तांत और यह है 'नूरे अहमदी' की वास्तविकता। चूंकि आदि–सृष्टि होने की हैसियत से और 'आत्मा–लोक' में सब आत्माओं का पहला सन्देष्टा होने की हैसियत से आप (सल्ल०) का प्रसंग अन्य समस्त ग्रन्थों में मौजूद था (और आज भी है), इसलिये क़ुरआन ने पिछली उम्मतों पर यह स्पष्ट कर दिया कि यह 'रसूल' किसी अन्य क़ौम का नहीं बल्कि वही रसूल है जो तुम सब का एकमात्र रसूल था आलमे बाला (द्यावा पृथ्वी) में! उस लोक के निवासियों में!!

सन्दर्भ–सूची अध्याय : 6

'Life of Mohammad' Edition, by Sir William Mure, London, P:5

2. – do – P:164

3. 'रूहों से मिलिये ख़्वाबों को समझिये'– अनुवाद 'किताबुर्रूह', लेः हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह०, अनु० मौ० राग़िब रहमानी, प्र०: मकतबा अलफ़लाह, देवबन्द, पृ०: 249

4. – – उपरोक्त – पृ०: 253

5. – – उपरोक्त – – पृ०: 249

6. ह० मुजद्दिद अल्फ़सानी रह०–'मक्तूबाते रब्बानी', उर्दू अनुवाद, दफ़्तर सोम (3), भाग: 2, मक्तूब: 94

7. 'सीरते मुहम्मदिया'–उर्दू अनु०–'मवाहिबुल्लदुनिया' 1342 हिजी, प्र० अफ़ज़लुल मुताला–हैदराबाद, पृ०: 170

8. 'Gospels of Buddha' By: Carus, Page: 217

'गौतम बुद्ध धर्म और दर्शन'–ले०: डा० राधा कृष्णन, पृ०: 150

10. 'Recovery of Faith'-Dr. Radha Krishnan, Page : 154

11. 'तिरमिजी', सं०: 'मिश्कात', अ०: सय्यदुल मुरसलीन फ़स्ल सानी

12. बेहक़ी, अहमद, हाकिम, सं०: 'सीरते मुहम्मदिया' (उर्दू अनुवाद मवाहिबुल लदुन्निय) 1342 हिज्री, पृ०: 7

इमाम अहमद, सं० 'सीरते मुहम्मदिया', पृ०: 8

– – उपरोक्त – –

तफ़सीर 'फ़तहुल क़दीर'–खं० 1, पृ० 52

16. 'New visions of the Universe' by Era Volfert? Reader's Digest' August 1977, Page : 29-33

17. 'मक्तूबाते रब्बानी' (उर्दू अनुवाद), दफ़्तरः 3, भागः 2, मक्तूब नं०: 122, पृ०: 16०, प्र०: मदीना पब्लिशिंग कम्पनी–बन्दर रोड, कराची

18. 'क़ुरआन और तसव्वुफ़' ले०: डा० मीर वली उद्दीन–विभागाध्यक्ष दर्शन शास्त्र विभाग–जामिया उस्मानिया, प्र०: नदवतुल मुसन्निफ़ीन–दिल्ली–1945

19. 'हरिवंश पुराण' भाग: 1, ले०: पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, श्लोक: 54, पृ०: 59

20. 'विष्णु रहस्य' ले०: डा० चमन लाल गौतम, पृ०: 276

21. 'लुग़ातुल क़ुरआन'–मौ० अब्दुर्रशीद नोमानी, खं०: 4, पृ०: 156

-----❖❖❖-----

क़ुरआन | शाह फ़ज़लुर्रहमान गंज मुरादाबादी

सारा संसार मिटनहार है। और तेरा पालनहार ज्योत का दाता सदा जीवनहार है। फिर तुम ऐ मनई परी अपने पालनहार की कौन सी दया से फिराते हो। सारा संसार उसी के द्वारे का भिखारी है, वह निस दिन निरंकार है। फिर तुम ऐ मनई परी अपने पालनहार की कौन सी दया से सर फिराते हो। (क़ु: सूरए रहमान)

गर हर्सी मौत की हसरत न निकाली जाए
ज़िन्दगी कौन सी फ़ेहरिस्त में डाली जाए।

● शम्स नवेद उस्मानी

अध्याय : 7

वेदों में अग्नि–रहस्य

ऋग्वेद का पहला मन्त्र अग्नि के गुणगान से आरम्भ होता है :

***अग्निमीले* "सब उपासनाएं अग्नि के लिये ही है"** (ऋग्वेद 1–1–1)। हिन्दू धर्म के दोनों बड़े संप्रदायों, आर्यसमाज व सनातन धर्म के विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि 'अग्नि' शब्द दरअस्ल 'अग्रणी' है जिस का अर्थ है सर्वप्रथम, सब से आगे या जिस के आगे कोई न हो। उपर्युक्त मन्त्र को जब भी कोई मुसलमान देखेगा तो यही कहेगा कि 'अग्नि' वेद में अल्लाह का नाम है। यदि आप वेदों का आगे अध्ययन करें तो अग्नि की वास्तविकता उलझती जाएगी। कहीं अग्नि मानव प्रतीत होता है और कहीं ईश्वर। मिसाल के तौर पर :

अग्निं दूतं वृणीमहे' – अर्थात हम अग्नि को दूत चुनते हैं। (ऋ०: 1–12–1) दूसरा मन्त्र देखिये: ***'त्वमग्ने प्रयत दक्षिणं नरं'*** अर्थात अग्नि वह मानव है जो उपासना करने वालों से प्रसन्न होता है। (ऋ०: 1–31–15)

'अहमदी तत्व' से परिचित लोगों को यहां कोई कठिनाई नहीं होगी। ईश्वर ने **'आदि–सृष्टि'** (तख़लीक़े अव्वल) को अपने सिफ़ाती (सगुण) नाम दिये थे। 'रऊफ़' और 'रहीम' अल्लाह के अपने नाम हैं। क़ुरआन में रऊफ़ और रहीम अपने उस प्रिय बन्दे का नाम भी बताया जिस को उसने आत्मा–लोक में सबसे पहले बनाया था। (क़ु०: 9–128)

अल्लाह ने अपने सगुण नामों से आदि–सृष्टि को भी सुशोभित किया। यह वास्तविकता समस्त पवित्र ग्रन्थों में विद्यमान थी और यही विकृत होकर विश्व के धर्मों में बहुदेववाद एवं दन्तकथाओं की आधारशिला बन गई। यहीं से ईश्वर के नामों से संबोधित की जाने वाली 'आदि–सृष्टि' का रहस्य लुप्त होकर अवतारवाद की यह कल्पना आई कि ईश्वर स्वयं मानव की देह में पृथ्वी पर आता है या अवतार लेता है। इसी वास्तविकता के दुर्बोध होने के कारण यहूदियों ने ह० उज़ैर अलै० को और

ईसाइयों ने ह० ईसा अलै० को ख़ुदा का बेटा बनाया और ह० मोहम्मद सल्ल० को बन्दगी (ईश्वर की दासता) से ऊंचे पद पर उठाने की कोशिश की गई।

अग्रणी या सर्वप्रथम होना, ईश्वर का गुण है और आदि–सृष्टि होने की हैसियत से यह पहले उपासक का गुण भी ठहराया गया। इस रहस्य के उलझने की संभावना ईश्वर से छिपी हुई नहीं थी और उसने जगह–जगह स्वयं वेदों में 'अग्नि–रहस्य' की खोज करने पर अत्यन्त बल दिया है। 'उस' ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि इस रहस्य को ***'मेधावी–जन'*** अर्थात उच्च कोटि के विद्वान तलाश करेंगे (ऋग्वेद 10–71–3)। वेद ने ही यह भविष्यवाणी की कि 'मन्थन' या शोध कार्य से अग्नि का रहस्य खुलेगा। इसी पर तुम्हारा कल्याण निर्भर है और इस रहस्योद्घाटन के बाद तुम विश्व का नेतृत्व करोगे– (ऋ०: 3–29–5)। यह भी संकेत दिया कि ***'मरुतगण'*** यानी रेगिस्तानी उम्मत के लोग (मुसलमान) इस रहस्य की खोज करेंगे– (ऋ०: 5–3–3); और यह भी भविष्यवाणी कर दी कि सब से बाद वाली मशाल (क़ुरआन) को सब से पहली मशाल (वेद) के ऊपर रखना पड़ेगा (यानी क़ुरआन की ज्योति में वेद का अध्ययन किया जाएगा) तभी 'अग्नि' का रहस्य खुलेगा–(ऋ०: 3–29–3)।

'अहमदी तत्व' के प्रत्येक पवित्र ग्रन्थ में विस्तार के साथ वर्णित होने का उद्देश्य यह था कि जब क़ौमें अपनी तरफ़ भेजे गए रसूलों को अपने लिये आरक्षित कर लेंगी और दूसरे रसूलों का इनकार करेंगी, उस समय अखिल विश्व को इस एकता पर इकट्ठा किया जाएगा कि अन्तिम सन्देष्टा जिस को यह नकार रहे हैं, उस को सब धार्मिक क़ौमें बाद मे आने वाले रसूल की हैसियत से नहीं बल्कि सब से पहले रसूल (अहमद सल्ल०) के रूप में जानती थीं। आवश्यकता इस बात की है कि वाग्जाल बनी हुई अहमदी वास्तविकता को उन के पवित्र ग्रन्थों में से क़ुरआन के प्रकाश में धूल और भूल से शुद्ध करके पूरे विश्व को एक रसूल की वास्तविकता पर इकट्ठा किया जाए।

हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में 'अग्नि' किसे कहा गया है, यह समझे बिना न तो इन ग्रन्थों में तौहीद (एक–ईश्वर वाद) की धारणा स्पष्ट हो सकती है और न रिसालत (ईशदूत पद) की; क्योंकि अग्नि शब्द कहीं ईश्वर के लिये प्रयुक्त हुआ है और कहीं ह० अहमद सल्ल० के लिये। इसीलिये इस की व्याख्या को तौहीद, रिसालत और आख़िरत (पारलौकिक जीवन) के अध्यायों से पूर्व स्पष्ट कर देना आवश्यक है।

-----❖❖❖-----

इस्लाम और हिन्दू धर्म नामों की समानता

अन्य शोधकर्ता क्या कहते हैं?

पिछले पृष्ठों में हमने जगह–जगह यह बताया है कि वैदिक धर्म में आस्मानी कलाम (देववाणी) मौजूद होने के कुछ और प्रमाण हम प्रस्तुत करेंगे, लेकिन इससे पूर्व हम कुछ अवतरण प्रस्तुत कर रहे हैं जिन से यह स्पष्ट हो सके कि मुसलमानों के अग्रगामी शोधकर्ता हिन्दू क़ौम और धर्म के बारे में क्या दृष्टिकोण रखते थे।

(उर्दू से अनुवाद) **"इस से इन्कार नहीं कि हिन्दू धर्म में एकेश्वरवाद भी है, लेकिन यह धर्म इतना प्राचीन हो चुका है कि काल के हेरफेर से इस में शुद्ध एक–ईश्वर–वाद बाक़ी नहीं रहा।"** [1]

(उर्दू से अनुवाद) **अलबेरुनी भी जो हिन्दुओं के धर्मों का सब से बड़ा ज्ञाता है, हिन्दू विशिष्ट जन को तौहीदपरस्त (एक–ईश्वर–वादी) और जनसाधारण को मुशरिक (बहुदेववादी) मानता है। किताबुल हिन्द, ग्यारहवें अध्याय में लिखा है :**

मूर्ति–पूजा, जनमानस का धर्म है, विशिष्ट जन का दामन ईश्वर के अतिरिक्त अन्य शक्तियों की उपासना से कलंकित नहीं है। मुसलमान प्रतिष्ठित जन में मिर्ज़ा मज़हर जाने जानां रह०, हिन्दुओं की मूर्ति पूजा की तावील (बनावटी दलील) को स्वीकार करते थे और उन को मूल रूप से 'एकेश्वरवादी' मानते थे।" [2]

अन्त में हम शाह वलीउल्लाह रह० का एक लेख्य प्रस्तुत कर रहे हैं:

"पवित्र क़ुरआन की आयत *(व इम्मिन उम–मतिन इल्ला ख़ला फ़ीहा*

***नज़ीर)* का हेतु यह है कि हर क़ौम में ख़ुदा से डराने वाले गुज़रे हैं। ...प्रायः हिन्दुओं के अवतार सत्य का प्रतीक थे, लेकिन हिन्दू जनसाधारण अपनी निराधार परिकल्पनाओं के कारण ज़ाहिर और मज़हर (मूल और स्थूल प्रतीक) में भेद नहीं कर सके और सब को पूज्य बनाकर भटकाव से ग्रस्त हो गए। यही हाल मुसलमानों के बहुत से ताज़िया बनाने वालों, क़ब्रों के मुजाविरों, जलालियों और मदारियों का है।"** [3]

हिन्दू मत का इस्लामी नाम :

अब आइये सब से पहले हिन्दू धर्म के नाम पर विचार करें। वैदिक धर्म का नाम **'हिन्दू–मत'** नहीं है बल्कि इस का अस्ल नाम **'सनातन धर्म'** और **'शाश्वत् धर्म'** है। सनातन के माने हैं– 'सदा से सीधा चला आया हुआ और प्राचीन' तथा शाश्वत का अर्थ है–'आकाश से पृथ्वी तक सीधा चला आया हुआ।' **'सनातन धर्म'** और **'शाश्वत धर्म'––*दीने क़य्यिमः'*** के पर्यायवाची शब्द हैं। गीता में इस के लिये ***'स्वधर्म'*** तथा ***'स्वभाव नियत कर्म'*** (गीताः 18–45, 47) के शब्द इस्तेमाल हुए हैं जिस का अर्थ है, प्रकृति का सिखाया हुआ धर्म न कि माता पिता से उत्तराधिकार में मिला हुआ। क़ुरआन, इस्लाम को ***'अद्दीनः इन्दल्लाह' 'दीने क़य्यिम'*** और ***'दीने फ़ितरत'*** बताता है। हमारा अक़ीदा है कि हर नबी ने अपनी क़ौम को इस्लाम धर्म पेश किया था। ह० आदम अलै० व ह० नूह अलै० भी इस्लाम को ही स्थापित करने आए थे। समय बीतने के साथ–साथ उनकी शिक्षाएं विकृत हो गईं। दुनिया के अन्य धर्मावलम्बियों ने अपने–अपने धर्मों के विभिन्न नाम रख लिये लेकिन इस प्राचीनतम जाति ने इस्लाम धर्म के सगुण नामों के रूप में मौलिक नाम को जीवित रखा है।

'अल्लाह' नाम सब धर्मों में है:

नामों के अन्तर तथा भेदभाव से अल्लाह का नाम भी नहीं बचा है; लेकिन इस पवित्र नाम की समता प्रत्येक धर्म में बाक़ी है। 'ख़ुदाए वाहिद' को विभिन्न क़ौमों और धर्मों में अल्लाह, भगवान, ईश्वर, ख़ुदा, गाड आदि नामों से पुकारा जाता है। इस पर किसी को असहमति नहीं है कि एक ख़ुदा को किसी भी नाम से संबोधित किया जा सकता है। भाषाओं की विविधता पर कोई आपत्ति नहीं है। क़ुरआन हमें बताता है कि अल्लाह के बहुत से अच्छे–अच्छे नाम हैं लेकिन व्यक्तिगत नाम 'अल्लाह' ही है। अल्लाह शब्द जो 'अल+इलाह' से मिल कर बना है, हमें मामूली स्वर परिवर्तनों के साथ आज भी लगभग हर धर्म में मिलता है।

(उर्दू से अनुवाद) **"ह० मौ० उबैदुल्लाह सिन्धी रह० की रिसर्च यह है कि तिब्बत का केन्द्रीय शहर 'लासा' वास्तव में 'लाह सा' है यानी बैतुल्लाह (अल्लाह का घर)। यह शहर आर्य जातियों की धार्मिक सभ्यता का प्राचीन केन्द्र है। फ़रमाते हैं– हमने जब यह विचार मौ० हमीदुद्दीन फ़राही रह० के सामने प्रकट किया तो फ़रमाने लगे कि 'ख़ुदा तआला' के नाम का यह मूल तत्व धर्म की दुनिया का प्राचीनतम पारिभाषिक शब्द मालूम होता है जो समस्त धर्मों में थोड़े अन्तर से प्रचलित है।"** [4]

अतः ***ईल, ईल्लिया, इलोह, इलोहीम, इलाह, लाह, लाहूत*** आदि सब एक ही मूल तत्व के शब्द हैं जो माबूद (पूज्य) के अर्थ में विभिन्न धर्मों में हमें मिलते हैं। मौ० आज़ाद ने भी इस बात का अनुमोदन किया है :

(उर्दू से अनुवाद) **"इन तमाम क़ौमों मे एक 'अदृश्य ख़ुदा' के अस्तित्व की मान्यता विद्यमान थी और वह 'अल–इलाह' या अल्लाह के नाम से पुकारा जाता था। यही इलाह है जिसने कहीं 'ईल' का रूप धारण किया, कहीं 'इलोह' और कहीं 'इलाहिया' का।"** [5]

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) **"क़ुरआन सब से महान अस्तित्व को 'अल्लाह' के नाम से नामांकित करता है। ऋग्वेद में ईश्वर के लिये जिन नामों का प्रयोग हुआ है, उनमें से एक 'इला' है जिस का मूल तत्व 'इल' या 'ईल' है और जिस का अर्थ है स्तुति करना, पूजा करना। लगभग छः हजार वर्ष पूर्व सुमेरिया की भाषा में 'ईल' शब्द ख़ुदा के लिये था।**

सुमेरियन नगर 'बाबिलोन' शब्द दरअस्ल 'बाबेईल' था अर्थात ख़ुदा का दरवाज़ा। यही वह शब्द था जिस के माध्यम से उस के किसी न किसी रूप में इब्रानी, सुरयानी तथा कलदानी भाषाओं में ख़ुदा का अस्तित्व समझा जाता था। सामान्य रूप इल्लिया या इलोह था। यह बात विदित है कि ऋग्वेद के युग से वर्तमान युग तक 'अल्लाह' शब्द किसी न किसी रूप में ख़ुदा के लिये इस्तेमाल होता आया है" [6]

आर्य समाजी विद्वान श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय लिखते है:

"हम नहीं जानते कि ह० आदम (अलै०) जिन को मुलसमान लोग सब से पहला पुरुष मानते हैं किस भाषा को बोलते थे? और ईश्वर के लिये किस नाम का प्रयोग करते थे? हर पूजनीय वस्तु का नाम 'इलाह' है और इलाह में 'अल' लगा कर 'अल्लाह' एक नियत वस्तु के लिये विशिष्ट हो गया है।

(अल्लाह का अर्थ है विशेष पूजनीय वस्तु) ऋग्वेद में जो लाखों वर्ष प्राचीन पुस्तक मानी जाती है, आरम्भ में ही ईश्वर के लिये 'ईल्य' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'ईल्य' का धात्वर्थ है 'पूजनीय'। वेद में यह शब्द ईश्वर के लिये विशेषतया प्रयुक्त हुआ है। वेद मन्त्र (ऋ०: 1–1–2) का स्पष्ट अर्थ यह है कि हे ईश्वर (अल्लाह)! तू पूर्व और नूतन, छोटे और बड़े सभी के लिये पूजनीय है। तुझे केवल विद्वान ही समझ सकते है।" [7]

रहमान और रहीम भी...

अल्लाह के इस्मे ज़ात (व्यक्तिगत नाम) की समानता के बाद इस के पहले इस्मे सिफ़त (सगुण नाम)– ***अर्रहमान*** (अल+रहमान, अर्थात वह रहमान) को देखिये। ब्राह्मणवाद ने ईसाइयों के 'त्रिगुट' के समान ईश्वर के अस्तित्व को तीन टुकड़ों में बांट दिया– ब्रह्मा (जन्म दे , वाला ईश्वर), विष्णु (पालने वाला ईश्वर) और शिव (मारने वाला ईश्वर)। यद्यपि वेदों में इस बात की शिक्षा दी गई है कि एक ही ईश्वर पैदा करता, पालन–पोषण करता तथा मृत्यु देता है। ईश्वर की इन तीनों शक्तियों का जब नाम लिया जाता है तो सर्वप्रथम 'ब्रह्मा' ही का नाम आता है। 'ब्रह्मा' या 'ब्रह्म' शब्द पर ज़रा गौर करें। सस्कृत भाषा का यह नियम है कि शब्द के अन्त में प्रायः एक बिन्दी (●) ऊपर लगाई जाती है जो 'म' और 'न' का स्वर देती है– जैसे अंग्रेज़ी के नामों के आगे 'A' लगा देते है। अशोक को 'अशोका' या राम को 'रामा' बोलते हैं संस्कृत में ब्रह्मा के ऊपर बिन्दी लगाने से 'ब्रह्मान' का स्वर निकलता है। इस शब्द को संस्कृत में जब लिखा जाएगा तो यह **'ब्रह्मा' 'ब्रह्मान'** या **'वह रहमान'** या **'अल रहमान'** के समकक्ष होगा। रहम (करुणा) के गुण के प्रदर्शन का आरम्भ पैदा करने से ही होता है। इसलिये पैदा करने वाले ख़ुदा को हिन्दू धर्म में ब्रहमान (अर्रहमान) तथा ब्राहमीम (अर्रहीम) पुकारा जाता है (और जैसे रहमान इस्लाम में ख़ुदा का व्यक्तिगत नाम नहीं है वैसे ही हिन्दू मत में भी ब्रहमान सगुण या सिफ़ाती नाम है।

यहां यह भी याद करते चलें कि अरबवासी ह० मोहम्मद सल्ल० के शुभआगमन से पूर्व 'रहमान' नाम से बहुत चिड़ते थे और उसे दूसरे धर्मो का ख़ुदा समझते थे। अन्य धर्मो में से हिन्दू धर्म में तो यह शब्द 'ख़ुदा' के लिये प्रयुक्त होता ही था, ईसाइयों के यहां भी ख़ुदा के लिये 'रहमान' शब्द मौजूद था। इस बात की पुष्टि के लिए यह प्रमाण प्रस्तुत है–यमन में ईसाइयों के शिलालेखों पर यह शब्द अंकित हैं :

(उर्दू से अनुवाद) **"रहमान, मसीह और रुहुलक़ुदुस (पवित्र आत्मा) की क़ुदरत (माया) व मेहरबानी से इस यादगारी पत्थर पर 'अबरहा' ने कतबा (शिलालेख)**

लिखा जो कि हब्श के राजा..... का नाइबुल हुकूमत (उपशासक) है।'' 8

इस प्रकार हम ने देखा कि धर्म का नाम दोनों जगह एक ही है और धर्म पर आचरण करने का जिस हस्ती ने आदेश दिया, उस का नाम भी मूलतः दोनों जगह एक ही है। भाषा, शैली और सब से बढ़ कर दृष्टिकोण में अन्तर आ गया है।

आइये अब अगले अध्याय में देखें कि ईश्वर की इस वाणी में अज्ञात काल की धूल और भूल के बावजूद मौलिक शिक्षाएं आज भी किस तरह विद्यमान हैं जो हिन्दू क़ौम के वेदों से पूर्णरुपेण दूर हो जाने की वजह से उन की निगाहों से ओझल हैं।

सन्दर्भ–सूची अध्याय : 8

1. पत्रिका 'मआरिफ़' न:3, खंo : 95, 'इस्लाम में दसूरे मज़ाहिब और अहले मज़ाहिब की हैसियत'–लेo : मौo शाह मुईनुद्दीन नदवी, पृo : 178
2. उपरोक्त, पृo: 180–181
3. 'फ़तावए अज़ीज़ी', खंo : 1, पृo: 132–134
4. मौo नूरूल हक़ अलवी, फ़ुटनोट अलफ़ुरक़ान–'शाह वली उल्लाह नम्बर' 1941, पृo:332
5. 'तरजुमानुल क़ुरआन', खंo : 1, पृo : 247, प्रo: साहित्य अकादमी–दिल्ली
6. 'गीता और क़ुरआन', लेo: पंडित सुन्दर लाल, अंग्रेज़ी अनुवाद : सय्यद असदुल्लाह, पृo: 5, प्रo: इन्डो मिडिल ईस्ट कल्चरल स्टडीज़, हैदराबाद दकन
7. 'इस्लाम के दीपक', पृo : 12–13
8. 'सीरतुन्नबी सल्लo', भाग : 1, लेo : अल्लामा शिब्ली, संपादन : सय्यद सुलेमान नदवी रहo, पृo : 111

-----❖❖❖-----

"आप कह दीजिये कि अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान कह कर। जिस नाम से भी पुकारो, उसके लिये सब अच्छे ही नाम हैं।"

–(क़ुo:17–110)

अध्याय : 9

वैदिक धर्म में तौहीद (एक–ईश्वर–वाद)

हिन्दू धर्म में एक–ईश्वर–वाद की धारणा:

तौहीद के अक़ीदे को वेदों में देखने से पहले कुछ जाने माने लेखकों के विचार इस विषय में देख लीजिये :

"ऋषियों ने मूर्ति पूजा की प्रथा चलाई ताकि इस मूर्ति को माध्यम बना कर वे उस अनन्त को साकार रूप में अपने सामने देख सकें।" 1

"केवल एक सर्वशक्तिमान ईश्वर को अपना स्वामी मानते हुए स्वार्थ और अहंकार छोड़ कर निष्कपटता की भावना और सच्चे प्रेम के साथ निरन्तर चिन्तन करना ही ऐसी उपासना है जो दुराचार से पवित्र है।" 2

''ज़रा सोचो तो प्रेम करने वाली पत्नी का एक ही पति होता है। इसलिए जो भक्त ईमान रखता है उसका एक ही ख़ुदा है। दूसरे ख़ुदाओं का साथ कदापि न ढूंढो। दूसरे ख़ुदाओं का नाम लेना व्यभिचार है।'' 3

अब देखिये हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों के सैकड़ों प्रमाणों में से कुछ एक जिन के आधार पर हम यह विश्वास के साथ कह सकते है कि अस्ल हिन्दू धर्म में एक ख़ुदा की धारणा बिल्कुल उसी अन्दाज़ में है जैसी कि इस्लाम ने प्रस्तुत की है।

'उत्तर मीमांसा दर्शन' में वेदान्त का सार यह है :

एकम् ब्रह्म द्वितीय नास्ते: नेह ना नास्ते किंचन (एक ही ईश्वर है–दूसरा नही है–नही है–नही है– अंश मात्र भी नही है।) 4

हिन्दू धर्म में ही ख़ुदा के लिये कहा गया है– *एकम् एवम् अद्वितीयम्* (एक

ही है, दूसरे के साझे के बिना)

"वह समस्त जीवित तथा निर्जीव जगत का बड़े वैभव के साथ अकेला शासक है। वह जो मनुष्यों तथा पशुओं का प्रभु है (उसे छोड़ कर) हम किस ईश्वर की स्तुति करते हैं और भेंट चढ़ाते हैं?" (ऋ० 10-121-3)

"उसी से आकाश मण्डल मे दृढ़ता तथा पृथ्वी में स्थायित्व है। उसी की वजह से उजालों का साम्राज्य है। और आकाश महराब (के रूप में) टिका हुआ है। अन्तरिक्ष के क्षेत्रों को फैलाने वाला भी वही है। (उसे छोड़कर) हम किस ईश्वर की स्तुति करते हैं और भेंटें चढ़ाते हैं?" – (ऋ० 10-121-5)

"उस अस्तित्व की कोई मूर्ति या तस्वीर नहीं है। उस का नाम ही साक्षात प्रशंसा है।" – (यजु० 32-3)

"जो लोग अस्तित्वहीन देवी-देवताओं की उपासना करते हैं, वे (अज्ञानता के) अन्धा कर देने वाले घोर अन्धाकर में डूब जाते है।" –(यजु० 40-9)

"ईश्वर के अतिरिक्त किसी को मत पूजो।" –(ऋ० 8-1-1)

"वह एक ही है, उसी की उपासना करो।" -(ऋ० 6-45-16)

"वह एक ही सर्वश्रेष्ठ पूजा और दासता किये जाने के योग्य है प्रभु है।" –(अथर्व० 2-2-2)

"ईश्वर ही अग्रणी है तथा समस्त जीवधारियों का अकेला स्वामी है। वह धरती और आकाश मण्डल का मालिक है। उसे छोड़कर, तुम कौन से ख़ुदा को पूज रहे हो?" –(ऋ० 10-121-1)

हिन्दू धर्म में जितने देवताओ के नाम लिये जाते है, वे वास्तव मे एक ही ख़ुदा के सगुण नाम है। उसी का नाम 'ब्रह्मा' है, उसी का नाम 'विष्णु' वही 'इन्द्र' कहलाया और वही 'सरस्वती' है। इस का प्रमाण वेदो से ही मिलता है

"हे अग्नि (ईश्वर)! तुम ही सदाचारियों की मनोकामनाए पूरी करने वाले इन्द्र हो। तुम ही उपासना के योग्य हो। तुम ही अनेक लोगो के प्रशसनीय विष्णु हो। तुम ब्रह्मा और ब्रह्मनस्पति हो।" (ऋ० 2-1-3)

"हे अग्नि (ईश्वर)! तुम वचन पूरा करने वाले राजा वरुण हो। तुम प्रशसा के योग्य मित्र हो। तुम वास्तविक नायक अरयम हो।" (ऋ० 2-1-4)

"हे अग्नि (ईश्वर)! तुम रुद्र हो। तुम पुषा हो। दिव्य लोक के संरक्षक शंकर हो। तुम रेगिस्तानी पंथ की शक्ति का माध्यम हो। तुम अन्न देने वाले साक्षात् ज्योति, वायु के समान हर जगह विद्यमान, लाभ प्रदान करने वाले और उपासना करने वाले के संरक्षक हो।" –(ऋ० 2-1-7)

"हे अग्नि (ईश्वर)! तुम अदिति (सब से अव्वल) हो, तुम भारती (सज्जनों का कोष) हो, तुम इड़ा हो और तुम ही सरस्वती हो।" –(ऋ० 2-1-11)

वेदों के इन स्पष्ट प्रमाणों के बाद अनेक नामों से पूजे जाने वाले विभिन्न देवी-देवताओं की कल्पना निराधार हो जाती है। यह पहले ही स्पष्ट हो चुका है कि उस एक ख़ुदा की मूर्ति नहीं बन सकती। अब देखिये कि वेद इस का भी स्पष्ट उल्लेख करते हैं कि ईश्वर के समस्त सगुण नामों से विद्वान लोग एक ही ईश्वर को पुकारते हैं:

"(इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, गुरु, यम, वायु, मातरिश्वा आदि) एक ही सत्ता के विभिन्न नाम हैं और मेघावी जन (बुद्धिमान व ज्ञानी लोग) ने ईश्वर को (गुणों के आधार पर) अलग-अलग नामों से संबोधित किया है।" –(ऋ० 10-114-5)

उपर्युक्त मन्त्र क़ुरआन के इस विषय के समान है:

"एक अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्यनीय) नहीं उस के बहुत से अच्छे-अच्छे नाम है।" –(क़ु० 20-8)

वेद बिल्कुल क़ुरआन की शैली में आह्वान करते है कि जिन माबूदों को तुम पुकार रहे हो, यह तो स्वयं अपने एक ख़ुदा की इबादत कर रहे हैं।

"ईश्वर ही आत्मिक एवं शारीरिक बल प्रदान करने वाला है और उसी की उपासना समस्त देवता किया करते हैं। उस ईश्वर की प्रसन्नता सदा का जीवन प्रदान करने वाली है और मृत्यु का अन्त करने वाली है। उस ईश्वर को छोड़कर तुम किस देवता को पूज रहे हो?" –(ऋ० 10-121-2)

अब इसी विषय को क़ुरआन में देखिये :

"जिन को यह पुकारते है वे तो स्वयं अपने 'रब' तक पहुंचने का साधन ढूँढते हैं कि कौन उन में ज्यादा से ज्याद क़रीब हो जाए, और वे उस की दयालुता की आशा रखते हैं और उस की यातना (अज़ाब) से डरते है! वास्तव में तेरे 'रब' की यातना डरने ही की चीज़ है।" –(क़ु० 17-57)

एक ख़ुदा की इतनी पावन और स्पष्ट धारणा होते हुए भी इतने बहुत से ख़ुदा क्यों बना लिये गए, इस के निम्नलिखित कारण समझ में आते हैं :

❑ **वेद का लिखित रूप में मौजूद न होना:**– वेदों के अत्यन्त प्राचीन होने तथा केवल स्मरण शक्ति में सुरक्षित होने की वजह से जनमानस के लिये वेदों मे विद्यमान देववाणी और बाद में मिश्रित मानववाणी में भेद करना सम्भव न था। इसलिये हज़ारों साल से हर सुनी सुनाई बात व हर समझ में न आने वाली बात पर बनी हुई दन्तकथा को 'धर्म' समझ लिया गया। यद्यपि मात्र दो सौ वर्ष पूर्व लिखे गए वेदों की सुरक्षा का अब पूरा ध्यान रखा जा रहा है; लेकिन संकलित करने वालों ने वेद के नाम पर जो कुछ इकट्ठा किया है वह सब का सब अस्ल वेद ही है, इस का दावा वे स्वयं भी नहीं करते। वेदों के संग्रह कर्ताओं तथा भाष्यकारों की विभिन्न टिप्पणियां अध्याय (5) में हम देख चुके हैं। वेदों में की गई मिलावट को स्वीकार करते हुए गांधी जी लिखते हैं :

"शास्त्रों के वे अर्थ जो सत्य के विरोधी हैं, सही नहीं हो सकते।"[5]

दूसरी जगह गांधी जी लिखते हैं :

"प्रश्न उठता है कि उन स्मृतियों का क्या किया जाए, जिन में ऐसे श्लोक हैं जो उसी में दिये हुए अन्य श्लोकों के विपरीत और नैतिक भावना के विरूद्ध हैं... मैं इन पृष्ठों में अनेक बार लिख चुका हूं कि धर्मग्रन्थों के नाम पर जो कुछ छपता है, उस में सभी को ईश्वर की वाणी अथवा देववाणी के रूप में नहीं लेना चाहिये।"[6]

❑ **गलत अनुवाद या पुनराख्यान**:-वेदों का अधिकांश भाग चूंकि अलंकृत भाषा में है इस लिये मानव बुद्धि केवल अपने ज्ञान के बल पर उन का शुद्ध अनुवाद करने में असमर्थ है। ईश्वर की अन्तिम, प्रमाणित और शुद्ध वाणी 'कुरआन' की ज्योति मे वेद का शुद्ध अनुवाद मुमकिन है। इस का विवरण पिछले पृष्ठो मे दिया जा चुका है।

❑ **हिन्दू जनमानस की वेदों से दूरी**:– विद्वानो ने आम लोगो को वेदों से अनभिज्ञ कर दिया है। यदि जनमानस का वेदो से सपर्क बना रहता तो अनेक भटकाव दूर हो सकते थे । मसलन बहुत से देवी-देवताओ की पूजा को ही लीजिये। वेद मे आया है कि एक ईश्वर को अनेक नामो से सम्बोधित किया गया है। यह तथ्य न जानने के कारण हिन्दुओ मे इन सब नामो के अलग-अलग देवता मान लिये गए।

इस प्रकार हम देखते है कि तौहीद या एक-ईश्वर-वाद का आधारभूत स्वीकृत मत बिल्कुल क़ुरआन की वर्णनशैली मे सनातन धर्म मे विद्यमान है।

सन्दर्भ-सूची अध्याय : 9

1. 'विष्णु रहस्य'–डा० चमन लाल गौतम, पृ०:149
2. भाष्य गीता, पृ०: 326, प्र०: 'कल्याण'–गोरखपुर
3. 'इस्लाम का हिन्दू तहज़ीब पर असर' ले०: डा० ताराचन्द, उर्दू अनु०: चौधरी रहम अली अल हाशमी, पृ०: 153-54 प्र०: आज़ाद किताब घर, देहली
4. 'इस्लाम दर्शन', ले०: डा० गणेश दत्त सारस्वत, प्रोफ़ेसर हिन्दी विभाग, आर.एम.पी. पोस्ट ग्रेजुएट कालिज सीतापुर, पृ०:19
5. 'अहिंसा और सत्य' संपादक: श्री राम नाथ सुमन, पृ०: 31
6. स्त्रियों की समस्याएं, ले०: महात्मा गांधी, 'हरिजन' सम्पादक: रामनाथ सुमन, प्र०: साधना सदन, इलाहाबाद

-----❖❖❖-----

क़ुरआन

"हे हमारे रब! हम से भूल-चूक में जो ग़लतियां हो जाएं, उन पर गिरफ़्त न कर"

–(क़ु0: 1-126)

वेद

हे देव (रब)! हम से जो पाप अन्जाने में होते हैं, उनकी वजह से आप हमें मत त्याग दीजिए। –(ऋ0: 7-89-5)

वैदिक धर्म और रिसालत (ईशदूत-पद)

अग्नि के समान ब्रह्मा के साथ भी यही हुआ ।'ब्रह्मा' अर्थात 'रहमान' वैदिक धर्म में 'जन्म देने वाले ख़ुदा' के लिये भी इस्तेमाल हुआ है, अहमद सल्ल० की आत्मा के लिये भी और आदि मानव-ह० आदम अलै० के लिये भी । तीनों जगह पर सही अभिप्राय समझने के बजाय पैगम्बर ही देवता बन गए और 'सन्देष्टा' के स्थान पर 'अवतार' की परिकल्पना आ गई । मुसलमान अपने ज्ञान के प्रकाश में हिन्दुओं में विकारस्वरूप आए हुए बहुदेववाद के विचारों को संशोधित कर सकते थे लेकिन यह तभी सम्भव था जब कि स्वयं उन्हे इस शिर्क (बहुदेववाद) की बुनियादों का पता होता। 'ब्रह्मा' शब्द 'हरिवंश पुराण' में ह० आदम अलै० के लिये भी इस्तेमाल हुआ है।

ईशदूतों के वृतॉंत:

"अन्त में स्वयं सृष्टा ने अपने दाहिने भाग से 'मनु' और वाम भाग से 'शतरूपा' को प्रगट किया। यह जोड़ी सृष्टि बनाने में प्रवृत्त हुई।" [1]

किसी मुसलमान की नज़र जैसे ही इस हिस्से पर पड़ेगी, वह तुरन्त पहचान लेगा कि यह ह० आदम अलै० की बायीं पस्ली से ह० हव्वा अलै० की पेदाइश तथा उन दोनों से समस्त मानव जाति की उत्पत्ति का वृतांत है।

अब आप हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में ईशदौत्य और ईशदूतों के विषय में कुछ अवतरण देखिये:

"जब भी धर्म क्षीर्ण होने लगता है और अधर्म की वृद्धि होती है, तब सर्वशक्तिमान हरि निस्सन्देह (मार्ग दर्शन के लिये) एक आत्मा पैदा करता है।"

—(श्रीमद भागवत महापुराण: 9-24-56)

यह था ईशदूतों के ससार मे भेजे जाने का उद्देश्य। अब ह० नूह अलै० और 'नूह के तूफ़ान' से संबंधित कुछ अवतरण हम उद्घृत करते हैं-सबसे पहले फ़्रांस के लेखक 'ड्यूबाइस' के विचार :

..."संक्षेप में, एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व जो कि हिन्दुओं के यहां बहुत पवित्र है और जिसे वे महानूवो के नाम से जानते हैं (सैलाब के) विनाश से एक नौका के द्वारा बच निकला जिस में सात प्रसिद्ध ऋषि सवार थे ...'महानूवों' दो शब्दों 'महा' और 'नूव' का मिश्रण है। महा का अर्थ महान और नूव निस्सन्देह नूह (अलै०) है।" [2]

...व्यावहारिक रुप से यह स्वीकार किया जाता है कि हिन्दुस्तान नूह (अलै०) के उस महान सैलाब के बाद तुरन्त आबाद हुआ था जिसने सारी दुनिया को वीरान कर दिया था।" [3]

...मारकण्डेय पुराण और भागवत में इस का बहुत स्पष्ट वर्णन है कि इस दुर्घटना में समस्त मानव जाति समाप्त हो गई थी, सात प्रसिद्ध तपस्या करने वाले ऋषियों के अतिरिक्त जिन का मैंने अनेक स्थानों पर उल्लेख किया है। इस नौका को विष्णु स्वयं चला रहा था। एक और महान व्यक्तित्व जो बच जाने वालों में था, वह 'मनु' का था जिसे मैंने दूसरे स्थानों पर सिद्ध किया है कि नूह (अलै०) के अतिरिक्त कोई नहीं था।" [4]

अब मत्सय पुराण से कुछ अवतरण समूह देखिये

"तब भगवान, मनु से यूं बोले-ठीक है, ठीक है। तुम ने मुझे भलीभांति पहचान लिया है। भूपाल! थोड़े ही समय में पर्वत, वन और उपवन के सहित यह पृथ्वी जल में निमग्न हो जाएगी। इस कारण पृथ्वीपते! सम्पूर्ण जीव-समूहों की रक्षा करने के लिये समस्त देवगणों द्वारा इस नौका का निर्माण किया गया है। सुव्रत!... जितने भी प्रकार के जीव हैं, उन सभी अनाथों को इस नौका में चढ़ा कर इन सब की सुरक्षा करना।"

—(मत्स्य पुराण, अ० 1 श्लोक 29 से 35)

"तब सातों समुद्र व्याकुल होकर एकमेव हो जाएंगे और इन तीनों लोकों को पूर्ण रूप से एक कर देंगे। सुव्रत ! उस समय तुम इन वेद रूपी नौका को ग्रहण करके इस पर समस्त जीवों और बीजों को लाद देना"

—(मत्स्य पुराण अ० 2 श्लोक 10-11)

"...(सैलाब के) प्रलय काल में जब इसी प्रकार सारी पृथ्वी एकार्णव में निमग्न हो जाएगी और तुम्हारी सृष्टि का प्रारम्भ होगा, तब मैं वेदों का पुनः प्रवर्तन करूंगा तथा मनु भी वहीं स्थित रह कर भगवान वासुदेव की कृपा से प्राप्त हुए योग (तपस्या और साधना) का तब तक अभ्यास करते रहे, जब तक पूर्वसूचित प्रलय का समय उपस्थित न हुआ।"

—(मतस्य पुराण, अ०: 2 श्लोक 14, 16)

यह तो थी ह० नूह अलै० की चर्चा। अब पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय की पुस्तक 'वेदों और पुराणों के आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति' से हम भविष्य पुराण के कुछ श्लोकों के अनुवाद नक़ल कर रहे हैं जिन में दूसरे नबियों के स्पष्ट वृत्तांत उनके मूल नामों के साथ वर्णित हुए हैं।

"आदम और हव्यवती विष्णु की गीली मिट्टी से उत्पन्न होंगे। प्रदान नगर (स्वर्ग) के पूर्वी भाग में परमेश्वर द्वारा बनाया गया सुन्दर चार कोश के क्षेत्र का बहुत बड़ा वन था। पाप वृक्ष के नीचे जा कर पत्नी को देखने की उत्कण्ठा से आदम, हव्यवती (हव्वा) के पास गए। तभी सर्प का रूप बना कर वहां कलि (शैतान) शीघ्र आया। उस धूर्त के द्वारा आदम और हव्यवती ठग लिये गए और विष्णु की आज्ञा को भंग कर दिया तथा संसार का मार्ग प्रदान करने वाले उस फल को पति ने खा लिया। उन दोनों के द्वारा गूलर के पत्तों से वायु का आहार किया गया, तब उन दोनों से बहुत सी संतानें उत्पन्न हुई, सब म्लेच्छ कहे गए। आदम की आयु नौ सौ तीस वर्ष हुई!"

"उस से न्यूह (नूह) नामक पुत्र हुआ। उसने पांच सौ वर्ष तक राज्य किया*। उस के सीम (साम), शम और भाव तीन पुत्र हुए, विष्णु का भक्त न्यूह (नूह) सोऽहमस्मि (वहदतुल वुजूद) ध्यान में परायण था। एक बार भगवान विष्णु ने उसे स्वप्न में बताया कि हे प्रिय न्यूह सुनो! सातवें दिन प्रलय होगी। तुम लोगों के साथ नाव में शीघ्र बैठ जाना, हे भक्तेन्दु अपना जीवन बचाओ, तुम सर्वश्रेष्ठ हो जाओगे। वैसा स्वीकार करके उस मुनि ने तीन सौ हाथ लम्बी और पचास हाथ चौड़ी नाव का निर्माण कराया। तीन सौ हाथ ऊपर उठी हुई (ऊंची) सुन्दर सभी जीवों के जोड़े तथा अपने कुल वालों के साथ चढ़ कर विष्णु के ध्यान में तत्पर हो गया... चालीस दिनों तक महान वृष्टि (बारिश) की।

* तौरेत के अनुसार तूफ़ान से पहले ह० नूह अलै० साढ़े छः सौ साल के थे।

नोटः अनुवाद में हमने पुस्तक– 'Islam, The first and Final religion' के पृष्ठ 8–9 पर दिये गये इन्हीं श्लोकों के अनुवादों से भी मदद ली हैं।

सम्पूर्ण भारतवर्ष जल में डूब गया, और चार समुद्र मिल गए और विशाल हो गए... ब्रह्मवादी मुनि (अल्लाह वाला बरगुज़ीदा) न्यूह अपने कुलों के साथ जल के अन्त होने पर वहां वास करने लगा। न्यूह के पुत्र सिम (साम), हाम, याक़ूत के नाम से प्रसिद्ध हुए।

—(पृ०: 14)

"उसके पुत्र तीन—अबिराम* (इब्राहीम अलै०) नहूर और हारन इस प्रकार म्लेच्छ वंश के गुरू होंगे।"

—(पृ०: 16)

"...एक बार शकाधीश हिमतुंग (हिमालय) पर गए और हूण देश के मध्य पर्वत में स्थित गोरे अंग वाले, श्वेत वस्त्र पहनने वाले शुभ पुरुष को बलवान राजा ने देखा और आनन्दित होकर पूछा कि आप कौन हैं? उन्होंने कहा कि मुझे कुमारी के गर्भ से उत्पन्न ईशा (ईसा अलै०) समझें, मैं सत्य के व्रत में परायण म्लेच्छ धर्म का उपदेशक हूं। ऐसा सुन कर राजा ने पूछा कि धर्म में आप का क्या विचार है?

यह सुन कर ईसामसीह बोले कि सत्य के नष्ट हो जाने पर म्लेच्छ देश के मर्यादाहीन होने पर मैं मसीह यहां आया हूं... हे राजन् मेरे द्वारा म्लेच्छों में स्थापित धर्म को सुनो—स्नान करो या नहीं, मन को निर्मल करके वैदिक जप को आश्रित करके निर्मल होकर जपो (ख़ुदा की इबादत करो)। न्याय, सत्यवचन और मन की एकता से मनुष्य सूर्यमण्डल में स्थित ईश्वर को ध्यान से पूजे। यह प्रभु अचल है जैसे कि सूर्य अचल है। ईश्वर की ह्रदय में नित्य शुद्ध तथा कल्याणकारी मूर्ति प्राप्त होती है, इसी लिये ईसामसीह मेरा नाम है। यह सुन कर राजा ने उस म्लेच्छ पूजक को वहीं दारुण म्लेच्छ स्थान में स्थापित किया. .(राजा ईसा मसीह का मो'तक़िद हो गया) (भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, तृतीय खण्ड, द्वि अध्याय)#

* यहां इब्राहीम की जगह संस्कृत में अबिराम शब्द प्रयुक्त हुआ है। यह बात भी उल्लेखनीय है कि तौरते में बताया गया है कि ह० इब्राहीम अलै० का नाम पहले Abram था और बाद में अल्लाह ने उनका नाम Abraham रख कर कहा कि तुम समस्त मानव जाति के अगुआ होगे। इसलिये मैं तुम्हारा यह नाम रख रहा हूं।

यह अनुवाद भविष्य पुराण के जिन श्लोकों से लिया गया है, वह पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय के अनुसार प्रतिसर्ग पर्व, तीसरे खण्ड, और दूसरे अध्याय के नम्बर 21 से 30 तक के श्लोक हैं, जब कि पंडित श्री राम शर्मा के अनुसार यह प्रसंग अध्याय 22 के नम्बर 21 से आगे तक के श्लोक हैं। अस्ल भविष्य पुरण हमारे सामने नही है। पंडित श्री राम शर्मा के सन्दर्भ में ही त्रुटि मालूम होती है। उपरिलिखित श्लोकों में मूल भाषा में ईसा की जहग ईशा, हिमालय की जगह हिमतुंग, मसीह की जगह मसी के शब्द है। हिमतुंग का अनुवाद पंडित श्रीराम शर्मा ने हिमालय किया है।

"उसी बीच शिष्यों की शाखाओं से युक्त महामद (मोहम्मद) नामक म्लेच्छ आचार्य वहां आते हैं। राजा भोज उन से कहेगा– हे मरुस्थल में निवास करने वाले त्रिपुरा सुरनाशक (शैतान को शिकस्त देने वाले), अत्यधिक चमत्कारों को जानने वाले, शुछ एवं सत्य, चैतन्य और आनंद स्वरूप शंकर जी (ख़ुदा के इश्क़ व मारफ़त की तस्वीर) तुम्हें नमस्कार है। तुम मुझे शरण में उपस्थित अपना दास समझो। राजा भोज के पास स्थित पत्थर की मूर्ति के लिये महामद (मोहम्मद सल्ल०) यह कहेंगे कि वह तो मेरा झूठा खा सकती है जिसे तुम पूजते हो, ऐसा कह कर भोज को वैसा ही (चमत्कार) दिखा देंगे, यह सुन कर और देख कर राजा भोज को बड़ा आश्चर्य होगा और उस की आस्था म्लेच्छ धर्म में हो जाएगी।"*

–(भ०पु०प्र०म०पँ०,तृ० अ० तृ०, श्लोक 15–16)

उपर्युक्त श्लोकों से आगे बताया गया है कि **"रात्रि में कोई देवदूत राजा भोज के पास आकर बताएगा कि– ख़तना किया हुआ, चोटी से हीन, दाढ़ी रखने वाला... शुद्ध पशुओं का आहार करने वाला, ईश्वर का ख़ास आदमी है।"**

'भविष्य पुराण' जिस के हवाले अभी आप ने देखे, उन प्रमाणों में से एक है जिसे हिन्दू धर्म के कुछ जिम्मेदार लोगों ने अब छिपाना आरम्भ कर दिया है। हिन्दुओं का आर्यसमाजी वर्ग तो अब सिरे से इसे नकारने लगा है लेकिन सनातन धर्मी जो परम्परावादी होने के कारण अपनी सम्पूर्ण धार्मिक विरासत में से कुछ भी छोड़ने को तैयार नहीं हैं (और यही लोग भारी बहुमत में हैं), भविष्य पुराण को प्रमाणित धार्मिक पुस्तक मानते हैं। एक युग वह था जब संस्कृत सीखने की अनुमति साधारण लोगों को नहीं थी। **'अलबेरुनी'**, **'गिरिफ़्थ'** तथा **'मैक्समुलर'** सरीखे शोधकर्ताओं ने घोर विरोध और पंडितों की नाराज़गी के माहौल में अपने अथक प्रयासों से संस्कृत सीखी थी। उस युग में इन सुबूतों का आम लोगों के हाथ लगने का भय इन पंडितों को नहीं था। लेकिन अब जब कि सरकार की छत्र छाया में संस्कृत भाषा को पुनः जीवित किया जा रहा है और संस्कृत सीखने वाली वर्तमान पीढ़ी पंडितों के धर्मादेशों से भयभीत नहीं है (जैसा कि अतीत में वेदों का अध्ययन करना जन–साधारण के

* इन श्लोकों में 'मोहम्मद' की जगह मूल संस्कृत में 'महामद' शब्द आया है। यहां से यह भी ज्ञात हुआ कि 'म्लेच्छ' शब्द वास्तव में गैर आर्य जाति के लोगों के लिय प्रयुक्त होता था जैसा कि 'अरब' गैर अरबों के लिये 'अजम' तथा यहूदी, गैर यहूदियों के लिय 'Gentiles' शब्द इस्तेमाल करते हैं। अब 'म्लेच्छ' शब्द का प्रयोग गलत अर्थों में होने लगा है लेकिन वैदिक भाषा में ऐसा नहीं था।

लिये निषिद्ध था), तो कुछ समुदायों ने उन चीज़ों को अब गायब करना शुरु कर दिया है जो धर्म की मूल वास्तविकता की ओर ले जाती हैं– विशेष रुप से वह सामग्री जो इस्लाम धर्म का समर्थन करती है। गीता प्रेस, गोरखपुर जो हिन्दू धार्मिक पुस्तकों का सब से बड़ा प्रकाशन केन्द्र है, भविष्य पुराण को अब पुराण मानने सेइनकारकर रहा है। लेकिन सनातन धर्म के सब से प्रतिष्ठित गुरु स्व० पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जिन के अनुयायियों की संख्या दस लाख से अधिक है, भविष्य पुराण को स्वीकार करते है और उन के संगठन 'शान्ति कुंज' से प्रकाशित भविष्य पुराण के अवतरण हम पिछले अध्याय में (ह० ईसा अलै०, हिन्दुस्तान में के सन्दर्भ में) दे चुके हैं।

भागवत में ह० मोहम्मद सल्ल० का उल्लेख:

भविष्य पुराण के वक्तव्य तो इतने स्पष्ट हैं कि उनमें अर्थ बदलना संभव ही नहीं था; दूसरी जगहों पर जहां ह० मोहम्मद सल्ल० के ईशदौत्य की भविष्यवाणियाँ हैं, वहां अनुवाद बदल दिये गए हैं। उदाहरण के लिए श्रीमद् भाग्वत पुराण के इस श्लोक को देखिए:

"....अज्ञान हेतु कृत मोहमदान्धकार नाशं विधाय हि तदो दयते विवेकः"

"जब जन्म–जन्मान्तरों में सार्वजनिक कल्याण के उदय होने से मानव को सत्य का आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होने वाला हो तब मोहम्मद (सल्ल०) के माध्यम से अन्धकार का नाश होकर विवेक की ज्योति का उदय होगा।"

–(श्रीमद्भागवत–महात्म्यः 2–76)

उपरोक्त श्लोक में 'मोहम्मद' शब्द को मोह+मद में विभाजित कर के अनुवाद इस तरह किया जा रहा है :

"– – – – – – तब लालच और शराब जैसे अन्धकारों का नाश होकर विवेक की ज्योति का उदय होगा।"

यह तो थे पुराण–अब वेदों में ह० नूह अलै० का ज़िक्र और ह० मोहम्मद सल्ल० के गुणों का वर्णन देखिये। हां, इससे पूर्व यह अवश्य समझ लें कि नूह अलै० की चर्चा वेदों में 'मनु' के नाम से है। यद्यपि 'अग्नि' व 'ब्रह्मा' के समान 'मनु' भी विभिन्न व्यक्तित्वों के लिये प्रयुक्त हुआ है तथा कुल चौदह **'मनु'** में एक ह० नूह अलै० हैं। लेकिन पुराणों, वेदों और दूसरी धार्मिक पुस्तकों में सब से अधिक विस्तार से जिस मनु का वृत्तांत है, वह ह० नूह अलै० ही है। नबी सल्ल० का ज़िक्र जहां कहीं मोहम्मद सल्ल० की हैसियत से आया है, वहां वेदों में **'नराशंस'** का शब्द इस्तेमाल हुआ है।

जैसा कि तौरेत व इन्जील में आप (सल्ल०) के लिये **'पैराक्लीट'** शब्द से संबोधन है जिस का अर्थ है–प्रशंसा के योग्य (यही अर्थ अरबी भाषा में 'मोहम्मद' शब्द का है). इसी प्रकार वेदों में आप (सल्ल०) को नराशंस कह कर पुकारा गया है। इस शब्द का अर्थ भी वही है–'अत्यन्त प्रशंसा के योग्य व्यक्तित्व' संस्कृत के इस शब्द का शुद्ध पर्यायवाची अरबी शब्द 'मोहम्मद' है।

निम्नलिखित वेद मन्त्रों के अनुवादों में जहां कहीं 'मनु' शब्द आया है, इस की जगह हम अनुवाद में 'नूह' (अलै०) लिखेंगे और नराशंस के स्थान पर 'मोहम्मद' सल्ल० लिखेंगे। पहले ह० नूह अलै० के वृत्तांत के कुछ दृष्टांत देखिये :

वेदों में ह० नूह अलै० का वृत्ताँत:

"हे अग्नि! मनु (नूह अलै०) आप के ईशदूत–पद की पुष्टि करते हैं।"
–(ऋ० : 1–13–4)

इस मन्त्र के विषय में वेदों के अनुवादक गिरिफ़िथ ने अपने अंग्रेज़ी अनुवाद में नोट लिखा है कि 'नूह' अद्‌भुत व्यक्तित्व तथा मानव जीवन के प्रतिनिधि थे। समस्त मानव जाति के पिता (सैलाब के बाद दूसरे आदम के रूम में) और पहली धर्म–नियमावली के आरम्भ करने वाले थे। और देखिये:

"हे अग्नि! हम आप को मनु (नूह) के समान धर्म का अग्रदूत, आह्वानकर्ता, धार्मिक विधाऐं सिखाने वाला तथा अत्यन्त बुद्धिमान व्यक्तित्व मानते हैं।" –(ऋ० : 1–44–1)

"हे अग्नि ! मनु (नूह) ने आप की कान्ति समस्त मानव जाति में फैला दी है।" –(ऋ०: 1–36–19)

ऊपर के सभी मन्त्रों में **अग्नि**, अहमद सल्ल० की आत्मा को कहा गया है। चारों वेदों में इसी तरह नूह अलै० का नाम 75 जगह आया है। 51 बार ऋग्वेद में, 2 बार यजुर्वेद में, 14 बार अथर्ववेद में और 8 बार सामवेद में 'नूह' नाम से जिक्र मौजूद है। अब ह० मोहम्मद सल्ल० के नाम का वृत्तात देखिये:

वेदों में ह० मोहम्मद सल्ल० का वृत्तांत:

"हे प्रिय नराशंस (मोहम्मद सल्ल०)! मीठी बोली वाले, यज्ञ करने वाले! मैं आप के बलिदानों को माध्यम बनाता हूं।" –(ऋ० : 1–13–3)

"मैंने नराशंस (मोहम्मद सल्ल०) को देखा है। सब से अधिक उच्चोत्साही

और सबसे ज़्यादा प्रसिद्ध जैसा कि वे स्वर्ग में हर एक के होता (पैगम्बर) थे।"
–(ऋग्वेद : 1–18–9)

"महान नराशंस (मोहम्मद सल्ल०) की शक्ति में वृद्धि के लिये तथा पुषान (मेहदी अलै०) जो कि महान शासक है, उस के लिये हम प्रशंसा करते हैं। हे अत्यन्त कृपालु ईश्वर! हमें समस्त विपत्तियों से मुक्ति दे तथा दुर्गम मार्गो से हमारा रथ पार करा दे।" –(ऋ०: 1–106–4)

ऊपर अंकित मंत्र के अनुवाद के संदर्भ में गिरिफ़िथ ने अपने नोट में लिखा है कि 'नराशंस' अग्नि का एक रहस्यमय नाम है।

ऋग्वेद में 16 जगह आप (सल्ल०) का नराशंस के नाम से वृत्तांत है। इसी प्रकार यजुर्वेद में 10 जगह, अथर्ववेद में 4 जगह और सामवेद में एक जगह आप (सल्ल०) का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार चारों वेदों में कुल मिलाकर 31 जगह नराशंस के नाम से आप (सल्ल०) को संबोधित किया गया है।

इस सन्दर्भ में यह बात दिलचस्पी से ख़ाली न होगी कि पंडित अमरनाथ पाण्डेय जो कि रहस्यवादियों में से हैं और जिन्होंने अरबी अक्षरमाला पर रिसर्च की हैं, उन का कथन है कि हिन्दू तीस बार इनकार करता है– इकत्तीसवी बार नहीं करेगा। अरबी की अक्षरमाला में भी उनके अनुसार 31 अक्षर हैं और **'सूरए रहमान'** में 31 बार अपने वरदान गिनाने के पश्चात अल्लाह ने यह प्रश्न किया हैं– **"फिर तुम अपने 'रब' के कौन–कौन से वरदानों को झुठ्लाओगे।"**

अथर्ववेद में बीसवें काण्ड का यह सूक्त नराशंस के वृतांत में अत्यन्त महत्वपूर्ण है:

"लोगों सुनो! नराशंस (मोहम्मद सल्ल०) की बढ़ाई की जाएगी। उस कौरम (विस्थापित) को हम साठ हजार और नव्वे शत्रुओं से अपनी शरण में लेंगे। उस की सवारी ऊंट होगी जिस के साथ बीस मादा ऊंटनियां होंगी। जिस की महिमा आसमानों को भी झुका देगी। उस मामह (महान) ऋषि को सौ निष्क (स्वर्ण मुद्राएं), दस मालाएं, तीन सौ घोड़े और दस हजार गाएं प्रदान की गई हैं।" –(अथर्व०: 20–127–1,2,3)

उपर्युक्त तीनों मन्त्रों के अनुवाद पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय ने अपनी पुस्तक **'नराशंस और अन्तिम ऋषि'** में उद्धरित किये हैं जिनमें सिद्ध किया गया है, दस मालाओं से अभिप्राय दस अशरः मुबश्शरः हैं, तीन सौ घोड़ों से तात्पर्य 'जन्गे बद्र' (बद्र का धर्मयुद्ध) के तीन सौ तेरह मुजाहिदीन (पराक्रमी) और दस हज़ार गायों से अभिप्रायः दस हज़ार सत्संगियों का वह जत्था है जो मक्के पर विजय प्राप्त होने के

समय आँहज़रत (सल्ल०) के साथ था।

यह बात विशेषतया उल्लेखनीय है कि पुराणों व अन्य धार्मिक पुस्तकों में तो अनेक ईशदूतों की कथाएं हैं लेकिन वेदों में केवल ह० आदम अलै० व ह० नूह अलै० के वृत्तान्त के साथ अन्तिम ईशदूत ह० मोहम्मद सल्ल० के शुभागमन की भविष्यवाणियां है जोकि प्रत्येक ईशदूत पर अवतरित ग्रन्थ में विद्यमान हैं। यह भी इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि वेद, ह० नूह अलै० के ग्रन्थ (ज़ुबरुल अव्वलीन या अव्वलीन सहाइफ़ या आदि ग्रन्थ) हैं। एक कमज़ोर रिवायत यह भी है कि "ह० नूह अलै० को दो सहीफ़े दिये गयें थे– एक तूफ़ान से पहले और एक तूफ़ान के बाद।" [5]

इस दृष्टि से भी 'ज़ुबुरुल अव्वलीन' अर्थात 'अव्वलीन सहाइफ़' का शब्द जो कि बहुवचन है (ज़बूर–यानी ग्रन्थ और ज़ुबुरुल–यानी कई ग्रन्थ), वह हो सकता है कि बहुत से नबियो के लिये हो। यह भी सम्भव है कि एक ही नबी ह० नूह अलै० को दिए गए ग्रन्थों के लिये हो।

ऋग्वेद के मन्त्र (1–163–1) में अन्तिम सन्देष्टा ह० मोहम्मद सल्ल० के लिये **'समुद्रादूत अरबन'** के शब्द इस्तेमाल हुए हैं। वि०ना०श० सागर में 'स' का अर्थ साथ, 'मुद्रा' का अर्थ मुहर तथा 'अरब'एक देश का नाम है। न संस्कृत में प्रायः अतिरिक्त होता हैं। इस प्रकार 'समुद्रादूत अरबन' का अर्थ हुआ– 'मुहर' के साथ अरब वाला' अरबी शब्द 'ख़ातम' का अर्थ भी 'मुहर हैं। ह० मोहम्मद सल्ल० को **ख़ातमुन–नबिय्यीन'** इसलिये कहा गया है नबियों के आगमन के क्रम पर आप (सल्ल०) ने आख़री मुहर लगाकर नई नुबूवत (ईशदूतत्व) का दरवाज़ा बन्द कर दिया।

वेदों, अन्य हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों तथा दूसरे ईश्वर प्रेषित ग्रन्थों में ह० मोहम्मद सल्ल० की रिसालत के दो और महत्वपूर्ण पदों (अहमद सल्ल० और महमूद सल्ल०) का भी स्पष्ट वृतांत है।

सन्दर्भ–सूची अध्याय : 10

1. 'कल्याण' गोरखपुर 'हिन्दू संस्कृति अंक' जनवरी 1950, पृ: 795
2. 'Hindu Manners, Customs & Ceremonies' - A.J.A. Dubois, P: 48
3. - - - - - - - - - - - - - - - do- - - - - - - - - - - - P:100
4. - - - - - - - - - - - - - - - do- - - - - - - - - - - - P:416, 417
5. 'किताबुत्तेजान फ़ी मुलूक हमीर' पृ० : 372, प्र०: मजलिसे दायरतुल मआरिफ़–उस्मानिया हैदराबाद, प्रथम संस्करण

----❖❖❖----

अध्याय : 11

वैदिक धर्म और आख़िरत (पारलौकिक जीवन)

पारलौकिक जीवन की आस्था तथा पुनर्जन्म:

'परलोकवाद' की धार्मिक आस्था इस दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है कि समस्त धर्मों एवं जातियों में बहुत बड़े सम्प्रदाय ऐसे हैं जो 'एकईश्वरवादी' है। ईशदूत पद की धारणा भी इन सब सम्प्रदायों में बिल्कुल स्पष्ट है, यद्यपि वे अन्तिम ईशदूत ह० मोहम्मद सल्ल० के ईशदूत होने को स्वीकार नहीं करते। लेकिन मूल धर्म विश्वासों में से 'परलोकवाद' ही ऐक ऐसी धारणा है जो इन सब के यहां विकृत हो चुकी है। अन्तिम दिन (पुनरोत्थान),पुरस्कार व दण्ड तथा स्वर्ग व नरक की कोई स्पष्ट कल्पना उन के पास नहीं है। किसी को आवागमन में श्रद्धा है, कोई अन्तिम दिन को मानता ही नहीं और कोई हिसाब–किताब का इनकार करके यह कहता है कि ह० ईसा अलै० ने फांसी पर चढ़ कर (ईश्वर क्षमा करे) सब के पापों का प्रायश्चित कर लिया था। तौरेत, ज़बूर तथा इन्जील के वर्तमान रूप में परलौकिक जीवन की कल्पना बहुत अस्पष्ट और धुन्दलाई हुई है; लेकिन वेदों में बहुत विस्तार के साथ दूसरे जीवन, पुरस्कार व दण्ड और स्वर्ग-नरक का वर्णन विशुद्ध रूप में मौजूद है।

आवागमन का मत हिन्दू समाज में बहुत बाद के युग में आया। यद्यपि ऐसे संकेत मिलते हैं कि वैदिक युग में भी आवागमन के मानने वाले थे, लेकिन एक पूरी की पूरी क़ौम जन्म–जन्मांतर की कहानी को सत्य मानने लगे, ऐसा बहुत बाद में हुआ। किसी साधारण हिन्दू से मालूम कीजिए कि यदि पुरस्कार व दण्ड स्वरूप बार–बार इसी संसार में जन्म लेना है तो धार्मिक ग्रंथों में स्वर्ग, नरक, परलोक एवं यमदूत का क्या अर्थ है? वह आप को कुछ न बता सकेगा। अधिकांश हिन्दू विद्वान भी इस सवाल पर बेतुके से तर्क प्रस्तुत करते हैं। वास्तविकता यह है कि वेदों से पूर्ण रूप से कट जाने के कारण 'आख़रत' की धारणा में बिगाड़ आया। आवागमन कैसे आया, इसकी

हक़ीक़त क्या है? इस पर हम बाद में चर्चा करेंगे। अभी इतना समझ लें कि आवागमन के विषय में महत्वपूर्ण शब्द 'पुनर्जन्म' ही बार–बार जन्म लेने की बात को नकारता है। संस्कृत में पुनर या पुनः का अर्थ है दोबारा या दूसरी बार। इसलिये पुनर्जन्म का मतलब हुआ दूसरा जीवन या दोबारा मिलने वाला जीवन, न कि बार–बार जन्म लेना। इस विषय पर कुछ विद्वानों के वक्तव्य देखिये।

हिन्दू शोधकर्ताओं की स्वीकृति :

''ऋग्वेद में पुनर्जन्म का उल्लेख नहीं है..''[1] —डा०राधाकृष्णन

ऐसा प्रतीत होता है कि डा० साहब की नज़र से पुनर्जन्म की चर्चा और आवागमन या बार–बार जन्म लेने के विचार को नकारने वाला हिस्सा नहीं गुज़रा है।

''पुनर्जन्म के लिये एक शब्द 'प्रत्यभावः'...वह इस से भिन्न होकर अन्य लोक में जाकर फिर उत्पन्न होना है।''[2]

''पहले हम बता चुके हैं कि पुनर्जन्म का दूसरा नाम परलोक है।''[3]

''मृतक का शास्त्रों में परलोक में जाना कहा है...''[4]

वेदों में दूसरे जीवन की वही धारणा मौजूद है जिसे क़ुरआन में **मआद** या **आख़िरत** कहा गया है। एक और विद्वान राहुल सांकृत्यायन के विचार इस विषय पर देखिये:

''भारतीय प्राचीन साहित्य में छान्दोग्य ही ने सबसे पहले पुनर्जन्म (परलोक ही में नहीं, इस लोक में भी कर्मानुसार प्राणी जन्म लेता है) की बात कही। शायद उस समय प्रारम्भिक प्रचारकों ने यह न सोचा हो कि जिस सिद्धान्त का वह प्रचार कर रहे हैं, वह आगे कितना ख़तरनाक साबित होगा।''[5]

''डाक्टर फ़रीदा चौहान लिखती हैं : वेदों में पुनर्जन्म मिलता तो ज़रुर है लेकिन उसमें इस जन्म के बाद सिर्फ़ एक और जन्म का विवरण है, हज़ारों जन्मों का नहीं।''[6]

श्री सत्यप्रकाश विद्यालंकार लिखते हैं–वेदों में आवागमन का सिद्धान्त नहीं है, इस बात पर तो मैं जुआ भी खेल सकता हूं...।''[7]

''वेदों में 'आख़िरत' है या नहीं, यह सवाल बड़ा अजीब सा है, बिल्कुल ऐसा ही सवाल है जैसे कोई पूछे कि मनुष्य में आत्मा है या नहीं। पूरे के पूरे वेद पारलौकिक जीवन की पुष्टि करते हैं...अन्तिम दिन तो ईश्वरीय धर्मों का एक प्रमुख सिद्धान्त है और वेद पूरे इसकी गवाही देते हैं...वेदों में भी क़ुरआन की तरह तीन सिद्धान्तों को धर्म का स्तंभ माना गया है : 1 एक–ईश्वर–वाद, 2. ईशदौत्य, 3. अन्तिम दिन''[8]

कुछ हिन्दू शोधकर्ताओं की इन टिप्पणियों के बाद अब वेदों में अन्तिम दिन और स्वर्ग–नरक का वर्णन देखिये।

वेदों में आख़िरत (पारलौकिक जीवन) की परिकल्पना:

''हे अग्नि! अपनी मुक्ति दिलाने वाली शक्तियों से पुण्य लोक की प्राप्ति कराओ।'' —(ऋ०: 10–16–4)

''हे अग्नि! इस मृत व्यक्ति को जीवन मिलेगा।'' —(ऋ०: 10–16–5)

वेदों में परलोक की कल्पना की यह दो मिसालें हैं, बार–बार जन्म न होकर केवल एक बार दोबारा जन्म लेने का वृतांत, परलोक के लिये वेदों में हर जगह आया है। यह परिकल्पना बहुत अस्पष्ट भी नहीं है, बल्कि अत्यधिक विस्तार के साथ प्रत्युपकार व दण्ड का ज़िक्र और स्वर्ग व नरक का वर्णन है। कुछ उदाहरण हम नीचे प्रस्तुत करते हैं :

वेदों में जन्नत (स्वर्ग) का वृताँत:

''तुम वहां अपनी सच्चाई की सहायता से उस जगह को देखना जो अत्यन्त विस्तृत दृश्यों वाली है।'' —(ऋ०: 1–21–6)

इस मन्त्र के भाष्य की टिप्पणी में गिरिफ़िथ ने अपने अंग्रेज़ी अनुवाद में लिखा है कि सायणआचार्य की व्याख्या के अनुसार यह स्थान **'स्वर्ग'** है।*

''तुम दोनों पति–पत्नी मेरे पास पंक्तिबद्ध होकर खड़े हो जाओ, सच्चे भक्त इस स्वर्ग की दुनिया में पहुंचाये जाते हैं।'' —(अथर्व : 6–122–3)

''तुम्हारे अनुयायी अपने दान पुण्य के द्वारा ईश्वर की सेवा करेंगे और इसके अतिरिक्त तुम स्वर्ग की प्रसन्नताओं से अलिंगित होगे।'' — (ऋ०: 10–95–18)

''जो ज्ञान रखते हैं, वे दूसरों से पहले जीवन प्रदान करने वाली श्वास लेकर इस शरीर से निकल कर आकाश में पहुंचकर अपने समस्त साथियों

* सायण आचार्य ही से भाष्य लेकर मैक्समुलर ने सर्वप्रथम जन साधारण के लिये प्रकाशित किया था ।

के साथ रहते हैं। जिन मार्गों से देवताओं ने यात्रा की थी, उनसे गुज़रते हुए स्वर्ग पहुंच जाते हैं।'' –(अथर्व : 2–34–5)

''पवित्र करने वाले के द्वारा पवित्र होकर ऐसे शरीर के साथ जिसमें अस्थियां न होंगी, वे प्रतापवान और प्रज्वलित होकर उजालों के संसार में पहुंचते हैं। उनके उल्लसित शरीरों को आग नहीं जलाती है। स्वर्ग लोक में उनके लिये बड़ा आनन्द है।'' –(अथर्व : 4–34–2)

''शहद के किनारों और मक्खन से बनी नहरें जो मदिरा, दूध, दही और पानी से भरी होंगी, बेहद मिठास उनसे अबली पड़ती होगी। यह झरने स्वर्ग लोक में तुझ तक पहुंचेंगे। कंवल के फूलों से भरी हुई पूरी–पूरी झीलें तेरे पास आयेंगी।'' –(अथर्व : 4–34–6)

यह थे स्वर्ग के पुरस्कारों के विषय में वेदों में किये गये कुछ वादे और अब नरक का वर्णन देखें।

दोज़ख़ (नरक) का वर्णन :

वेद से पहले श्रीमद भागवत् पुराण के चार श्लोकों का अनुवाद देखिये। यहां भी नरक का विस्तृत वर्णन है, जो क़ुरआन की वर्णन शैली से बहुत मिलता जुलता है :

''वहां उसके शरीरों को धधकती हुई लकड़ियों आदि के बीच में डालकर जलाया जाता है, कहीं स्वयं और कहीं दूसरों के द्वारा काट–काट कर उसे अपना ही मांस खिलाया जाता है।'' – (भागवत: 3–30–25)

''यमपुरी (मौत की दुनिया) के कुत्तों अथवा गिद्धों द्वारा जीते जी उसकी आंतें खींची जाती हैं, सांप, बिच्छू और डांस आदि डसने वाले तथा डंक मारने वाले जीवों से शरीर को पीड़ा पहुंचायी जाती है।'' – (भागवत 3–305–26)

''शरीर को काट कर टुकड़े–टुकड़े किये जाते हैं, उसे हाथियों से चिरवाया जाता है, पर्वत–शिखरों से गिराया जाता है अथवा जल या गढ़े में डालकर बन्द किया जाता है। यह सब यातनाएं तथा इसी प्रकार तमिस्र, अन्ध तमिस्र एवं रौरव आदि नरकों की और भी अनेको यन्त्रणाएं स्त्री हो या पुरूष, उस जीव को पारस्परिक संसर्ग से होने वाले पाप के कारण भोगनी ही पड़ती है।'' – (भागवत 3–30–27,28)

और अब ऋग्वेद से एक दृष्टात

''जो पापी हैं, उनके लिये यह अथाह गहराई वाला स्थान अस्तित्व में आया है।'' – (ऋ० : 4–5–5)

इस मन्त्र की व्याख्यात्मक टिप्पणी में वेदों के अंग्रेज़ी अनुवादक 'गिरिफ़िथ' ने लिखा है कि सायणाचार्य के अनुसार यह स्थान 'नरक' है ।

आख़िरत, जन्नत और दोज़ख़ की ऊपर दर्ज की गयी मिसालों को देखें और स्वयं फ़ैसला करें कि क़ुरआन व हदीसों में वर्णित इस्लामी मान्यताओं से यह कितनी समानता रखती हैं। अज्ञात काल पुराने वेदों में यह सूचनाएं जो इनके हज़ारों साल बाद इससे मिलती जुलती शैली में क़ुरआन में वर्णित होना थी, क्या यह सिद्ध नहीं करतीं कि वेदों में आस्मानी कलाम मौजूद है? शाब्दिक और अर्थ सम्बन्धी क्षेपकों से गुज़रते हुए, अज्ञात समय की धूल में खोए हुए इन ग्रन्थों को अगर उम्मत के कुछ विद्वान अल्लाह की अन्तिम और शुद्ध किताब 'क़ुरआन' की रौशनी में शुद्ध करें और उनमें से क़ुरआन की सहायता से उन हिस्सों को स्पष्ट कर दें जो इस्लाम धर्म की शिक्षाएं हैं और फिर हिन्दू क़ौम को इन किताबों की ज्योति में तौहीद, रिसालत और आख़िरत का निमन्त्रण दिया जाये तो क्या हिन्दुओं को उनके मूलधर्म अर्थात सनातन धर्म की तरफ़ बुलाना आसान न होगा?

उपर्युक्त श्लोकों और मन्त्रों के अनुवादों को देखिये। कहीं भी बार–बार विभिन्न शरीरों या योनियों में जन्म लेते रहने का ज़िक्र मिलता है? ऐसा नहीं है कि हमने आपके सामने केवल उन मन्त्रों का अनुवाद प्रस्तुत कर दिया हो जिनमें परलोक और स्वर्ग व नरक का यथार्थ चित्रण विद्यमान है, बल्कि वेदों के किसी भाग में भी आवागमन की चर्चा नहीं है। यह सब मानव मस्तिष्क की उपज है, जैसा कि पिछले पृष्ठों में हिन्दू अनुसंधानकर्ताओं के वक्तव्य भी सिद्ध करते हैं।

उपर्युक्त वेद मन्त्रों के अनुवाद हमने सनातन धर्मी, आर्य समाजी और गिरिफ़िथ के अंग्रेज़ी अनुवादों को सामने रखकर किये हैं। और अब देखें पंडित दुर्गा शंकर–सत्यार्थी के कुछ अनुवाद जो उन्होंने परलोक से सम्बन्धित अपने लेख में दिये हैं जो हिन्दी पत्रिका 'कान्ति' 8 जुलाई 1969 के अक में प्रकाशित हुए हैं :

''वह वज्र देने वाला है, दस्युओं (शैतान) को मारने वाला, हज़ारों भयंकर, उग्र (मनुष्यों) को चेतना देने वाला और सैकड़ों पर कृपा करने वाला है। चवर (छत्र) वाला है, शवों को पांच जन्म देने वाला नहीं है। हे हिन्दुओ! तुम सब बिजलियों के स्वामी के होओ।'' 9 – (ऋ० 1–100–12)

''पुनः पुनः उत्पन्न होने का वर्णन ससान शुम्भ (शैतान) जैसा प्राचीन

काल (के लोगों के द्वारा) किया जाता (रहा) है। तब पापियों के समान उस प्रकार मानने वालों को विजित करो। मरने वालों की देवी आयु को जलाती है (अर्थात जल्दी करो, जीवन की अवधि समाप्त होती जा रही है) 10

– (ऋ० : 1–92–10)

''वे अन्तिम दिन का विस्मरण कर विद्या एवं बुद्धि का तिरस्कार कर हमारी निश्चित की हुई सीमा को पकड़ रहे हैं (अर्थात फलांग रहे हैं)'' 11

– (ऋ० : 1–4–3)

''अपने दिल के लिये मधुर जिह्वा प्राप्त कर लोग अपनी शंकाओं की गणना करते हैं (अर्थात आध्यात्म प्राप्त करके अपने पापों का हिसाब किताब करते हैं), देवों को नमस्कार करने वाले लोगों से कहो : तुम्हें फिर से स्थायी आयु एवं सदा का जीवन प्राप्त होना निश्चित है।'' 12 – (ऋ० : 1–44–6)

पंडित दुर्गा शंकर सत्यार्थी ने अपने लेख में ऊपर नकल किये हुए मन्त्रों* के अतिरिक्त और बहुत से वेद मन्त्रों का उदाहरण देकर बहुत तर्कपूर्ण शैली में यह सिद्ध किया है कि वेदों में आख़रत (परलोकवाद) का मत बिल्कुल क़ुरआनी धर्म–सिद्धान्त की तरह है, जिसमें अन्तिम दिन में पुरस्कार व दण्ड के दूसरे स्थायी जीवन की चर्चा है। आवागवन का उल्लेख है ही नहीं, बल्कि इसका खण्डन भी है और ऐसी आस्था रखने वालों को परास्त करने का आदेश है।

यहां एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि ऊपर लिखे मन्त्र जिनको हमने पंडित दुर्गा शंकर सत्यार्थी के हवाले से नक़ल किया है, उन्हें हमने दूसरे अनुवादों में देखना चाहा तो पता चला कि सारे अनुवादकों ने बिल्कुल एक दूसरे से भिन्न अनुवाद किये हैं, जिनके अभिप्राय तनिक भी आपस मे मेल नही खाते। यह है अर्थ सम्बधी क्षेपकों का एक और प्रमाणित उदाहरण।

जब–जब अनुवादकों ने 'आकाशवाणी' की वास्तविकता से हटना चाहा और परलोक के सही धर्मविश्वास को छिपाना चाहा तो उनमें आपस मे भी सहमति न रही और उन सभी ने अपनी–अपनी पसन्द की व्याख्याएं कर लीं।

आवागमन की यथार्थता :

हमें बहुत से पत्र प्राप्त हुए है. जिनमें यह इच्छा व्यक्त की गयी है कि हिन्दुओं

नोट: उक्त मन्त्रो के अनुवाद में कोष्ठक के शब्द लेखक के अपने हैं।

* पंडित जी के अनुवाद किये हुए मन्त्रो की जब हम ने अन्य विद्वानो के अनुवादों से तुलना की तो इन मन्त्रों का यह अनुवाद कहीं नही मिला, लेकिन इन मन्त्रो मे संस्कृत के जो शब्द प्रयुक्त हुए हैं, उन में इस अनुवाद की गुन्जाइश मालूम होती है।

के आवागमन के अक़ीदे (प्रचलित मत) पर प्रकाश डाला जाये। वेदों और हिन्दू अनुसंधानकर्ताओं के जो उदाहरण हमने प्रस्तुत किये हैं, उन से यह तो बिल्कुल स्पष्ट है कि मूल हिन्दू धर्म में वर्तमान जीवन के बाद दूसरे अनन्तकालीन जीवन ही की धारणा थी, लेकिन फिर भी प्रत्येक मनगढ़न्त कहानी, देवमाला और असत्य काल्पनिक मत की कोई न कोई बुनियाद होती है। हमारी रिसर्च के अनुसार आवागवन का मत भी आधारहीन नहीं है, बल्कि 'मुताशाबिहात' (अलंकृत शैली) की भाषा में वर्णित कुछ वास्तविकताओं को समय से पहले समझने के प्रयास में वास्तविक अभिप्राय कहीं गुम हो गया और इस आवागवन की रोचक कहानी ने जन्म लिया। इस पहलू का विस्तृत वर्णन न करते हुए भी कुछ सीमा तक स्पष्टीकरण इसलिये आवश्यक है कि 'असत्य' को समझे बिना उस पर भरपूर प्रहार नहीं हो सकता। इस उपादेयता को दृष्टिगत करते हुए हम इन वास्तविकताओं मे से केवल दो का ही लगभग मोहकमात (सरल ज्ञान) की भाषा में वर्णन कर रहे है जिन को न समझने के कारण आवागवन का तथाकथित धर्म विश्वास अस्तित्व में आया।

मानव शरीर में करोड़ों अरबों जीवित प्राणी मौजूद है। हमारे शरीर मे जो रक्त प्रवाहित हो रहा है, वह भी असंख्य लाल और सफ़ेद कणों पर आधारित है। जो खाद्य-पदार्थ हम सब्ज़ियो या मांस के रूप मे लेते है, उसमे लाखो जीवाणु होते है। इनकी बड़ी संख्या पकाने के बाद भी भोजन में जीवित रहती है। दूध, अण्डा, शहद या दूसरे खाद्य पदार्थों की भी यही स्थिति है। जो पानी हम पीते है, उसके माध्यम से भी हम प्रतिदिन लाखों करोड़ो जीवों को अपने शरीर मे प्रविष्ट कराते है। यह समस्त आहार मानव शरीर के कारख़ाने मे दाखिल होकर विभिन्न प्रक्रियाओ से गुज़रता हुआ रक्त बनता है या मल, मूत्र, आंसू, पसीना इत्यादि के रूप मे बाहर निकल जाता है। पुरुष की पीठ मे जो जीव–कण इकट्ठा होते है, उनमे से कोई ऐसा भी होता है जो स्त्री की देह मे दाख़िल होकर, परवरिश पाकर एक नये मानव का रूप धारण करता है। जो कण हमारे आसुओ, या मल–मूत्र आदि के रूप मे शरीर से विसर्जित होते है, वे कही खाद मे शामिल होकर विभिन्न पेड़ पौधो के शरीर मे पहुच जाते है, जहा से कही वे चौपायो के भोजन के रूप मे उनके पेट मे पहुचते है। इनमे ऐसे जीव–कण भी होते है जो चौपायो के बच्चों के रूप मे प्रकट होते है। फिर उन पशुओ के द्वारा विसर्जित पदार्थों के रूप मे भी यह जीव-कण बिखर जाते है। कही चीटियो, मक्खियो, कीड़ो मकोड़ो के आहार के रूप मे उनके शरीर मे प्रविष्ट होते है। बहुत से मासाहारी जानवर दूसरे जानवरो को खाते है। मिसाल के तौर पर दरिन्दे जब चौपायो को खाते है तो यह कण उनके शरीर मे स्थानान्तरित होते है। कुछ उनके बच्चो के रूप मे खारिज होते है और कुछ मल–मूत्र के साथ विसर्जित होकर मिट्टी मे मिलकर फिर पेड़ पौधो

में पहुंचते है। उनके द्वारा फिर किसी और जगह किसी और मनुष्य के भोजन के रूप में उसके शरीर में स्थानान्तरित होते हैं। इस प्रकार यह एक असीमित और अन्तहीन जीवन का चक्र है जो महाप्रलय तक जारी रहेगा। जीव–कण विभिन्न रूपों, शरीरों से गुज़रते और यात्रा करते रहते है और यात्रा की हर अवस्था पर लाखों कणों में से केवल एक किसी मनुष्य, पशु या पेड़–पौधे के शरीर से गुज़रते हुए किसी और शरीर की ओर स्थानान्तरित होने की अपनी प्रक्रिया जारी रखते हैं, जब तक कि उनकी मंज़िल न आ जाये। यू समझिये कि पुरूष की पीठ से केवल एक जीव–कण स्त्री के गर्भाशय में दाखिल होकर बच्चे के रूप में प्रकट हुआ। यह कण अपनी मंज़िल को पहुंच चुका, लेकिन इसी मनुष्य के शरीर से निष्कासित होने वाले अन्य लाखों करोड़ों जीव–कण विभिन्न स्थानों पर विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होते हैं। इनके फोकस के द्वारा मिट्टी में मिलकर एक पेड़ में बहुत से कण पहुंचे। अब इनमें से केवल एक की मंज़िल आयी जो उस पौधे के रूप में प्रकट हुआ। अन्य सभी कण जो उस पौधे की पत्तियों और नाड़ियों में विभिन्न रूपों में विद्यमान है, उनकी मंज़िल अभी नहीं आयी। मान लीजिये वह किसी बकरे का भोजन बनते हैं। अब बकरे के शरीर में प्रविष्ट होने वाले जीव–कणों में से केवल एक की ही मंज़िल आयी जो किसी बकरी के शरीर में जाकर उसके बच्चे के रूप में प्रकट हुआ। शेष कण बकरे को खाने वाले किसी और जीव के शरीर में दाखिल हुए। यहां भी केवल एक की मंज़िल आयी, बाक़ी फिर कहीं और स्थानान्तरित हुए। बकरी का दूध पीने वाले इंसानों के शरीर में प्रवेश पाने वाले जीव–कणों में से कुछ की मंज़िल आयी और अन्य कहीं उन इन्सानों के मल मूत्र के रूप में स्थानान्तरित हो गये। इस तरह यह क्रम चलता रहता है। यह है आवागमन की एक हक़ीक़त जैसे हम किसी जगह यात्रा करने के लिये भांति–भांति की सवारियां बदलते हैं–ट्रेन, टैक्सी और रिक्शा से गुज़रते हुए अपनी मंज़िल पर पहुंचते हैं और इन सवारियों में से कोई भी हमारी मंज़िल नहीं होती। इसी प्रकार विभिन्न जीव–कण विभिन्न सवारियों (प्राणियों) में से गुज़रते हुए अपने अन्तिम गन्तव्य पर पहुंचते हैं। पिछले सब पड़ाव उनके वाहन थे। जीव–कणों का विभिन्न प्रकार के पौधों, पशु–पक्षियों और मानवदेह के रूप में प्रकट होना या उनके शरीरों से गुज़रना ही 'आवागमन' है। कोई जीव–कण लाखों शरीरों से गुज़र कर अपनी मंज़िल पाकर किसी रूप में प्रकट हो जाता है और न जाने कितनों ने आज तक अपनी मंज़िल ही नहीं पायी।

क़ुदरत की कारीगरी पर जितना बारीकी से चिन्तन करें, अक्ल की हैरानी बढ़ती जाती है और क़ुरआनी चेतावनियों का स्वर कानों में गूंजता है : **''क्या तुम फिर ग़ौर नहीं करते?'' ''क्या फिर तुम चिंतन नहीं करते?'' ''क्या फिर तुम दूरदर्शिता से नहीं सोचते?'' ''क्या फिर तुम अल्लाह को याद नहीं करते?'' ''क्या फिर**

तुम मन की आंख नहीं रखते?'' ''क्या फिर तुम विवेक नहीं रखते?''

जब सृष्टि के कुशल प्रबन्धक की तत्वदर्शितापूर्ण व्यवस्था के अनुरूप एक मनुष्य के रूप में एक जीव–कण ने अपनी मंज़िल प्राप्त कर ली तो उसकी यात्रा समाप्त हुई। अब इस मनुष्य को अपने मालिक के बताये हुए रास्ते पर जीवन बिताना है। उसकी मौत के बाद आने वाले दूसरे जीवन में स्थायी पुरस्कार व दण्ड स्वरूप उस को किसी और प्राणी के रूप में 'इस ससार में' जन्म नही लेना है। हा, मनुष्य के शरीर से जो दूसरे जीवधारी गुज़रे है और जिनकी यात्रा अभी समाप्त नही हुई है, वे अपने पड़ाव की ओर अग्रसर हैं। इसकी मिसाल को रसूल मक़बूल (सर्वप्रिय, चयनित ईशदूत) सल्ल० की निम्नलिखित हदीस से समझें:

''ह० अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि रसूले करीम सल्ल० ने फ़रमाया– मुझको एक के बाद दूसरे हर काल के आदम की सन्तान के सर्वश्रेष्ठ वर्गों में हस्तान्तरित किया जाता रहा, यहां तक कि मैं इस वर्तमान काल में पैदा किया गया।'' 13

अर्थात हुज़ूर नबी करीब सल्ल० के पवित्र जीवन का ज्योतिर्मय जीव–कण (नूरानीज़र्रा) ह० आदम अलै० से लेकर आप (सल्ल०) के शुभ जन्म तक हर युग के श्रेष्ठतम मानव शरीरो से गुज़रता हुआ अन्ततः आप (सल्ल०) के पवित्र शरीर के रूप मे प्रकट हुआ।

'जीव–कण' हमारा अपना तय किया हुआ पारिभाषिक शब्द है। इसका कोई वैज्ञानिक आधार नही है, लेकिन यह ध्यान रखिये कि विज्ञान का 'विकास का सिद्धान्त' और 'उत्पत्ति सम्बन्धी सिद्धान्त' दोनो अभी अपूर्ण है और स्वयं विज्ञान इनके मात्र दृष्टिकोण होने या अपूर्ण सिद्धान्त होने को स्वीकार करता है। पिछले पृष्ठो मे हमने जो कुछ वर्णन किया है वह निम्नलिखित हदीसो पर आधारित है :

''इब्ने बब्बास रज़ि० से रिवायत है कि मक़ामे नोमान में अरफ़े के दिन आत्माओं से संकल्प लिया गया था और आदम अलै० की सुलब (पीठ) से निकाल कर कणों की तरह फैला दिया गया था और उन से यूँ गुफ़्तुगू हुई थी– बताओ क्या मैं तुम्हारा रब नहीं? सब आत्माएं कहने लगीं–क्यों नहीं अवश्य।'' 14

''ह० अत्तार रज़ि० फ़रमाते हैं–मीसाक़ (संकल्प) के समय आत्मायें ह० आदम अलै० की पीठ से निकाली गयी थीं, फिर पीठ में लौटा दी गयी। ज़िहाक रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने जिस दिन ह० आदम अलै० को पैदा किया,

उसी दिन उनकी पीठ से प्रलय तक की दुनिया में आने वाली सब आत्मायें च्यूंटियों की तरह निकाल कर उनसे अपने ईश्वरत्व की स्वीकृति ले ली थी और फ़रिश्ते गवाह बन गये थे।'' [15]

ऊपर लिखित हदीस विभिन्न शैलियों में विभिन्न सनदों के साथ बयान हुई है। इन हदीसों से ज्ञात होता है कि प्रलय तक आने वाले समस्त मानव जीवन बारीक कीड़ों के रूप में ह० आदम अलै० की पीठ में विद्यमान थे, जिसे इन हदीसों में कणों की तरह या च्योंटियों के समान जैसे शब्दों में समझाया गया है। इसी का नाम हम ने अपनी पारिभाषिक शब्दावली में 'जीव-कर्ण' रखा है। इन जीव-कणों के विभिन्न वर्गों से गुज़रने का ज़िक्र जिस हदीस में आया है, वह पहले नक़ल की जा चुकी है।

इस हदीस में 'आदम अलै० की सन्तान' के शब्दों का प्रयोग होने से यह समझ में आता है कि रसूलुल्लाह सल्ल० को आदम अलै० की सन्तान के सर्वश्रेष्ठ वर्गो में **हस्तान्तरित** किया जाता रहा, लेकिन यहां यह संकेत मौजूद है कि अन्य मानव-जीवन आदम अलै० की सन्तान के बजाय दूसरे वर्गों में भी स्थानान्तरित होते रहे होंगे-वैसे सर्वज्ञानी तो ईश्वर ही है।

आज के वैज्ञानिक युग से पहले इस 'मु-तशाबिहात' के तत्व ज्ञान के खुलने का अंजाम आवागमन के धर्म-विश्वास के रूप में प्रकट हुआ। प्रत्येक ईश्वर-प्रेषित ग्रन्थ में दो ज्ञान रखे गये थे-एक 'मोहकमात' (मन्त्र) का और दूसरा 'मु-तशाबिहात' (तन्त्र) का। दूसरा ज्ञान किसी और युग के लिये था। उस समय इसे खोलने की अनुमति नहीं थी। अन्तिम सन्देष्टा ह० मोहम्मद सल्ल० के पावन शारीरिक युग के चौदह सौ वर्ष बाद, काबे की दुर्घटना के बाद दूसरा युग आरम्भ होने वाला था, जिसमें मु-तशाबिहात के ज्ञान के रहस्यों को क्रमशः खुलना था। इस दूसरे युग को हमने कैसे सुनिश्चित कर लिया, इसके सुबूत हम क़ुरआन और हदीस की रौशनी में किसी अन्य अवसर पर प्रस्तुत करेंगे। इस समय केवल इतना समझ लें कि मानव बुद्धि और विवेक जब तक वैज्ञानिक युग आ जाने के बाद परिपक्व नहीं हुआ, उस समय तक मु-तशाबिहात के ज्ञान को खोलने के प्रयास आवागमन के धर्म विश्वास जैसे भटकावों के रूप में बरामद हुए। क़ुरआन से पूर्व विश्व के अन्य सभी धर्मों के बिगाड़ और उनकी दन्तकथाओं के पीछे यही वास्तविकता काम कर रही थी कि उनहोंने मु-तशाबिहात के ज्ञान को समय से पहले खोलने का प्रयास किया था।

आवागमन की पृष्ठभूमि में एक और तथ्य :

आवागमन के विकृत धर्म-विश्वास के पीछे जो वास्तविकतायें छिपी हुई थी और जिनको

समझ न पाने के कारण यह भ्रमात्मक विश्वास अस्तित्व में आया, उनमें से एक का विस्तार से वर्णन ऊपर किया गया। अब आवागमन का एक और रहस्यमय तथ्य देखिये और विचार कीजिये कि किस तरह साफ़ सुथरी धारणाएं समझ में न आ सकने के कारण गुमराहियों में तब्दील हो जाती हैं। इस विचार के समर्थन में कुछ अवतरण समूह हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं :

सनातन धर्म की अलंकृत भाषा में जिसके विषय में ऋग्वेद ने हमें पहले ही सावधान किया था कि-**''मैं स्तोता द्वारा वाणी को अलंकृत करता हूं।''** [16]

''कठ मन्त्रायणी और अपिष्ठल आदि वेद की शाखाओं में एक सौ एक मृत्युओं का उल्लेख है। इनमें इन्द्रिय, वध, रोग, शोक और काम, क्रोध आदि सौ मृत्युएं हैं, इन सबका प्रतिकार (चिकित्सा) है।'' [17]

''वेदों का अभ्यास न करने से, आचार विहीन होने से, आलस्य से, कुधान्य खाने से ब्राह्मण की मृत्यु हो जाती है।'' [18]

''खुली हुई बात यह है कि रोग हो या पाप, अज्ञान हो या आलस्य इन से आदमी की वास्तविक मौत नहीं होती, किन्तु रोग उसके पूर्णतया स्वस्थ शरीर की 'अलंकृत मौत' अवश्य है तथा पाप उसके आदर्श मानव चरित्र की 'अलंकृत मौत' है। अज्ञान, मान्सिक शक्ति की मौत है और आलस्य, कर्मशक्ति की; लेकिन चिकित्सा शरीर को, विशुद्ध ज्ञान मस्तिष्क को और संताप (तौबा) आत्मा को इसी लोक में पुनर्जन्म प्रदान कर सकते हैं।'' [19]

''पाप द्वारा अन्दर ही अन्दर हमारे ही हाथों हमारी मानवता किस प्रकार बार-बार मर रही और आत्मा पशु बन रही है। एक आदमी जैसे ही लालच और जाति के प्रति युद्ध का अपराध करता है, ख़ुदा की नजर में यह पाप उसकी आत्मा को कुत्ते का कुरूप दे देता है। जीते जी, इसी लोक में क्योंकि कुत्ता उन दुर्गुणों का प्रतीक है, अश्लील कामवासना जैसे आत्मा को उस जुर्म के प्रतीक सुअर जैसा बना देती है, मूर्खता गधे जैसा, दानवता सर्प जैसा, हिंसक प्रवृत्ति बिच्छू जैसा आदि-आदि, किन्तु यह आत्मा का योनि परिवर्तन ब्रह्मान, (रहमत वाले रहमान) की ओर से सज़ा, वास्तविक दण्ड नहीं होता, वह तो परलोक में पापियों पर पूरी तरह जुर्म सिद्ध करके ही देगा।'' [20]

यह थी आवागमन की पृष्ठभूमि में एक और वास्तविकता। वेदों में तो साफ़-साफ़ केवल एक बार दूसरे स्थायी जीवन का ही वर्णन है, जैसा कि हम पिछले पृष्ठों में हिन्दू अनुसंधानकर्ताओं और वेदों के दृष्टांत प्रस्तुत करके बता चुके हैं; लेकिन वेदों की

कुछ शाखाओ में सैकड़ों मौतों का उल्लेख मिलता है। इस संसार के इसी शरीर में बार–बार आध्यात्मिक रूप से मरकर विभिन्न पशु प्रकृतियों का अपनाना मानो वैसा ही पशु बन जाने के तुल्य है, यह वास्तविकता न समझने के कारण इसी संसार में बार–बार शारीरिक मृत्यु को प्राप्त होकर तरह–तरह के जानवरों का रूप धारण करने की धारणा 'आवागमन' बन गयी।

यह एक उदाहरण है कि किस प्रकार मूल ग्रन्थों की वास्तविक शिक्षाओं की ओर ध्यान आकर्षित कराके बिगड़ी हुई और भटकाने वाली धर्मनिष्ठाओं में विश्वास रखने वालों को साफ़ सुथरी धार्मिक निष्ठाओं पर लाया जा सकता है।

सन्दर्भ–सूची अध्याय : 11

1. 'उपनिष्दों की भूमिका' – ले०: डा० राधाकृष्णन, प्र०: राजपाल एण्ड संस–देहली
2. 'कल्यान–गोरखपुर' – परलोक एवं पुनर्जन्म अंक, जनवरी 1969, पृ०: 164
3. – – – उपरोक्त – – – पृ०: 165
4. – – – उपरोक्त – – – पृ०: 165
5. 'दर्शन–दिग्दर्शन', पृ०: 4०3
6. 'पुनर्जन्म और वेद' सं०: वेद और पुनर्जीवन, ले०:पं० दुर्गाशंकर सत्यार्थी, प्र०: हिन्दी पत्रिका कान्ति', 8 जुलाई 1969
7. 'आवागवन' सं०:उपरोक्त
8. पं० दुर्गाशंकर सत्यार्थी–सं०: उपरोक्त
9. हिन्दी पत्रिका 'कान्ति', 8 जुलाई 1969
10. – – – उपरोक्त – – –
11. – – – उपरोक्त – – –
12. – – – उपरोक्त – – –
13. 'बुख़ारी' सं०: मिशकात, अ०: सय्यदुल मुरसलीन सल्ल०
14. 'तफ़सीर इब्नेकसीर' – उर्दू अनुवाद, सं०: 2 प्र०: एतेक़ाद पब्लिशिंग हाउस–देहली
15. 'रुहों से मिलिये–ख़्वाबों को समझिये'–पृ०: 253, अनु०: किताबुर्रुह, ले०: अल्लामा हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह०, अनुवादक: मौ० राग़िब रहमानी, प्र०: मकतबा अलफ़लाह–देवबन्द
16. हिन्दी पत्रिका–मार्गदीप, अप्रैल 1977, पृ०: 8
17. 'कल्याण'–गोरखपुर, परलोक पुनर्जन्म अंक, जनवरी 1969, पृ०: 16
18. तन्त्र महाविज्ञान I, ले०: पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, पृ०: 98
19. हिन्दी पत्रिका मार्ग–दीप, अप्रैल 1977, पृ०: 8
20. – – – उपरोक्त – – – पृ०:10–11

-----❖❖❖-----

अध्याय : 12

वेदों की कुछ अन्य शिक्षाएं

जुए का निषेध :

''जुआ खेलनेवाले व्यक्ति की सास उससे घृणा करती है और उसकी पत्नी भी उसे छोड़ देती है, जुआरी को कोई एक फूटी कौड़ी भी उधार नहीं देता।'' –(ऋ०: 10–34–3)

इसके बाद निरन्तर तीसरे मन्त्र से तेरहवें मन्त्र तक जुए की व्यक्तिगत और सामाजिक हानियों को गिनाकर तेरहवें मन्त्र में कहा गया :

''हे जुआरी! जुआ खेलना छोड़कर खेती कर, उसमें जो लाभ हो उसी में सन्तुष्ट रह।'' –(ऋ०: 10–34–13)

मद्य निषेध :

''शराब पीने के बाद उसका नशा शराब पीने वाले के हृदय में अपनी जगह बनाने के लिये संघर्ष करता है।'' –(ऋ०: 8–2–12)

''हे ईश्वर तपस्या न करने वाले मनुष्य शराब पीकर मदहोश हो जाते हैं और वे तुम्हें कष्ट पहुचाने की ओर आसक्त होते हैं, इसलिये तुम ऐसे लोगों को धन होने पर भी अपना सहारा नहीं देते।'' –(ऋ०: 8–21–14)

ब्याज का निषिद्ध होना :

''अधिक धन प्राप्त करने की आशा से धन उधार देने वालों के धन को (हे ईश्वर) तुम छीन लेते हो।'' –(ऋ०: 3–53–14)

विवाह संस्कारों में सरलता का आदेश:

''जिन पथों से हमारे मित्र, सम्बन्धी कन्या के पिता के पास पहुंचते हैं, उन मार्गों को कांटों से साफ़ और सरल करो।'' —(ऋ०: 10–85–23)

पुरुषों को स्त्रियों के वस्त्र पहनने पर रोक :

यदि पति. पत्नी के कपड़े पहने तो उस पर जादुई शक्तियों का प्रकोप होता है।'' —(ऋ०: 10–85–30)

नारी के घरेलू जीवन का आदेश :

''वहां तुम सबसे कुशल गृहणी बनो और पति के घर में रहते हुए घर के नौकरों पर राज करो। हे नारी! पति के घर में मां बनकर सुख पाओ, पति से प्रेम के सम्बन्ध स्थापित करो और वृद्धावस्था तक अपने घर में राज करो।''

—(ऋ०: 10–85–25, 26, 27)

नारी की लज्जा के आदेश :

''चूंकि ब्रह्म ने तुम्हें नारी बनाया है, इसलिए नज़रें नीची रखो, ऊपर नहीं, अपने पैरों को समेटे हुए रखो, ऐसा वस्त्र पहनो कि कोई तुम्हारा शरीर न देख सके।'' —(ऋ०: 8–33–19)

❖❖❖

दिव्य सन्देश

और हे नबी, आस्था लाने वाली नारियों से कह दो कि अपनी नज़रें बचा कर रखें, और अपनी लज्जा इन्द्रियों की सुरक्षा करें, और अपना बनाव-सिंघार न दिखाएं उसके अतिरिक्त जो स्वयं प्रकट हो जाए, और अपने सीनों पर अपनी ओढ़नियों के आँचल डाले रहें...'' (क़ु0: 24–31)

अध्याय : 13

हदीसें और पुराण: भविष्यवाणियों की समानता

विभिन्न पुराणों में कलियुग (वर्तमान युग) के अन्त के समीप संसार में व्याप्त दोषों का सविस्तार वर्णन है। हम निम्नलिखित में हरिवंश पुराण और विष्णु पुराण के कुछ भाग उद्‌घृत करके हदीसों में वर्णित अन्तिम युग में व्याप्त परिस्थितियों की भविष्यवाणियों से इसकी तुलना कर रहे हैं।

हदीस:

''ह० जाबिर रज़ि० कहते हैं कि रसूले करीम सल्ल० को यह फ़रमाते सुना कि क़ियामत (प्रलय) आने से पूर्व झूठों की पैदाइश बढ़ जाएगी अत: उन से बचे रहना।'' —(मुस्लिम)

''ह० अबू हुरैरा रज़ि० का कथन है आप सल्ल० ने फ़रमाया—जब अमानत (धरोहर) बरबाद की जाने लगे तो क़ियामत की प्रतीक्षा करना। प्रश्न हुआ कि अमानत कैसे बरबाद होगी? फ़रमाया जब शासन और राज्य का काम-काज अयोग्य लोगों के सुपुर्द हो जाये तो क़ियामत की प्रतीक्षा करना।'' —(बुख़ारी)

''ह० अबू हुरैरा रज़ि० का कथन है कि रसूले अकरम सल्ल० ने फ़रमाया जब 'माले ग़नीमत'* को दौलत ठहराया जाने लगे.. जब पति, पत्नी की आज्ञाकारिता करने लगे... जब क़ौम व जमाअत के कर्ता–धर्ता उस क़ौम व जमाअत के कमीने व्यक्ति होने लगें... और जब आदमी का सम्मान उस की दुष्टता और उपद्रव के भय से किया जाने लगे।'' —(तिरमिज़ी)

* धर्मयुद्ध के पश्चात विजयी होने वाली सेना को मिलने वाली सामग्री जो शत्रु द्वारा रणभूमि में छोड़ दी जाती है।

"ह० अनस रज़ि० कहते हैं कि मैंने रसूले करीम सल्ल० को यह फ़रमाते सुना है कि निस्संदेह महाप्रलय के लक्षणों में से यह है कि ज्ञान उठा लिया जायेगा। अज्ञानता की बहुतायत हो जायेगी। पुरुषों की संख्या कम हो जायेगी। स्त्रियों की संख्या बढ़ जायेगी। यहां तक कि पचास स्त्रियों की देखरेख करने वाला एक पुरुष होगा।" —(बुखारी व मुस्लिम)

हरिवंश पुराण और विष्णु पुराण:

"अनावश्यक होने पर भी लोग झूठी प्रतिज्ञा करेंगे और शपथ लेंगे। कलियुग में राजा अपनी इन्द्रियों के दास बनकर प्रजारक्षण से परामुख हो जायेंगे।"

"वास्तविक क्षत्रियों का राजसिंहासन पर अधिकार नहीं रहेगा और ब्राह्मण शूद्रों की जीविका अपनायेंगे। संसार में सभी लोग चौर्य वृति का अवलम्बन करके परस्पर एक दूसरे का धन अपहरण करते हुए अल्पआयास से ही धनी बन जायेंगे। नीचे दर्जे के लोग ही नहीं, ऊँची श्रेणी वाले भी ऋण लेकर हड़प कर जायेंगे। उस समय धन की पूजा होगी—सज्जन उपेक्षणीय समझे जायेंगे और पतितों की कहीं निन्दा नहीं की जायेगी।"

"उस युग के अन्त में यही दशा दिखाई पड़ेगी। ब्राह्मण धर्म को बेचने वाले हो जायेंगे, विशिष्ट—जन और पामर—जनों से लेकर साधारण लोग तक ब्रह्मवाद के बहाने कर्मभ्रष्ट हो जायेंगे।"

"कलियुग में ब्राह्मण तपस्या और यज्ञों के फल को बेचेंगे। महिलायें अपने सौन्दर्य को बेचने लगेंगी। पूरी पृथ्वी कुंठा नारियों से भर जायेगी। स्त्रियां धनहीन पति का त्याग करेंगी और धन को ही पति बनायेंगी। कामान्धता की यह दशा होगी कि पांच या सात वर्ष की लड़की और आठ या दस वर्ष के लड़कों के सन्तानें होने लगेंगी। शूद्रगण मद्य—माँस त्यागने का बहाना करके श्वेतदन्त और सूक्ष्मदर्शी कहलायेंगे, लेकिन वास्तव में वेदविरूद्ध आचरण करेंगे। स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक हो जायेगी।"

-----❖❖❖-----

नोटः हरिवंश पुराण और विष्णु पुराण के प्रस्तुत विषय हमने इन दोनों पुराणों में पं०श्रीराम शर्मा द्वारा लिखित भूमिका से लिए हैं।

अध्याय : 14

वैदिक धर्म में काबे की हक़ीक़त

अहमद सल्ल० की चर्चा हो, मोहम्मद सल्ल० का ज़िक्र हो, अन्तिम ज्ञान (क़ुरआन) का उल्लेख हो और काबे का ज़िक्र न हो, यह कैसे मुमकिन है? हम पहले भी बता चुके हैं कि हिन्दू क़ौम का काबे से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। उनकी विभिन्न परिक्रमा रूपी ्जायें इसी को दर्शाती हैं। धुंधले से संकेत बाक़ी रह गये हैं, वास्तविक काबे को यह भूल चुके हैं। उनके पुराने और महत्वपूर्ण मन्दिरों का काबे की दिशा में निर्मित होना (जिसकी वजह उन्हें ज्ञात नहीं है), इसका स्पष्ट प्रमाण है। वेदों और पुराणों में काबे के लिये बहुत से अलग—अलग नाम हैं।

आज भी अनेक हिन्दू विशिष्ट—जन इस तथ्य से परिचित हैं, लेकिन जनसाधारण को ज्ञान नहीं है। वेद मन्त्रों के उपलब्ध अनुवादों से वेदों में काबे के वर्णन को स्पष्ट रूप से अलग करना लगभग असम्भव है। इसके अतिरिक्त वेदों में 'काबे की वास्तविकता' बहुत विस्तृत और जटिल विषय है जिसके पूरे वर्णन के लिये एक अलग किताब की आवश्यकता है। बहरहाल, काबे के लिये वेदों और पुराणों में जो शब्द प्रयुक्त हुए हैं, उनका विश्लेषण हम निम्नलिखित में प्रस्तुत कर रहे हैं, जिससे कम से कम यह सिद्ध हो सके कि काबे का विवरण कई नामों से हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में सविस्तार मौजूद है। काबे को वेदों और पुराणों में जिन नामों से सम्बोधित किया गया है वे यह हैं:

- इलास्पद
- नाभा पृथिव्या
- आदि पुष्कर तीर्थ
- मक्तेश्वर
- इलायास्पद
- नाभीकमल
- दारु काबन

यह समस्त नाम वेदों और पुराणों में ऐसे महान तीर्थ के लिये इस्तेमाल हुए हैं जिसका स्थान और अता पता ज्ञात नहीं है। जी नहीं, ऐसा नहीं है कि हज़ारों वर्ष प्राचीन या इतिहास पूर्व होने के कारण इसके स्थान का पता ज्ञात नहीं रहा। हिन्दू ग्रन्थों में वर्णित अन्य समस्त स्थलों और विशाल व्यक्तित्वों को अपनेपन और श्रद्धा की भावना से भारत से जोड़ लिया जाता है, चाहे उनका कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध न हो।

श्रीराम और श्रीकृष्ण की कोई ऐतिहासिक सनद नहीं है। इसका कोई लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं है कि श्री राम का सम्बन्ध वर्तमान अयोध्या से था और श्रीकृष्ण की जन्मस्थली वर्तमान मथुरा थी लेकिन इन श्रेष्ठ पुरूषार्थों से हिन्दू जन–मानस को इतनी श्रद्धा है कि प्रमाण न होने के बावजूद अयोध्या और मथुरा को इन व्यक्तित्वों का जन्मस्थान ठहराया गया। फिर अब ऐसा क्यों है कि वेदों और पुराणों में वर्णन किये हुए महानतम तीर्थ की हिन्दुस्तान में किसी स्थान पर होने की मान्यता नहीं है। इसका स्थान अज्ञात क्यों माना जाता है? आइये इस तीर्थ के इन सब नामों पर विचार करें :

इलास्पद :

ईल, ईल्यः, इलः, इलाया यह सभी शब्द माबूद (पूज्य) के अर्थ में संस्कृत भाषा और वेदों में इस्तेमाल हुए हैं। इसी की चर्चा हम अध्याय 8 में कर चुके हैं। 'स' यहां अतिरिक्त है और 'पद' का अर्थ है 'स्थान' इस तरह इलास्पद का शाब्दिक अर्थ हुआ इलाह का स्थान। सर मोनियर विलियम की संस्कृत–इंगलिश डिक्शनरी में इलास्पद शब्द के आगे लिखा है 'Name of Tirth' यानी वह एक तीर्थ का नाम है। वेदों के अंग्रेज़ी अनुवादक **ग्रिफ़िथ** ने इसका अनुवाद 'Ila's Place' अर्थात 'इला का स्थान' किया है। उन्होंने **इला** किसी देवता का नाम माना है।

इलायास्पद :

यह शब्द 'इलास्पद' का पर्यायवाची है। पंडित श्री राम शर्मा आचार्य ने वेदों के अपने हिन्दी अनुवाद में इस शब्द का अनुवाद 'पृथ्वी का पवित्र स्थान' किया है।

नाभा पृथिव्या :

नाभा पृथिव्या का मतलब है **नाफ़ेज़मीन** (पृथ्वी की नाभि) और नाफ़े ज़मीन काबे को कहा जाता है, इससे मुसलमान भली भांति परिचित हैं। निम्नलिखित वेदमन्त्र में नाभा पृथिव्या के शब्दों का प्रयोग हुआ है:

'इलायास्त्वा पदे वयं नाभा पृथिव्या अधि'

''हमारा इला का स्थान नाफ़े ज़मीन (पृथ्वी की नाभि) पर है।''

–(ऋ०: 3–29–4)

अब बताइये इलायास्पद कौन सा पवित्र स्थान है? वेदों की इस परिभाषा के बाद क्या कोई शक़ बाक़ी रह जाता है?

ऋग्वेद के 3–29–4 मन्त्र के आगे के समस्त मन्त्रों के अनुवाद अधिक विस्तृत होने की वजह से न देते हुए हम ग्यारहवें मन्त्र को प्रस्तुत कर रहे हैं जो ह० मोहम्मद सल्ल० से सम्बन्धित है और पिछले मन्त्र में काबे के वर्णन की पुष्टि करता है।

''जब अग्नि (अहमद सल्ल०) शारीरिक रूप में प्रकट होते हैं तब वह आसुर (बाद में आने वाले) और नराशंस (मोहम्मद सल्ल०) कहलाते हैं।''

नाभि कमल :

पद्म पुराण में कहा गया है कि यह वह तीर्थ है जहां से सृष्टि की उत्पत्ति का आरम्भ हुआ।

क़ुरआन शरीफ में है कि **''निस्सन्देह! पहला घर जो लोगों के लिये बनाया गया – वही है जो मक्का में है...''** –(क़ु०: 3–96)

सृष्टि रचना की प्रक्रिया में काबे के उदय होने के बारे में हमें हदीस से मालूम होता है :

''ह० अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि०, मुजाहिद रह०, क़तादा रह० और सदी रह० ने फ़रमाया कि आकाश व पृथ्वी के उत्पत्ति काल में जलस्तर से सबसे पहले काबे का स्थान दृष्टिगोचर हुआ। आरम्भ में यह सफ़ेद झाग थे जो जम गये थे फिर इसके बाद पृथ्वी इसके नीचे से फैलाई गई।'' [1]

'नाभि कमल' की 'नाभा पृथीव्या' से शाब्दिक समानता पर विचार कीजिये और पदम पुराण में दी गयी इसकी परिभाषा पर विचार कीजिये क्या यह काबे के सिवा कुछ और हो सकता है?

हरिवंश पुराण में नाभिकमल का वर्णन देखिये, यद्यपि यहां कुछ देवमालाई रंग आ गया है, लेकिन वास्तविकता को इस क़िस्से में से आप आसानी से निकाल सकेंगे।

''भगवान नारायण ने सृष्टि रचना के उद्देश्य से उस कमल को रचकर उसके ऊपर योगियों में श्रेष्ठ समस्त जीवों के सृष्टा, सर्वतोमुख श्री ब्रह्मा जी को विराजमान कर दिया। उसमें समस्त पार्थिव गुण पाये जाते थे। उस (ब्रह्मा जी) का सिंहासन पृथ्वी ही थी। उस (पृथ्वी) के गर्भांकुर (गर्भाशय से निकलने

वाली कोंपलें) पर्वतों के रूप में परिणित हुए... इन पर्वतों का मध्यवर्ती स्थल ही जम्बूद्वीप* के नाम से प्रसिद्ध है, यह द्वीप यज्ञों का स्थल और कर्मभूमि है। उसी नाभि कमल के जो केसर (पंखुड़ियां) हैं, वे ही पृथ्वी के भीतर वाले धातु पर्वतों के रूप में समझना चाहिये... अत्यन्त दुर्गम स्थल है, जो म्लेच्छों (गैर आर्य जातियों) के दलों से व्याप्त हैं। कमल के नीचे शैतानों के लिये पाताल है। इसके भी नीचे उदक नाम का स्थान है जिसे नरक कहा गया है। नाभिकमल के चारों तरफ़ जो केसर थे उसी को एकार्णाव (एकता का केन्द्र) कहा जाता है और उसके चारों ओर पाई जाने वाली जलराशि (ज़मज़म) को चार समुद्र कहा गया है... तत्वज्ञान से सम्पन्न प्राचीन महर्षियों ने भगवान नारायण के महापुष्कर प्रादुर्भाव का वृतांत इसी प्रकार बतलाया है। उनका यह नाभि कमल ही संसार की उत्पत्ति का मूल होता है। उन भगवान के इसी नाभि कमल द्वारा पर्वत, नदी और जगत के विभिन्न प्रदेशों का आविर्भाव हुआ था।'' [2]

आदि पुष्कर तीर्थ :

इसका शाब्दिक अर्थ है–**'पालन पोषण करने वाले का प्राचीनतम तीर्थ।'** यह भी पदमपुराण में नाभिकमल के लिये इस्तेमाल हुआ है।

''जो मन से भी पुष्कर तीर्थ के सेवन की इच्छा करता है, उस मनस्वी के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं... जो पुष्कर तीर्थ की यात्रा करता है, वह अक्षय फल का भागी होता है... ऐसा मैंने सुना है... सब तीर्थों में पुष्कर ही आदि तीर्थ बताया गया है... ज्येष्ठ पुष्कर में जाकर स्नान करने से मोक्ष का भागी होता है।'' [3]

जहां स्नान करने का वृतात आया है, वह 'आबे ज़मज़म' का प्रसंग मालूम होता है। इससे पूर्व पृष्ठ 95 पर कहा गया है कि **''यह ऋषियों का परम गोपनीय सिद्धान्त है।''**

दारु काबन :

संस्कृत में 'दार' का अर्थ है पत्नी, और ... नगल को कहते हैं। बाईबिल में यूहन्ना के प्रकाशित वाक्य के 12 वें अध्याय में काबे को स्त्री कहा गया है और मक्के को क़ुरआन में 'उम्मुलक़ुरा' (बस्तियों की मा) कहा गया है और अरब को नगल कहा जाता है। इस जटिल व्याख्या को छोड़ते हुए कि किस ... दारू काबन का अर्थ

* जम्बू द्वीप = ज+अम्बू+द्वीप (जीवन+जल+द्वीप) अर्थात ऐसा पानी ... से जीवन का आरम्भ हुआ अर्थात 'काबा'

नोट: कोष्टक के शब्द लेखक के अपने है।

काबा होता है, आप प्रत्यक्ष रूप से दारू काबन का डिक्शनरी में अर्थ देखें। नालन्दा विशाल शब्द सागर में इस शब्द के आगे जो माने लिखे हैं वह यह है :

''एक वन का नाम जिसे तीर्थ समझा जाता है।''

इस शब्द का जिस वेदमन्त्र में प्रयोग हुआ है, उसका अनुवाद देख लीजिए :

''हे उपासक! दूर देश में समुद्र तट पर जो दारू काबन है, वह किसी मनुष्य से निर्मित नहीं है। इसमें आराधना करके उनकी कृपा से बैकुण्ठ को प्राप्त हो।'' –(ऋ० : 10–155–3)

उक्त वेदमन्त्र स्वयं बता रहा है कि दारू–काबन कहां है?

मक्तेश्वर :

मक्के के इस तीर्थ को दारू कहकर इसके विषय में लिखा है कि यह तीर्थ इस देश में नहीं है। [4]

सर मोनियर विलियम्स की संस्कृत–इंग्लिश डिक्शनरी से एक शब्द का अर्थ देख लेना पर्याप्त होगा।

मख '*The City of Mecca,' Yagya* अर्थात मक्का शहर, यज्ञ की जगह।

मक्तेश्वर का अर्थ हुआ... ईश्वर का मक्का या ईश्वर के लिये यज्ञ का स्थान।'

यह कुछ मिसालें थीं जिनका हमने संक्षेप में वर्णन किया। इनके अतिरिक्त भी विभिन्न स्थानों पर काबे के लिये अलग–अलग नाम आते हैं जैसे सीता, मन्दार–वृक्ष और जम्बू–द्वीप इत्यादि।

सन्दर्भ–सूची अध्याय : 14

1 मारफ़ते काबा, पृ० : 5, ले० : रहबर फ़ारुक़ी, सं० : तफ़सीर–मवाहिबुर्रहमान, ले० : मौ० अमीर अली, खं०: 4, पृ० : 15
2 हरिवंश पुराण, भाग : 2, पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, पृ० : 499–501
3 'कल्याण' – गोरखपुर पदम पुराण नम्बर, अक्टूबर 1944, पृ० : 96
4 'कल्याण' जनवरी 1980, पृ० : 225

-----❖❖❖-----

''शुद्धता एवं पवित्रता 'ईमान' का आधा हिस्सा है।''

(मुस्लिम)

अध्याय : 15

वेदों में हज़रत मोहम्मद सल्ल० का मक़ामे महमूद (परम पद)

आँहज़रत सल्ल० का आस्मानी नाम **'अहमद'** और धरती का नाम **'मोहम्मद'** है। सासरिक युग के बाद आप (सल्ल०) को परम पद पर आसीन किया गया है जिसकी हम सभी अज़ान के बाद दुआ करते हैं। वेदों में आप (सल्ल०) के तीनो पदों का उल्लेख है:

''जिस अग्नि का व्यापक रूप (बिना शरीर की आत्मा) कभी नष्ट नहीं होता उसे (बिना शरीर की आत्मा) तनूनपात कहते हैं (यह अहमदी पदवी का उल्लेख है) जब वह साक्षात (शरीरधारी) होते हैं, तब आसुर (सबसे बाद में आने वाला) और नराशंस (मोहम्मद सल्ल०) कहलाते हैं और अन्तरिक्ष में अपने तेज को फैलाते हैं, तब 'मातरिश्वा' होते हैं। जब वह प्रकट होते हैं, तब वायु के समान (आत्मिक) होते हैं।'' – (ऋ० 3-29-11)

ऊपर वाले मन्त्र में मातरिश्वा आप (सल्ल०) के तीसरे पद का नाम है और स्पष्ट है कि यह 'परमपद' है। वेदों के अगेजी अनुवादक गिरिफ़िथ ने लिखा है कि यह सबसे रहस्यमय शब्द है। एक ही मन्त्र मे इन तीनो पदो के एक साथ वर्णन के दो उदाहरण और देखिये

नोट: उपरोक्त वेद मन्त्रो के अनुवाद मे कोष्टक के भीतर के शब्द लेखक के अपने है।

''अग्नि का प्रथम जन्म स्वर्गलोक में विद्युत (नूर) के रूप में हुआ। उनका द्वितीय जन्म हम मनुष्यों के मध्य हुआ, तब वे जातवेद (अर्थात जन्म से विद्वान–ज्ञानी 'उम्मी') कहलाए। उनका तृतीय जन्म जल में (वेदों में जल आत्मवाद का लक्षण है) हुआ। मनुष्यों का हित करने वाले अग्नि सदा प्रज्जवलित होते हैं। उनकी स्तुति (नअत) करने वाले उनकी ही सेवा करते हैं।'' –(ऋ० 10-45-1)

''हे अग्नि! हम तुम्हारे तीनों रूपों के ज्ञाता हैं। जहां–जहां तुम्हारा निवास है, उन स्थानों को भी हम जानते हैं। हम तुम्हारे निगूढ (अत्यन्त गोपनीय) नाम और तुम्हारे उत्पन्न होने के स्थान को भी जानने वाले हैं। तुम जहां से आते हो यह भी हम जानते हैं।'' –(ऋ० 10-45-2)

-----❖❖❖-----

मुक्ति का मार्ग

आ ग़ैरियत के परदे इक बार फिर उठा दें
बिछड़ों को फिर मिला दें नक़शे दूई मिटा दें
सूनी पड़ी हुई है मुद्दत से दिल की वस्ती
आ इक नया शिवाला इस देश में वनादें
दुनिया के तीरथों से ऊंचा हो अपना तीरथ
दामाने आसमां से इस का कलस मिलादें
हर सुब्ह उठ के गाएं मंत्र वह मीठे मीठे
सारे पुजारियों को 'मै' पीत की पिलादें
शक्ति भी शांति भी भक्तों के गीत में है
धरती के वासियों की मुक्ति प्रीत में है

—इक़बाल

अध्याय : 16

वैदिक धर्म में काना दज्जाल (अन्धक-आसुर)

दज्जाल का प्रकट होना क़यामत (महाप्रलय) की निशानियों में से एक है। विभिन्न हदीसों से यह ज्ञात होता है कि शैतान (दानव), मानव देह में दज्जाल (महारावण) बन कर निकलेगा। वह बेपनाह शक्तियों का मालिक होगा और कोई उसके मुक़ाबले पर टिक नहीं सकेगा। वह समस्त पृथ्वीपटल को विजित करता चला जायेगा और अपने आपको 'ख़ुदा' कहलवायेगा। जो लोग उससे अपने ईमान की रक्षा कर सकेंगे, उन्हे स्वर्ग का शुभ समाचार दिया गया है। फिर ह० ईसा अलै० प्रगट होंगे और ह० मेहदी अलै० से फ़ैज़ान (आध्यात्मिक लाभ) प्राप्त करके दज्जाल का वध करेंगे। रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि हर नबी ने अपनी उम्मत को दज्जाल के फ़ितने (उपद्रव) से डराया है। यह संसार का सबसे बड़ा उपद्रव होगा, लेकिन आप (सल्ल०) के फ़रमाने के मुताबिक़ आप (सल्ल०) से पहले किसी नबी ने यह सूचना नही दी कि दज्जाल 'काना' होगा। आप (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया कि दज्जाल, मदीने और मक्के में प्रवेश पाने में सक्षम नहीं होगा। दज्जाल का स्पष्ट वर्णन बाइबिल में भी है। वहा उसे जानवर (Beast) और झूठा नबी (False Prophet) और मसीह का विरोधी (Anti christ)कहा गया है। लेकिन हिन्दू धर्म में उसके काना होने का सकेत है। यद्यपि स्पष्ट शब्दों में काना नहीं कहा गया है--वहां उसे 'अन्धक आसुर' कहा गया है। आसुर यानी बाद में आने वाला और अन्धक यानी अन्धे की तरह। हरिवंश पुराण मे 'अन्धक आसुर' अर्थात दज्जाल का जो वृतॉंत आया है उसे हम उद्घृत कर रहे हैं। पुराणों के आधिकतर भागो की तरह यह भाग भी दंतकथा की शैली धारण कर गया है फिर भी दज्जाल के वृतांत की स्पष्ट झलकियां विद्यमान है। निम्नलिखित अनुच्छेदो में भी

कोष्ठक के भीतर के शब्द हमारे बढ़ाये हुए हैं:

"उसके एक सहस्र हाथ (अर्थात हर प्रकार शक्तियों को क़ाबू में रखने वाला), सहस्र सिर (अर्थात बहुत सूझबूझ रखने वाला) तथा दो सहस्र पांव (अर्थात पृथ्वी के हर भाग पर सरलता से पहुंच जाने वाला) और दो ही सहस्र नेत्र (अर्थात अत्यन्त दृष्टा) थे। दो हज़ार आंखों के होते हुए भी वह दैत्य अहंकार के कारण अन्धे के समान चलता था। इसीलिये वह अन्धक नाम से प्रसिद्ध हुआ।" [1]

"इस प्रकार संसार के उपद्रव ग्रस्त होने पर सभी ऋषिगण उसके मारने में एकमत होकर उपाय सोचने लगे...नारद जी...कहने लगे मन्दार पर्वत (अर्थात मक्के की पहाड़ियों) पर कामगम नामक एक श्रेष्ठ उपवन है, वह उपवन भगवान शंकर (ईश्वर का एक नाम) द्वारा निर्मित हुआ है। शिवजी (ईश्वर का एक नाम) की आज्ञा के बिना वहां कोई नहीं जा सकता...शिवजी की उन प्रथम गण (पहली उम्मत) को कोई भी नहीं मार सकता।" [2]

"उस मन्दार वृक्ष की ऐसी महिमा है...कि वैसा सुख और किसी भी स्थान में उपलब्ध नहीं हो सकता।" [3]

"अन्धकासुर-(अन्धे जैसा-दज्जाल) ने मन्दार पर्वत (मक्के की पहाड़ियों) पर जाने का विचार स्थिर किया और वह अपने साथ बहुत से दैत्यों (शैतानों) को लेकर शिवजी के निवास स्थान (अर्थात ईश्वर के घर) की ओर वेगपूर्वक चल दिया...मन्दार पर्वत (मक्के की पहाड़ियों) से कहा, "अरे पर्वत: तुम जानते हो कि मैं अपने पिता से किसी के द्वारा भी न मारे जाने का वर प्राप्त कर चुका हूं।" (शैतान ने अल्लाह से क़यामत तक की मुहलत ली थी)

...मैं तुम्हें अभी चूर्ण किये डालता हूं...यह कहकर पर्वत का एक शिखर उखाड़ा...वे दानव पर्वत के जिस शिखर को उखाड़ कर फेंकते, वह उन दानवों पर ही गिर कर उन्हें नष्ट करने लगा...अन्धकासुर को अत्यन्त क्रोध हुआ और उसने बड़ा भीष्ण गर्जन करते हुए कहा...मैं उस वन (जंगल या मरूस्थल अरब) के स्वामी को युद्ध के लिये आह्वान कर रहा हूं...यह सुनकर भूतेश्वर भगवान रूद्र...त्रिशूल लेकर (त्रिशूल का आकार शब्द अल्लाह الله की तरह होता है—अर्थात अल्लाह की सहायता लेकर) अन्धकासुर (दज्जाल) को मारने के

नोट: इस कथा को भी इस प्रकार से वर्णित किया गया है कि भविष्य की घटनाऐं अतीत की कहानियां बन गई हैं। कोष्ठक के भीतर के शब्द लेखक के अपने हैं।

लिये प्रथम गणों (पहली उम्मत) और भूतगणों (दूसरी उम्मत) के सहित उसके सामने आ गये।'' 4

''उन्होंने अग्नि रूपी त्रिशूल को अन्धकासुर (दज्जाल) पर चलाया जो कि दैत्यों के राजा के दिल पर बैठा .... मन्दराचल (मक्का) की गई हुई शोभा दोबारा लौट आई।'' 5

सन्दर्भ–सूची **अध्याय : 16**

1. हरिवंश पुराण, खंड : 1, पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, पृ० : 492
2. – – – – उपरोक्त – – – – पृ० : 497–498
3. – – – – उपरोक्त – – – – पृ० : 498–499
4. – – – – उपरोक्त – – – – पृ० : 502–503
5. – – – – उपरोक्त – – – – पृ० : 504

----❖❖❖----

जगत गुरू (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

''ह० अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहाः क़ियामत नहीं आएगी जब तक तीस 'दज्जाल' मिथ्याचारी न पैदा हो लें, उन में हर एक का दावा होगा कि वह अल्लाह का 'रसूल' है (हालांकि वह झूठा और मक्कार होगा)।'' –(तिरमिज़ी)

ईशदूत (सल्ल०) की प्रार्थना

''हे अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं क़ब्र की यातना से, मसीह दज्जाल के फ़ितने (उपद्रव) से और जीवन और मृत्यु के सभी फ़ितने से। हे अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं गुनाह और क़र्ज़ से।'' –(मुस्लिम)

अध्याय : 17

यह रहस्य, रहस्य क्यों रहे?

हिन्दुओं में चली आ रही कुछ निगूढ़ बातें :

मुसलमान अपने आपको ह० मोहम्मद सल्ल० का अनुयायी कहते हैं। वे दुनिया से अज्ञानता के अंधकार को दूर करने के लिए उठे थे। उन्होंने इस धरती पर ईश्वर की सत्ता स्थापित करने का संकल्प लिया था। ज़रा सोचिये! क्या वे अब भी इस पद के योग्य हैं? अज्ञान के अन्धेरे को दूर करने के दावेदार स्वय कितनी बड़ी अपराधपूर्ण अज्ञानता का शिकार हैं? इसका अन्दाज़ा इस बात से लगायें कि हम जो कुछ बहुत बड़ी रिसर्च के रूप में आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं (और मुमकिन है कि आपको विश्वास करने में बड़ी कठिनाई हो रही हो), इन सब तथ्यों से हिन्दू विशिष्ट जन भली–भांति परिचित हैं।

❑ हिन्दू इस बात से परिचित हैं कि उनका सबसे बड़ा तीर्थ (जिसे वे आदि पुष्कर तीर्थ कहते हैं), मक्के में है। उनके अनुसार उनका असली शिवलिंग मुसलमानों का ***'हजरे–अस्वद'*** है। (शिवलिंग किसी गन्दी चीज़ का नाम नही है–शिव का अर्थ है ख़ुदा और 'लिंग' निशानी को कहते हैं, अर्थात 'ख़ुदा की निशानी')

❑ यह बात भी हिन्दुओं में मुसलमानों से राज़ में रखी गई कि प्राण निकलने के समय सांस टूटने की तकलीफ़ से बचाने के लिये मरने वाले के कान में **'अनकही'** की सरगोशी की जाती थी। बयान किया जाता है कि पुराने ज़माने में हिन्दुओं पर जब प्राणों का अन्त होने का समय आता था, तो उन्हें पलंग से उठाकर ज़मीन पर लिटा दिया जाता था और सांस टूटने के कष्ट से बचाने के लिये चुपके–चुपके मरने वाले के कान में 'अनकही' कही जाती थी। इस अनकही के शब्द साधारण हिन्दुओं को मालूम नहीं थे, लेकिन सम्राट अकबर के शासनकाल में एक ब्राह्मण ने यह शब्द बता दिये थे और यह भी कहा जाता है कि यह शब्द अथर्ववेद में मौजूद हैं। जैसा कि दबिस्तानुल मज़ाहिब, (प्रकाशन–नवल किशोर प्रेस) में भी मौजूद है।

ला इला हरनी पापन इल्ला लम्बा परम पदम
जन्म बैकुंत पर अब होती तो जपे नाम मोहम्मदम

अनुवाद :– **"ला इलाह कहने से पाप मिट जाते हैं। इल्लल्लाह कहने से परम पदवी मिल जाती है। अगर सदा के लिये स्वर्ग चाहते हो तो मोहम्मद (सल्ल०) का नाम जपा करो।"**

यह है अनकही का भावार्थ जो मरते समय किसी ज़माने में अन्तिम क्षणों में मरने वाले के कान में कही जाती थी।[1]

अनुवाद करने वालों ने इस अनकही के अनुवाद में हुज़ूर (सल्ल०) के दूसरे दौर और मक़ामे महमूद का राज़ न जानने की वजह से हालांकि थोड़ी सी तब्दीली कर ली है, लेकिन फिर भी मिलता–जुलता भावार्थ सामने आ गया है। भविष्य में किसी अवसर पर इस मन्त्र के महत्व का वर्णन किया जायेगा।

❑ हिन्दू विशिष्ट–जनों का यह अखण्ड धर्म–विश्वास है कि एक दिन पूरी हिन्दू क़ौम क़ुरआन पर ईमान लायेगी, लेकिन यह भी इन रहस्यों में से एक है जिन्हें हिन्दू जनसाधारण से और विशेष रूप से मुसलमानों से गुप्त रखा जाता है।

'ड्यूबाइस' लिखता है :

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) **"जब बाह्मण अपने बच्चों को अपना वारिस बनाते हैं तो बच्चे को इस तरह बिठाते हैं कि उसका मुंह पूर्व की ओर हो और स्वयं पश्चिम की ओर मुंह करके अपने बच्चे के कान में सरगोशी करते हैं...हे पुत्र! याद रखना ईश्वर एक है, वही जन्म देने वाला, पालने वाला और बचाने वाला है और हर बाह्मण को गुप्त रूप से उसकी इबादत करनी चाहिये, लेकिन यह भी जान लो कि यह एक ऐसा रहस्य है जो अगर तुमने लोगों के सामने बयान कर दिया तो तुम्हारे...सौभाग्य के दिन समाप्त हो जायेंगे।"2**

सैलाब वाले मनु से ह० नूह अलै० की हैसियत में हिन्दू इतनी भली भाति परिचित हैं कि क़िस्से कहानियों में बच्चों को सुनाते हैं। उदाहरण के लिये बच्चों की पत्रिका टिंकल से एक सम्पादकीय पढ़ें :

"मेरे नन्हें मुन्ने दोस्तो ! एक बार प्रलयंकारी बाढ़ आयी। सारी पृथ्वी डूब गयी। यह कथा कई लोगों ने कई तरह से कही है। वेदों और मत्स्य पुराण में भी इसका वर्णन मिलता है। इस बाढ़ की कथा बाइबिल में भी है। ईश्वर ने ह० नूह से कहा कि एक बड़ा जहाज़ बनाकर उसमें अपने परिवार के सदस्यों

के अलावा दो–दो हर प्राणी को चढ़ा लो। नूह ने वैसा ही किया। इसके बाद 40 दिनों तक लगातार दिन रात बारिश होती रही, सिर्फ ह० नूह और उनके जहाज़ में सवार प्राणी ही बचे। इसी अंक में ह० नूह और बाढ़ पर आधारित एक रोचक कथा प्रस्तुत है, कैसी लगी तुम्हें?"

स्नेह

तुम्हारा आनन्द चाचा ...."3

उक्त पंक्तियों में 'नूह' से पहले 'हज़रत' का शब्द बता रहा है कि लिखने वाले ह० नूह अलै० को मुसलमानों के पैगम्बर के रूप में जानते हैं, लेकिन फिर भी उन्होंने बच्चों के सामने बाईबिल की चर्चा तो की, क़ुरआन का ज़िक्र नहीं किया।

इस बात के प्रमाण मौजूद हैं कि कुछ हिन्दू विद्वान अयोध्या के मूल यथार्थ से परिचित हैं और अन्य हिन्दू विशिष्टजनों के सामने उन्होंने इसे इस हैसियत से प्रस्तुत किया है कि उनकी अस्ल अयोध्या पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा है। भारत के मुसलमानों की निगाहें अयोध्या की बाबरी मस्जिद की मुक्ति के आन्दोलन से आगे नहीं है लेकिन कुछ हिन्दू विशिष्टजनों के मन में यह इच्छा पल रही है कि उन्हें अपनी अस्ल अयोध्या को एक दिन मुसलमानों के क़ब्ज़े से आज़ाद कराना है। यह उनके सीनों में छिपा एक अत्यन्त गोपनीय रहस्य है, जो कुछ लोगों की ज़बान पर भी आया है।

साजिद रशीद को इण्टरव्यू देते हुए शिवसेना के प्रमुख श्री बालठाकरे की ज़बान पर यह इच्छा एक बार आई, लेकिन फिर वह शब्दों को दबा गये और साजिद साहब ने भी आगे नहीं कुरेदा। एक प्रश्न के उत्तर में श्री बालठाकरे ने कहा था:

(उर्दू से अनुवाद) **"देखिये आप इतना पीछे मत जाइये, अभी की बात कीजिये। इतिहास में बहुत पीछे जायेंगे तो मैं आपको ऐसी बहुत सी मस्जिदें बता सकता हूं जो पहले मन्दिर थे। जिनके चिह्न अभी बाक़ी हैं। क्या आप उन्हें हिन्दुओं को देने को तैयार हैं? मैं कहना तो नहीं चाहता और न मैं कोई अधिकार जता रहा हूं। आप की बात पर कह रहा हूं। अगर आप बहुत पीछे जायेंगे तो आपका जो मक्का है इसमें पहले मूर्तियां थी। अब अगर हम कहें कि यहां पहले हमारे लोगों की मूर्तियां थीं इसलिये यह हमको दो तो क्या आप इस बात को मानेंगे। मैं कहता हूं कि आज की बात करो, पुरानी बात छोड़ो।"4**

इस प्रकार के अनेक उदाहरण और भी मौजूद हैं। मुसलमान अत्यन्त प्रसन्नता और गर्व के साथ अपने हिन्दू भाईयों को उनकी यह 'इबादतगाह' वापस कर देंगे, लेकिन उस समय जब हिन्दू भाई वेद, क़ुरआन और हदीसों की भविष्यवाणी के मुताबिक़ अपना खोया हुआ 'मौलिक धर्म' प्राप्त कर चुके होंगे।

मुसलमानों की लापरवाही :

साराँश यह है कि इन तमाम रहस्यों को हज़ारों साल से हिन्दू विशिष्टजन गोपनीय रूप से मुसलमानों और हिन्दू अवाम से छिपाते आ रहे हैं। अब यह रहस्य जनसाधारण तक भी पहुंच रहे हैं; लेकिन कौमों का मार्गदर्शन करने का दावा करने वाली मुसलमान कौम को इनकी ख़बर तक नहीं।

हिन्दू विद्वान यह भी जानते हैं कि परिवर्तन का समय अब निकट है। (उनका अहंवाद उनको इस बात से रोके हुए है कि वे अवाम के सामने सत्य की घोषणा कर सकें)। लेकिन मुसलमानों के सामने शोध प्रमाण प्रस्तुत करना पड़ रहे हैं, फिर भी वे यह कह रहे है कि यह सब अज्ञात रिवायतों पर आधारित एक काल्पनिक कथा है। ऊपर वर्णित तमाम रहस्यों के लिखित दृष्टात प्रस्तुत नही किये जा सकते क्योंकि यथासंभव उनको छिपाने का भरसक प्रयत्न किया जाता है और केवल मौखिक रूप से ही इन बातों की चर्चा होती रहती है। लेकिन इन समस्त गवेषणाओं को सिद्ध किया जा सकता है। हमें सिद्ध करने की आवश्यकता भी नहीं पड़ेगी। आप उनके क़रीब जाकर तो देखें, आपको भी सुबूत मिल जायेंगे।

क़ुरआन, रसूल और बैतुल्लाह (काबा) की हक़ीक़तों को जानने वाले, जानते हुए भी छिपा रहे हैं। इस बात को क़ुरआन ने इस तरह बयान किया है :

"वे उसे ऐसे पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं।"

हिन्दुस्तान की हिन्दू क़ौम के ज्ञानी भी विशेष रूप से इन वास्तविकताओं को अपनी पुस्तकों और अनुश्रुतियों के प्रकाश में भली-भांति पहचानते हैं।

हज़ारों वर्षों से साथ रहने वाले पड़ोसियो की चिन्तन शैली और विचारधारा का जब तक सही ज्ञान नहीं होगा, उनकी मनोवृत्ति को नही समझा जा सकता। और मनोवृत्ति को समझे बिना सही रुख़ पर आह्वान भी नहीं किया जा सकता है। क्या इसे मुसलमानो की अक्षम्य अज्ञानता नहीं कहा जायेगा? क्या इस अज्ञानता पर अल्लाह की अदालत मे उन्हें पकड़े जाने का भय नहीं होना चाहिये? क्या अब भी उनके जागने का समय नही आया है?

सन्दर्भ-सूची अध्याय : 17

1. उर्दू दैनिक 'कौमी जंग', 19 जनवरी 1981, पृ० : 4
2. Hindu Manners, Customs & Ceremonies--by Dubois Page: 166
3. बाल पत्रिका 'टिंकल', अंक: 83/109, पृ० : 15
4. उर्दू साप्ताहिक 'ब्लिट्ज़', 21 मार्च 1987, पृ० : 14-15

-----❖❖❖-----

अध्याय : 18

पूर्व ग्रन्थों में आस्था

यह ग़लतफ़हमी दूर कीजिये :

अंग्रेज़ी कहावत है 'Seeing is believing' अर्थात देखने के बाद विश्वास क्यों न करें? पिछले कुछ अध्यायो में हमने वेदों मे पाई जाने वाली क़ुरआन की शिक्षाओं की जो कुछ मिसालें पेश की हैं (और उन जैसे विस्तृत वर्णनों से वेद भरे हुए हैं) उन्हें देखने के बाद इसमें संदेह की गुंजाइश नहीं रहती कि 'वेद' खोये हुए ईश्वर-प्रेषित ग्रन्थों का सामूहि नाम है जिनका विशिष्ट सम्बन्ध 'ह० आदम अलै० व नूह अलै०' से रहा है। यह किताबें मात्र नैतिक व सामाजिक सुधारों से सम्बन्धित नहीं थी जिन्हें हज़ारों वर्ष पूर्व किसी विचारक ने संकलित किया हो, बल्कि यह धर्म के आधारभूत विश्वासों और हक़ीक़ते अहमद सल्ल० व मोहम्मद सल्ल० से सम्बन्धित वे शुद्ध रहस्य व वृत्तॉत थे जो प्रत्येक युग में नबियों ने प्रस्तुत किये थे लेकिन वेदों में 'अहमदी तत्व' एक विशिष्ट केन्द्रीय विषय भी है।

यहा कुछ ज़हनों में यह शंकाएं जन्म ले सकती हैं कि हम इस्लाम व हिन्दू धर्म को एक समान सिद्ध करने की कोशिश कर रहे हैं या दोनों धर्मों को मिलाकर कोई नया दीन बना रहे हैं या दीने इस्लाम की श्रेष्ठता और बरतरी को घटाने की कोशिश कर रहे है। हम ख़ुदा की पनाह चाहते हैं। शैताने रजीम (दुष्ट दानव) केऐसे समस्त प्रयासों से जिनके द्वारा वह हमारी विचारधारा और मानसिकता को दूषित करे और धिक्कृत इब्लीस (दानव) की चालों से भी जिनसे वह निस्वार्थ पाठकों के मन में सत्धर्म के प्रचार के प्रभावशाली तरीक़े के विरूद्ध भ्रांतियां पैदा कर सके, हम अल्लाह की मदद के अभिलाषी हैं।

दीन केवल इस्लाम है लेकिन!

क़ुरआन में दो जगह पर स्पष्ट रूप से अल्लाह ने इरशाद फ़रमाया है कि दीने इस्लाम के अतिरिक्त कोई दूसरा दीन स्वीकार्य नहीं है, लेकिन दोनों जगह यह व्याख्या

भी कर दी कि हर नबी ने अपनी उम्मत को इस्लाम धर्म की ही शिक्षा दी थी :

''आप कह दीजिये कि हम अल्लाह पर 'ईमान' रखते हैं और उस पर जो हमारे ऊपर उतारा गया है और उस पर जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़ और याक़ूब पर और याक़ूब की सन्तान पर उतारा गया है और उस पर जो मूसा, ईसा और (दूसरे) नबियों को उनके 'रब' की ओर से दिया गया। हम उनमें से किसी के बीच कोई अन्तर नहीं करते, और हम तो अल्लाह के आज्ञाकारी हैं। और जो कोई इस्लाम के सिवा कोई और 'दीन' को चाहेगा तो वह उससे कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा और वह व्यक्ति 'आख़िरत' में टोटा पाने वालों में से होगा।'' – (क़ु० : 3–84,85)

समस्त ईशदूतों पर अवतरित शिक्षाओं में आस्था रखने का अर्थ यही है कि वे सब इस्लाम धर्म के ही आह्वानकर्ता थे। अब एक और आयत का अनुवाद देखिये:

''निश्चित रुप से 'दीन' तो अल्लाह के समीप 'इस्लाम' ही है और इसमें जो ग्रन्थवालों ने विभेद किया वह आपस की ज़िद से इसके बाद किया कि उनको शुद्ध ज्ञान पहुँच चुका था और जो अल्लाह की आयतों से इनकार करेगा तो अल्लाह निश्चित रुप से शीघ्र हिसाब लेने वाला है।'' – (क़ु०: 3–19)

यहाँ भी यह स्पष्ट है कि पूर्व ग्रन्थवालों (अहले किताब) को इस्लाम धर्म ही पहुँचा था फिर उन्होंने उसे बदल डाला। इसी बात को दूसरे अन्दाज़ में बयान करते हुए क़ुरआन कहता है :

''और इन्सान तो एक ही उम्मत (पंथ) थे, फिर उन्होंने मतभेद किया।'' – (क़ु० : 10–19)

कोई भी पूर्व ग्रन्थ मूलतः निरस्त नहीं हुआ है:

क़ुरआन ने अनेक स्थानों पर यह स्पष्ट कर दिया है कि सही और शुद्ध धर्म हर युग में हर काल में इस्लाम ही था। तमाम ग्रन्थों और ईश्वर प्रेषित किताबों में इस्लाम धर्म की ही शिक्षायें थीं। आज एक सामान्य ग़लतफ़हमी, मुसलमानों के जहां में यह है कि ह० मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० के शुभ आगमन के साथ ही पिछले तमाम ईशदूतों के लाये हुए धर्म निरस्त हो गये और क़ुरआन आ जाने के बाद पिछले नबियों पर अवतरित सहीफ़े (ग्रन्थ) भी निरस्त हो गये।

ईश्वर क्षमा करे, यह बात तो मुसलमानों के बुनियादी धर्मविश्वासों के ही विरूद्ध है। समस्त नबियों और उनकी लाई हुई किताबों में आस्था के बिना तो वे मुसलमान

ही नहीं हो सकते और जब तमाम ईशदूत इस्लाम धर्म ही लेकर आये थे तो उनके लाये हुए दीन के निरस्त होने का क्या अर्थ है? क़ुरआन ने अल्लाह की किसी किताब को निरस्त नहीं किया, बल्कि जगह–जगह क़ुरआन इन किताबों की पुष्टि करता है।

इस सामान्य भ्रान्ति के दो कारण हो सकते हैं :

☐ प्रत्येक नबी का दीन इस्लाम था लेकिन शरीयतें (धर्म–नियमावलियां अथवा धर्म–विधान) अलग–अलग थीं। अल्लाह फ़रमाता है **''हमने तुममें से हर एक के लिये एक धर्म विधान और एक कर्म–पथ निश्चित किया।''** – (क़ु० : 5–48)

दीन और शरीयत में अन्तर है। दीन तो आधारभूत धर्मविश्वासों का संकलन है, जैसे–तौहीद, रिसालत, आख़िरत और तक़दीर पर ईमान लाना। सभी नबियों की किताबों में एक ही धर्म–'इस्लाम' की शिक्षा थी लेकिन हर एक की शरीअत अलग–अलग थी। धर्म पर चलने की विधियों अर्थात उपासना पद्धति और नियमावली (जैसे–चोरी, शराब आदि की सजाओं) का नाम शरीअत है। प्रत्येक साहिबे शरीअत (शरीअत लागू करने वाले) रसूल के आ जाने के बाद उनकी लाई हुई शरीअत लागू हुई और पिछली शरीअतें निरस्त हो गयीं। अन्तिम ईशदूत ह० मोहम्मद सल्ल० के शुभागमन के साथ 'शरीअते मोहम्मदी सल्ल०' ने विगत तमाम शरीअतों को निरस्त कर दिया। दीन और शरीअत के अर्थ गडमड हो जाने के कारण यह भ्रम पैदा हो गया है कि पिछले नबियों के दीन, इस्लाम से भिन्न थे और अब वे निरस्त हो गये हैं। अमुस्लिमों का आह्वान करने के लिये पहले उनको मूल धर्म इस्लाम (असली सनातन धर्म) की तरफ़ बुलाया जायेगा जिसे वे छोड़ बैठे हैं। तत्पश्चात उनको मोहम्मद सल्ल० की शरीअत के अनुरूप आचरण करने को कहा जायेगा। पहले उनकी आस्थाओं का संशोधन होगा जिनमें बिगाड़ आ चुका है, तत्पश्चात ही व्यवहारिक जीवन में धर्म के लागू होने का नम्बर आयेगा। रसूले अकरम सल्ल० ने भी दीन के अजनबी होने के काल में यानी मक्की काल के आरम्भ में मक्के के मिश्रकों से यही कहकर आह्वान आरम्भ किया था कि मैं तुम्हारे सामने कोई नया धर्म लेकर नहीं आया हूं, बल्कि इब्राहीम अलै के ही धर्म को पेश कर रहा हू, जिसका अनुयायी तुम अपने आपको बताते हो।

☐ पिछले तमाम पवित्र ग्रन्थों के निरस्त होने की ग़लतफ़हमी की दूसरी वजह यह है कि वर्तमान में यह ग्रन्थ अपने मौलिक रूप में उपलब्ध नहीं है। इस समस्या का समाधान हम वेदों के अध्याय में प्रस्तुत कर चुके हैं।

सत्य और असत्य के मिले जुले वर्तमान रूप में इनका असत्य निरस्त है और

सत्य ज्यों का त्यों लोकप्रिय है और उम्मते मोहम्मदी सल्ल० का कर्तव्य इस सत्य और असत्य को शोधकार्य के माध्यम से इस प्रकार से अलग करना है जैसे दूध का दूध, पानी का पानी।

क़ुरआन से पूर्व के ग्रन्थों पर ईमान लाने का तात्पर्य:

दिव्य क़ुरआन ने जगह–जगह 'पूर्व ग्रन्थ वालों' को अपने ग्रन्थों पर आचरण करने का आह्वान किया है और उनके द्वारा आचरण न करने पर निन्दा की है। उदाहरण के लिये:

''और (हे नबी) यह (यहूदी) तुमसे कैसे निर्णय कराते हैं, जबकि उनके पास 'तौरेत' मौजूद है जिसमें अल्लाह का आदेश (मौजूद) है? फिर ये इसके बाद भी मुंह मोड़ रहे हैं और यह लोग 'ईमान' लाने वालों के साथ नहीं है।''

– (क़ु० : 5–43)

''कह दीजिये : हे ग्रन्थ वालो! तुम कदापि किसी बुनियाद पर नहीं हो जब तक कि तुम 'तौरेत' और 'इन्जील' और उन दूसरे ग्रन्थों को क़ायम (स्थापित) न करो जो तुम्हारे 'रब' की ओर से उतारी गयी है।''

– (क़ु० : 5–68)

क्या यह आयतें स्पष्ट रूप से इस वास्तविकता की ओर संकेत नहीं कर रही हैं कि 'पूर्व ग्रन्थ वालों' को उन्हीं के ग्रन्थों के आधार पर आमन्त्रित किया जाये। इसके अतिरिक्त आप इन आयतों का भावार्थ क्या निर्धारित करेंगे जिनमें उनकी तौरेत, इन्जील और दूसरे ग्रन्थों को स्थापित करने का आदेश दिया जा रहा है? स्पष्ट है कि इन ग्रन्थों पर अगर यह लोग सच्चे मन से ईमान लायें और उनके बदले हुए भाग को छोड़कर उनमें जो ईश्वर की वाणी है, उसके मोमिन (आस्तिक) बन जायें तो अपने ग्रन्थों में उन्हें वह सच्चाईयां मिलेंगी कि इस्लाम और क़ुरआन को माने बग़ैर रह नहीं सकते।

अब प्रश्न यह है कि यह कैसे निर्धारित हो कि क़ुरआन से पहले के इन ग्रन्थों का कौन सा भाग कलामुल्लाह (ईश्वर की वाणी) है और कितना भाग रद्दोबदल किया हुआ है। इसके लिये हमें कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। क़ुरआन की ज्योति में दूसरे धर्मग्रन्थों का अध्ययन करना ही पड़ेगा ताकि इनमें से अल्लाह के कलाम को अलग कर सकें और उस पर ईमान लाने का इन क़ौमों को निमन्त्रण दिया जा सके।

क़ुरआन में पूर्व ग्रंथ वालों ही को नहीं, मुसलमानों को भी बार–बार पूर्व ग्रन्थों पर ईमान लाने का आदेश दिया गया है।

''...यह सब मोमिनीन ईमान रखते हैं अल्लाह पर, उसके 'फ़रिश्तों' पर, उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर...'' (क़ु० : 2–285)

ज़रा सोचिये कि पिछली किताबों पर ईमान लाने के आदेश का मतलब क्या है? न केवल क़ुरआन स्वयं यह कहता है कि इन किताबों में परिवर्तन हो गये हैं बल्कि इन किताबों के मानने वाले भी रद्दोबदल किये जाने को स्वीकार करते हैं।

आज यह समझा जाता है कि केवल इतनी सी बात मान लेने से कि यह किताबें अवतरित हुई थीं, इन पर ईमान लाने का कर्तव्य पूरा हो गया। क़ुरआन में यदि केवल एक वास्तविक घटना के वर्णन के उद्देश्य से भी इन किताबों के आने का ज़िक्र होता तब भी यह यक़ीन करना फ़र्ज़ होता कि यह किताबें ईश्वर ने अवतरित की थीं। इन पर ईमान लाने के शब्द जगह–जगह इसलिये प्रयुक्त हुऐ हैं कि इसके बिना मुसलमान का ईमान पूरा नहीं होता। मतलब साफ़ ज़ाहिर है कि पिछली किताबों के उन हिस्सों पर ईमान लाने को कहा गया है जिनकी क़ुरआन पुष्टि करता है और वे हिस्से तब ही स्पष्ट होंगे जब उन पर शोध किया जायेगा। मुसलमानों में जो लोग इस काम के योग्य हैं, उन का यह कर्तव्य है कि इस ओर ध्यान दें ताकि 'अहले किताब' को उन की ही किताबों से इस्लाम की दावत पेश की जा सके और उनसे यह कहा जा सके कि देख लीजिये धर्म हर युग में एक ही था–**'इस्लाम धर्म'।**

यह प्रतिकूलता क्यों प्रतीत हो रही है?

क़ुरआन, पूर्व ग्रन्थ वालों को उनकी किताबों के अनुकूल आचरण न करने का दोषी ठहराता है –(क़ु० : 5–43)। क़ुरआन उन को तौरेत, इन्जील और पिछली सभी किताबों को स्थापित करने का निमन्त्रण देता है – (क़ु० : 5–68) और क़ुरआन ही इन किताबों में रद्दोबदल की चर्चा भी करता है:

''...कलाम (वाणी) को उसके सही स्थानों से बदलते रहते हैं...

''(क़ु० : 5–41)

फिर क़ुरआन इन किताबों की पुष्टि भी करता है:

''उसने (यह) किताब आप सल्ल. पर अवतरित की है हक़ (सत्य) के साथ, उसकी तसदीक़ करने वाली जो इससे पहले आ चुकी है और उसने उतारा था 'तौरेत' व 'इंजील' को।'' – (क़ु० : 3–3)

और क़ुरआन, ईमान वालों से उन किताबों पर ईमान लाने को कहता है :

''कह दो कि हम तो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उस पर जो हम

पर उतारा गया और जो इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और याक़ूब की सन्तान पर उतारा गया और जो मूसा और ईसा को दिया गया, और उस पर भी जो दूसरे 'नबियों' को उनके 'रब' की ओर से दिया गया और हम उनमें से किसी के बीच भी अन्तर नहीं करते और हम अल्लाह ही के आज्ञाकारी हैं।'' – (क़ु० : 2–136)

कुरआन की आयतों में परस्पर विरोध कहीं भी नहीं है, फिर इस प्रकार का विरोधाभास इन आयतों में क्यों प्रतीत हो रहा है? ज़रा ठहरिये–कुछ हदीसों पर भी नज़र डालिये। कुछ हदीसें क़ुरआन के कुछ हिस्सों का अर्थ स्पष्ट करने में सहायक होती हैं।

क्या हदीसों में भी परस्पर विरोध है?

''ह० जाबिर रज़ि०का कथन है कि (एक बार) ह० उमर बिन ख़त्ताब रज़ि०, रसूलुल्लाह सल्ल० के पास तौरेत में से कुछ भाग लाए और कहा या रसूलुल्लाह सल्ल० यह तौरेत में से कुछ भाग है। आँहज़रत (सल्ल०) ख़ामोश रहे, फिर ह० उमर रज़ि० ने (उनको) पढ़ना आरम्भ किया। उधर हुज़ूर (सल्ल०) के शुभ चेहरे का रंग बदलने लगा। यह देखकर ह० अबू बक्र रज़ि० ने कहा–उमर गुम करने वालियां तुम्हें गुम करें। क्या तुम हुज़ूर सल्ल० के पवित्र चेहरे को नहीं देखते? ह० उमर रज़ि० ने अत्यन्त प्रज्वलित मुखमंडल पर निगाह डाली और कहा–मैं अल्लाह के क्रोध और उस के रसूल सल्ल० के क्रोध से पनाह मांगता हूं। हम अल्लाह के 'रब' होने पर, इस्लाम के 'दीन' होने पर और मोहम्मद सल्ल० के 'नबी' होने पर संतुष्ट हैं।' आँहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया–'सौगन्ध है उस पवित्र अस्तित्व की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर मूसा अलै० तुम्हारे बीच प्रकट होते और तुम उनका अनुसरण करते और मुझे छोड़ देते तो निश्चित रूप से तुम पथभ्रष्ट हो जाते (यद्यपि) अगर मूसा अलै० जीवित होते और मेरी नुबूवत (ईशदौत्य) का काल पाते तो वह भी निश्चित रूप से मेरा ही अनुसरण करते।'[1]

अब दूसरी हदीस देखें :

''ह० अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० का कथन है कि सरकारे दो आलम (सल्ल०) ने फ़रमाया : बनी इस्राईल (यहूदी) से रिवायत किया करो, यह गुनाह नहीं है..।''[2]

अर्थात यहूदियों के पास जो ज्ञान है उसे सुनकर दूसरों से बयान करो–इसका

व्यावहारिक उदाहरण ह० सलमान फ़ारसी (ईरानी) रज़ि० हैं जो ईसाइयों के अपने ग्रन्थ से ही इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम सल्ल० के शुभ आगमन की सूचनाएं लेकर मोहम्मद सल्ल० की खोज में मदीना आए थे और जब उन्होंने बज़्मे रिसालत में आकर यह तौरेत व इन्जील वाली शास्त्रीय रिवायतें सुनाई तो आप (सल्ल०) का उज्जवल मुखमण्डल जगमगा उठा और न केवल आपने स्वयं यह ग्रन्थीय सूचना प्रसन्न होकर सुनी बल्कि तमाम सहाबा को इकट्ठा करके उन्हें भी सुनाई।

अब तीसरी हदीस का एक भाग जो बुख़ारी व मुस्लिम से लिया गया है और पूर्व ग्रन्थों की वैधानिक उपादेयता का प्रतीक है :

''...मदीने के यहूदी, रसूलुल्लाह सल्ल० के पास (साज़िश की दुर्भावना से) आये और ज़िक्र किया कि हमारे एक पुरुष व महिला ने व्यभिचार किया है, उनके विषय में आप (सल्ल०) क्या इरशाद फ़रमाते हैं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : तुम्हारे यहां तौरेत में क्या आदेश है? उन्होंने कहा–हम तो उसे अपमानित करते हैं और कोड़े मारकर छोड़ देते हैं। यह सुनकर अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० ने फ़रमाया–झूठ कहते हो! तौरेत में संगसार (पत्थर मार मार कर हलाक करना) करने का आदेश है, लाओ तौरेत प्रस्तुत करो। उन्होंने तौरेत खोली लेकिन 'आयते रजम' पर हाथ रखकर आगे पीछे की सब पदावली पढ़कर सुनाई। ह० अब्दुल्लाह रज़ि० समझ गये और फ़रमाया–अपने हाथ उठाओ. हाथ उठाए तो संगसार करने की आयत मौजूद थी। अब उनको स्वीकार करना पड़ा। फिर हुज़ूर सल्ल० के आदेश से व्यभिचारियों को संगसार कर दिया गया...''[3]

यहां हम देखते हैं कि एक समस्या पर तौरेत में इस्लामी शरीअत के अनुसार आदेश मौजूद था। रसूलुल्लाह सल्ल० ने यहूदियों का निर्णय उन ही की किताब में उनको वह आदेश दिखाकर किया।

अब ज़रा गौर कीजिये कि क्या इन तीनों हदीसों में भी प्रतिकूलता है?

यथार्थ पृष्ठभूमि में देखिये :

जी नहीं पहली घटना की पृष्ठभूमि यह है कि मदीना के प्रवास के आरम्भिक काल में जब कि अभी सहाबा–ए–कराम रज़ि० ज्ञान की दृष्टि से परिपक्व नहीं हुए थे, ह० उमर रज़ि० ज्ञान प्राप्त करने के शौक़ में यहूदियों के एक मदरसे 'बैतुलमिदरास' में जाकर तौरेत सुनते थे और नोट भी करते थे। वहीं से तौरेत के पृष्ठ रसूलुल्लाह सल्ल० के पास लेकर आये थे। आप सल्ल० नाराज़ हुए और यह स्पष्ट किया कि

उस दौर में केवल 'दीनेमोहम्मदी' का अनुसरण ही अपेक्षित था और दूसरी विद्याओं में दिलचस्पी न केवल अनावश्यक, बल्कि घातक भी थी। तत्पश्चात मदनी काल के अन्तिम भाग में जब आप (सल्ल०) आश्वस्त हो गये कि अब आप (सल्ल०) के सहाबी क़ुरआन की रौशनी में सही और ग़लत की परख करने के योग्य हो गये हैं तो आप सल्ल० ने तौरेत और इन्जील के वे भाग उद्धृत करने की अनुमति प्रदान कर दी जिनकी क़ुरआन पुष्टि करता है।

दूसरी हदीस उसी काल से सम्बन्धित है और तीसरी घटना से यह सिद्ध होता है कि अगर दूरअन्देशी की माग हो और 'अहले किताब' पर हुज्जत (दलील) पूरी करना हो तो इस्लाम धर्म और शरीअते मोहम्मदी सल्ल० के अनुरूप उनके ग्रन्थों में जो शिक्षाएं पाई जाती हैं, वे उनको उन्हीं के ग्रन्थों में दिखाकर अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिये। यही वे हिस्से हैं जिनकी क़ुरआन प्रमाण सहित पुष्टि करता है। उन्हीं रद्दोबदल से पवित्र हिस्सों को स्थापित करने की, क़ुरआन के नाज़िल होने के बाद भी, 'पूर्व ग्रन्थ वालों' को दीक्षा दी गई है कि जब तक उन्हें स्थापित न करें वे सत्य को नहीं पा सकेंगे और क़ुरआन से प्रमाणित इसी भाग पर 'मोमिनीन' से क़ुरआन ईमान लाने को कहता है।

सन्दर्भ–सूची अध्याय : 18

1. 'दारमी', सं०: मिश्कात, अ०: अलएतिसाम
2. 'बुखारी', सं०: मिश्कात, अ०: किताबुल इल्म
3. 'भाष्य सुरए अलमाइदा' – इब्ने कसीर

-----❖❖❖-----

"... प्रतिष्ठित 'साबिईन' तुम्हारे पास आएंगे और वह तुम्हारे हो जाएंगे। वह तुम्हारे बाद आएंगे, सांकलों में बंधे हुए और तुम्हारे सामने झुक जाएंगे। वह तुम से अत्यन्त विनम्रता से कहेंगे- निःसंदेह ईश्वर के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है"

-(बाइबिल, यशायाह: 45-14)

अध्याय : 19

दावत (आह्वान) की कार्य शैली

क्या हिन्दू 'अहले किताब' (पूर्व ग्रन्थ वाले) हैं?

जब यह मालूम हो जाये कि वेदो मे देववाणी है और हिन्दू कौम ह० नूह अलै० की उम्मत है तो सबसे पहला प्रश्न प्राकृतिक रूप से यह पैदा होता है कि क्या हिन्दू कौम को 'अहले किताब' कहा जा सकता है? इस प्रश्न का महत्व और बढ़ जाता है जब हम देखते है कि हमारे कुछ बुजुर्ग हिन्दू कौम को कम से कम 'शुबहे अहले किताब' (जिनके अहले किताब होने की सम्भावना हो) की श्रेणी मे लाते रहे है। मिसाल के तौर पर :

(उर्दू से अनुवाद) **"लेकिन मुसलमान इस मामले में बड़े उदारचेता हैं और अरबों ने हिन्दुओं को 'काफ़िर' व 'मुशरिक' की श्रेणी में शामिल नहीं किया है, बल्कि 'शुब्हे अहले किताब' का दर्जा दिया है। इस विषय में सैयद सुलेमान नदवी ने अपनी किताब 'अरब व हिन्द के ताल्लुक़ात' में अत्यन्त शोधपरक बहस की है।"**

(उर्दू से अनुवाद) **"सिन्ध के सबसे प्राचीन अरबी इतिहास 'चचनामा' के फ़ारसी अनुवाद में यह उल्लिखित है–मोहम्मद बिन क़ासिम ने ब्रहमनाबाद (सिन्ध) के लोगों की प्रार्थना स्वीकार की और उनको अनुमति दी कि सिन्ध के इस्लामी राज्य में इसी हैसियत से रहें जिस हैसियत से इराक़ और शाम (सीरिया) के यहूदी, ईसाई और पारसी रहते है।"** 2

(उर्दू से अनुवाद) **"बलाज़री में यह संशोधन है कि हिन्दुस्तान का बुतखाना**

(मन्दिर) भी ईसाइयों और यहूदियों के पूजा–गृहों और पारसियों की अग्निशाला की तरह है।'' [3]

हिन्दू क़ौम को काफ़िरों (अकृतज्ञ लोगों) व मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) के वर्ग में सम्मिलित करें या अहले किताब (पूर्व ग्रन्थ वाले) समझें, यह जान लेना इस लिए भी आवश्यक है कि विभिन्न वर्गों से व्यवहार व सम्बन्धों का आधार क़ुरआन आदेशों के अनुरूप अलग–अलग है; और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी वर्ग विशेष का आह्वान करने की उचित कार्यप्रणाली क़ुरआन व सुन्नत की ज्योति में तभी निर्धारित की जा सकती है जब उस समुदाय विशेष के लिए क़ुरआन में प्रयुक्त होने वाली इस्तेलाह (पारिभाषिक शब्द) का ज्ञान हो।

अब आइए सोच–विचार करें कि 'मुशरिकीन (मिश्रक) तो अहले किताब को भी कहा गया है। यहूदी ह० उज़ैर अलै० तथा ईसाई ह० ईसा अलै० को ख़ुदा का बेटा मानने के बाद 'बहुदेववादियों' की पंक्ति में सम्मिलित हैं। बहुत से मुसलमान भी अपने अक़ीदे या कर्मों के आधार पर शिर्क (बहुदेववाद) से मुक्त नहीं ठहराए जा सकते। पता यह चला कि मुश्रिकीन की परिभाषा अहले किताब पर भी लागू हो सकती है। ठीक यही स्थिति काफ़िरों की भी है। पवित्र क़ुरआन का उपदेश है :

''निश्चय ही उन्होंने कुफ़्र किया जिन्होंने कहा : अल्लाह तो तीन में का तीसरा है।'' – (क़ु०: 5–73)

कुफ़्र का अभिप्राय है–इनकार करना। इस्लाम धर्म के अखण्ड विश्वासों से किसी स्तर पर भी विचलित होना कुफ़ कहलाएगा। यहां तक कि कुछ विशेष परिस्थितियों में मुसलमान भी कुफ़्र की चपेट में आए बिना नहीं रह सकते। एक बहुचर्चित हदीस से इस बात की पुष्टि होती है :

''जिस ने जान बूझकर नमाज़ छोड़ी, उसने कुफ़्र किया''। इस प्रकार हम देखते हैं कि शिर्क के समान कुफ़्र की भी विभिन्न श्रेणियां हैं और किसी न किसी श्रेणी के अन्तर्गत सभी धर्मों के कुछ न कुछ मानने वाले आए बिना नहीं रह सकते। मुकम्मल काफ़िर (सम्पूर्ण नास्तिक) की श्रेणी में हम केवल मुलहिदों (अनीश्वरवादियों) को ही रख सकते हैं जिन के पास किसी 'ख़ुदा' की कल्पना ही नहीं है। मुलहिदों के अतिरिक्त जितने समूह या जातियां हैं, वे आंशिक रूप से काफ़िर हैं। वे पूरी तरह से काफ़िर नहीं कहे जा सकते।

हिन्दू क़ौम के पास शिर्क में गिरफ्तार होने के बावजूद 'ईश्वर' की परिकल्पना है। कलामे इलाही (ईशवाणी) से अस्पष्ट सा ही सही, लेकिन सम्बन्ध अवश्य है।

ईशदूतों की धारणा विकृत हो जाने के बावजूद भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है और मरने के बाद कुछ नहीं होगा, वे अनीश्वरवादियों की तरह ऐसा भी नहीं कहते, बल्कि उन के पास आवागमन के ग़लत विश्वास के रूप में भी जज़ा और सज़ा (पुरुस्कार एव दण्ड) मिलने की मान्यता है।

इस प्रकार यदि हम संपूर्ण नास्तिको को ही काफ़िर माने तो कम से कम इस श्रेणी में हिन्दू क़ौम की गणना कदाचित नही की जा सकती।

फिर क्या उन को 'अहले किताब' कहा जा सकता है? जब प्रत्येक जाति में अल्लाह ने पैगम्बर भेजे तो केवल यहूदियो और ईसाइयो को ही क़ुरआन ने अहले किताब क्यों कहा है? ऐसा लगता है कि 'ग्रन्थ वाले' वे लोग है जिन का ईश्वर प्रेषित ग्रन्थ से (चाहे वे बिगड़े हुए रूप मे हो) सम्पर्क स्थापित है और इस सम्पर्क का माध्यम कोई ईशदूत है जिस के ईशदौत्य को भी वे स्वीकार करते है।

अहले किताब की उक्त परिभाषा हिन्दुओं पर लागू नही होती। 'किताब' होने के बावजूद 'नबी' से उन का सम्पर्क टूटा हुआ है और उन्होने अपने ईशदूत को दन्तकथाओं मे कही गुम कर दिया है।

अहले किताब नहीं 'उम्मिय्यीन' हैं

हिन्दू क़ौम को यदि हम अहले किताब नही कह सकते तो उन के लिए कौन से क़ुरआनी पारिभाषिक शब्द का चयन करेगे, यह जानने के लिये हमे चौदह सौ वर्ष पीछे की ओर मुड़ कर देखना होगा। वहा इतिहास के झरोखे मे हमे एक ऐसी क़ौम मिलती है जो अपने आप को एक रसूल (ह० इब्राहीम अलै०) की उम्मत कहती थी लेकिन सुहफ़े इब्राहीम (इब्राहीम अलै० पर अवतरित ग्रन्थ) उस के पास नही था अर्थात 'किताब' से उस का सपर्क टूटा हुआ था। क़ुरआन ने उस क़ौम को 'उम्मियो का गिरोह' कहा।

प्राचीन काल मे 'उम्मी*' शब्द का अर्थ अनपढ़ नही था। अनपढ के अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग बाद मे होने लगा।

(उर्दू से अनुवाद) ''**ज़जाज ने स्पष्ट किया है कि उम्मी वह है जो उम्मते अरब (अरब पंथ) की प्रकृति पर हो। अनपढ़ होना अरब का विशिष्ट स्वभाव था। कुछ विद्वानों के विचार में 'उम्मी' शब्द 'उम्म' से बना है ... चूंकि अनपढ़ व्यक्ति की प्रकृति वही होती है जिस पर उस को उस की मां ने जन्म दिया था, इस**

* एसी कौम जो अपने ईश्वर–प्रेषित धर्म ग्रन्थ से परिचित न हो। उम्मी निरक्षर को भी कहते है। ह० मोहम्मद सल्ल० की उपाधि।

दृष्टि से उस की निस्बत मां की ओर की जाने लगी। यह विचार इमाम बाक़र रह० का बताया जाता है कि वह 'उम्मी' शब्द का प्रादुर्भाव 'उम्मुल क़ुरा' (नगरियों की माता) से होना बताते थे। चूंकि मक्कावासी अर्थात क़ुरैश एक क़ौम की हैसियत से अनपढ़ थे, इस वजह से निरक्षर व्यक्ति को 'उम्मी' कहा जाने लगा।' 4

हिन्दू भी चौदह सौ वर्ष पूर्व की अरब जाति के समान 'काबे वाले' हैं। उन की समस्त धार्मिक परम्पराओं में काबे से सम्बन्धित संस्कारों की झलक है और उन के सभी प्राचीन मन्दिर वर्तमान में भी काबे की दिशा में खड़े हुए हैं।

उम्मियों की परिभाषा जब हम क़ुरआन में तलाश करते हैं तो हमें यह शब्द मिलते हैं :

''और उनमें से एक दूसरा गिरोह उम्मियों का है जो किताब का तो ज्ञान रखते नहीं, बस अपनी आधारहीन आशाओं तथा कामनाओं को लिये बैठे हैं और केवल अटकल के तीर तुक्के चलाते हैं।'' – (क़ु० : 2–78)

उपरिलिखित सभी विशेषताओं की तरह क़ुरआन की बताई हुई यह परिभाषा भी हिन्दू क़ौम पर शत–प्रतिशत पूरी उतरती है।

उम्मियों के वृताँत में क़ुरआन ने यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है कि 'उम्मी' अहले किताब' नहीं हैं बल्कि वे एक अलग समुदाय हैं :

''...और आप 'ग्रन्थ वालों' से और 'उम्मियों' से मालूम कीजिये कि तुम इस्लाम स्वीकार करते हो?...'' (क़ु० : 3–20)

पता यह चला कि ख़ुदा पर किसी न किसी रूप में आस्था रखने वालों को क़ुरआन दो गिरोहो में विभाजित करता है– 'अहले–किताब' और 'उम्मी'। उम्मियों की विशिष्टताएं क़ुरआन के विद्वानों ने निम्नलिखित बताई है :

- ❑ ईश्वरीय ग्रन्थ को नहीं जानते। ग्रन्थ के विषय में उन का ज्ञान अनुमानों पर आधारित है।
- ❑ प्राचीन अरब–पँथ के समान 'अहले क़िबला' (काबे वाले) हैं तथा 'उम्मुल क़ुरा' अर्थात मक्के से उन का घनिष्ठ संबंध है। उन की उपासना पद्धति मे काबे का केन्द्रीय स्थान है।

हम देखते हैं कि वर्तमान युग में केवल एक हिन्दू क़ौम ही ऐसी है जो उम्मी

होने की परिभाषा पर पूरी उतरती है।

क़ुरआन का गहन अध्ययन एवं चिंतन करने से यह विदित होता है कि क़ुरआन ने उम्मियों के दो गिरोह बताए हैं जिन के माध्यम से ह० मोहम्मद सल्ल० का सन्देश विश्वव्यापी स्तर पर पहुंचना पूर्व–निर्धारित है। एक पहला गिरोह जो चौदह सौ वर्ष पूर्व अरब में था और जिस में आप सल्ल० का शुभागमन हुआ और एक बाद में आने वाला 'आख़रीन' का गिरोह। (क़ु० : 62–2,3)

यही वह बाद में आने वाला गिरोह है जिसके इस्लाम क़ुबूल करने की पूर्व सूचना क़ुरआन ने कई जगह पर दी है तथा हदीसों ने जिस को स्पष्ट करते हुए हिन्दुस्तान की हिन्दू क़ौम की ओर संकेत किया है। (देखिए, अध्याय–1)

अह्वान की कार्य शैली–हदीसों की रौशनी में:

हदीस ने ही हमें इस क़ौम को आमन्त्रित करने की विधि बतलाई है। निम्नलिखित हदीसें आप के अवलोकन के लिये प्रस्तुत हैं :

''ह० अब्दुर्रहमान बिन अला हज्रमी रज़ि० कहते हैं कि मुझ से उस व्यक्ति ने यह हदीस बयान की है जिस ने नबी करीब सल्ल० से सुना था कि आप सल्ल० ने फ़रमाया–निश्चित रूप से इस उम्मत के अन्तिम भाग में एक क़ौम ऐसी होगी जिस का सवाब (ईशलाभ) प्रारम्भिक काल के लोगों (अर्थात सहाबा रज़ि०) के सवाब के समान होगा। वे नेकियों का आदेश देंगे, बुराइयों से रोकेंगे और उत्पात करने वालों से युद्ध करेंगे।'' 5

''ह० अबू उबैदा रज़ि० का कथन है कि उन्होंने नबी करीम सल्ल० से पूछा कि या रसूलुल्लाह सल्ल०! क्या हम से भी श्रेष्ठ कोई हो सकता है कि हम ने (आप सल्ल० के हाथ पर) आज्ञाकारिता स्वीकार की और आप के कान्धे से कान्धा मिलाकर जिहाद किया। फ़रमाया 'हां'! तुम लोगों के बाद एक क़ौम होगी, वह मुझ पर ईमान लाएंगे जब कि उन्होंने मुझे देखा भी न होगा।'' 6

''ह० अम्र बिन शुएैब रह० अपने पिता से और वह अपने दादा से उल्लेख करते हैं कि रसूले करीम (सल्ल०) ने एक दिन सहाबा से पूछा : ईमान की दृष्टि से कौन सी सृष्टि तुम्हारी नज़र में सब से अद्भुत और संकल्पवाली है? सहाबा ने कहा : फ़रिश्ते। फ़रमाया : उन के ईमान में क्या अजीब बात है? वे ईमान क्यों न लाएं जबकि वे अपने रब (प्रभु) के निकट रहते हैं। सहाबा ने कहा :

फिर या रसूलुल्लाह सल्ल०, वे ईशदूतों का गिरोह हैं। फ़रमाया : वे ईमान क्यों न लाएं जब कि उन पर वह्य (आकाशवाणी) अवतरित होती है। सहाबा ने कहा: फिर या रसूलुल्लाह, वे हम लोग हैं। फ़रमाया : तुम ईमान क्यों न लाते जब कि मैं तुम्हारे बीच मौजूद हूं। रावी* कहते हैं कि फिर रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया: निस्सन्देह! समस्त रचनाओं में ईमान की दृष्टिकोण से श्रेष्ठ एवं अद्भुत वास्तव में एक क़ौम होगी। वे मेरे बाद होंगे। वे कुछ ग्रन्थ पाएंगे, उन (ग्रन्थों) में किताब (कलामे इलाही) है। जो कुछ इन (ग्रन्थों) में है, उस पर वे ईमान लाएंगे।''7

ऊपर दर्ज की गई इन हदीसों में किताब से अभिप्राय 'क़ुरआन' है। अर्थात उस क़ौम को उन ग्रन्थों में क़ुरआन नज़र आएगा। इस भावार्थ को क़ुरआन की निम्नलिखित आयत से भी बल मिलता है :

''निस्सन्देह यह (क़ुरआन) अव्वलीन सहीफ़ों (आदि ग्रन्थों) में है।''
—(क़ु०: 26–196)

देखा आपने! हदीसें बताती हैं कि यह क़ौम प्रत्यक्ष रूप से क़ुरआन पर ईमान नहीं लाएगी; बल्कि पहले वह अपने खोए हुए ग्रन्थों को पाएगी अर्थात यह वह क़ौम होगी जो अपने ग्रन्थों से दूर होगी और मानो वह उन्हें पुनः खोज लेगी। इन ग्रन्थों में उसे क़ुरआन की शिक्षाएं नज़र आएंगी और इस पहलू से वह इस्लाम क़ुबूल करेगी। इस तरह इस क़ौम का ईमान इतना अद्भुत एवं श्रेष्ठ होगा कि इस का ईशलाभ हुज़ूर सल्ल० के सहाबियों के ईशलाभ के समकक्ष होगा।

अब तक के विश्लेषण से यह विदित हो चुका है कि विश्व की धार्मिक जातियों में वह कौन सी एक मात्र जाति है जिस के पास ईश्वर–प्रेषित ग्रन्थ है और वह उस ग्रन्थ से कटी हुई है।

क़ुरआन की ज्योति में:

क़ुरआन की रौशनी में यदि हम आह्वान के लिये आधारभूत मुद्दों की तलाश करें तो वे तीन मुख्य बातें हैं–अल्लाह पर ईमान (ईश्वरीय समर्पण), आख़िरत (परलोकवाद) पर ईमान और अमले सालेह (अनुकूल कर्म) :

''जो लोग 'यहूदी' हुए और जो 'ईसाई' हैं और 'साबिईन' में से जो कोई अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाए और सुकर्म करे सो उन के

* हदीस को रिवायत करने या उल्लेख करने वाला व्यक्ति

लिये उन के 'रब' के पास इन का प्रतिदान है और न कोई भय उन के लिये है और न वे दुखी होंगे।''
(क़ु०: 2–62)

समस्त ईश्वर प्रेषित धर्मों में मूल रूप से एक-ईश्वर-वाद तथा परलोक वाद की धारणाओं में ही विकार उत्पन्न हुआ। प्रत्येक धार्मिक जाति ने बाद में आने वाले पैग़म्बर को इसीलिये नकारा कि वे 'उस' के कहने पर अपने उक्त विकृत धर्म–विश्वासों में सशोधन करने के लिए तैयार नहीं थे और इस के अतिरिक्त जो कुकर्म उनहोंने अपना लिये थे उन्हें वे त्यागने को तत्पर नहीं थे। यहूदियों ने इसी आधार पर ह० ईसा अलै० और ह० मोहम्मद सल्ल० की रिसालत का इन्कार किया। यदि वे अपने तौहीद और आख़िरत के बिगड़े हुए अक़ीदों को सुधारने के लिये तैयार होते और कुकर्म छोड़ने की चेष्टा करते तो ह० ईसा अलै० को रसूल मानने में उन्हें कोई संकोच न होता क्योंकि 'वह' यही शिक्षाएं तो लाए थे। इसी प्रकार इन्हीं तीन बुनियादी बातों के परिवर्तित हो जाने के कारण ईसाइयों तथा यहूदियों ने ह० मोहम्मद सल्ल०के रसूल होने का इनकार किया यद्यपि वे जानते थे कि आप सल्ल० सच्चे रसूल हैं। यही वजह है कि क़ुरआन ने उक्त तीन बुनियादी बातों की चर्चा करके समस्त धार्मिक समुदायों को यह शुभसूचना दे दी कि यदि तुम इन में सुधार कर लो तो फिर तुम्हें किसी भय की ज़रूरत नहीं। यह स्पष्ट है कि आख़री रसूल व क़ुरआन पर भी ईमान लाना अनिवार्य हे, फिर क़ुरआन ने केवल तीन मुख्य बातों को बयान करके प्रत्येक धर्म के मानने वालों को शुभ सूचना क्यों दे दी? इस का स्पष्ट कारण यह है कि महाज्ञानी, तत्वदर्शी ईश्वर इस बात से परिचित है यदि अन्य धर्मावलम्बी उपरिलिखित सत्धर्म के तीन स्तंभों के विकार का उपचार कर लें तो वे क़ुरआन व रसूल पर ईमान अवश्य ही लाएगे। सत्धर्म के यह तीनों आधार स्तंभ–एक-ईश्वर-वाद, पारलौकिक जीवन तथा अनुकूल कर्म, हिन्दू क़ौम को उन के ही धार्मिक ग्रन्थों से उद्धृत करके प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

आह्वान की रीति के विषय में क़ुरआन एक और निर्देश देता है :

''और अपने 'रब' के मार्ग की ओर बुलाइए– हिकमत (विवेक) से और (दिलों पर आद्रता लाने वाले) सदुपदेश से और उन के साथ उत्तम रीति से वाद–विवाद कीजिए।'' (क़ु० : 16–125)

विवेक से बुलाने का उद्देश्य न तो हीन भावना का शिकार होना है, न सत्य को सत्य और असत्य को असत्य कहने से हिचकिचाना है। विवेक सत्ताधारी वर्ग की चापलूसी या अकबर के 'दीने इलाही' जैसे किसी तथाकथित धर्म को मानने का नाम भी नहीं है। तो क्या ईंट का जवाब ईंट और पत्थर के जवाब में पत्थर? निःसन्देह!

इस्लाम ने इस की भी अनुमति प्रदान की है; लेकिन कुछ विशेष परिस्थितियों में जब कि इस के लिये मजबूर कर दिया जाए। दरअसल परिस्थितियों के सही विश्लेषण और आँकलन का नाम ही 'हिकमत' है। एक तरफ़ अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ह० बिलाल रज़ि० व खबाब रज़ि० को जलती रेत पर नंगे बदन लिटाए जाने की कठोर यातनाएं झेलते हुए देख कर मात्र सब्र किया है और दूसरी तरफ़ उपद्रव को कुचलने के लिये इस्लामी सेनाओं को आगे बढ़ने के आदेश भी जारी किये है। एक इस्लाम के अजनबी होने का समय था और दूसरा स्थायित्व की दिशा में अग्रसर होती हुई इस्लामी हुकूमत का।

आह्वान के लिये भी विभिन्न परिस्थितियों एवं परिवेशों में अलग–अलग कार्यशैलियां अपनाई गई। पहले तीन वर्ष गुप्त प्रचार की रणनीति अपनाई गई यद्यपि उस समय भी सत्य अपनी जगह अटल था। इस के बाद पूरे मक्की काल* में अत्याचार की भट्टी में तपते हुए अपार कष्टों को ईश्वर की मरज़ी की ख़ातिर सहते हुए दीने हनीफ़ (सत्धर्म) के प्रचार का अटूट क्रम जारी रहा जिसके फलस्वरूप ऐसा समय भी आया कि अत्याचार का सिर उठते ही धराशायी कर दिया जाता था। धर्म–प्रचार में तत्वदर्शिता की सीख यदि हम ने उस पावन अस्तित्व से नहीं ली जिसे ईश्वर ने अपना विशेष अनुग्रह प्रदान किया था तो हर एक मोर्चे पर हम नाकाम होंगे। 'हिकमत' की तालीम अल्लाह के रसूल सल्ल० की शिक्षाओं का एक महत्वपूर्ण अंग है।

''और वह (रसूल) तुम्हें किताब और हिकमत की शिक्षा देता है ...।''
—(क़ु० : 2–151)

किताब (क़ुरआन) की शिक्षा के साथ 'हिकमत' का कितना महत्व है, इस का अन्दाज़ा क़ुरआन के इस वचन से लगाइए:

''वह जिसे चाहता है हिकमत प्रदान करता है और जिसे हिकमत दी गई उसे बड़ी दौलत दी गई; परन्तु चेतते तो वही हैं जो बुद्धि वाले हैं।''
—(क़ु० : 2–269)

हिन्दू धर्म को उस की खोई हुई मौलिकता दीजिए:

जब हिन्दू, धर्म परिवर्तित करता है तो उस के बाद वह अपने समाज से कट जाता है। हिन्दू समाज में मुसलमानों के प्रति द्वेष का भाव कुछ और बढ़ जाता है और इस नवमुस्लिम को मुसलमान अपने साथ समायोजित नहीं कर पाते। उस की

* ह० मोहम्मद सल्ल० पर ईश वाणी अवतरित होने के उपरान्त मक्का निवास के तेरह वर्ष

पारिवारिक एवं जीवन यापन सम्बन्धी समस्याएं कुछ और उलझ जाती हैं। भाई चारे की जो मिसाल मदीने के अन्सार ने मक्के के मुहाजिरों (विस्थापितों) के साथ क़ायम की थी उस का नमूना हम उस बेचारे नवमुस्लिम के सामने पेश नहीं कर पाते। कभी–कभी तो बददिल होकर नवमुस्लिम के अपने पुराने धर्म पर लौटने के उदाहरण भी देखने में आए हैं। यह तो उन मुट्ठी भर लोगों की बात है जो इस्लाम धारण करने का साहस जुटा पाते हैं, अधिकांश लोग तो मुसलमानों के बिगाड़ को देखकर इस्लाम के गुणों से प्रभावित ही नहीं होते। ऐसी विषम परिस्थितियों में आह्वान की केवल एक ही प्रभावशाली विधि है–हिन्दू को मुसलमान न करके हिन्दू धर्म को उस के भूले हुए यथार्थ पर लाया जाए। यह केवल कुछ व्यक्तियों को नहीं वरन सम्पूर्ण जाति को सत्धर्म पर वापस लाने का एक मात्र विकल्प है; व्यक्ति विशेष के आह्वान के तरीक़े भिन्न–भिन्न हो सकते हैं।

वर्तमान में इस्लाम के प्रचार–प्रसार एवं आह्वान का तरीक़ा किताब व सुन्नत की रौशनी में समस्त धर्मावलबियों तथा विशेष रुप से इस क़ौम को आमन्त्रित करने के लिये यही सिद्ध होता है कि उनके वर्तमान धर्म को उस के मूल खोए हुए इसलाम (मौलिक सनातनधर्म) की ओर लौटाने की विधि अपनाई जाए, ऐसी विधि न अपनाई जाय जिससे कि धर्मपरिवर्तन का आरोप लगे। ऐसी त्रुटिपूर्ण तथा विकृत कार्यशैली जो ईसाई मिशनिरियों ने अपना रखी है, इस्लाम की प्रकृति से सर्वथा भिन्न है। हमें इस तरीक़े को छोड़कर आदम अलै० व नूह अलै० की मिल्लत (पंथ) के विषय में वही विधि अपनानी पड़ेगी जो स्वयं हुज़ूर सल्ल० ने मिल्लते इब्राहीमी को इस्लाम से परिचित कराने के लिये अपनायी थी।

ऐतिहासिक विडंबनाएं:

धर्म प्रचार में विवेक एवं युक्तिसंगत विधि अपनाने पर क़ुरआन ने क्यों इना बल दिया है, इस का उत्तर हमें स्वयं इतिहास से मिल जाता है। वर्तमान शताब्दी में इतिहास में दो ऐसे मोड़ आ चुके हैं जब मुसलमानों द्वारा तत्वदर्शिता से काम न लेने की वजह से अमुस्लिमों की कूटनीति सफल हुई और दोनों बार करोड़ों की संख्या में पूरी की पूरी क़ौमें इस्लाम में प्रविष्टि होते होते वापस लौट गईं। इन दोनों ज़बरदस्त हादसों में से एक का सम्बन्ध भूतपूर्व सोवियत यूनियन से है और दूसरे का हमारे अपने देश भारत से।

रूसी साम्यवादी क्रान्ति के नेता कामरेड लेनिन, विश्व के तमाम धर्मों का अध्ययन करने के बाद इस्लाम से अत्यन्त प्रभावित हुए थे और रुस की जनता को इस्लाम के दायरे में लाने के इच्छुक थे। उन के बारे में यह विशिष्ट धारणा है कि उन

की इस्लाम से दिलचस्पी 'बुक़रा ख़ाँ' नाम एक महात्मा से सम्पर्क में आने के फलस्वरुप पैदा हुई थी । लेनिन उनकी विचारधारा से अत्याधिक प्रभावित हुए थे और लेनिन पर उनके सत्संग का गहरा असर था। बहरहाल लेनिन ने इस दिशा में प्रयास किया लेकिन मिस्र के मौलवियों की विवेकहीनता और ब्रिटिश सरकार की चतुर नीति की वजह से यह सुनहरी अवसर हाथ से निकल गया।

इस अशुभ घटना का विस्तृत वर्णन एक भारतीय साम्यवादी नेता ने किया है जिनके लेनिन से निकट संबध थे । मोहम्मद अब्दुल्लाह (रिटायर्ड आइ० ए० एस०) के शब्दो में सुनियें :

"एम० एन० राय हिन्दुस्तान के जाने माने नेता थे और 1921–23 के बीच वह 'कम्यूनिस्ट इन्टरनेशनल रुस' के सरगर्म कार्यकर्ता थे । जर्मनी, फ्रांस और चीन के श्रमिकों के आन्दोलन में उन्होंने महत्वपूर्ण सेवाऐं अर्पित कीं । लेनिन से उनके अच्छे सम्बन्ध थे और उन्हीं के एक साथी और हिन्दुस्तानी ने उस समय की राजनैतिक परिस्थितियों के अर्न्तगत हिन्दुस्तान छोड़कर रुस में पनाह ली थी । उन से भी लेनिन के निजी सम्बन्ध थे । उन्होंने अपनी स्वयं लिखित जीवनी में लेनिन की इस्लाम से दिलस्चपी और श्रद्धा के विषय में जो टिप्पड़ी की, वह देखने योग्य है ।

रुस में 'ज़ार' के शासन–काल की समाप्ति पर जब लेनिन सत्ता में आए और उन्होंने कम्यूनिस्ट सरकार स्थापित कर ली तो एक दिन अपने निकट सहयोगियों की एक मीटिंग बुलाई और उसमें उन्होंने कहा—हम अपनी सरकार स्थापित करने में सफल हो गए हैं लेकिन इस को बनाए रखने के लिए और इस को चलाने के लिए इस बात की आवश्यकता है कि हम किसी ऐसे जीवन दर्शन को अपनाएं जो मानव प्रकृति के अनूकूल हो, इसलिए कि इन्सान को अपने आस्तित्व के लिये केवल रोटी नहीं चाहिए बल्कि उस की आत्मा की सन्तुष्टि के लिये एक धर्म की भी जरुरत है। मैंने समस्त धर्मों का गहन अध्ययन किया है। मेरी दृष्टि में सिवाय एक धर्म के किसी और में वह योग्यता नहीं है जो हमारे साम्यवादी दृष्टिकोण का साथ दे सके। इसलिये मै अभी इस धर्म का नाम ही बतलाऊंगा। इस विषय में राय क़ायम करने में आप जल्दी न करें, इस लिये कि यह प्रश्न साम्यवाद के जीवन और मृत्यु का है। आप समय लें और चिंतन करें–हो सकता है मै ग़लती पर हूं लेकिन हमें अपने निर्णय के बारे में ठण्डे दिल से विचार करना होगा। मैं समझता हूं कि इस्लाम ही एक ऐसा धर्म है जो अपनी भौतिक प्रवृत्तियों में साम्यवाद पर पूरा उतरता है। यह

सुनकर भीड़ में शोर होने लगा तो लेनिन ने ठंडे मन से फिर सोच विचार करने का निर्देश दिया कि आज से पूरे एक वर्ष बाद हम फिर मिलेंगे और उस समय तय करेंगे कि क्या साम्यवादी को कोई धर्म अपनाना चाहिए? और कौन सा?

ब्रिटिश सरकार के विदेश मन्त्रालय को जब इस का पता चला तो उसने, इसमें ब्रिटिश साम्राज्य के लिये बड़ा ख़तरा महसूस किया कि यदि साम्यवाद और इस्लाम मिल जाएं तो रुस को ब्रिटेन पर एक अविजित शक्ति एवं श्रेष्ठता प्राप्त हो जायेगी। तुरन्त उन्होंने एक समस्या खड़ी की – ''इस्लाम के लिये मार्कसवाद जैसा ख़ुदा से फेरने वाला और नास्तिकता का दृष्टिकोण स्वीकार करने योग्य हो सकता है ?''

अज़हर (मिस्र का विश्व विद्यालय) के विद्वानों ने जो इस सवाल की पृष्ठभूमि से परिचित न थे, ऐसा फ़तवा (धर्मादेश) जारी कर दिया जैसा कि ब्रिटिश सरकार चाहती थी। यह फ़तवा छपवा कर संसार के कोने कोने में बंटवा दिया गया यहां तक कि रुस के इस्लामी क्षेत्रों में इस फ़तवे की प्रतियाँ अभी तक कुछ मुसलमानों के पास हैं। विदित है कि इस का पता लेनिन को चल गया। उन्होंने अपना आश्चर्य प्रकट किया और कहा मैं समझता था कि मुसलमान समझदार होगें लेकिन ऐसा मालूम होता है कि वे भी और धर्मों (के मानने वालों) की तरह बड़े कट्टर एवं रुढ़िवादी हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि योजना धरी रह गई हैं और उसके विरोधियों ने चैन की बनसी बजाई।''[8]

अब अमुस्लिमों की सफल कूटनीति की एक दूसरी मिसाल देखिये जिसका संबध हिन्दुस्तान से है।

विश्वास किया जाता है कि डाक्टर अम्बेडकर जो दलितों तथा हिन्दू पिछड़ी जातियों के सबसे लोकप्रिय नेता थे, हिन्दुस्तान की पूरी दलित आबादी के साथ इस्लाम क़ुबूल करने के पक्षधर थे। गांधी जी को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने डाक्टर अम्बेडकर से पूछा कि तुम कौन सा इस्लाम क़ुबूल करना चाहते हो? शिया मुसलमान वाला या सुन्नी मुसलमान वाला! अगर शिया होना चाहो तो उन में भी अनेक धार्मिक सम्प्रदाय हैं। किस सम्प्रदाय का इस्लाम धारण करोगे? यदि सुन्नी होना चाहो तो उन में भी बहुत से धार्मिक गुट हैं– देवबन्दी, बरेलवी, वहाबी इत्यादि; और इन सब में आपस में ऐसी ही नफ़रत है कि एक दूसरे को इस्लाम में दाख़िल नहीं समझते। डाक्टर अम्बेडकर ने इस बातचीत के बाद अपना इरादा बदल दिया और कहा : मैं समझता था कि इस्लाम में धार्मिक मतभेद नहीं होते और इसीलिये मैं इस धर्म को पसंद करता था।

यह वह नसीहत की कहानियां हैं जिनकी सियाही अभी इतिहास के पन्नों में सूखने भी न पाई है।

काश मुसलमान यह समझ लें कि...

रसूले अकरम (अत्यन्त प्रतिष्ठित) सल्ल० का सम्पूर्ण आह्वान का जीवन विवेक के साथ आचरण करने का व्यावहारिक नमूना था। इस्लाम के अजनबी होने के उस प्रारम्भिक काल में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उस क़ौम से कहा था कि मैं तुम्हारे पास कोई नया धर्म लेकर नहीं आया हूं; बल्कि दीने हनीफ़ (सत्यनिष्ठ धर्म) तथा दीने इब्राहीमी (ह० इब्राहीम अलै० का धर्म) ही पेश कर रहा हूं। क्या इस्लाम के बेघर होने के इस दौर में इस क़ौम के सामने 'दीन' इस हैसियत से पेश नहीं किया जा सकता कि इस्लाम कोई नया धर्म नहीं है बल्कि नूह अलै० का धर्म भी यही था और मुसलमान भी नूह अलै० (महा जलप्लावन वाले मनु) को दिव्य सन्देशवाहक मानते हैं और उन का सन्देश जो हिन्दुओं के पास अज्ञात काल की धूल में धुन्धला गया है, उसे ईश्वर के अन्तिम और शुद्ध सन्देश की ज्योति में साफ़ किया जा सकता है।

निश्चित रूप से हिन्दू क़ौम शताब्दियों से उन व्यक्तियों की खोज कर रही है जो उसे उस का धर्म समझा सकें। वह अपने धर्म को स्वयं ही न समझ पाने के बावजूद उसे सनातन धर्म मानते हुए उस में आस्था रखती है।

सोमनाथ के मन्दिर को ध्वस्त करने वाले महमूद ग़ज़नवी के लश्कर के साथ ही तो 'अलबेरूनी' भी आया था जिस का उपकार हिन्दू आज तक मानते हैं क्यों कि उस ने इन के धर्म को समझने की कोशिश की थी। अलबेरूनी का ढंग कुछ और ही था। इस पुनीत कार्य को श्रेष्ठ विधि से क़ुरआन एवं हदीस के प्रकाश में पूरा किया जा सकता है। क्या इस्लाम को इस रूप में हिंदुओं के सम्मुख प्रस्तुत नहीं किया जा सकता कि यही तुम्हारा मौलिक धर्म था? क्या क़ुरआन की ज्योति में उन के धर्म की गुत्थियां सुलझा कर यह प्रमाणित नहीं किया जा सकता कि यही वह धर्म है जिस का सैलाब वाले मनु या ह० नूह अलै० ने अपनी जाति में आह्वान किया था? इस दिशा में प्रयास करने से पहले मुसलमानों को हिन्दू धर्म का गहन अध्ययन करना होगा।

मौ० अबुल हसन अली नदवी ने ह० उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) से बयान की हुई एक हदीस उद्धरित की है :

''क़रीब है वह व्यक्ति इस्लाम की एक-एक कड़ी अलग कर दे जिस ने इस्लाम में ही आंखें खोलीं और जाहिलियत (अज्ञानता) से बिल्कुल

अपरिचित है।''[9]

चौदह सौ वर्षीय इस्लामी इतिहास में अनेक मुसलमान विद्वानों ने तौरेत, ज़बूर और इंजील को खंगाल डाला लेकिन कितने आलिम ऐसे हैं जिन्होंने हिन्दू धर्म का अध्ययन किया? कुछ प्रयास सामने भी आए तो वे इस शैली के हैं जिन में हिन्दू धर्म की वर्तमान किताबों के त्रुटिपूर्ण अनुवादों में हिन्दू धर्म के अवगुण तलाश करके इस्लाम के गुणों से तुलना की गई है। ऐसी उर्दू किताबों के अनुवाद यदि हिन्दुओं के सामने रख दिये जाएं तो वे स्वीकार करने के बजाय इस्लाम से और घृणा करने लगेंगे।

यदि हिन्दुओं के समस्त धार्मिक ग्रन्थो का तर्कसगत विधि से अवलोकन किया जाए तो यह महसूस होगा कि इस्लाम को हिन्दू क़ौम के अपने ही खोए हुए मज़हब की हैसियत से पेश किया जा सकता है और उन्हें स्वीकार करने में कोई संकोच न होगा।

कम से कम इतना तो कीजिए!

उक्त शोध कार्य को प्रत्येक व्यक्ति तुरन्त आरम्भ नहीं कर सकता। केवल हिन्दी जानने से भी काम नहीं चलेगा। मूल रूप से भटकाव वेदों, पुराणों तथा उपनिषदों के हिन्दी अनुवाद से ही फैला है। मुस्लिम उम्मत में से ऐसे लोगों को संस्कृत सीखने के लिये सामने आना होगा जिन के पास अपने धर्म का भी अच्छा खासा ज्ञान हो। यह काम देखने में अत्यन्त कठिन लगता है, लेकिन असंभव नहीं है। रसूलुल्लाह सल्ल० के कातिब ह० ज़ैद रज़ि० कुछ ही दिन में 'सुरयानी' सीख सकते थे, मौ० हमीदुद्दीन फ़राही रह० सुरयानी और इब्रानी दोनों भाषाएं सीख सकते थे, अलबेरूनी संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कर सकते थे तो क़ुरआन व हदीस का ज्ञान रखने वाली युवा पीढ़ी संस्कृत क्यों नहीं सीख सकती? आगामी कुछ वर्षों में जब तक मुस्लिम उम्मत में ऐसा युवा वर्ग तैयार हो, उस समय तक कम से कम एक काम तो किया ही जा सकता है-यह काम है नफ़रतों की खाई को पाटना। वह काम जो अमरीका के मुसलमानों ने शुरु किया है। उस की एक संक्षिप्त रूप रेखा हम आपके सामने प्रस्तुत करते हैं ताकि आपसी द्वेष समाप्त होकर वही सौहार्दपूर्ण वातावरण उत्पन्न हो सके जिस का प्रयास अमरीका में किया गया है। यह प्रयास यदि हमारी तरफ़ से हो तो इस के परिणाम दूरगामी एवं विश्व स्तर के निकल सकते हैं। कारण यह है कि यहूदी व ईसाई भी नूह अलै० को अपना पैग़म्बर मानते हैं। हम विश्व की दोनों बड़ी नस्लों, सामी और ग़ैर सामी की एकता के लिये मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। इन नस्लों में हिन्दू, ईसाई, यहूदी और मुसलमान सब शामिल हैं।

अमरीकियों का उदाहरण:

तीन वर्ष पूर्व अमरीका के ईसाइयों और यहूदियों ने 'मिल्लते इब्राहीम' के आधार पर एक फ़ोरम की स्थापना की जिस का उद्देश्य एक दूसरे को समझने की कोशिश करना और धार्मिक द्वेष के माहौल को समाप्त करना था। अमरीका में मुसलमानों की संख्या भी अब इतनी हो गई है कि उनको अब अल्पसंख्यकों के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है। मुसलमान आलिमों ने इस फ़ोरम से कहा कि ह० इब्राहीम अलै० हमारे अत्यन्त प्रतिष्ठित पैग़म्बर थे। फिर आप ने इस फ़ोरम से हमें क्यों अलग रखा है? फ़ोरम का पुर्नगठन हुआ और उस का नाम 'मुस्लिम–ईसाई–यहूदी नेतृत्व फोरम' *(Muslim, Christian , Jews Leadership Forum)* रखा गया। तीनों ने तय किया कि हम सब ह० इब्राहीम अलै० के अनुयायी हैं। धार्मिक मतभेदों के मामले में अपने अपने मार्ग पर जमे रहने के बावजूद हम में बहुत कुछ समानता है और इन समान मूल्यों को हमें एक दूसरे के सामने उजागर करना चाहिए।

पहले आठ–आठ विद्वान हर सम्प्रदाय के इकट्ठा हुए और उन्होंने दो–दो घण्टों के छः सत्रों में आपस में विचार विमर्श किया। अपने–अपने धर्म विश्वासों और धार्मिक विचारों से एक दूसरे को अवगत कराया। फ़ोरम के लिये कार्यक्रम तय किया। फिर एक निम्नस्तर का अधिक संख्या में प्रतिनिधियों का सम्मेलन बुलाया गया। उन्होंने एक दूसरे को अपने सामाजिक जीवन, संस्कृति, उत्सवों और धार्मिक रीति–रिवाजों से परिचित कराया। फिर 17 सितम्बर 1986 को अमरीकी राज्य डेटरायट (Detroit) में बड़ी संख्या में प्रतिनिधियों का एक सामान्य सम्मेलन हुआ। इस में 29 मुसलमान, 36 यहूदी, 91 ईसाई और अन्य धर्मों के लोग भी सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन में तीनों धर्मों के विद्वानों ने भाषण दिये। मुसलमान धर्मवेत्ता डाक्टर मुज़म्मिल हुसैन सिद्दीक़ी जो भारत में ही जन्मे हैं इन तीनों जलसों में सम्मिलित हुए और रहन सहन, सामाजिक जीवन व अन्य पारस्परिक धार्मिक समस्याओं पर विस्तार के साथ समस्त प्रतिनिधियों से विचार विमर्श किया। इस के बाद से आज तक यह फ़ोरम बहुत अच्छे परिणामों के साथ काम कर रहा है। इस समय इस फ़ोरम की प्रतिनिधि पत्रिका 'हेलान' (Haelan) से कुछ अवतरण हम आपके सामने रख रहे हैं। अगरचे 48 पृष्ठ की इस पत्रिका का एक–एक शब्द देखने के योग्य है लेकिन परिचय कराने के लिये जिन हवालों को नक़ल करना आवश्यक है, वे हम पेश कर रहे हैं।

ईसाई पादरी 'आस्कर–जे–आइस' ने अपने भाषण में कहा :

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) '' ... **ह० इब्राहीम अलै० दुनिया के तीन बड़े धर्मों के बाबा आदम हैं। यहूदियत, ईसाइयत और इस्लाम–इन तीनों धर्मों में एकेश्वरवाद का अक़ीदा, बहुत से पैग़म्बरों में आस्था रखने की समानता और दूसरों के मुक़ाबले में मानव जीवन का अधिक सम्मान जैसे मूल्य समान हैं।...**[10]

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) '' **आपसी माहौल में समझबूझ से हमारे अन्दर पारस्परिक विश्वास और अपनापन पैदा हो चला है और इस के साथ ही सब के सकुशल होने की विशुद्ध सोच भी।**''[11]

हेलान पत्रिका के इसी अंक के पृ०:6 से ही दो और उदाहरण देखिये:

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) '' ... **पिछले मार्च में टेलीविज़न पर एक प्रोग्राम दिखाया गया जिस में शिया मुसलमानों को आतंकवादियों की हैसियत से प्रस्तुत किया गया था। तीनों धर्मों के विद्वान एकत्र हुए और उन्होंने टेलीविज़न कारपोरेशन को इस विषय में विरोध पत्र भेजे कि कुछ लोगों की शरारत की वजह से पूरी क़ौम के बारे में दूषित धारणा पेश न की जाए।**''[12]

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) '' ... **सितम्बर के महीने में इस्तंबोल (तुर्की) में एक यहूदी पूजा–गृह पर बम्बारी हुई। जब अन्तिम संस्कार के लिये डेटरायट में यहूदी इकट्ठा हुए तो उन्हें फ़ोरम के दो मुस्लिम विद्वानों के संवेदना पत्र प्राप्त हुए जिन में पारस्परिक शांति की इच्छा को दोहराया गया था। एक मुस्लिम विद्वान अन्तिम संस्कार में सम्मिलित हुए ...**''[13]

इमाम मुज़म्मिल हुसैन सिद्दीक़ी ने अपने संबोधन में कहा:

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) '' ... **यह और अन्य बहुत से मतभेद इस्लाम, यहूदियत और ईसाइयत में हैं लेकिन बहुत से समान मूल्य भी हैं जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं। सम्मान और आपसी मेल–मिलाप का अर्थ यह है कि जब विरोध करें तो भी पारस्परिक विश्वास, आदरभाव और विनम्रता का ख़याल रखें। वार्तालाप, तर्कपूर्ण और अच्छी से अच्छी शैली में हो। मुसलमान होने की हैसियत से हमें क़ुरआन का परामर्श मानना चाहिये–और अहलेकिताब से वाद–विवाद मत करो सिवाय सभ्य तरीक़े से**'' —(क़ु०: 29–46)

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) '' ... **हमारी परम्पराएं बहुत सकारात्मक रोल निभा सकती हैं और इन गतिविधियों में शामिल होकर हमें ज्ञात होगा कि हमारे बीच मूल्यों में कितनी समानता है, जिन की हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी। इस से हमें आपसी दूरियां समाप्त करने में मदद मिलेगी। हमारे बीच धार्मिक पक्षपात, भय और नफ़रत का ज़्यादा हिस्सा इसी एक दूसरे से दूरी के कारण है ...**

क़रीब आने से हम एक दूसरे की समस्याओं को भलीभांति समझ सकेंगे और एक बेहतर समाज के निर्माण में सहायक होंगे ...''15

यहूदी विद्वान डाक्टर मार्क एच०तानीनबोम के भाषण के अंश भी देखिये :

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) **''हमारी बुनियादी समस्या एक दूसरे के विषय में अपराध पूर्ण अज्ञानता है।''**16

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) **'' ... यहां एक सामान्य धारणा यह है कि सभी मुसलमान बर्बरता के ध्वजवाहक और आतंकवादी होते हैं। यह बात एक धार्मिक असत्य का रूप धारण करती जा रही है। हमें इन समस्त धार्मिक असत्यों को समूल नष्ट करना है, इससे पहले कि राजनीति उन्हें इस्तेमाल करके विश्वस्तरीय विनाश का कारण बन जाए...''**17

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) **'' ... प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ़राम कहता है कि हिन्दुस्तान में एक सामूहिक रोग है कि हर धर्म का अनुयायी अपने को श्रेष्ठ और दूसरे को हीन समझता है। मुसलमान समझते हैं कि तमाम सच्चाइयों और मुक्ति के मार्गों पर उनका एकाधिकार है। यही हिन्दू अपने बारे में और सिख अपने बारे में समझते हैं। यही समस्या विश्व के हर भूभाग में तनाव की बुनियाद है ...''**18

इस फ़ोरम में जिन अन्य समस्याओं पर गौर किया जा रहा है, उन में से कुछ निम्नलिखित हैं:

- ❑ **एक अच्छा मुसलमान, ईसाई, यहूदी कैसा होता है?**
- ❑ **दूसरे धर्मों के मानने वालों को अपने धर्म का निमन्त्रण कैसे दिया जाए?**

इस शीर्षक के विषय में ईसाई पादरी ने बताया:

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) **''हम अपने आप को ऐसे मनमोहक अन्दाज़ में प्रस्तुत करते हैं कि दूसरों में हमारे साथ सम्मिलित होने की इच्छा जागृत हो जाती है।''**

मुसलमान विद्वान इमाम अब्दुल्लाह अल अमीन ने कहा

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) **''हम उन तमाम लोगों को अपने धर्म की दावत देते हैं जो एक ईश्वर और परलोकवाद में आस्था रखते हैं।''**

- ❑ **हमारा ईश्वर के विषय में क्या धर्म-विश्वास है?**

- ❑ **समाज में आतंकवाद के प्रभाव।**
- ❑ **प्रचार माध्यमों और स्कूल की किताबों से घृणा की सामग्री को समाप्त करना।**

यह थी अमरीकी मुसलमानों के प्रयास की एक झलक। एक दूसरे से नफ़रत करने वाली तीन क़ौमों ने समानता का एक आधार तलाश कर लिया ताकि अपने अपने धर्म पर बने रहते हुए वह अनुकूल वातावरण पैदा हो सके जिस में एक दूसरे को अपना धर्म समझाया जा सके। इस मित्रतापूर्ण कशमकश में इन्शाअल्लाह (यदि ईश्वर ने चाहा तो) सत्य की विजय होगी। क्या हम भारत में ह० नूह अलै० को अपना ईशदूत स्वीकार करने के आधार पर यहाँ की इन दो बड़ी क़ौमों को एक मंच पर इकट्ठा नहीं कर सकते?

सारांश:

कार्यशैली के विषय में क़ुरआन व सुन्नत और ऐतिहासिक उदाहरणों के प्रकाश में जो कुछ विवरण प्रस्तुत किया गया है, उसका सारांश निम्नलिखित है :

- ❑ मिल्लते नूह (नूह अलै० का पंथ) के आधार पर विश्व एकता की बुनियाद रखी जाए ताकि भ्रांतियों की जगह विचार विमर्श का मार्ग खुले।
- ❑ ज्ञान की धरोहर रखने वाले लोग, हिन्दू धर्म ग्रन्थों का अध्ययन व उन पर शोध क़ुरआन के मार्गदर्शन में करें ताकि हिन्दुओं को उन के मूल धर्म के विषय में उन्हीं की किताबों के रुख़ से समझाया जा सके।

यह भी ध्यान रहे कि समय बहुत ज़्यादा नहीं है। पन्द्रहवीं सदी हिज्री आरम्भ हो चुकी है। पंद्रह सौ वर्ष बाद किसी ऐतिहासिक परिवर्तन की क़ुरआन व हदीस की भविष्यवाणी का अवलोकन आप ने कर लिया। काबे में उपद्रव के बाद और क़हतानी व अरबों के गड़बड़ करने के बाद हदीस की यह चेतावनी आपने देख ली कि **''अब यह न पूछना कि अरब कब हलाक होंगे?''**

यह समय प्रतीक्षा का नही, कुछ कर दिखाने का है। जान लीजिए कि हम इतिहास के निर्णायक मोड़ के समीप है और सदियो से चढ़ा हुआ हिन्दू क़ौम का क़र्ज़ मुसलमानो को चुकाना है।

हिन्दू धर्म-पंडित जानते हैं!

परिवर्तन का समय निकट है, यह हिन्दू विद्वान भी जानते है। इस का उदाहरण देखिये

"ऐसे प्रमाण मौजूद हैं कि युग बदलने का समय आ गया है। कलियुग अब बिदा हो रहा है और उस के स्थान पर ऐसा समय आ रहा है जिसे सतयुग कहा जा सके।

मनु–स्मृति, लिंग–पुराण तथा भागवत् में दी गई गणनाओं के अनुसार हिसाब फैलाने से पता चलता है कि वर्तमान समय संक्रमण काल है ... इन समस्त गणना आधारों को देखते हुए वह समय ठीक इन्हीं दिनों है जिस में युग बदलना चाहिये ... जो सन् 1980 से 2000 तक बीस वर्षों की है।"[19]

उन के आंकड़े कहा तक ठीक हैं; इस का अन्तिम निर्णय तो हम नहीं कर सकते लेकिन पन्द्रहवीं सदी हिज्री के निर्णायक होने के बारे में तो हमें यक़ीन होना ही चाहिये।

युग, परिवर्तित होने ही वाला है.

क़ुरआन और हदीस ने जिस ईमान अफ़रोज़ (ईमान को उज्जवल करने वाली) बारिश की भविष्यवाणी की थी, उस के लक्षण प्रकट हो चले हैं। निगाहें उठा कर देखिये–घटाएं उठती हुई नज़र आने लगी है। ठंडी हवा का पहला झोंका किसी भी समय आने ही वाला है। इन घटाओं में बिजलियां भी छिपी हुई हैं जिनसे सुरक्षा के उपाय ईश्वर हमें बता चुका है। गहरी नींद से तुरन्त जागने का समय है।

दलीले ख़ुदावन्दी (ईश्वरीय प्रमाण):

विश्व की वे समस्त भाषाएं जिनमें आस्मानी ग्रन्थ अवतरित होने का मानव को ज्ञान है, मृतपराय हो चुकी थीं, सिवाय अरबी के जो अन्तिम आस्मानी ग्रन्थ क़ुरआन की भाषा है तथा जो महाप्रलय तक जीवित रहेगी। संस्कृत, कल्दानी, आरामी, सुरयानी व इब्रानी भाषाएं मृत होना भी प्रकृति की एक निशानी थी जो इस बात की साक्षी है कि क़ुरआन के अतिरिक्त अन्य दिव्य ग्रन्थ जन साधारण के लिये समझने के अयोग्य बना दिये गए। लेकिन यह क्या! उस युग के समीप जिस में उस प्राचीनतम धार्मिक जाति को उन्हीं के अपने धार्मिक ग्रन्थों के माध्यम से ईमान लाना सुनिश्चित था, दुनिया की तमाम निर्जीव भाषाओं में से सब से पुरानी भाषा संस्कृत में पुन: जीवन के लक्षण दिखाई देने लगे हैं। बेशक ईश्वर की माया, मानव बुद्धि की परिधि से बाहर है। सरकारी छत्रछाया में संस्कृत को इस तरह पुनर्जीवित किया जा रहा है कि हमारी आगामी पीढ़ी के बहुत से लोग जिन में हिन्दू और मुसलमान दोनों शामिल हैं, संस्कृत जानने और समझने वाले होंगे। यह ऐसी पीढ़ी होगी जो संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करने के बाद, पंडितों द्वारा निषिद्ध वस्तु बना दिये जाने के बावजूद वेदों पर रिसर्च किये बिना नहीं मानेगी और उस पराकाष्ठा का यही आरम्भ होगा जिसे हिन्दू धर्म ने कलियुग जाने के बाद

सतयुग का आना बताया है।

मुसलमानों का कर्तव्य:

मुसलमान भाई विचार करें कि ईश्वर ने उन पर विशेष करुणा और दया की है कि उन्हें एक ऐसे देश में पैदा किया जहां उन के लिये दुनिया के दूसरे मुसलमानों की तुलना में इस 'नूह की जाति' के सामने ज्ञान और कर्म के माध्यम से आह्वान करने के अनगिनत अवसर उपलब्ध हैं। अब यह उन के ऊपर है कि वे इस पुरुस्कार को पलकों से उठाते हैं या अकृतज्ञ होने का प्रमाण देते हैं। मुसलमान जो कि अन्तिम ईशदूत ह० मोहम्मद सल्ल० की उम्मत हैं, परमेश्वर की तत्वदर्शिता के तहत मानव इतिहास के एक निर्णायक मोड़ पर उस क़ौम के बीच में भेजे गए हैं जो दुनिया के पहले छोर पर जन्म लेने वाली ह० नूह अलै० की उम्मत है। इस बात के स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं कि इतिहास स्वयं को दोहराएगा। जहां से आरम्भ हुआ, वहीं पर अन्त भी होगा। इतिहास में इस प्रकार के उदाहरण भरे पड़े हैं। क्या हमारे जागने का इसके बाद फिर कोई अवसर आएगा?

सबसे गम्भीर समस्या यह है कि मुसलामानों के विभिन्न संगठनों में आपस में तालमेल नहीं है, लेकिन एक आधार ऐसा है जिस पर मुसलमानों के सभी वर्ग संगठित हो सकेंगे और वह है– 'क़ुरआन'। क़ुरआन पर शिया, सुन्नी, बरेलवी, देवबन्दी तथा समस्त राजनैतिक एवं धार्मिक संगठन ईमान रखते हैं। क़ुरआन की फ़रयाद सुन्ने के लिए मुसलमानों के समस्त दलों एवं संगठनों को एक मंच पर इक्ठ्ठा किया जा सकता है।

"क्या इन लोगों ने क़ुरआन में चिन्तन नहीं किया। या उन के दिलों पर ताले चढ़े हुए हैं।" –(क़ु०: 47–24)

अल्लाह हम सब की सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करे। हमें हर समस्या का समाधान 'क़ुरआन हकीम' में तलाश करने की शक्ति प्रदान करे और 'उस' ने अपने दीन की सरबुलन्दी के लिए जिन लोगों का चुनाव किया है, उन्हें आमन्त्रित करने में हमें भी सम्मिलित करें–आमीन! (तथास्तु)

सन्दर्भ–सूची अध्याय 21

1. 'इस्लाम में दूसरे मजाहिब और अहले मजाहिब की हैसियत' ले० : मौ० शाह मुईनुद्दीन नदवी, प्र०: 'मआरिफ़'–3, खं०:95, पृ०: 178
2. 'चचनामा एलियट' खं०:प्रथम पृष्ठ: 186, सं०:पत्रिका मआरिफ़ न०:3, खं० : 95, पृ०: 180

3. – – – उपरोक्त– – –
4. 'लुग़ातुल क़ुरआन' – संकलन : मौ० अब्दुर्रशीद नोमानी
5. बेहक़ी, सं०: मिश्कात, अ०: सवाब हाज़हिल उम्मत
6. रज़ी, सं०: मिश्कात, अ०: सवाब हाज़हिल उम्मत
7. बेहक़ी, सं०: मिशकात, अ०: सवाब हा जहिल उम्मत
8. सोवियत यूनियन (उर्दू) खं०: 28, जून 1992, ले०: मोहम्मद अब्दुल्लाह रिर्टायर्ड आइ० ए० एस०
9. भूमिका, 'अरकाने अरबिअः', पृ०: 15, प्र०: 1981
10. Haelan,volume vii, No.: 2, Pub: Ecumenical Theological Centre, Detroit, Michigan - P : 5
11- - - - do - - - P : 6
12- - - - do - - - P : 6
13- - - - do - - - P : 6
14- - - - do - - - P : 15
15- - - - do - - - P : 36
16- - - - do - - - P : 29
17- - - - do - - - P : 32
18- - - - do - - - P : 33
19. 'अखंड ज्योति'–मार्च 1981, ले०: पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, पृ०: 39–40

------❖❖❖------

"आप कह दीजिए कि हे अहले किताब (पूर्व ग्रन्थ वालो)! आओ इस बात की तरफ़ जो हमारे तुम्हारे बीच समान है। वह यह कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की उपासना नहीं करेंगे और उसके साथ किसी को भी साझी नहीं ठहराएंगे।" (क़ु०:-3:64)

अध्याय : 20

उन्हें स्वयं भी तलाश है!

हिन्दुओं में एक गुण बहुत मूल्यावान है। वह यह है कि वे अपने पुराणों, उपनिषदों तथा अन्य ग्रन्थों में विद्यमान प्रतिकूलताओं पर बहुत चिन्तित हैं। उन्हें सत्य की तलाश है। जिसे इच्छा नहीं होती उस पर ईश्वर का वरदान भी नहीं होता। हिन्दू अपनी धार्मिक विरासत को छोड़ने पर आमादा नहीं है, लेकिन उन्हें यह आभास हो चुका है कि उ . के ग्रन्थों में दिए गये उपदेशों, दन्त कथाओं एवं घटनाओं की यथार्थता व उन के सही अर्थ कुछ और होने चाहिएं। इस विचारधारा के दो नमूने प्रस्तुत हैं:

"भारतीय दार्शनिक परम्परा का एक नियम यह है कि जो व्यक्ति उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और गीता–तीनों का समन्वय करके दिखादे और इस प्रस्थानत्रायी में से एक ही तत्वदान निचोड़ कर प्रस्तुत करदे, उसे आचार्य माना जाय और उसी की बात सुनी और मानी जाय।"[1]

"प्रश्न यह उठता है कि उन स्मृतियों का क्या किया जाय, जिन में ऐसे श्लोक हैं जो उसी में दिये हुए अन्य श्लोको के विपरीत और नैतिक भावना के विरुद्ध हैं। मै इन पृष्ठों में अनेक बार लिख चुका हूं कि धर्म–ग्रन्थों के नाम पर जो कुछ छपता है, उस में सभी को ईश्वर की वाणी अथवा देववाणी के रुप में नहीं लेना चाहिये। लेकिन हर कोई यह तय नहीं कर सकता कि कौन सी बात अच्छी और प्रमाणित है तथा कौन सी बात बुरी और प्रक्षिप्त हैं। इसलिये एक ऐसी अधिकारी संस्था की आवश्यकता है जो धर्म–ग्रन्थों के नाम पर जो सब छपा है उसका संशोधन करे, ऐसे श्लोकों को काट छाँट दे जो धर्म और नीति के मूल के विरुद्ध हैं..... यह विचार इस पवित्र कार्य के मार्ग में बाधक न होना चाहिए कि सर्वसाधारण हिन्दू और धार्मिक नेता माने जाने वाले व्यक्ति ऐसी संस्था की बात प्रमाणित नहीं मानेंगें, जो काम सच्चाई से और सेवा भावना

से किया जायेगा वह समय बीतने पर अपना प्रभाव डालेगा और निश्चय ही उन लोगों की सहायता करेगा जो इस प्रकार की सहायता बुरी तरह चाहते हैं।''2

''बुद्ध ने आत्मा और परमात्मा के विषय में मौन धारण किया, मानो उनका अस्तित्व है ही नहीं; शंकर ने कहा 'केवल ब्रह्म ही है और कुछ नहीं संसार दुखःमय है, माया है, सर्वथा त्याऽय है अथवा मजबूरी का बन्धन है।' यह भाव और भावनाएं हमारी जातीय चेतना में लगभग ढाई हज़ार वर्ष से रम रही है। परिणाम स्वरुप जहां हम ने अध्यात्मिक अनुभव में कुछ नई उपलब्धियाँ प्राप्त की है, वहां संसार और जगत के जीवन में अनेक कष्ट भी झेले हैं; राज्य–पाट खोया और शक्ति तथा प्रभाव से वंचित रहे, हम कह सकते हैं –हमने एक विशेष आध्यात्मिक अनुभव की सफलता तथा सीमा दोनों को जान लिया। इससे हम वैदिक और औपनिषदिक आदर्श की विशेषता को अनुभव करने के लिये विशेष रुप से तैयार हो गये हैं और निश्चय ही अब नई चेतना विकसित होगी, वह सम्भवतः पूर्णतर होगी।''3

क्या इन परिच्छेदों में छिपी हुई अपीलों पर आप आगे आने के लिये तैयार हैं?

आप ही के पास तो अचूक समाधान है?

आप ही के पास तो इन वैचारिक प्रतिकूलताओं का सामंजस्य है !

क्या आप बिलकती और तड़पती हुई मानवता के मसीहा नहीं बनेंगें ?

याद रखिये ! आज औषधि आप के पास है।

यदि आप उपचार में कंजूसी करेगें तो ईश्वरेच्छा को दूसरे चिकित्सक ले आने में देर नहीं लगेगी।

सन्दर्भ–सूची अध्याय : 20

1. 'अनासक्ति योग' – ले० : बालकृष्ण कालेकर, पृ०: 8
2. 'महात्मा गांधी'– 'स्त्रियों की समस्याएं'–समाचार पत्र 'हरिजन', 28 नवम्बर 1936
3. 'कल्याण'–जनवरी 1950, डा० इन्द्रसेन, पृ०: 208–209

-----❖❖❖-----

अध्याय : 21

कसौटी केवल क़ुरआन

हमारे लेखों से पाठकों को कुछ जगहों पर यदि यह आभास हो रहा हो कि वेदों के वर्तमान अनुवादकों की सत्यनिष्ठा पर हमें सन्देह है तो इसे जहन से निकाल दें। ज्ञान को छिपाने वाला वर्ग प्रायः हर एक धर्म में होता है और मुसलमानों में भी है। जिन वेदज्ञों ने वेदों के अनुवाद किये हैं, उन की सेवाएं प्रशंसनीय हैं क्यों कि उन्हों ने इस अमूल्य ज्ञान को जन–साधारण तक पहुंचाने की काशिश की है जिसे तथाकथित पडितों ने उन के लिए अनिश्चित काल से 'निषिद्ध वृक्ष' के समान बना दिया था तथा जो मौलिक हिन्दू धर्म की बुनियाद है। विशेष रुप से स्व० पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के विषय में हमें निजी रुप से ज्ञात है कि वह अत्यन्त योग्य व्यक्ति थे। समस्त धर्मों के अध्ययन के लिये उनके यहां विधिवत रुप से एक शोध केन्द्र स्थापित है। उनकी मूल त्रुटि यह है थी कि उन्होंने वेदों को कसौटी बनाकर सब धर्मों का अध्ययन किया। जो ज्ञान न जाने कब से प्रायः लुप्त था, उसे अभी समझने के लिए शोध कार्य की आवश्कता है। पहले से स्थापित अक़ीदों (आस्थाओं) को जहन में रखते हुए केवल मानव बुद्धि के प्रकाश में स्वयं वेदों को ही नहीं समझा जा सकता, और जिस ज्ञान को प्रत्यक्ष रुप से समझा न जासके उसे कसौटी बनाकर अन्य धर्मों का अध्ययन करना कैसे सार्थक होगा? कलामे इलाही को बल्ब की रौशनी में नहीं, विवेक के प्रकाश में नहीं, केवल अल्लाह के कलाम की ज्योति में ही समझा जा सकता है और अल्लाह का अन्तिम सन्देश क़ुरआन है जिसके एक–एक शब्द के सुरक्षित होने पर पूरी दुनिया सहमत है। यदि वेदों के अनुवादक क़ुरआन की रौशनी में वेदों का अध्ययन करें तो वे तमाम रहस्य और गुत्थियां सुलझ जाएंगी जो वेदों में आज तक उनके लिए वाग्जाल बनी हुई हैं तथा जिन के आधार पर 'मैक्समुलर' ने कहा था :

''एक स्कालर के लिए यह असम्भव है और शायद स्कालरों की पूरी पीढ़ी के लिये यह असम्भव होगा कि वे ऋग्वेद के गीतों को विधिवत हल कर

सकें।''

हम समझते है कि वेदों के अनुवादों में हिन्दू विद्वानों द्वारा गलतियां जान बूझकर नहीं की जा रही हैं। गलती का आधार पौराणिक धर्म पर आधारित वे परिकल्पनाएं, एवं धर्म विश्वास हैं जिन्हें वेदों के अध्ययन से पूर्व मस्तिष्क से निकालना अत्यन्त आवश्यक है।

अगर यह बात भाष्यकारों की समझ में आ जाये तथा क़ुरआन की ज्योति में वेदों का अध्ययन किया जाए तो वेदों के ऐसे अनुवाद सामने आयेंगे जिन से वेदान्त, गीता व उपनिषदों की समस्त प्रतिकूलताएं दूर हो जाएंगी और हिन्दू क़ौम उस विश्वस्तरीय क्रान्ति की आह्वानकर्ता बनकर उठेगी जिस का क़ुरआन और वेद दोनों में वादा किया गया है।

-----❖❖❖-----

"और इनकार करने वालों का अनुसरण करने के बजाय उनसे क़ुरआन के ज़रिये एक ज़बरदस्त धर्म-संघर्ष करो।"
-(क़ु०: 25-52)

"ह० अबू हुरैरा रज़ि० से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा: मेरे पंथ में मुझ से अत्याधिक प्रेम करने वाले वे लोग हैं जो मेरे बाद पैदा होंगे। उन में से प्रत्येक चाहेगा कि क्या ही अच्छा होता कि मुझे देखता और अपने घर वालों और अपने माल को मुझ पर निछावर करता।" (मुस्लिम)

प्रस्तुति के बाद

एक

रिसालत की शमा के परवानों में क्या चीज़ एक समान थी ? कुछ मौलिक अक़ीदे और रसूल्लाह सल्ल० के पावन आस्तित्व के सिवा कुछ भी तो नहीं! कार्य शैलियां, चित्त और स्वभाव सब के अलग-अलग थे।

एक ओर ह० उस्मान ग़नी रज़ि० हैं जो धनाधीष, वैभववान और क़ीमती वस्त्र धारण करने वाले हैं, दूसरी ओर ह० अबूज़र गिफ़ारी रज़ि० और ह० बरा बिन मालिक रज़ि० हैं-दुरवेशी स्वभाव, अपर्याप्त लिबास और साधुता व आत्मसन्तुष्टि की प्रतिमूर्ति।

ह० अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० हैं जो ख़ाली हाथ मदीना आते हैं और मदीने के अत्यधिक धनाड्य व्यक्ति बन जाते हैं, इसी श्रंखला में ह० मुसअब बिन उमैर रज़ि०हैं जिनके इस्लाम लाने से पूर्व की सुवस्त्रप्रियता बहुचर्चित थी लेकिन बाद में अपने लिए ऐसे पेवन्द लगे हुए मोटे कपड़ों का चयन करते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्ल० उन्हें देखकर सजलनयन हो जाते हैं।

इसी निकेतन में ह० उमर रज़ि०, ह० अली रज़ि०, ह० इब्ने अब्बास रज़ि०, ह० इब्ने मसऊद रज़ि० और ह० उबई बिन कअब रज़ि० सरीखे अत्यधिक प्रतिष्ठित, सुवक्ता एवं निपुण विद्वान हैं और यहीं से प्रशिक्षित सय्यदना बिलाल रज़ि० है जिन की कुल तक़रीर केवल एक शब्द 'अहद' (वह एक है) पर आधारित होती थी।

ह० उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की न्यायसंगत कठोरता देखिये और ह० उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० की युक्तिसंगत कोमलता।

ह० कअब बिन मालिक हैं जिन से वर्षों की तपस्या के बाद भी ग़ज़वे* में शामिल

* वह धर्मयुद्ध जिसमें ह० मोहम्मद सल्ल० स्वयं सम्मिलित हुए।

न हो सकने की भूल हुई* और ह० उसैरम रज़ि० भी है। जो बिना एक वक्त की नमाज़ अदा किये इस्लाम क़ुबूल करते ही ग़ज़्वे में शामिल होकर शहीद हुए।

ह० ख़ालिद रज़ि० सैफ़ुल्लाह (अल्लाह की तलवार) जैसे कुशल सेनापति भी उसी लशकर में शामिल हैं जिसमें सुरक्षा वस्त्र पहने बिना ही रणभूमि में कूदने वाले सहाबी ह० ज़र्रार रज़ि० हैं।

ह० मिक़दाद रज़ि० की सादगी देखिये, ह० उसामा रज़ि०का विचार प्रकट करने का साहस देखिए और ह० उस्मान रज़ि० का शर्मीला स्वभाव ।

ह० फातिमा रज़ि० की भाग्यतुष्टि व एकान्तवास पर नज़र डालिये और ह० आयशा रज़ि० की शास्त्रीय सभाओं पर ग़ौर कीजिए।

यह सभी सम्मान के योग्य हैं, ईश्वर के समीपवर्ती बन्दे हैं, रसूले ख़ुदा सल्ल० की आँख के तारे हैं, आप सल्ल० के स्वयं के प्रशिक्षित हैं– फिर भी उनके स्वभाव, आचरण, व्यवहार व पसन्द–नापसन्द एक दूसरे से कितने भिन्न हैं ! उन को किस सरदार ने एक अटूट बंधन में बांध दिया था ?

आज उसी 'महात्मा' की यदि हम हर समय अपने बीच होने की कल्पना करें तो क्या विभिन्न स्वभाव एवं व्यवहार रखने वाले मुख़लिस लोगों (निष्कामियों) का बिखरा हुआ संघटन पुनः एकत्र नहीं हो सकता हैं ?

दो

रिसालत मआब सल्ल० की बारगाह (दरबार) क्या थी? ज्ञान की गतिविधियों का केन्द्र? व्यावहारिक गतिविधियों का केन्द्र? तपस्याओं का केन्द्र? प्रशिक्षण का केन्द्र? सैन्य गतिविधियों का केन्द्र? शान्ति–स्थापना का केन्द्र? राज्य की राजधानी? साधुता का केन्द्र? अदालत? ख़ानक़ाह (आश्रम)? मदरसा?

सरवरे कौनैन (जगन्नाथ) सल्ल० को उक्त में से किस पहलू में सीमित करें? इनमें से क्या नही था वहां ? यह सब कुछ था उनमें – और इनके अतिरिक्त भी बहुत कुछ था।

वहां हुकूमत व सलतनत भी थी । फ़क़ीरी, दुर्वेशी, एकांतवास व एतिकाफ़

* ह० कअब बिन मालिक ने बाद में तौबा की वह मिसाल क़ायम की जिसपर सहाबी (रज़ि०) गर्व करते थे। वह उन चन्द भाग्यशाली लोगों में हैं जिनकी मुक्ति की घोषणा अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में की हैं।

(एकांत में ईश्वर की तपस्या) भी था। धर्म–संघर्ष व सरफ़रोशी के लिए प्रोत्साहन भी था। विपलव से बचने की शिक्षा भी थी। तीर व तलवार जैसे खेल कूद के मैदान भी थे। आध्यात्मिक प्रशिक्षण की सभाएं भी थी। फ़ौजदारी व दीवानी की अदालतें भी थी। बेतकल्लुफ़ लोगों की वैभवशाली महफ़िलें भी थीं। चल फिर कर भी धर्म प्रचार होता था, बैठकर भी और इस उद्देश्य के लिये प्रचार–प्रसार के माध्यम भी इस्तेमाल किये जाते थे। ज्ञान का स्मरण भी किया जाता था और लिखित रुप में भी सुरक्षित किया जाता था। मुसलमान की तरबियत भी करना थी अमुस्लिम का आह्वान करना भी वांछित था। आंसू, मुस्कान, दूसरों के दुख समेटना......।

सभी कुछ तो था वहां ! एक ही समय में आर्थिक, समाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, वैधानिक, धार्मिक, चिन्तन सम्बन्धी तथा आह्वान के मोर्चों पर काम जारी था।

आज दुनिया में जितनी जमाअतें काम कर रही हैं, वे सब उक्त में से किसी एक या कुछ विषयों पर कार्य कर रही है । लेकिन दुर्भाग्य यह है कि इन में से हर एक जमाअत केवल अपने आप को ईशदौत्य मार्ग या सुन्नते रसूल सल्ल० पर कारबन्द समझते हुए अन्य सभी जमाअतों की कार्यपद्धति को ग़लत समझती है।

एक तरफ़ सरवरे कायनात सल्ल० की अद्‌भुत एवं असीमित योग्यताएं हैं और कार्यक्षेत्र विश्व का एक छोटा सा हिस्सा, दूसरी ओर आप सल्ल० के ग़ुलामों के पाँव की धूल से भी ज्यादा तुच्छ व कमतर लोगों की जमाअते और कार्य क्षेत्र समूचा संसार ! क्या कोई मुक़ाबला है ? क्या विश्व की कोई जमाअत यह दावा कर सकती है कि उसने रसूले अकरम सल्ल० के व्यावहारिक व प्रचार सम्बन्धी जीवन के समस्त विभागों पर काम कर लिया हैं ? क़ुरआन करीम दुनिया में केवल दो जमाअतों के आस्तित्व की चर्चा करता है : हिज़बुल्लाह (अल्लाह का दल) और हिज़्बुश्शैतान (शैतान का दल)। जहां कहीं भी इस्लामी दल कार्यशील हैं, वे अल्लाह की पार्टी के अलग-अलग विभाग हैं जो रसूले करीम सल्ल० की सुन्नत के किसी एक विशिष्ट या कुछ पहलुओं पर काम कर रहे है । इसी तरह दुनिया में जहां–जहां जिस–जिस अन्दाज़ की दानवी शक्तियां सरगर्म हैं, वे शैतानी दल के विभिन्न अंग हैं।

खेद का विषय है कि दानव–दल के सभी विभाग और झूठ की तमाम शक्तियां एकता के सूत्र में बंधे हुए हैं; लेकिन रहमान–दल के विभागों में सहयोग और एकता का स्थान परस्पर विरोध और शत्रुता ने ले लिया है। इन विभागों में से हर एक अकेला स्वयं के 'हिज़बुल्लाह' होने का दावा करता है और दूसरे तमाम विभागों की उपादेयता

को नकारता है।

विभिन्न विचारधाराओं वाले व्यक्तियों के समान ही अलग–अलग सोच रखने वाले दलों को संगठित कर सकने वाली हस्ती दुनिया में केवल एक है। उस पावन हस्ती को जब तक हम अपने बीच महसूस नहीं करेंगे, बिखराव का यह क्रम जारी रहेगा।

तीन

विश्व में बहुत सी दीनी जमाअतें सुन्नत के किसी न किसी पहलू पर काम कर रही हैं और अलहम्दोलिल्लाह ! उन के प्रयासों के सुखद परिणाम भी मिल रहे हैं, लेकिन एक विभाग अभी तक रिक्त था। हदीसों ने परिवर्तित होने वाली जिस क़ौम की तरफ़ इशारा किया है; और उस का आह्वान करने की जिस कार्यशैली की ओर मार्गदर्शन किया है, उस पहलू से इस क़ौम में काम अभी तक आरम्भ नहीं हो सका था।

अल्लाह ने अपने एक बन्दे के दिल में तड़प पैदा की। उसे चिन्तन शक्ति एवं विवेकशीलता प्रदान की और उस में काम करने की ऐसी लगन पैदा की कि उस ने पन्द्रह वर्ष की लगातार मेहनत के बाद इस खाई को पाटने की सामग्री उपलब्ध करा दी।

मौ० शम्स नवेद उस्मानी रह० के महान उद्देश्य को लेकर कुछ नवयुवक उठ खड़े हुए हैं और आह्वान के इस पहलू पर काम शुरू हो चुका है। संगठन का नाम ***(Work)*** रखा गया है–*'World Organisation of Religions & Knowledge"*.

इस कार्य का व्यावहारिक पहलू चूंकि ज्ञान अर्जन के बिना आरम्भ नहीं हो सकता, इसलिये कार्यकर्ताओं का एक न्यूनतम स्तर के पाठ्यक्रम में पारंगत होना अति आवश्यक है जिस में कुछ हिस्से क़ुरआन व हदीस के हैं और कुछ वेद एवं बाइबिल के हैं।

इस पाठ्यक्रम में महारत हासिल करने के बाद ही यह कार्यकर्ता सत्धर्म प्रचार के क्षेत्र में प्रविष्ट होने के योग्य बन सकेंगे। इस उद्देश्य के लिये आवश्यक पाठ्यक्रम की कक्षाओं का लगना जारी है। शीघ्र ही अन्य शहरों में भी 'इन्शाअल्लाह' इस तरह की कक्षाएं आरम्भ करके वहां कार्यकर्ता तैयार किये जाएंगे। ईश्वर सहायता करे–आमीन!

इस संगठन के कार्यकर्ता एक विशिष्ट दिशा में काम करने के इरादे के बावजूद अन्य सभी दीनी जमाअतों के लिये शुभकामनाएं रखते हैं। उन्हें भी रहमान–दल का

एक अभिन्न अंग समझते हैं और आवश्यकता पड़ने पर उन के साथ सहयोग करने को भी अपने काम का ही एक हिस्सा मानते हैं। उन समस्त उपकारी लोगों से जिन्होंने इस किताब के अध्ययन के बाद इस काम की आवश्यकता को महसूस किया हो, ईश्वर से प्रार्थना के लिये निवेदन है।

विनीतः *एस० अब्दुल्लाह तारिक़*
(इन्जीनयर) बाज़ार
नसरूल्लाह खाँ, रामपुर

-----❖❖❖-----

डूबते हुए सूरज ने कहा– "मेरे बाद इस दुनिया में मार्गदर्शन कौन करेगा? कोई है जो अन्धयारों के ख़िलाफ़ संघर्ष का साहस रखता हो?"

और फिर एक टिमटिमाता हुआ दीपक आगे बढ़कर बोला– "मैं अपनी जैसी कोशिश करूंगा!"

संकेत चिह्न

अ०:	अध्याय
अलै०:	अलैहिस्सलाम (उन परशान्ति हो)
ऋ०:	ऋग्वेद
क़ु०:	क़ुरआन
खं०:	खण्ड
मौ०:	मौलाना
प्र०:	प्रकाशक/प्रकाशन
पृ०:	पृष्ठ
रज़ि०:	रज़ियल–लाहुअन्हु (ईश्वर उन से राज़ी हो)
रह०:	रहमतुल्लाहि अलैह (उन पर रहमत हो)
ले०:	लेखक
सं०:	सन्दर्भ
सल्ल०:	सल–लल्लाहु अलैहि वसल्लम (उन पर शान्ति हो)
ह०:	हज़रत

कितने दूर कितने पास!!

वेद और क़ुरआन की रौशनी में एक शोधपरक पुस्तक जिसमें आदम (अ0) व नूह (अ0) की चर्चा के साथ ही वेदों और बाइबिल के माध्यम से ह0 मोहम्मद (सल्ल0) की ***नराशंस*** नामक पद्वी के अतिरिक्त - ***पवित्र आत्मा, जातवेद*** और ***महर्षि आग्नि*** इत्यादि नामों पर भी बहस की गई है। **मूल्य: 25/-**

वही एक एकता का आधार

मूल सनातन धर्म में ***शुद्ध एकेश्वरवाद*** की धारणा को स्थापित किया गया था। इस पुस्तक में मूलधर्म ग्रन्थों के माध्यम से ***बहुदेववाद*** का खण्डन करते हुए एकेश्वरवाद के समर्थन में तर्क प्रस्तुत किए गए हैं।

मूल्य : 6/-

नमाज़-सनातन धर्म की दृष्टि में

नमाज = नमः + अज

सृष्टि के आरम्भ से ही ईश्वर ने मानव मात्र के लिए ***निराकार उपासना*** की पद्धति अपने दिव्य-सन्देश के माध्यम से भेजी थी। ***गीता*** और ***वेद*** में इसी उपासना अर्थात ***नमाज़*** का उल्लेख है। ***नमाज़*** के विभिन्न आसनों का सचित्र विवरण इस पुस्तिका में उपलब्ध है।

मूल्य : 3/-

गवाही

हिन्दी/उर्दू

इस्लाम और क़ुरआन के विषयों पर एक ***अमुस्लिम विद्वान*** के माध्यम से उठाई गई आपत्तियों का तर्कपूर्ण ढंग से इस पुस्तक में उत्तर दिया गया है।

मूल्य : 5/-

मिलने का पता:
रौशनी पब्लिशिंग हाउस बाज़ार नसरुल्लाहख़ाँ, रामपुर - 244 901

.....समाप्त......

इस्लामिक पुस्तकें आधुनिक स्वरूप युनिकोड ओर ईबुक में पढ़ने के लिये देखें

islaminhindi.blogspot.com

1. मधुर संदेश संगम की वेबसाइट www.quranhindi.com पर उपलब्ध कुरआन ईबुक के रूप में उपलब्ध
2. मौलाना कलीम सददीकी की गैरमुस्लिमोंके लिये''आपकी अमानत आपकी सेवा में
3. डा. ज़ाकिर नायक की ' गल्तफहमियों का निवारण'' जिसमें हैं गैरमुस्लिमों के प्रशनों के उत्तर
4. कादयानियों की असलियत उन्हीं की तहरीरों से पेश करने वाली पुस्तक ''कादयानियत की हकीकत''
5. अल्लाह के सैंकडों चैलेंजों में से छ इस ब्लाग पर भी विस्तार से हिन्दी में उपलब्ध
6. नव–मुस्लिम 80 महिलाओं की दास्तान मधुर संदेश संगम की प्रस्तुति ''हमें खुदा कैसे मिला
7. कुरआन और आधुनिक विज्ञान
8, अब भी ना जागे तो

....

मुहम्मद सल्ल. को दूसरे धर्मों सेभी अंतिम–अवतार अर्थात आखरी नबी साबित करने वाली पुस्तकें पढने के लिये देखें

antimawtar.blogspot.com

1. ''नराशंस और अंतिम ऋषि''– ऐतिहासिक शोध –ः लेखक डा. वेद प्रकाश उपाध्याय
2. ''कल्कि अवतार और मुहम्मद सल्ल.''––लेखक डा. वेद प्रकाश उपाध्याय
3. ''हज़रत मुहम्मद सल्ल. और भारतीय धर्मग्रन्थ'' ––लेखक डा. एप. ए. श्रीवास्तव

इस विषय से संबन्धित 5 पुस्तकों की एक अंग्रेजी ईबुक भी उपलब्ध